ओ३म्

वैदिक पथ के पथिक

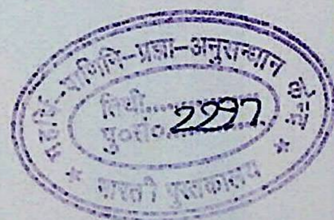
चौधरी मित्रसेन आर्य

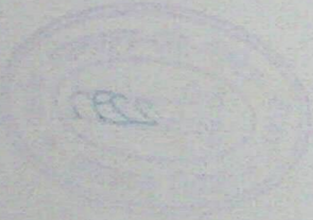


अभिनन्दन ग्रन्थ

वैदिक पथ के पथिक

चौधरी मित्रसेन आर्य





नवजागरण के प्रवर्तक



महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती



वैदिक पथ के पथिक

चौधरी मित्रसेन आर्य

अभिनन्दन ग्रन्थ



ओ३म् - मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे।
ओ३म् - सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्रणनुमो जेतारम पराजितम्।

हे सर्वरक्षक ! सबके सच्चे मित्र परम दयालु ईश्वर! आपकी कृपा से हम प्राणिमात्र से मित्रता का व्यवहार करें। इसी तरह सभी प्राणी भी हमें मित्रता की दृष्टि से देखें।

प्राणिमात्र के सच्चे सखा हे ईश्वर ! हम आपकी रक्षा में सदा फलते-फूलते रहें। हे सर्वत्र विजयशील, सबसे अजेय, सर्वरक्षक ईश्वर ! आपकी छत्रछाया में हम सदा निर्भय रहें, कोई भी दुष्ट और हिंसक हमें कष्ट न दे सके।

. . . .

सबके प्रति करुणाभाव और मित्रता रखने वाले वैदिक पथ के पथिक चौधरी मित्रसेन आर्य का यह अभिनन्दन ग्रन्थ नवयुवकों के लिए प्रेरणादायक तथा पथप्रदर्शक बने। इसी पवित्र भावना से यह ग्रन्थ तैयार किया गया है। उम्मीद है कि सुधीजन इसी भावना से इसे ग्रहण करेंगे।

प्रकाशक :

अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

परम मित्र मानव निर्माण संस्थान

सी-101, न्यू मुलतान नगर

नई दिल्ली - 110056

प्राप्ति स्थल :

53-57, सिन्धु भवन, सेक्टर - 14

रोहतक - 124001 (हरियाणा)

फोन - 01262 - 274481

प्रथम संस्करण

2006

मूल्य : 250 रुपये

डिजाइन एवं कम्पोजिशन : अमरजीत सिंह

मुद्रणालय :

थामसन प्रेस (इंडिया) लि.

बी-315, ओखला, फेज - 1

नई दिल्ली



वैदिक पथ के पथिक

चौधरी मित्रसेन आर्य

जन्म : 15 दिसम्बर, 1931

अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

- ☆ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
- ☆ डॉ. साहिब सिंह वर्मा
- ☆ स्व. स्वामी इन्द्रवेश सरस्वती
- ☆ सुभाष मेहरिया
- ☆ आचार्य बलदेव
- ☆ आचार्य हरिदेव
- ☆ पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा
- ☆ प्रो. उमाकान्त उपाध्याय
- ☆ डॉ. भवानीलाल भारतीय
- ☆ डॉ. धर्मवीर
- ☆ डॉ. बलबीर आचार्य
- ☆ डॉ. नरेश कुमार मिश्र
- ☆ डॉ. सोमदेव शास्त्री
- ☆ गजानन्द आर्य
- ☆ स्वामी रामदेव योगाचार्य
- ☆ स्वामी सत्यपति परिव्राजक
- ☆ स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
- ☆ विक्रम वर्मा
- ☆ आचार्य विजयपाल
- ☆ बृजमोहन लाल मुञ्जाल
- ☆ डॉ. रंगनाथ मिश्र
- ☆ कैप्टन रुद्रसेन
- ☆ राममेहर एडवोकेट
- ☆ डॉ. सुरेन्द्र कुमार
- ☆ डॉ. बलदेव राज मेहरा
- ☆ प्रियव्रत दास
- ☆ बहन कलावती
- ☆ दर्शन कुमार अग्निहोत्री

सम्पादक मण्डल

- ☆ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
- ☆ डॉ. भवानीलाल भारतीय
- ☆ प्रताप सिंह शास्त्री
- ☆ सत्यपाल श्योराण
- ☆ डॉ. कुलबीर छिक्कारा
- ☆ डॉ. सुदर्शन देव आचार्य
- ☆ डॉ विपिन गुप्त
- ☆ बद्रीप्रसाद आर्य

अभिनन्दन ग्रन्थ की आत्मकथा



सरल और सौम्य-स्वभाव के जो व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार तन, मन और धन से समाज सेवा में लगे रहते हैं, परन्तु लोकैषणा से बचने का यत्न करते हैं, बहुधा उनके सम्पर्क में आने वाले सज्जन भी यथार्थ मान-सम्मान देने में उनकी उपेक्षा करते हैं।

उदारमना चौधरी मित्रसेन जी के विषय में भी कुछ ऐसा ही है। ये पिछले अनेक वर्षों से कई संस्थाओं की तन, मन और धन से मदद करते आ रहे हैं। ये प्राय: स्टेज पर भी नहीं बैठते, बोलते भी कम हैं। आमसेना गुरुकुलवासियों ने जब इस बात को महसूस किया, तो विचार किया गया कि इनका परिचय बढ़ना चाहिए ताकि समाज, विशेषकर युवाओं को इनके आदर्श, सूझबूझ वाले कर्मठ और पवित्र व्यक्तित्व से प्रेरणा मिल सके कि किस प्रकार एक सामान्य आर्थिक स्थिति वाला व्यक्ति अपनी सद्भावना, सद्बुद्धि, निष्काम कर्म, अनथक परिश्रम और संयम के बल पर शून्य से शुरू होकर शिखर तक पहुँच सकता है। जीवन में संयम और सात्विकता रखते हुए भी ऐश्वर्य अर्जित किया जा सकता है। यही भावना लेकर शनैः शनैः कुलभूमि के विशेषांक में चौ. मित्रसेन जी का कुछ परिचय देना प्रारम्भ किया गया। आग्रहपूर्वक इनके बारे में जानकारी देने और इनके पिता स्वर्गीय शीशराम जी आर्य का जीवन-चरित लिखने के लिए गुरुकुल का एक अध्यापक एक महीने तक इनके घर पर रहा, परन्तु इस निःस्पृह विभूति ने विशेष जानकारी नहीं दी। मैं समय-समय पर जानकारी देने के लिए इनसे आग्रह करता रहा, तब प्रसंगवश इन्होंने कुछ बातें बतलायी।

'अमृतवाणी' कुलभूमि के वर्ष-2004 के विशेषांक में इनका संक्षिप्त चित्रमय परिचय प्रकाशित किया गया, तो इनके परिजनों ने ही गुरुकुल की पत्रिका में एक व्यक्ति का इतना परिचय देना उचित नहीं समझा। फिर यह विचार हुआ कि नई पीढ़ी को प्रेरणा देने के लिए चौ. मित्रसेन जी का अभिनन्दन ग्रन्थ लिखा जाए। आर्यपथ के पथिक चौ. मित्रसेन जी सदैव सफेद वस्त्र धारण करने वाले एक आदर्श, त्यागी, तपस्वी, संयमी और संन्यासी वृत्ति के दानशील व्यक्ति हैं। अब इनका अधिकतर समय समाज सेवा, विशेषकर शिक्षा क्षेत्र तथा सामाजिक कार्यों में संलग्न संस्थाओं के निर्माण तथा वनवासी,

> उट्ठानवतो सतिमतो सुचिकम्मस्स निसम्मकारिना।
> संयतस्स च धम्म जीविनो अप्पमत्तस्स यसोभिवड्ढति॥
> *-धम्म पद*
>
> जो व्यक्ति उन्नतिशील, अच्छी स्मरण शक्ति वाला, शुभ कर्म करने वाला और विचारपूर्वक काम करने वाला है, उस संयमी व धर्माचरण करने वाले प्रमाद रहित व्यक्ति का यश बढ़ता रहता है।

अनुसूचित जातियों आदि कमजोर वर्गों के विकास में लगा हुआ है। चौ. मित्रसेन जी सामाजिक कार्यों में लगी सभी संस्थाओं को उनकी जरूरत और अपनी सामर्थ्य के अनुसार आर्थिक सहयोग देते हैं, साथ ही उनका मार्गदर्शन भी करते हैं।

चौधरी मित्रसेन जी की एक अन्य विशेषता रही है कि आप अपने आश्रितों की सर्वविध उन्नति की कोशिश करते हुए हर आपत्ति-विपत्ति में उनकी पूर्णतया देखभाल करते हैं। ये अपने यहाँ काम करने वाले को नौकर न कहकर कार्यकर्ता कहते हैं और उन्हें परिवार का सहायक मानते हैं। इस परिवार की तीसरी विशेषता है कि अपने साथ-साथ सगे-सम्बन्धियों, सहयोगियों और ईमानदारी से कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को भी संपन्न बना दिया। विद्वान्, साधु, संन्यासी, त्यागी और तपस्वी महापुरुषों के प्रति इनके परिवार की विशेष श्रद्धा है। कोई व्यक्ति, चाहे किसी भी विचारधारा और धर्म का हो, सभी को पूरा सम्मान और यथाशक्ति सहयोग देते हैं।

हमारे चरित नायक चौ. मित्रसेन जी दान-पुण्य और समाज कल्याण का नया आदर्श स्थापित कर रहे हैं, जो समाज के हर व्यक्ति के लिए एक मिसाल हैं। ये साधु-संन्यासियों, वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों तथा विद्वानों को बिना किसी मांग के स्वेच्छा से आर्थिक सहयोग देते हैं। प्रतिवर्ष सर्दियों में हजारों निर्धनों को कम्बल, कपड़े आदि बांटते हैं। रोगियों को चिकित्सा के लिए आर्थिक सहयोग देते हैं और पुण्य के सभी कार्य करते हैं।

चौ. मित्रसेन आर्य की ईश्वर में अटूट आस्था और श्रद्धा के साथ विश्वासपूर्वक कार्य करना, परीक्षापूर्वक कार्य प्रारम्भ करना और विपत्तियों-बाधाओं के बावजूद पीछे नहीं हटना, सात्विकता, सूझबूझ, दूरदृष्टि और दृढ़ इच्छाशक्ति, चारित्रिक दृढ़ता, संयमन, नियमन, निष्कपट उदारता आदि विशेषताओं से मैं बहुत प्रभावित हुआ।

इनके प्रायः सभी गुणों का उल्लेख आदरणीय विद्वानों ने अपने संस्मरणों में किया है। मेरे आग्रह पर प्रायः सभी विद्वानों ने अपना अमूल्य समय निकाल कर लेख भेजने की कृपा की है। इसके लिए अभिनन्दन-समिति इन विद्वान लेखकों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती है। इस ग्रन्थ को पूरा करने में अनेक विद्वानों का योगदान भुलाया नहीं जा सकता जिनमें डॉ. रामनिवास गुप्त, पूर्व प्राचार्य वैश्य कॉलेज, रोहतक व श्री रोशनलाल शर्मा, समाचार संपादक, हरिभूमि आदि प्रमुख हैं। अभिनन्दन ग्रन्थ समिति इन विद्वानों का आभार प्रकट करती है। आशा है कि आज की भौतिक चकाचौंध में फंसा समाज, खासकर युवा वर्ग इस अभिनन्दन ग्रन्थ से प्रेरणा लेने का यत्न करेगा।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

अभिनन्दन ग्रन्थ समिति के उपाध्यक्ष के उद्गार



वैदिक पथ के पथिक दानवीर चौ. मित्रसेन जी का सम्पूर्ण जीवन आर्यत्व के रंग में रंगा हुआ है। आप भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का महान स्रोत हैं। अभिनन्दन समिति ने आपके व्यक्तित्व, कृतित्व, जन सेवा, समाज सेवा, परोपकार आदि मानवीय गुणों के कारण आपको अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने का निश्चय किया है और इस कार्य का भार उपाध्यक्ष के रूप में मुझ पर भी डाला गया है। ग्रन्थ के सम्पादक मण्डल ने चौ. मित्रसेन जी की संक्षिप्त जीवनी में इनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर रोशनी डालने का प्रयास किया है, जो प्रशंसनीय है। समिति के अध्यक्ष स्वामी धर्मानन्द सरस्वती की प्रार्थना पर अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए जिन महानुभावों ने अपने संस्मरण भेजे हैं, आर्य जगत् के साधु-संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, प्रान्तीय स्तर की आर्य प्रतिनिधि सभाओं और प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली एवं डीएवी संस्थाओं के पदाधिकारियों का उनके सहयोग और सुझावों के लिए मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

मुझे चौ. मित्रसेन जी आर्य के साथ बहुत से सम्मेलनों और गुरुकुलों के वार्षिक उत्सवों पर वनवासी क्षेत्र के जंगलों और पहाड़ों पर जाने का अवसर मिला है। मैं इस पुण्यात्मा द्वारा किए जा रहे परोपकार के कार्यों, शिक्षण संस्थाओं के संचालन, जनहितार्थ और धर्मार्थ अस्पताल आदि कल्याणकारी योजनाओं को देखकर चकित रह गया। जहाँ सामान्य व्यक्ति कार्य करने की सोच भी नहीं सकता, ऐसे जंगलों को आपने कृषि और बागवानी फार्मों में बदल कर रख दिया। इसके साथ ही वनवासी क्षेत्र के लोगों का जीवन स्तर सुधारने के लिए शिक्षण संस्थाएं खोलीं हैं एवं रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। चौ. मित्रसेन जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी जी में एक विशेष गुण है कि ये विद्वानों, अतिथियों और गुणीजनों का सम्मान करते हैं। एक विद्वान् ने सम्भवतः मित्रसेन दम्पति जैसे सद्गृहस्थ को देखकर ही लिखा है :-

गुण ग्रहण का भाव रहे नित, न दृष्टि दोषों पर जाये।
गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ जाये॥

चौधरी साहब के जीवन में परिश्रम की विशेष महत्ता रही है। आप परिश्रम को तप के समान मानते रहे हैं। आज पचहत्तर वर्ष की उम्र में भी आप विभिन्न सामाजिक कार्यों में पूरे

मनोयोग से तल्लीन रहते हैं। आप जैसे व्यक्तित्व के विषय में ही यह श्लोक लिखा गया है:-

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी, दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या, यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्रदोषः॥

अर्थात् उद्योग (परिश्रम) करने वाले सिंह पुरुष को ही जीवन में सुख-सम्पत्ति प्राप्त होती है, भाग्य के सहारे बैठकर रोते रहने से नहीं। चौ. मित्रसेन जी का जीवन भी सबको यही प्रेरणा देता है कि पुरुषार्थी बनो, श्रम करो, स्वयं के लिए ही नहीं, परहित में भी यथाशक्ति लगाओ। जो दूसरों के लिए जीता है, वही सही मायनों में जीना जानता है।

आपका सारा जीवन इस बात का प्रमाण है। यह भी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि चौ. मित्रसेन जी ने समाज की खुशहाली और एकता तथा समाज में धार्मिक भावना जागृत करने के लिए बहुत कुछ किया। इसलिए यह अभिनन्दन ग्रन्थ संक्षेप में उनका जीवन ही नहीं है, अपितु एक युग का इतिहास भी है। एक विद्वान् ने लिखा है :-

जिस देश का बचपन संस्कारी, जिस देश का युवा क्रान्तिकारी।
जिस देश का बुढ़ापा अनुभव भरा, उस देश का इतिहास कभी न मरा॥

ऐसे उज्ज्वल चरित्र के व्यक्ति का अभिनन्दन न केवल उसके सम्मान में वृद्धि करता है वरन् उससे एक ऐसी परम्परा का भी जन्म होता है, जिससे समाज में सद्गुणों, मानवीय मूल्यों और गुणों के प्रति आदर का भाव उत्पन्न होता है, जिसकी आज परम आवश्यकता है।

डॉ. साहिब सिंह
उपाध्यक्ष
अभिनन्दन ग्रन्थ समिति
5, तुगलक लेन, नई दिल्ली

पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन।
स्तोतारस्त इह स्मसि॥ (ऋग्वेद)

हे परम प्रकाशपुञ्ज प्रभो! हमें ऐसा वरदान दो कि हम सदा तुम्हारी आज्ञाओं का पालन करने वाले बने रहें और तुम्हारे स्नेह-पात्र होकर सब प्रकार की हानि से बचे रहें। परम दयालु, तुम्हारे चरणों में हमारी यही आराधना है, इसे स्वीकार करो और हमें वरदान दो कि हम नित्यप्रति सच्चे दिल से तुम्हारी स्तुति करने में रत रहें।



सम्पादकीय

' मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। '

मैं प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखूं।

' यस्य सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद् विजानतः। '

सब प्राणियों को आत्मवत् जानें।

सबका सुख-दुःख अपने सुख-दुःख के समान समझे। प्राणिमात्र का शुभचिन्तन और कल्याण, ऐसी है जिस धर्म की घोषणा, उस सर्वहितकारी, सार्वभौमिक वैदिक धर्म के भक्त हैं-चौ. मित्रसेन आर्य। ये सर्वकल्याणकारी विचारधारा में अनुरक्त हैं। इनके लिए संसारभर के मनुष्य ही नहीं, प्राणिमात्र का हित अभीष्ट है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चौ. मित्रसेन जी ने 'परममित्र मानव निर्माण संस्थान' की स्थापना की है। हम किन शब्दों में प्रभु का धन्यवाद ज्ञापित करें, जिसकी असीम कृपा से लोकसेवा के उद्यान को सुवासित करने वाला चौ. मित्रसेन जी जैसा मनोरम पुष्प मिला, जिसने महर्षि दयानन्द के कार्य की पूर्ति और आर्य समाज की उदात्त सेवा में लगभग 55 वर्षों से अपने आपको लीन कर रखा है। आर्य समाज आपको पाकर खुद को सचमुच धन्य मानता है। निश्चय ही आर्य समाज की वर्तमान और भावी सन्ततियां आपके द्वारा स्थापित उच्च व्यक्तित्व और निःस्पृह समाजसेवा, दानशीलता आदि महान आदर्शों, कार्यों और परम्पराओं से आनन्द विभोर होकर, कृतज्ञ भाव से चिरकालपर्यन्त प्रकाश ग्रहण करेंगी।

चौ.मित्रसेन जी का व्यक्तित्व, कृतित्व, समाजसेवा, राष्ट्रसेवा, जनसेवा और आर्य समाज के प्रति समर्पित है। आपने अपनी सेवाओं से सामान्य लोगों के दिलों में उच्च स्थान प्राप्त करने के साथ-साथ आर्य समाज के प्रान्तीय संगठनों और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के सर्वोच्च संगठन में श्रेष्ठ स्थान हासिल किया है। आप लगभग 20-25 वर्ष से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी के सदस्य और परोपकारिणी सभा, अजमेर के ट्रस्टी सदस्य और वर्तमान में उपप्रधान हैं। आपकी सेवाएं इतनी अधिक और विविध हैं कि उन्हें देखते हुए यह अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करना आवश्यक समझा गया। *भावी पीढ़ी को प्रेरणा देने के लिए यह अभिनन्दन ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसी सभी को उम्मीद है।*

हमारे प्रेरणास्रोत और अभिनन्दनीय श्रद्धेय मित्रसेन जी आर्य में मानवता कूट-

कूट कर भरी हुई है। आप सेवा, सद्भावना, सहयोग और परोपकार के पर्याय हैं। सदाचार और कर्तव्यनिष्ठा के कारण आप सार्वजनिक सेवापथ पर अग्रसर हुए हैं। मित्रसेन जी समाज सुधार और सामाजिक कार्यक्रमों के प्रत्येक क्षेत्र में सामर्थ्य के अनुसार काम कर रहे हैं। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार, शिक्षा-संस्थाओं को बढ़ावा देने, वनवासी क्षेत्रों से अज्ञान, अन्याय और अभावों से उत्पन्न दुःखों का निवारण करने, ग्रामीण जनता को जागृत करने, सामाजिक कुरीतियों के निवारण में आप और आपका परिवार दिन-रात प्रयत्नशील है। उड़ीसा प्रान्त के अन्तिम जिला नवापारा में स्थित गुरुकुल आश्रम, आमसेना की प्रबन्धकर्त्री सभा के चौ. मित्रसेन जी प्रधान हैं। वनवासी क्षेत्र में शिक्षा और ज्ञान का उजाला फैला रहा यह गुरुकुल आपके सहयोग से ही फल-फूल रहा है।

वनवासी क्षेत्रों में रहने वाले अशिक्षित, पिछड़े, अभावग्रस्त लोग, जिन्हें खाने के लिए अन्न, तन ढकने के लिए वस्त्र और रहने के लिए छत तक नसीब नहीं है, वहां जाकर उनके उत्थान के लिए कार्य करना, गुरुकुल खोलना कितना कठिन है, इसे वही जान सकता है जो इस कार्य में लगा हो। निरक्षर जनता में किसी कल्याणकारी आन्दोलन को सफल बनाने में बड़ी चुनौतियां और परेशानियां होती हैं, परन्तु निष्काम कर्मयोगी चौ. मित्रसेन जी और इनकी धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी ने इन सब विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त कर अपना कर्तव्य पालन बड़ी निष्ठा से किया है। साल में एक या दो बार श्रीमती परमेश्वरी देवी वहां जाती हैं और वनवासी क्षेत्र के लोगों और छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों को कम्बल, रजाइयां, चादरें, खाद्य सामग्री, पुस्तकें आदि देकर उनके दुःख-दर्द में साझीदार बनती हैं।

चौ. मित्रसेन जी प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी हैं। आपके व्यक्तित्व में हमें सरलता, गाम्भीर्य, पाण्डित्य, सहजता, बौद्धिकता, कर्मनिष्ठा, एकरूपता आदि गुणों का सम्मिश्रण मिलता है। एक बार जो कोई आपके सम्पर्क में आता है, सदा के लिए आपका होकर रह जाता है। आपका ओज से युक्त

परिवार में अमृत

परिवार के तीन प्रमुख सदस्य हैं- पिता, माता और सन्तान। पिता यदि मस्तिष्क-प्रधान है तो, माता हृदय-प्रधान और सन्तान दोनों में सक्रान्त शरीर प्रधान है। मस्तिष्क में सत्य का निवास है। फलतः पुरुष में सत्य का, व्रत का और धर्म का स्थान है। वही व्रत जब स्त्री-शक्ति में अपना स्थान बना लेता है, तब पुरुष वर कहलाता है। स्त्री समस्त शक्ति संजोकर पुरुष के इस व्रत की, धर्म की रक्षा करती है। इसलिए वह धर्म (व्रत) पत्नी कहलाती है, परन्तु यह तभी सम्भव है जब पुरुष का व्रत स्त्री के हृदय पर आसीन हो जाए, व्याप्त हो जाए, यशस्वी हो जाए।

खिला हुआ चेहरा, सिर पर सफेद पगड़ी, तेजभरी आंखें और 75 वर्ष की आयु में भी लालिमायुक्त मनमोहक व्यक्तित्व आगन्तुक को सहज ही अपना बना लेता है। यदि एक शब्द में कहें तो आप एक भव्य व्यक्तित्व हैं। हरियाणा की ऐसी कोई हलचल नहीं, कोई ऐसा सामाजिक आन्दोलन नहीं, जिसे आपका सहयोग और पथ-प्रदर्शन न मिल रहा हो।

हिन्दी सत्याग्रह में चौ. मित्रसेन जी अन्य आर्य बन्धुओं के साथ जेल गए। अपने पिताश्री के कठोर नियन्त्रण, माता जी की ममतामयी स्नेहशीलता में लालन-पालन और पूर्वजन्म के अच्छे संस्कारों की बदौलत चौ. मित्रसेन जी का जीवन आरम्भ से ही ऐसा बनता गया, जिसे आदर्श व्यक्तित्व और उच्च जीवन कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं। मित्रसेन जी आर्य जीवन के परिशुद्ध पथ के क्रान्तदर्शी पथिक हैं।

आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रति जैसी आस्था और लग्न चौ. मित्रसेन जी की है, वैसा उदाहरण सम्पूर्ण आर्य जगत् में कठिनता से ही मिलेगा। अपने जीवन की 75 वर्ष की दीर्घावधि में आपने समाज सेवा करते हुए तापसभाव से *'मनसा, वाचा, कर्मणा'* अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आर्य विचारधारा का प्रतीक बनने में प्रवृत्त किया। आपने 20 वर्ष की आयु में कारोबार की दुनिया में कदम रखा और उसके बाद कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। सभी जानते हैं कि चौ. मित्रसेन जी दूरद्रष्टा हैं और भविष्य के प्रति आशावादी हैं। आपमें विवेक पर कायम रहने की गजब की शक्ति है और कठिनाइयों का सामना बड़े धैर्य से करते हैं। आपकी दिलचस्पी हर उस वस्तु में है, जो सम्पत्ति अर्जित करे, रोजगार के ज्यादा साधन जुटाए और सबसे बढ़कर, जिसमें मानवमात्र की भलाई निहित हो। उद्योगपति और वैभव सम्पन्न होने के बावजूद समाजवाद अर्थात् वैदिक समाजवाद में आपका पूरा विश्वास है। आपके विचार में समाजवाद का मतलब है - हर किसी को समान अवसर, अधिक रोजगार और बेहतर जीवन स्तर प्रदान करना। समाजवाद का अर्थ गरीबी का समाजीकरण नहीं, अपितु जीवन स्तर ऊंचा करना है।

चौ. मित्रसेन जी के घर के आंगन में वेद मन्दिर और यज्ञशाला है। प्रतिदिन संध्या और यज्ञ हवन करने को आप वैदिक जीवनचर्या का अभिन्न अंग मानते हैं। साथ ही आर्य समाज के 10वें नियम को भी जोड़ते हैं, जो इस प्रकार है- *''सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।''* सामाजिक नियन्त्रण और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में यह आदर्श समन्वय है। महर्षि दयानन्द ने इस नियम में आर्य लोगों की स्वतन्त्रता

और परतन्त्रता की सीमा निर्धारित करके अनुशासन का महत्त्व बताया है।

चौ. मित्रसेन जी उन कार्यप्रणालियों को जानने और सीखने के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं, जिनसे कार्यकुशलता और उत्पादकता में सुधार आ सकता है। आप जन कल्याण के प्रति समर्पित एक सजग उद्योगपति भी हैं। आपकी भावना यही रहती है कि लोग समर्पण भाव से समृद्धि के मार्ग पर चलें। आपकी प्राथमिकता की बात जहाँ तक सामने आई, तो आप समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सहज़ सहयोग चाहते हैं। जीवन में आई चुनौतियों का सामना करने में आप कभी किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं हुए। दूसरों में दोष ढूंढ़ना आपकी आदत नहीं है। आप आशावादी हैं। ईश्वर में विश्वास के साथ आप सदैव आगे बढ़े हैं और इसी दृष्टिकोण ने आपको शून्य से शिखर तक पहुंचाया है।

संशय और निराशा के लिए आपके जीवन और दर्शन में कोई जगह नहीं है। कारोबार और उद्योगों के हित में मित्रसेन जी ने जब भी कोई निर्णय किया, उसे सम्पूर्ण निष्ठा और समर्पण से निभाया। आपके कारोबारी जगत में सब जगह आपका निर्णय सर्वमान्य होता है। आपके कारोबार से जुड़े हजारों कर्मचारी और अधिकारी आपको अपना हितैषी और शुभचिन्तक मानते हैं। आप भी उन्हें अपना सहयोगी मानते हैं। उनके दुःख-दर्द और खुशी में आप उनके साथ खड़े होते हैं। यही कारण है कि आप के कारोबार से जुड़े कर्मचारियों और अधिकारियों ने कभी हड़ताल नहीं की।

आप गम्भीर और सूझबूझ वाले उद्योगपति हैं। आपका सफल जीवन और उदात्त व्यक्तित्व देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। धर्म और तप के बल से मनुष्य जिंदगी में कितना ईमानदार और सफल हो सकता है, इसे जानने के लिए मित्रसेन जी का जीवन एक उदाहरण है। घर और गाँव से दूर रहकर परिवार के भरण-पोषण के लिए धन-ऐश्वर्य कमाना और अपने चरित्र को पवित्र रखना, मित्रसेन जी के दुर्लभ गुण हैं। आप अपने काम खुद करके प्रसन्न होते हैं। आपके जीवन-दर्शन का सूत्र है कि आप न तो सफलताओं से इतने ज्यादा आह्लादित हो गए कि बस अब और नहीं और न ही कठिनाइयों, विपत्तियों तथा बाधाओं के आगे घुटने टेक कर हार गए, बल्कि आप असीम धैर्य, अटूट ईश्वर आस्था और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कदम बढ़ाते गए और उन बुलंदियों को हासिल किया, जिन्हें छूना बड़े से बड़े आदमी के बस की बात नहीं।

चौ. मित्रसेन जी जैसा यशस्वी व्यक्तित्व और कृतित्व बहुत कम देखने को

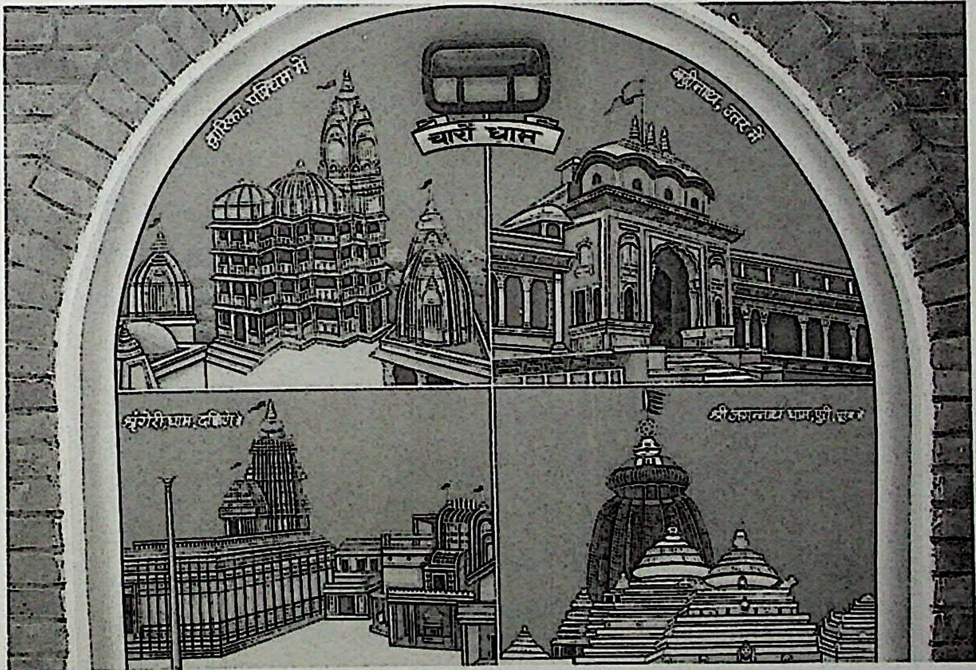
मिलता है। मानव मूल्यों के प्रति आपकी गहरी आस्था है। यही आस्था आपके जीवन का सूत्र और स्वभाव का अभिन्न अंग है। आपका व्यक्तित्व उस पुरातन वैदिक संस्कृति का साकार रूप है, जिसमें मानवमात्र के कल्याण का गुणगान है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

यही आदर्श भावना आपके जीवन की पूंजी है। हमें विश्वास है कि आने वाली पीढ़ियां निष्काम कर्मयोगी, वैदिक पथ के पथिक चौ. मित्रसेन जी आर्य के जीवन से अवश्य प्रेरणा ग्रहण करेंगी।

शुभकामनाओं सहित।

सम्पादक मण्डल



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में चारों धामों का चित्र।

विषय सूची

खण्ड - 2

खंड - 3

खंड – 1

* उदय से उत्थान
* आर्य समाज सेवक के रूप में
* शिक्षा क्षेत्र में योगदान
* जीवन के अनछुए पहलू
* चिंतन
* सर्वमेध यज्ञ



'हर व्यक्ति पुरुषार्थ से सफलता प्राप्त कर सकता है भले ही उसके पास साधन कम या ज्यादा हों।'

- मित्रसेन आर्य

प्रथम अध्याय

उदय से उत्थान

1. उदय से उत्थान

जन्म

समाज व्यक्तियों पर निर्भर करता है। श्रेष्ठ और स्वस्थ समाज के लिए प्रेरक व्यक्तित्वों का होना आवश्यक है। देश की स्वतंत्रता के बाद से सामाजिक अवमूल्यन और नैतिक मूल्यों की गिरावट के चलते ऐसे व्यक्तित्वों के दर्शन दुर्लभ हो गए हैं, जो आदर्श स्थापित कर समाज को दिशा दे सकें। आज समाज में भौतिकवाद का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, चारों ओर अव्यवस्था का आलम है और नैतिकता तार-तार हो रही है। ऐसे में समाज, राज्य और देश को दिशा तथा युवा वर्ग को प्रेरणा देने वाले महापुरुषों का कृतित्व सामने लाना समय की जरूरत है ताकि भ्रमित होता जा रहा युवा वर्ग प्रेरणा ग्रहण कर सके। चौ. मित्रसेन जी ऐसे ही एक दुर्लभ महापुरुष हैं, जो प्रचार और आत्मप्रशंसा से कोसों दूर हैं। आपके परिजनों और मित्रगणों के साथ बिताए समय के आधार पर आपके जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं, व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालने का कुछ प्रयास यहाँ किया जा रहा है।

चौधरी मित्रसेन जी का जन्म वीरभूमि हरियाणा में हिसार जिले के खांडा खेड़ी गाँव के प्रतिष्ठित स्वतंत्रता सेनानी और आर्य समाजी परिवार में 15 दिसम्बर, 1931 को हुआ। आपके पिता चौ. शीशराम जी जहाँ खेती-बाड़ी करते थे, वहीं साथ-साथ आर्य समाज के अवैतनिक भजनोपदेशक भी थे। उन्होंने लगभग 100 वर्ष की आयु भोगी।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

चौ. मित्रसेन जी के दादा श्री शादीराम थे। उनके चाचा चौ. राजमल जैलदार सिन्धु, खांडा खेड़ी, हिसार (अर्थात् वैदिक पथ के पथिक दानवीर आर्य चौ. मित्रसेन सिन्धु का परिवार) में शहीद-ए-आजम सरदार भगतसिंह सिन्धु का बराबर आना-जाना था। सांडर्स वध से पहले सरदार भगतसिंह खांडा खेड़ी आए थे और चौ.राजमल जैलदार से मिले थे।

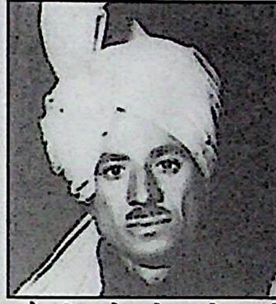
इस परिवार का सरदार भगतसिंह, लाला लाजपतराय, डॉ. रामजीलाल आर्य, सांघी, सहायक सर्जन सिविल अस्पताल, हिसार, सेठ चन्दूलाल तायल, प्रधान आर्य समाज, हिसार, सेठ चूड़ामणि एडवोकेट, हिसार, लाला हरिलाल तायल, बंसगोपाल एडवोकेट, करनाल (मान परिवार के बुजुर्ग), पंडित लखपतराय एडवोकेट, दानवीर सेठ चौ. छाजूराम, कलकत्ता (अब कोलकाता), महात्मा हंसराज संस्थापक डीएवी कालेज, लाहौर, स्वामी श्रद्धानन्द संस्थापक, गुरुकुल कांगड़ी आदि आर्य समाज के उच्चकोटि के महात्माओं और क्रान्तिकारियों से घनिष्ठ सम्बंध था। इस परिवार ने क्रान्तिकारियों को कई बार आश्रय दिया था। सरदार भगतसिंह को सेठ

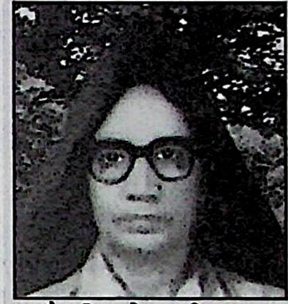
चौ. राजमल जैलदार



अपने समय और समाज के दबंग व्यक्तित्व चौ. राजमल जैलदार खांडाखेड़ी जब घोड़े पर सवार होकर निकलते थे तब लोग महसूस करते थे कि उनका रक्षक आ गया है। यही जैलदार साहब चौ. मित्रसेन जी के परदादा के भाई थे। जैलदार साहब उच्च कोटि के आर्य समाजी नेता थे और उनकी ख्याति दूर-दूर तक थी।

चौ. छाजूराम के पास कलकत्ता भेजने की सारी योजना बनाने वाले चौ. राजमल जैलदार थे। वे अपने समुदाय और समय के दबंग व्यक्ति थे।


चौ. मित्रसेन के बड़े भाई चौ. बलबीर सिंह।


चौ. मित्रसेन की बहन श्रीमती शांति देवी

सिन्धु गोत्र का गाँव खांडा खेड़ी करीब 500 वर्ष पुराना है। यहाँ पहले रांघड़ मुसलमान तथा बंजारे भी रहते थे। कहते हैं कि किसी जमाने में खांडा खेड़ी तहसील होता था। संभवत: वह शेरशाह सूरी का समय होगा। खांडा खेड़ी में बंजारों के आबाद होने का प्रमाण और चिह्न एकमात्र कुआं है, जिसे बंजारों ने खोदा बताते हैं। यह कुआं जीर्ण-शीर्ण हालत में आज भी इतिहास की गवाही दे रहा है।

परिवार के बुजुर्गों का परिचय
चौ. राजमल और श्री शीशराम आर्य

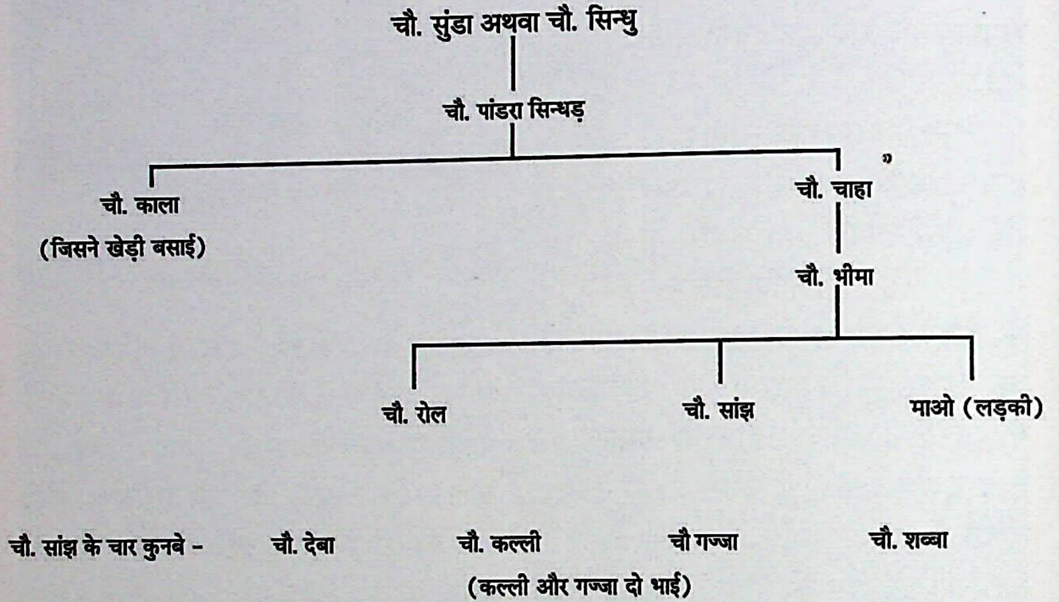
महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा 1875 में लाहौर (पंजाब) में आर्य समाज की स्थापना के बाद हिसार और रोहतक में आर्य समाज की इकाइयां स्थापित हुईं। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय तथा डॉ. रामजीलाल हुड्डा की इन दोनों जगह आर्य समाज की स्थापना में विशेष भूमिका रही। चौ. राजमल जैलदार, उनके परिजनों तथा सहयोगियों ने आर्य समाज, नागोरी गेट में विशेष रुचि ली। वेद प्रचार के क्षेत्र में उन्होंने खांडा खेड़ी में आर्य समाज स्थापित किया। इस आर्य समाज मंदिर के मुख्य द्वार तथा हाल कमरे पर आज भी डॉ. हुड्डा के नाम का पत्थर लगा हुआ है। आर्य समाज (अनार कली) आर्य प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, उस समय आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा 'पंजाब-सिन्ध और ब्लोचिस्तान लाहौर' के नाम से जानी जाती थी। इसकी सूची में आज भी खांडा खेड़ी आर्य समाज का नाम दर्ज है। हमारे चरितनायक मित्रसेन जी उसी आर्य बलिदानी चौ. राजमल के वंशज हैं।

वंशावली से स्पष्ट है कि इस वंश में न केवल हिसार बल्कि पूरे हरियाणा में ख्याति प्राप्त शख्सियतें चौ. राजमल जैलदार और श्री शीशराम आर्य हुए, जिन्होंने तत्कालीन ग्रामीण समाज का जहाँ नेतृत्व किया, वहीं उपकार भी किया। इन विभूतियों को आर्य समाज का आधार स्तंभ माना जाता है।

चौ. राजमल जैलदार जब जनता के बीच जाते थे, तब लोग ऐसा अनुभव करते थे कि मानो उनका रक्षक आ गया है। सब तरह की सहायता के लिए उनका द्वार हमेशा सबके लिए खुला रहता था। गाँव में आने वाले साधु, संन्यासी, विद्वान्, आर्य, भजनोपदेशक, देशभक्त और क्रान्तिकारी अथवा सरकारी

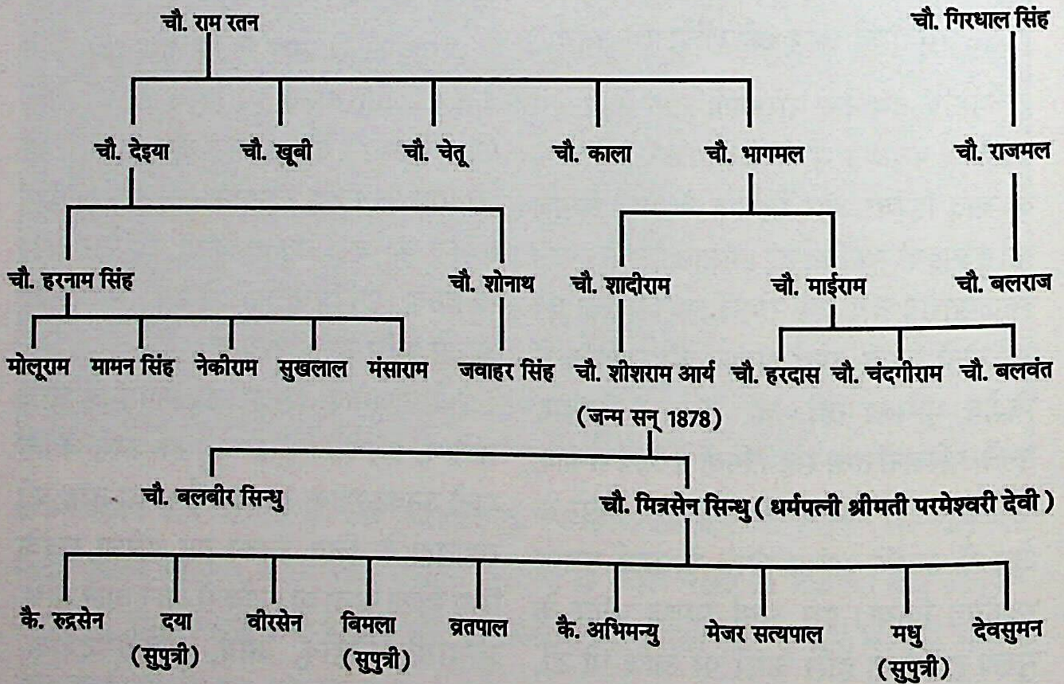
सिन्धु वंशावली

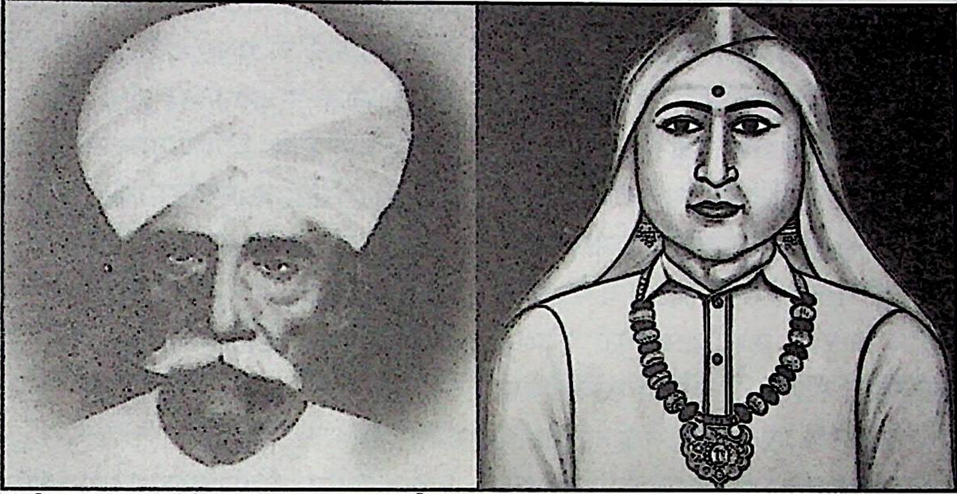
सिन्धु से सिन्धड़ (संस्थापक गांव खांडा खेड़ी, हिसार)



चौ. सांझ के चार कुनबे - चौ. देबा चौ. कल्ली चौ गज्जा चौ. शव्बा

(कल्ली और गज्जा दो भाई)





श्री मित्रसेन आर्य के पिता श्री शीशराम आर्य और पूजनीया माता श्रीमती जीवनी देवी।

अधिकारी कोई भी हो, उन्हीं के मेहमान होते थे। उन्होंने गाँव में आर्य समाज मन्दिर का निर्माण कराया। आपने अपने मित्र दानवीर चौ. छाजूराम (अलखपुरा) कलकत्ता से कहकर आर्य कन्या पाठशाला का निर्माण कराया। सरकार पर दबाव डालकर खांडा खेड़ी में एक बड़ा डाकघर स्थापित कराया। यहाँ से 40 गाँवों की डाक वितरित होती थी।

उस अंग्रेजी युग में गाँव में डिस्पेंसरी खुलवाई, जहाँ सरकारी डॉक्टर उपलब्ध होता था। जैलदार राजमल इतने दूरदर्शी थे कि उन्होंने गाँव में एंग्लो मिडल स्कूल बनवाया तथा छात्रावास भी स्थापित किया। इस स्कूल में अंग्रेजी पढ़ने के लिए बच्चे दूर-दूर से आते थे। इसके साथ ही उन्होंने गाँव में आर्य समाज का प्रचार भी जारी रखा ताकि लोग अंग्रेजी शिक्षा के साथ-साथ अपनी वैदिक संस्कृति और परंपराओं से भी अवगत रहें।

चौ. राजमल जैलदार के समाज सुधार कार्यों को विरोधी सहन नहीं कर पा रहे थे। इसलिए वे उनके खिलाफ साजिशें रचते रहते थे। इसके लिए उन्होंने सांघी के मुगला डाकू को अपने साथ मिला लिया। उसने इन लोगों के बहकावे में आकर 1930 में चौ. राजमल की गोली मारकर हत्या कर दी। आर्य विरोधियों के उकसाने पर मुगला डाकू ने कई और आर्य विचारकों तथा प्रचारकों की भी हत्या की थी। चौ. राजमल जैलदार से प्रेरणा लेकर श्री शीशराम जी ने भी अपने कुल का नाम रोशन किया। इनका जन्म सन् 1878 में चौ. शादीराम के घर हुआ था। अपने दादा चौ. राजमल की प्रेरणा से चौ. शीशराम आर्य भी वैदिक पथ के पथिक बने। अपने पिता की इकलौती सन्तान शीशराम मधुर कंठ के मालिक थे। शीशराम जी प्रारम्भ से ही रामायण और गीता के प्रेमी हो गए थे और इनसे जुड़ी गाथाओं का गायन करते थे। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा गाँव से ही हासिल की। बाद में रोहतक के स्कूल में

दाखिल कराया गया। उस समय बच्चों को बड़ी आयु में ही स्कूल भेजने का प्रचलन था, इसलिए शीशराम जी को भी बड़ी आयु में ही विद्यालय में भेजा गया।

आप कुशाग्र बुद्धि थे, इस कारण शीघ्र ही आपने मिडल की परीक्षा पास कर ली। मिडल से आगे की पढ़ाई के समय विद्यालय में बालक शीशराम के साथ एक घटना घटी, जिससे उनकी प्रबल धार्मिक आस्था और गलत बात सहन न करने की प्रवृत्ति का पता चलता है। एक बार विद्यालय के मौलवी शिक्षक ने भगवान राम और सीता माता को लेकर कोई प्रतिकूल टिप्पणी कर दी, बालक शीशराम को यह नागवार गुजरी। उन्होंने विरोध किया तो मौलवी ने शीशराम के साथ और बदसलूकी की। इससे शीशराम जी भी जोश में आ गए और मौलवी से उलझ पड़े। शीशराम ने ऐसे अध्यापक के पास पढ़ना अनुचित समझा, जो हमारे महापुरुषों और इतिहास पुरुषों के बारे में प्रतिकूल टिप्पणियां करता हो, इसलिए आपने स्कूल छोड़ दिया।

आपने परिश्रम और कुशाग्र बुद्धि के कारण हिन्दी, उर्दू, फारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया और धार्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय करने लगे। इसी बीच आपका परिवार हिसार आर्य समाज के संस्थापक लाला लाजपतराय (आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार की स्थापना सन् 1886), महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द आदि आर्य विद्वानों के सम्पर्क में आया। इससे सभी में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की तड़फ जाग उठी। अतः चौ. शीशराम जी वैदिक विचारधारा और सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार में जुट गए। इसके लिए आप भजन गाने लगे और उपदेश करने लगे। दिन में आप और आपके साथी खेती-बाड़ी करते और शाम को आसपास के गाँवों में जाकर आर्य समाज का प्रचार करते थे। आपके साथ दो-चार लठैत भी होते थे, क्योंकि तब पौराणिक लोग आर्य समाज के विरोधी थे। इसलिए झगड़े होने की आशंका बनी रहती थी।

वेद कहता है-**'यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरत सह'** अर्थात् समाज सेवा और धर्म के प्रचार के लिए पांडित्य और क्षात्र शक्ति-दोनों भावनाओं का होना जरूरी होता है। श्री शीशराम जी के परिवार में ये दोनों भावनाएं थीं। आपका परिवार बड़ा था। निर्धन परिवारों के बालकों को पढ़ाने के लिए आपने अपने घर में ही विद्यालय खोल दिया था। उस युग में कमजोर वर्ग के लोगों को शिक्षा देना, वेदमंत्रों का उच्चारण सिखाना, गायत्री मंत्र और यज्ञोपवीत का अधिकार देना चौ. शीशराम आर्य का एक सूत्री कार्यक्रम था।

आपका यह पुनीत और क्रान्तिकारी कार्यक्रम पूरे क्षेत्र में वैचारिक क्रान्ति तो ला ही रहा था, लेकिन साथ ही साथ पौराणिक जगत और ब्राह्मण आदि उच्च्व जातियों के लोगों के लिए भी चुनौती से कम नहीं था। इससे कतिपय रूढ़िवादी ब्राह्मण और अन्य लोग जल-भुन गए, लेकिन श्री शीशराम जी ने किसी विरोध की परवाह नहीं की और घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे।

इनके प्रचार कार्यों की सुगन्ध प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, लाहौर तक पहुंची। उन दिनों डॉ. रामजीलाल आर्य, सांघी का कार्यक्षेत्र हिसार था। उन्होंने अपनी 40 वर्ष की दैनिक डायरियों में चौ. मातुराम आर्य जैलदार, सांघी, चौ. राजमल् जैलदार, खांडा खेड़ी, चौ. शीशराम आर्य, खांडा खेड़ी, लाला लाजपतराय, सेठ चन्दूलाल तायल, पं. लखपतराय, पं. नानकचन्द, डॉ.धनीराम, लाला हरिलाल तायल, चौ. छोटूराम और चौ. छाजूराम (कलकत्ता) आदि आर्य महापुरुषों का यशोगान कर रखा है। उन्होंने अपनी डायरियों में श्री शीशराम जी को आर्य समाज के लिए विशेषकर हरियाणा के हिसार क्षेत्र के लिए नींव की मजबूत कड़ी बताया है।

चौ. शीशराम आर्य कई बार डॉ. रामजीलाल, पं. लखपतराय, बाबू चूड़ामणि आदि के साथ भी वेद प्रचारार्थ जाते थे। उन दिनों अनेक बार आर्य समाज, हिसार के प्रधान सेठ चन्दूलाल तायल की ऊंटगाड़ी का भी प्रचारार्थ प्रयोग किया जाता था। प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, लाहौर ने चौ. शीशराम आर्य की ख्याति सुनकर इन्हें 40 रुपये मासिक वेतन पर भजनोपदेशक नियुक्त कर दिया। तब चौ. शीशराम जी के पिता श्री शादीराम जी आर्य ने वेतन लेकर प्रचार करने से मना किया और कहा कि बिना पैसे लिए ही अधिक से अधिक प्रचार करो। धर्म और समाज कार्य के नाम पर पैसे लेने से उन्होंने साफ-साफ इन्कार कर दिया। जहाँ-जहाँ आर्य समाज का प्रचार करने हेतु जाने का आदेश आता, वहाँ-वहाँ चौ. शीशराम जी अपने खर्चे पर जाते थे। एक किसान की इससे बड़ी महानता और क्या हो सकती है। चौ. शीशराम जी लंबे समय तक घूम-घूम कर आर्य समाज के शुद्ध विचारों का प्रचार करते रहे। आप आजीवन पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के निःशुल्क प्रचारक रहे।

वैदिक संस्कारों का प्रभाव

श्री शीशराम जी आर्य ने हैदराबाद में सत्याग्रह में शामिल होने के लिए खांडा खेड़ी और आसपास के गाँवों से एक सौ लोगों का जत्था भेजा था। श्री शीशराम जी वेदों के पक्के अनुयायी थे। भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण आपके आदर्श थे। आपने आजीवन अपने हाथों से यज्ञोपवीत बनाए और इन्हें निःशुल्क बांटा। अपने एक सौ वर्षों के जीवन में आप अनेकानेक विद्वानों और मनीषियों के सम्पर्क में आए और उनसे जहाँ जीवन की पद्धति सीखी वहीं शास्त्रों का गूढ़ ज्ञान भी अर्जित किया। सन् 1940 में काला मोतिया के असर से आपके नेत्रों की ज्योति चली गई। फिर भी आपने हार नहीं मानी और शेष जीवन में अपनी शक्ति, सामर्थ्य और श्रद्धा के अनुसार निरंतर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। 7 फरवरी, 1978 को आप अपने सांसारिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए उस अनंत प्रभु के चरणों में सदा के लिए लीन हो गए।

पुण्यात्मा शीशराम जी ने अपने परिवार को हर तरह से सबल, सक्षम और सुयोग्य बनाया। चूंकि आपके सुपुत्र मित्रसेन जी

कारोबार के सिलसिले में अकसर बाहर रहते थे, ऐसे में अपने पौत्रों की सार-संभाल और उन्हें संस्कारित करने का पूरा दायित्व श्री शीशराम जी पर आ गया। अपने इस पारिवारिक दायित्व को निभाने में भी आप पूरी तरह सफल रहे, क्योंकि आपके सभी पौत्र संस्कारयुक्त और सुयोग्य निकले।

चौधरी शीशराम जी 'सत्यार्थ प्रकाश' और 'संस्कार विधि' की गहन व्याख्या में माहिर थे। आप मानते थे कि महर्षि दयानन्द का 'सत्यार्थ प्रकाश' सैद्धांतिक ग्रन्थ है जबकि 'संस्कार विधि' व्यावहारिक है। चौ. शीशराम जी आर्य ने महर्षि दयानन्द की कल्पना के अनुरूप अपने परिवार का निर्माण करके हमारे चरितनायक चौ. मित्रसेन आर्य और अपने पौत्रों को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त और संस्कार देकर वैदिक पथ का आदर्श पथिक बनाया। शीशराम जी परिवार के सभी सदस्यों को प्रतिदिन महर्षि के सिद्धान्तों की शिक्षा देते और रामायण, गीता तथा महापुरुषों के जीवन के प्रेरणादायक दृष्टांत सुनाते, आर्य समाज के कार्यों और उसकी जरूरतों से परिचित कराते ताकि वे जीवन और समाज की सचाई को जानकर गुणी नागरिक बन सकें। श्री शीशराम जी कितने जागरूक थे और उनकी सोच कितनी सही और सार्थक थी, इसका पता चौ. मित्रसेन जी और उनकी सन्तति के व्यक्तित्वों और कृतित्वों को देखकर चलता है।

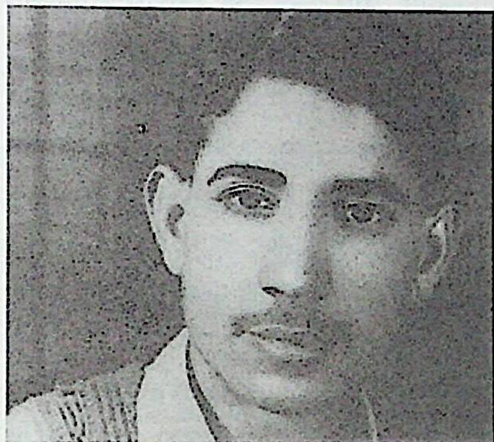
तत्कालीन परंपरा के अनुसार शीशराम जी की शादी कम आयु में हो गई थी। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती जीवनी देवी हिसार जिले के सिसाय गाँव के सिहाग गोत्र से थीं। आपके दो बेटे और एक बेटी हुई। आपके बड़े बेटे बलबीर सिंह और बेटी शांति देवी का स्वर्गवास हो गया। आपने अपनी सन्तानों को हर तरह से सुयोग्य बनाया। माता-पिता की शिक्षाओं का असर है कि श्री मित्रसेन जी वैदिक पथ के पथिक बने।

चौ. मित्रसेन जी के रोहतक स्थित सिन्धु भवन में प्रवेश करते ही मन को अद्भुत शांति मिलती है। भव्य भवन के प्रांगण में बनी यज्ञशाला और वेद मंदिर को देखकर हृदय भक्तिभाव से गद्गद हो जाता है। इसे देखकर इस बात का प्रमाण मिलता है कि स्वर्गीय शीशराम आर्य ने अपनी सन्तति में भारतीय और आर्य संस्कृति के विचारों को किस कदर कूट-कूट कर भरा है। यह उनके दिए संस्कारों का ही असर है कि यह परिवार वैदिक संस्कारों को पल्लवित और पोषित करते हुए अपने रोजमर्रा के जीवन में अपनाए हुए है। चौ. मित्रसेन जी की स्नेहमयी माता श्रीमती जीवनी देवी ने अपनी सन्तानों को उत्तम संस्कारों से युक्त बनाया। आपके पिता श्री शीशराम जी के प्रयासों ने तो सोने पर सुहागे का काम किया। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरूप एक दिव्य आत्मा समाज के सामने आई, जिसने अपने पावन कृतित्व से समाज को मोह लिया।

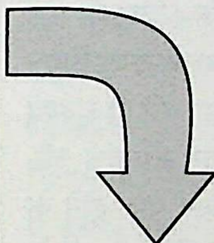
बाल्यकाल

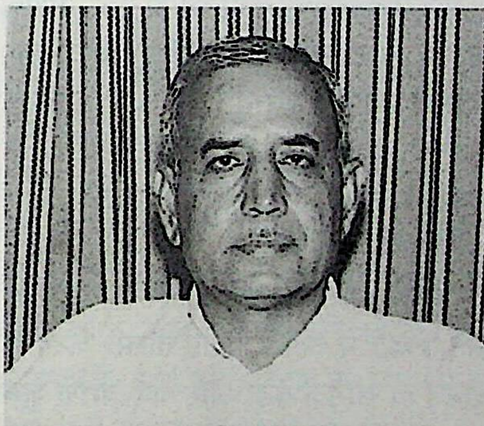
खांडा खेड़ी में आर्य समाज मंदिर की स्थापना सन् 1930 में मित्रसेन जी के जन्म से एक वर्ष पहले हो गई थी। आपके गाँव में

जीवन चक्र



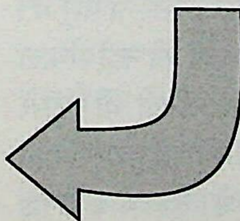
तरुणावस्था





युवावस्था





प्रौढ़ावस्था

1913 में ही स्कूल खुल गया था, जबकि तब बहुत दूर-दूर तक स्कूल नहीं होते थे। इसलिए दूर-दूर के गाँवों के बच्चे पढ़ने के लिए खांडा खेड़ी आते थे। मित्रसेन जी का बाल्यकाल (सन् 1931-40) खुशहाली में बीता। संयुक्त परिवार था, अच्छी खेती थी और साहुकारी का व्यवसाय था। सब-कुछ ठीक चल रहा था कि सन् 1940 में आपके (दादा के भाई के बेटे) चाचा हरदास और बलवन्त का निधन हो गया और उन्हीं दिनों आप की दो बुआएं विधवा हो गईं। इसी दौरान दीनबंधु चौ. छोटूराम का कर्जा माफी बिल पास होने के कारण साहुकारी का काम बंद हो गया। आपके बड़े बुजुर्गों ने सारे बही-खातों को जला दिया, जिससे आपके परिवार को भारी आर्थिक नुकसान हुआ। इस दौरान काला मोतिया के प्रकोप से आपके पिता श्री शीशराम की आंखों की रोशनी चली गई।

इन्हीं संकटों के बीच बालक मित्रसेन को सन् 1940 में अपनी पढ़ाई तीसरी कक्षा के दौरान ही छोड़नी पड़ी और गाएं चरानी शुरू कर दीं। घर में गायों समेत आठ-नौ पशु थे। बालक मित्रसेन शुरू में पशुओं को नहीं संभाल पाता था। गाएं इधर-उधर भागती थीं। दूसरे गोपालक नन्हे मित्रसेन को छोड़कर अपने पशुओं को आगे ले जाते थे। शुरू में कठिनाई के बाद धीरे-धीरे गाएं आदि मवेशी मित्रसेन से हिल-मिल गए। इन्होंने सब मवेशियों के नाम रख लिए थे। पुकारने पर गाएं अपना नाम सुनते ही दौड़कर आ जाती थीं। गायों का मित्रसेन ज़ी के प्रति इस लगाव का कारण था-इनके जीवन की सात्विकता, पवित्रता और ईश्वर के प्रति अटूट आस्था। कहते हैं कि निरीह और मूक जानवर भी आदमी की सज्जनता और स्नेह को महसूस करते हैं। मित्रसेन जी के मामले में भी यही हुआ।

तीव्र बुद्धि के मालिक मित्रसेन जी की धार्मिक रुचि, संयम, व्यायाम, प्राणायाम तथा वैदिक संस्कारों के प्रभाव ने सोने पर सुहागे का काम किया। चूंकि आपकी पढ़ने में रुचि थी, इसलिए घर पर ही स्वाध्याय करते रहे। 'होनहार बिरबान के होत चीकने पात' वाली कहावत मित्रसेन जी पर बालपन से ही पूर्णतया चरितार्थ होती रही है। मास्टर दीवान सिंह परिवार में आपके भाई थे। वे रात को घर में बच्चों को निःशुल्क पढ़ाते थे। आप भी उनके पास जाकर पढ़ते। इसका यह फायदा हुआ कि आपने स्कूल में जो कुछ सीखा था, वह आपके दिमाग में पूरी तरह बैठता चला गया। गोपालन के अलावा आपने खेती-बाड़ी भी शुरू कर दी। आप कठोर परिश्रम करते-करते धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे। आपके बड़े भाई चौ.बलबीर सिंह खेती-बाड़ी कार्य में आपका हाथ बंटाते थे, लेकिन लाला लाजपत राय और अन्य क्रांन्तिकारियों की संगत के कारण वे कई-कई दिन घर से बाहर रहते थे। इसलिए बचपन से ही घर का भार आपके कोमल कन्धों पर आ गया था। सन् 1948 तक सब कुछ इसी तरह चलता रहा।

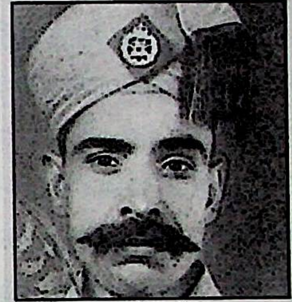
युवावस्था

सन् 1948 में आपकी शादी जींद जिले के

गाँव जुलानी (हरफूल जाट जुलानी वाले का गाँव) के सहारण गोत्र के किसान श्री अमृत सिंह की सुपुत्री सौभाग्यवती परमेश्वरी देवी के साथ हुई। चौ. मित्रसेन जी के पिता श्री शीशराम तथा चाचा श्री चंदगीराम आपको इंजीनियर बनाना चाहते थे। आपकी कुशाग्र बुद्धि देखकर वे कहते थे-बेटा, तुझे हवाई जहाजों का इंजीनियर बनाएंगे। इन दोनों बुजुर्गों का मत था कि आर्थिक अभाव दूर करने के लिए आप मर्यादा में रहते हुए कुछ काम करके दिखाओ। इसी सकारात्मक सोच के चलते श्री चंदगीराम आपको रोहतक लेकर आए। वे रोहतक में पुलिस में थानेदार थे। अपनी ईमानदारी, सच्चाई, योग्यता, अनुशासन और धर्मपरायणता के कारण उनकी ख्याति थी। पुलिस कार्यों के अलावा उनकी अकाउंट्स में भी काफी रुचि थी।

उन्होंने अपने सम्पर्क से सन् 1948 में आपको रोहतक में श्री कर्मचन्द तथा श्री रामप्रसाद सैनी की वर्कशॉप में मोटर मैकेनिक का काम सीखने के लिए भेजना शुरू कर दिया। कोई दो माह बाद वह वर्कशॉप बंद हो गई, तब आपको श्री दरबारी लाल मिस्त्री की वर्कशॉप में भेज दिया गया। इस वर्कशॉप में महाशय रामबख्श सैनी, धनसिंह लुहार सुनारियां, चन्दगी राम सैनी और शीशराम सैनी हिस्सेदार थे। वर्कशॉप से लौटने के बाद चाचा चंदगीराम आपको नित्य नैतिकता की बातें बताते, ईमानदारी, मानव मूल्यों और सांसारिकता का ज्ञान देते थे। इसके अलावा अतिथि सत्कार और शिष्टाचार की व्यावहारिक बातें भी समझाते। चाचा जी आपके घर लौटने के बाद ही आपके साथ भोजन करते थे।

कभी-कभार देर होने पर स्वयं ही आपको लेने के लिए वर्कशॉप की ओर चल देते थे। उन्हें हर वक्त चौ. मित्रसेन की चिंता रहती थी। वे उनकी देख-भाल में कोई कमी नहीं रखना चाहते थे। लगभग दो माह बाद दरबारी लाल की कार्यशैली के कारण वह वर्कशॉप भी बंद हो गई। चौ. मित्रसेन ने जब अपने चाचा जी से कहा कि वह वर्कशॉप भी बंद हो गई, तो उन्होंने मजाक-मजाक में कहा कि तुम जहाँ जाते हो, वही वर्कशॉप बंद हो जाती है, क्या बात है ? इस पर आपने कुछ कहा नहीं, बस मुस्करा कर रह गए।


चौ. मित्रसेन के चाचा श्री चंदगीराम

सन् 1949 में श्री धनसिंह लुहार, श्री चन्दगीराम सैनी, श्री शीशराम सैनी और श्री रामबख्श सैनी ने अपनी अलग वर्कशॉप खोल ली। इस वर्कशॉप में मोटर मैकेनिक, इलेक्ट्रिक वैल्डिंग, लेथ मशीन आदि का कार्य होता था। इसी दौरान आपके चाचा चौ.चंदगीराम का तबादला रोहतक से गुड़गाँव हो गया। वह आपको भी गुड़गाँव ले जाना चाहते थे, लेकिन महाशय रामबख्श और श्री चंदगीराम

सैनी ने कहा कि युवा मित्रसेन में सीखने की ललक और योग्यता है तथा छह-आठ महीने में काबिल कारीगर बन जाएगा। इसलिए इसे साथ न ले जाओ। चाचा चन्दगी राम को भतीजे से अत्यधिक स्नेह था। श्री रामबख्श आदि ने विश्वास दिलाया कि वे मित्रसेन की आपसे भी ज्यादा देखभाल करेंगे। इसके बाद चाचा जी ने आपको रोहतक में ही रहने की अनुमति दे दी। रामबख्श सैनी ने जुलाई, 1949 में आपको आर्य समाज, झज्जर रोड का सदस्य बनवाया। आज भी उस शख्स का जिक्र चलते ही चौ. मित्रसेन जी का चेहरा खिल उठता है और वे रामबख्श की प्रशंसा करते-करते जैसे यादों में खो जाते हैं।

यह आपके संस्कारों, संयम, स्वाध्याय, आत्म विश्वास और दृढ़ इच्छाशक्ति का ही प्रतिफल था कि रोहतक में नितांत अकेले रहते हुए भी कोई बुरी आदत आपको छू तक नहीं पाई, नहीं तो 18-19 साल का नवयुवक कब, कहाँ और कैसे भटक जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। गाँव में आपका भाईचारा व्यंग्य करता था कि लोहार का काम करता है, हमारे खानदान को बदनाम करेगा।

इस दौरान सन् 1949 में सोनीपत में एटलस साइकिल की फैक्टरी लगी। वहाँ भी आपने दो माह कार्य किया। इसके बाद रोहतक में सर छोटूराम की कोठी के सामने साइकिल के पुर्जे बनाने की फैक्टरी में भी छह महीने तक कार्य किया। इन पुर्जों को सोनीपत एटलस में भेजा जाता था, चूंकि आपने ठान रखी थी कि स्वयं का व्यवसाय करना है, इसलिए आपने नौकरी को कभी महत्त्व नहीं दिया। काम में महारत हासिल करने के लिए आपने अलग-अलग जगह नौकरी की। आपने जहाँ भी काम सीखा पूरी निष्ठा और ईमानदारी से सीखा।

बिजली घर में नौकरी

हिसार के एक सेठ देवराज थे। उनके रोहतक, भिवानी, हांसी, हिसार और इलाहाबाद में बिजली घर थे। आपने उनके रोहतक वाले बिजली घर में सन् 1950 में नौकरी शुरू कर दी। यहाँ जनरेटरों के पुर्जे बनाने और विदेशी मशीनों को ठीक करने की वर्कशॉप थी। अब तक मित्रसेन जी अपने काम में माहिर हो गए थे और रोहतक में आपको अच्छा कारीगर माना जाने लगा था, लेकिन बिजली घर में जाकर देखा तो आपको लगा कि अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है। वहाँ सरदार भगत सिंह वर्कशॉप के टैक्नीकल इंचार्ज थे। वे भी सच्चे-पक्के व्यक्ति थे। आपकी कुशाग्र बुद्धि, सात्विक रहन-सहन और काम की महारत और लगन देखकर सरदार जी को आपसे विशेष स्नेह हो गया। आप समय के पाबंद थे, इसलिए निर्धारित समय से पहले वर्कशॉप पहुँच जाते थे। सरदार जी इससे भी बहुत प्रभावित थे।

आपने सन् 1937 से लेकर 40 तक अपने गाँव में उर्दू की पढ़ाई की थी। फिर सन् 1948 में रोहतक आने के बाद आपने हिन्दी लिखनी-पढ़नी शुरू कर दी। आप में इतनी लगन थी

कि वर्कशॉप में भोजनावकाश या जब भी समय मिलता हिन्दी लिखने का अभ्यास करते थे। हिन्दी सीखकर आपने आर्य समाज की पुस्तकें पढ़नी शुरू कर दीं। इसके बाद आपने कर्तव्य दर्पण, सत्यार्थ प्रकाश, रामायण तथा महाभारत के टीका-ग्रंथ पढ़ डाले। आपके जीवन और विचारों पर इन ग्रन्थों की बातों का गहन असर हुआ। आपने इन ग्रंथों के दर्शन पर आधारित व्यावहारिक जिंदगी जीने का लक्ष्य सामने रखकर जीवन यात्रा शुरू की। इसके बाद आप और अधिक सादगी से रहने लगे। समय के साथ-साथ आपने संस्कृत और अंग्रेजी का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया।

आपके सादा जीवन और उच्च विचारों तथा स्वाध्याय को देखकर बिजली घर के दूसरे युवक आपसे द्वेष और ईर्ष्या की भावना रखने लगे। कोई आपको पागल कहता, तो कोई भगत जी। आपका जीवन और दृष्टि बाकी साथियों से अलग ही थी। स्वाध्याय, मनन, आचरण, संध्या आदि की जो राह आपने युवावस्था में पकड़ी थी, उस पर आज भी कायम हैं। तर्क-वितर्क में साथी आपके सामने कहीं नहीं ठहरते थे।

आर्य समाज के विचारों की से आप इतने उन्नत हो चुके थे कि टोना-टोटका तथा भूत-प्रेत की कोई बात आप पर असर नहीं कर पाती। आप धनसिंह की वर्कशॉप से जब बिजलीघर ड्यूटी पर जाते थे तो रास्ते में जंगल तथा श्मशानघाट पड़ता था। आपके दूसरे सहकर्मी कहते थे कि वहां प्रेत आत्माएं भटकती हैं और भूत रहते हैं, तब आप उन्हें सहज भाव से तर्क देकर शांत कर देते कि भूत-प्रेतों का कोई अस्तित्व नहीं होता। कई बार वे आपको चिढ़ाने के लिए मांस तथा अंडे खाने की बातें करते, इस पर आप उनको समझाते कि ये बुरी चीजें हैं। मांस किसी जीव की हत्या के बाद मिलता है तथा अंडे किसी जीव के अजन्मे बच्चे होते हैं, इसलिए यह सब ठीक नहीं है।

आपने अपने सहकर्मियों को बताया कि आप जिन अंडों को खाने की बात करते हैं, वे भी किसी के बच्चे हैं। अंडे खाने की बजाय अपने बच्चों को खाने की सोचो, तब तुम्हें इस तकलीफ का पता चलेगा। आपके साथियों ने इस बात को तोड़-मरोड़ कर वर्कशॉप इंचार्ज सरदार भगतसिंह के पास जाकर शिकायत कर दी कि मित्रसेन आपको बच्चे खाने वाला कह रहा है। भगत सिंह ने सभी को बुलाया और आपसे पूछा कि तुम्हारी इनसे क्या बातचीत हुई है, इस पर आपने वही बात दोहरा दीं। यह सुनकर सरदार जी हंसे और आपके सहकर्मियों से कहा कि तुम ईर्ष्या बंद करो। मित्रसेन ठीक है और तुम सब गलत। इस घटना के 2-3 माह बाद सरदार भगत सिंह ने मित्रसेन को अकेले बुलाया और कहा कि मेरे कोई बच्चा नहीं, तुम मेरे बेटे बन जाओ। इस पर आपने कहा कि मैं आपसे काम सीख रहा हूं ,तो आपका बेटा ही हूं। वे फिर बोले, तुम सिख बन जाओ। इस पर आपने सहज भाव से कहा कि मैं सिख नहीं बन सकता, क्योंकि

आप मांसाहार करते हैं। इस बात पर सरदार जी खुश हुए कि कितना बहादुर लड़का है, सच्चाई कहने में कोई झिझक, भय और देरी नहीं की। ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी हार नहीं सकता और न ही कोई उसे नुकसान पहुँचा सकता है। सच में, सरदार जी का आकलन कितना सही और सटीक था, इसका सुबूत चौ. मित्रसेन जी की जीवन यात्रा और सफलता से मिलता है।

आपकी इंजीनियरिंग के क्षेत्र में वास्तविक उन्नति उसी बिजली घर में काम करते हुए हुई। वहाँ आपने सन् 1950 से लेकर 53 तक लगभग साढ़े तीन वर्ष तक कार्य किया। बिजली घर में नौकरी के वक्त रात को आप धनसिंह की वर्कशॉप में ही रहते थे और वहीं खाना बनाते थे। बिजली घर में सुबह 8 से शाम 5 बजे तक ड्यूटी पर जाते। वर्कशॉप में आकर तकनीकी कार्य में दक्षता के लिए कड़ा अभ्यास करते। इस वक्त तक आप जहाँ वैचारिक दृष्टि से परिपक्व और उन्नत हो चुके थे, वहीं तकनीकी दृष्टि से भी इतने सक्षम हो गए थे कि लेथ मशीन और मोटर मैकेनिक के रूप में आपकी चर्चा होने लग गई थी।

उदयपुर जाना

रोहतक के श्री वेदप्रकाश नन्दा की रोहतक- दिल्ली ट्रांसपोर्ट नाम की कंपनी थी। धीरे-धीरे उनकी बसें राजस्थान में उदयपुर तक जाने लगी। श्री नन्दा ने इसके चलते उदयपुर में एक बड़ी वर्कशॉप लगाई, जिसमें लेथ मशीनें आदि भी थीं। उस वर्कशॉप का नाम उदयपुर गैरिज रखा गया था। वर्कशॉप के लिए स्टाफ रोहतक से भेजा जाना था, चूंकि लेथ मैकेनिक के रूप में आपका नाम चर्चित था, इसलिए श्री नन्दा ने आपके सामने उदयपुर जाने का प्रस्ताव रखा, जिसे आपने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस तरह सन् 1954 के शुरू में आप उदयपुर चले गए। उस वक्त आपका मासिक वेतन 150 रुपये था, जो बाद में बढ़कर 175 रुपये हो गया। उन दिनों इतना वेतन काफी था, क्योंकि तब 100 रुपये में एक एकड़ जमीन आ जाती थी। आपने लगभग सवा वर्ष तक उदयपुर की वर्कशॉप में कार्य किया।

इधर हिसार में श्री ठाकुर दास भार्गव की एक बड़ी वर्कशॉप थी, जिसके मैनेजर गौरीशंकर का आपसे पहले से ही परिचय था, क्योंकि वे रोहतक में लेथ का काम करवाने आते रहते थे। आपने उनके पास लेथ मैकेनिक के रूप में अपने भतीजे धर्मवीर को भी भेजा था। इस तरह आपका और गौरीशंकर का व्यवहार चलता रहा। इसी बीच उन्होंने आपको उदयपुर एक पत्र भेजा कि आप उनकी हिसार स्थित वर्कशॉप में इंचार्ज बनकर काम करें। बातचीत से तय हुआ कि वे आपको शुरू में 250 रुपये प्रतिमाह वेतन, मकान आदि की अन्य सुविधाएं देंगे। बाद में काम देखकर वेतनादि बढ़ा दिया जाएगा। जब आपने उदयपुर वर्कशॉप के इंचार्ज भरत लाल वर्मा को नौकरी छोड़ने की बात बताई तो वे नहीं

माने। इस पर आपने विधिवत् नौकरी छोड़ने के लिए एक माह का नोटिस दे दिया, लेकिन वर्मा जी दो माह तक आनाकानी करते रहे। सादगी और उच्च विचारों के कारण सभी आपको त्यागी जी कहते थे। श्री वर्मा ने आपको समझाया, त्यागी जी, नौकरी मत छोड़ो, वेतन आदि बढ़ाने की बात है, तो अपने हाथ से लिखकर दे दो, हम उतना कर देंगे। आपने कहा कि वेतन की कोई बात नहीं है। मैंने जितना सीखना था, उतना सीख लिया है और आगे काम नहीं कर सकता। इस तरह आप नोटिस के दो माह बाद नौकरी छोड़कर हिसार आ गए।

हिसार में आना

उदयपुर से लौटकर सन् 1955 के मध्य आपने हिसार में पं. ठाकुर दास भार्गव के पास काम शुरू कर दिया। पं. ठाकुर दास जी पंजाब के प्रथम मुख्यमंत्री पं. गोपीचंद भार्गव के भाई थे। हिसार आने के बाद आपको पता चला कि मैनेजर गौरी शंकर ने आपको झूठ बोलकर बुलाया है। झूठ इसलिए कि एक सरदार जी 15 साल से वहाँ लेथ मैकेनिक थे, लेकिन गौरी शंकर उनके काम से सन्तुष्ट नहीं थे। मैनेजर ने आपके और उन सरदार जी के बीच प्रतिस्पर्धा शुरू करवा दी कि जो बढ़िया काम करेगा, उसे उसी हिसाब से वेतनवृद्धि दी जाएगी। आपको उनकी चाल बुरी लगी, क्योंकि इसी बहाने वे सरदार जी को निकालना चाहते थे।

साथ ही वे प्रतियोगिता के बहाने आपका काम देखना चाहते थे। बहरहाल, आपने मैनेजर की चुनौती स्वीकार कर ली, लेकिन मन ही मन संकल्प भी कर लिया कि बढ़िया से बढ़िया काम करके दिखाना है। इसके बाद चाहे एक हजार रुपये वेतन मिले, यहाँ नौकरी नहीं करनी है और सरदार जी को बेरोजगार नहीं होने देना है।

वहाँ काम करते हुए आपको कुछ ही दिन हुए थे कि खांडा खेड़ी गाँव के सूरतसिंह इंजन के रिंग बनवाने के लिए हिसार पहुंचे। उनके रिंग का एक सैट सरदार जी ने बनाया तथा दो सैट आपने। आपने मैनेजर से कहा कि ये सैट सरदार जी के उस्ताद से चैक करवा लें। उनके उस्ताद की दुकान नागोरी गेट के बाहर थी। उस्ताद ने कहा कि सरदार जी के बनाए रिंग बेकार हैं, उन्होंने आपके रिंग सैट को बहुत बढ़िया बताया और आपसे मिलने आए। मैनेजर ने यह बात भार्गव जी को बताई। अब फैसला हुआ कि सरदार जी को एक माह का नोटिस देकर हटा दिया जाए। इस पर आपने कहा कि इन्हें न हटाएं, मैं आपके यहाँ काम नहीं करूंगा और इसके लिए एक माह का नोटिस देता हूं।

अब तक भार्गव जी को आपके खानदान और गाँव का पता चल चुका था। उन्हें पता लग गया था कि आप विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री सरूप सिंह के परिवार से हैं और नाते में उनके भाई लगते हैं। उन्हें इसका पता तब चला था, जब वर्कशॉप में आने के कुछ

दिन बाद ही श्री सरूप सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी ने नौकर को वहाँ भेजकर आपको घर पर रहने के लिए बुलाया था। आपने नौकर से कहा कि यहाँ रहने में कोई दिक्कत नहीं है, इस पर अगले दिन श्रीमती कमला देवी आईं और आपका सामान ले गईं। उसके बाद आप उन्हीं के घर रहने लगे।

जब आपने नौकरी छोड़ने का नोटिस दिया तो पं. ठाकुर दास भार्गव ने श्री सरूप सिंह से बात की कि मित्रसेन जी को नौकरी न छोड़ने दें, इस पर श्री सरूप सिंह ने आपसे कहा कि नौकरी मत छोड़ें, तो आपका जवाब था कि अब मुझे नौकरी नहीं करनी और रोहतक में अपनी वर्कशॉप लगानी है। सुनकर वे हैरान हुए कि भाई को इतना अच्छा रोजगार मिला हुआ है और वह अपना काम शुरू करने की सोच रहा है।

भार्गव साहब के मैनेजर ने आपको यहां तक कह दिया था कि यह अमेरिकी मशीन ठीक कर दो और उम्रभर का जितना वेतन बनता हो, वह अग्रिम ले लो, लेकिन आप लालच में नहीं आए, इसलिए दो माह काम करके ही वह वर्कशॉप छोड़ दी। श्री सरूप सिंह ने आपको हिसार में डीसीएम मिल में भी नौकरी पर लगवाने की बात की, लेकिन आपका इरादा तो कुछ और ही करने का था।

अपना व्यवसाय

नौकरी छोड़ने के बाद सन् 1955 के आखिर में आप हिसार से रोहतक आ गए और सारा ध्यान अपना कारोबार शुरू करने पर केंद्रित कर दिया। रोहतक में आपके पुराने परिचितों श्री चंदगीराम सैनी, श्री शीशराम सैनी तथा श्री धनसिंह सुनारियां के साथ हिस्सेदारी में वर्कशॉप लगाने की बात पहले ही चल रही थी। आपके रोहतक से जाने के बाद से ही इनकी पुरानी वर्कशॉप ठीक से नहीं चल रही थी, इसलिए ये लोग आपका साथ चाहते थे। वर्कशॉप लगाना तय हुआ। नई लेथ और अन्य मशीनें विदेशों से मंगवा कर काम करने की ठानी गई। इसके लिए 20 हजार रुपये की आवश्यकता थी। पांच हिस्सेदारों को चार-चार हजार का प्रबन्ध करना था। आपके पास केवल दो हजार रुपये थे। आपने श्री सरूप सिंह से 700 रुपये तथा चिड़ी गाँव के श्री रामस्वरूप ठेकेदार से 1300 रुपये उधार लेकर बाकी पैसे का प्रबन्ध किया। इसी तरह श्री धनसिंह सुनारियां के हिस्से की रकम भी आपने कहीं से उधार दिलवाई।

उन दिनों दिल्ली की फतेहपुरी में एजेंसियां होती थीं। वहां जाकर दो मशीनें इंग्लैंड तथा तीन जापान से मंगाने का आर्डर दिया गया। लगभग 10 माह बाद मशीनें आ गईं। इस तरह सन् 1956 में अपनी वर्कशॉप लगाने का आपका सपना पूरा हुआ और उसमें काम शुरू हो गया। बोरिंग के लिए मिस्त्री राज चोपड़ा को रखा गया था। काम अच्छा चल निकला। इसी दौरान हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन शुरू हो गया और अब आप इस आंदोलन में कूद गए।

हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन

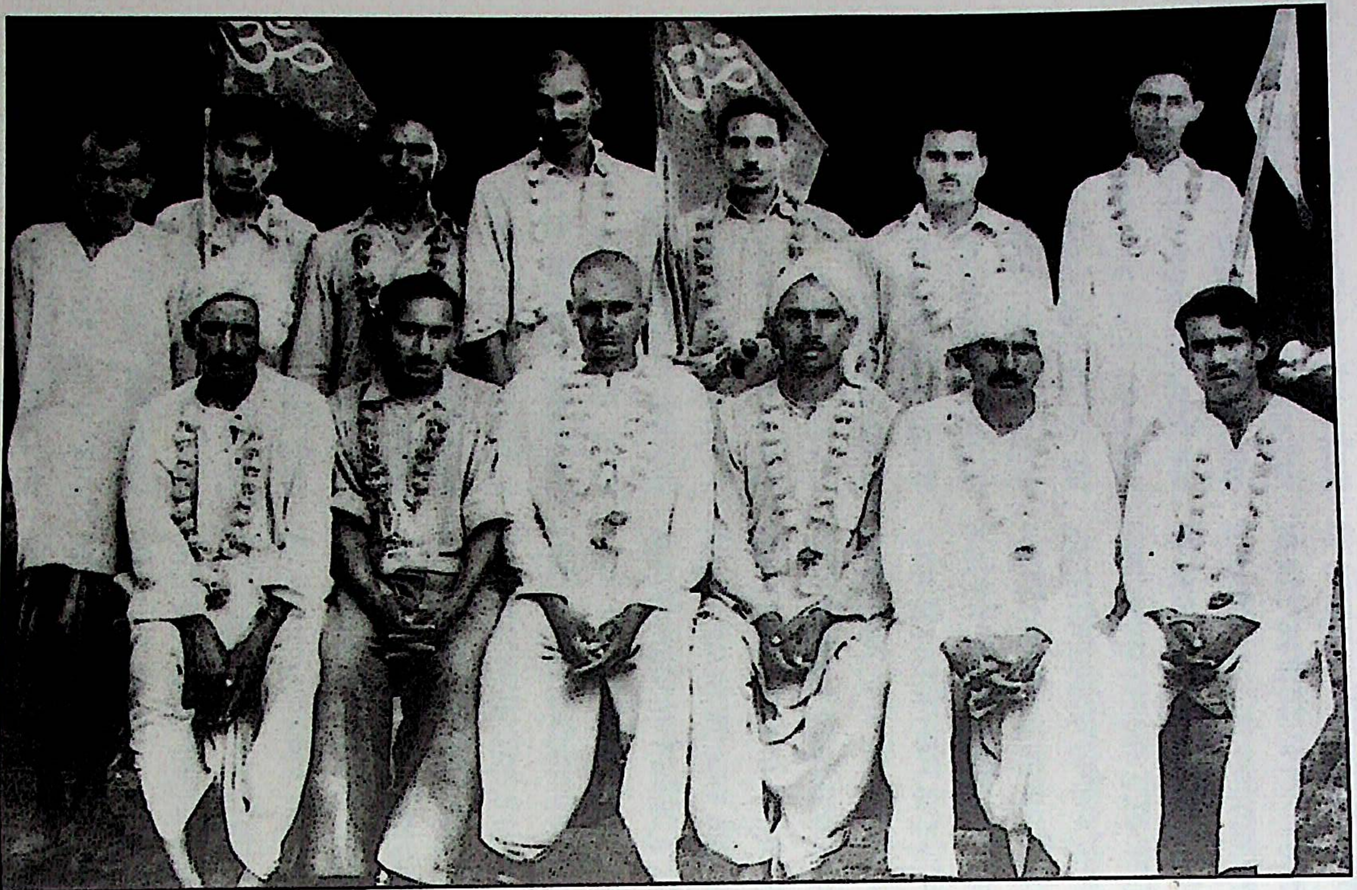
चौ. मित्रसेन जी का जीवन शुरू से ही संघर्षपूर्ण रहा है। आपने पारिवारिक दायित्वों के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों को सदैव महत्त्व दिया है। आपका कारोबार चला ही था कि हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन शुरू हो गया। आपने अपने नए स्थापित कारोबार की परवाह न करते हुए हिंदी सत्याग्रह आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और साढ़े चार माह तक हिसार जेल में बंद रहे। जेल में आपको साधु-महात्माओं और विद्वानों की संगत मिली। इससे आप के सामाजिक सरोकारों, आत्मिक चिंतन और वैचारिक सोच में काफी उन्नति और दृढ़ता आई। हिन्दी सत्याग्रह के बारे में पुराने लोग तो जानते हैं, लेकिन नई पीढ़ी को इसके बारे में संक्षेप में बताना आवश्यक है।

आर्य समाज अपने प्रारंभिक काल से प्रमुख राष्ट्रवादी संस्था रहा है, इसी कारण इसने अपने कार्यक्रम में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने स्वयं मातृभाषा गुजराती को छोड़कर अपने सभी ग्रंथ हिन्दी में ही लिखे। संयुक्त पंजाब में आर्य समाज का प्रचार सर्वाधिक हुआ था, इसलिए हिन्दी के प्रति लोगों का प्रेम बढ़ता गया। हालांकि उस वक्त लगभग सारा सरकारी कामकाज उर्दू में होता था। आजादी के बाद उर्दू की जगह हिन्दी को लेनी थी, लेकिन अकाली नेता पंजाबी को बढ़ावा देना चाहते थे। इसलिए भाषा सम्बंधी विवाद उठ खड़ा हुआ।

संयुक्त पंजाब में तब पंजाब, हरियाणा और हिमाचल के कुछ हिस्से आते थे। सरकार ने यहाँ सरकारी नौकरी के लिए पंजाबी पढ़ना अनिवार्य कर दिया और पंजाबी को राजभाषा बना दिया। इस तरह हिन्दी की उपेक्षा करके पंजाबी को थोपना बहुसंख्यक हिन्दीभाषियों को नागवार गुजरा। इसी के विरोध में एक बड़ा जन आंदोलन चलाने की रूपरेखा तैयार की गई। आंदोलन चलाने के लिए हिन्दी रक्षा समिति बनाई गई। स्वामी आत्मानन्द को इस समिति का प्रधान, सूरजभान को उपप्रधान और जगदेव सिंह सिद्धांती को प्रधान सचिव बनाया गया।

इस समिति ने पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरों से मुलाकात करके हरियाणा के क्षेत्र से पंजाबी की अनिवार्यता खत्म करने की मांग रखी। सरदार कैरों आश्वासन तो देते रहे, लेकिन वे पंजाबी की अनिवार्यता समाप्त नहीं करना चाहते थे। इसलिए हिन्दी रक्षा समिति ने 10 जून, 1957 को आंदोलन छेड़ने की घोषणा कर दी। सबसे पहले स्वामी आत्मानन्द जी ने सत्याग्रह किया और गिरफ्तारी दी। हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन की सफलता में सबसे अहम भूमिका आचार्य भगवान देव (स्वामी ओमानन्द) की रही। उनके अलावा हरियाणा के सभी नेताओं ने इस सत्याग्रह में पूरा सहयोग दिया था।

चौ. मित्रसेन जी भी कुछ माह पहले ही रोहतक में शुरू की गई अपनी वर्कशॉप की



हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन के दौरान चौ. मित्रसेन (बाएं से खड़े पांचवे) 9 अगस्त से 19 दिसम्बर, 1957 तक बोस्टन जेल हिसार में रहे। उनके साथ बाएं से बैठे – धारा सिंह, ओम प्रकाश, मामचन्द आर्य, पूर्ण सिंह आर्य, डालू राम आर्य, भरत सिंह, बाएं से खड़े – शेर सिंह, कृष्ण कटार, प्रेम सिंह, मांगे राम, मित्रसेन जी, सुखी राम, प्रेम सिंह भी जेल में रहे थे।

परवाह न करते हुए हिन्दी आंदोलन से जुड़ गए। आपके तीन गिरफ्तारी वारंट जारी हुए। जब आंदोलन शुरू हुआ तो कांग्रेस के एक वरिष्ठ राष्ट्रीय नेता ने आर्य समाज को पत्र भेजा कि अगर उन्हें मध्यस्थ मान लिया जाए, तो वे इस मसले का फैसला करवा सकते हैं। तब आर्य समाज की कार्यकारिणी ने कहा कि उक्त नेता पार्टी के दास हैं और वे कांग्रेस के हित साधेंगे और आर्य समाज का अहित करेंगे, इसलिए उन्हें मध्यस्थ न बनाया जाए। चौ. मित्रसेन जी का मानना है कि यह आर्य समाज की सबसे बड़ी भूल थी कि उक्त नेता की बात की अनदेखी की गई, क्योंकि इससे कांग्रेस और सरकार आर्य समाज के दुश्मन बन गए। यह आर्य समाज की तकनीकी भूल थी, जिसका नतीजा उसे आज तक भुगतना पड़ रहा है। इस घटना के बाद कांग्रेस ने आर्य समाज को सबक सिखाने का मन बना लिया और तय किया कि आर्य समाज में घुसपैठ करके अच्छे और प्रबुद्ध लोगों को प्रधान और मंत्री नहीं बनने दिया जाएगा। उक्त नेता ने यह रणनीति भी बनाई कि आर्य समाज की एक इंच भूमि नहीं बढ़ने देनी है। उसके बाद से अब तक आर्य समाज की ताकत कम ही होती गई।

हिन्दी रक्षा आंदोलन के दौरान चंड़ीगढ़ से सरकार के जो भी आदेश रोहतक पुलिस के लिए आते थे, चौ. मित्रसेन जी को उनका पता चल जाता था। आप इन आदेशों की जानकारी दयानन्द मठ में जाकर दे देते थे। यह इसलिए संभव था, क्योंकि आपके चाचा चौ. चंदगीराम ने कुछ आर्य समाजी लोगों को पुलिस में भर्ती करवाया था, जो रोहतक में तैनात थे। उनसे आपका परिचय था और वही आपको सरकार की संभावित कार्रवाई की अग्रिम जानकारी दे देते थे। उनमें खांडा खेड़ी के दलीप पंडित, बुडाना के पंजाब सिंह और चानोत और घिराय गाँवों के कुछ पुलिस कर्मचारी शामिल थे। ये लोग सरकार की प्रस्तावित कार्रवाई की जानकारी चौ. मित्रसेन जी तक परची से पहुंचाते थे। जिला प्रशासन और पुलिस हैरान थी कि सरकार के गुप्त फैसलों की जानकारी मठ तक कैसे पहुंच रही है। गिरफ्तारी से बचने के लिए सत्याग्रह से जुड़े अग्रणी लोगों के सांकेतिक नाम रखे हुए थे। इस तरह पहले तो आपके नाम का किसी को पता नहीं था, लेकिन पुलिस ने धीरे-धीरे पता लगा लिया और आपके गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिए गए। वारंट में आपके पिताजी का नाम गलत होने की वजह से आपकी गिरफ्तारी नहीं हो सकी। दूसरी बार गिरफ्तारी वारंट पर घर का पता गलत था, सो उस बार भी आप बच गए, लेकिन तीसरी बार 9 अगस्त, 1957 को आपने गिरफ्तारी दे दी। चौ. देवीलाल के बड़े भाई श्री साहबराम और श्री कोकचंद शास्त्री आपके साथ हिसार जेल में थे। सत्याग्रह में पुलिस चुनिन्दा और अग्रणी लोगों को ही गिरफ्तार करती थी, क्योंकि आंदोलन बहुत फैल गया था और जेलों में सत्याग्रहियों को रखने की जगह नहीं थी।

उधर, मित्रसेन जी की वर्कशॉप के हिस्सेदारों में से भी एक इस आंदोलन के तहत जेल चला गया। अंत में हिन्दी सत्याग्रह आंदोलनकारियों की जीत हुई और सरकार ने पंजाबी की अनिर्वायता समाप्त कर दी। सरकार ने हिन्दी और पंजाबी क्षेत्र बनाए। बाद में इसी हिन्दी क्षेत्र के आधार पर हरियाणा बना। चौ. मित्रसेन साढ़े चार माह हिसार जेल में बंद रहकर 19 दिसंबर, 1957 को रोहतक लौटे।

हिस्सेदारों में विवाद

वर्कशॉप में आपके जो हिस्सेदार हिन्दी सत्याग्रह में जेल गए थे, वे आपसे कुछ दिन पहले छूटकर आए, लेकिन तीन अन्य हिस्सेदारों ने उन्हें वर्कशॉप में काम नहीं करने दिया और उनका हिस्सा निकालने की बात कही। आपने जेल से आकर सबसे बात की और कहा कि वर्कशॉप की कीमत लगा लेते हैं। जो ज्यादा देगा, उसे मिल जाएगी। आपने 20 दिसंबर, 1957 को एक पंचायत की। वर्कशॉप चूंकि किराए की जमीन पर थी, इसलिए तीनों हिस्सेदारों ने जमीन के मालिक पर दबाव डालकर यह तय करवा लिया कि अगर चौ. मित्रसेन ने वर्कशॉप खरीदी, तो वह जमीन उन्हें किराए पर नहीं देगा। इसलिए जिस वर्कशॉप को आप 30 हजार रुपये तक में लेने को तैयार थे, दूसरे हिस्सेदारों ने छल से 18 हजार में खरीद ली।

इसी दौरान एक और घटना हुई। जब वर्कशॉप खरीदने की बात चल रही थी, तब खांडा खेड़ी में आपके परिवार में ब्याहे और रिश्ते में आपके फूफा और रोहतक की जमींदार ट्रांसपोर्ट कंपनी के मालिक बोहर निवासी श्री ज्वाला सिंह पता चलने पर आपके पास आए और कहा कि पैसे की कमी के कारण इस वर्कशॉप को छोड़ मत देना। उन्होंने कहा कि मुझे पता है कि तुम्हारे पास इतने पैसे नहीं हैं, लेकिन इसकी चिंता मत करना। उन्होंने कहा कि दस हजार रुपये तो वे 24 घंटों के भीतर दे देंगे। अगर ज्यादा की जरूरत हुई, तो एक माह का समय ले लेना। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया, अगर उधार दी गई राशि छह महीने में लौटा दोगे, तो कोई ब्याज नहीं लूंगा। उसके बाद एक रुपया नौ आने की बजाय केवल दस आने ब्याज लूंगा, जो बैंक से मिलता है। उन्होंने साथ जोड़ दिया कि वे कोर्ट में लिखवाकर ही पैसे देंगे।

एक अन्य बात भी कही कि अगर तुम्हारा मन बने तो इस वर्कशॉप में मेरा दो आने का हिस्सा रख लेना, तब कोई ब्याज नहीं लूंगा। इस सब के बावजूद आप वर्कशॉप नहीं ले सके। बटवारे में सारा हिसाब-किताब करके आपके हिस्से में मात्र 4200 रुपये आए। यह रकम भी आपने बड़ी मुश्किल से निकलवाई। हिन्दी के प्रति आपके प्रेम के चलते इस आर्थिक चोट के मद्देनजर लोगों ने मजाक करना शुरू कर दिया कि इन्हें खूब हिन्दी मिली है। आपका दूसरा साथी घबराया कि अब क्या करेंगे, लेकिन आपने दिलासा दी कि घबराने की कोई बात नहीं, परमात्मा पर भरोसा रखो,

वह सच्चे आदमी की परीक्षाएं लेता है। जब हम सच्चे हैं, तो डर कैसा।

नई वर्कशॉप लगाई

रोहतक के सिविल रोड पर लेथ मशीन सहित एक नई वर्कशॉप कुछ दिन पहले रोहतक में अकाली दल के प्रधान सरदार जवाहर सिंह तथा बीबीपुर गाँव के अग्रवाल सियाराम ने लगाई थी। ये लोग रोहतक से जाने के इच्छुक थे, इसलिए वर्कशॉप बेचना चाहते थे। आपने सरदार जवाहर से संपर्क किया और मोल-भाव के बाद 5750 रुपये में वर्कशॉप खरीद ली। इसमें आप और धनसिंह सुनारियां वाले हिस्सेदार बने। यह वर्कशॉप 28 दिसम्बर, 1957 से लेकर सन् 1960 तक बहुत बढ़िया चली। उस जमाने में इससे 15 हजार रुपया महीना कमाई होने लगी थी। इतना ज्यादा पैसा देखकर धनसिंह सुनारियां का स्वभाव बदल गया।

चौ. मित्रसेन जी नहीं चाहते थे कि कारोबार से उन्हें अलग किया जाए, लेकिन एक जगह दोनों का काम करना कठिन था। इस बीच सन् 1960 में रोहतक में भयंकर बाढ़ आई। इसके बाद सन् 1961 में आपने उड़ीसा और धनसिंह ने रोहतक में रहकर ही हिस्सेदारी में काम शुरू कर दिया। रोहतक में यह वर्कशॉप सन् 1978 तक चलती रही तथा अच्छी कमाई देती रही। धन सिंह ने रोहतक वर्कशॉप का कार्य देखना शुरू और दिया और आप बडबिल में कार्य करने लगे।

उड़ीसा में व्यवसाय

रोहतक में काम करते हुए आपको सन् 1961 के शुरू में एक धनाढ्य व्यवसायी से आमंत्रण मिला कि वे उड़ीसा में एक वर्कशॉप लगाना चाहते हैं, उसमें आप हिस्सेदारी करें। उस व्यवसायी के उड़ीसा के क्योंझार जिले के बड़बिल कस्बे में ट्रक चलते थे। इन ट्रकों की मरम्मत और आमदनी का दूसरा जरिया बनाने के लिए उनकी वहाँ वर्कशॉप खोलने में रुचि थी। इसकी संभावनाएं तलाशने के लिए आपने अपने हिस्सेदार धनसिंह सुनारियां को बड़बिल भेजा। उसने आकर कहा कि वह जगह आदमियों के रहने लायक नहीं है। जंगली इलाका है। धनसिंह ने यह भी कहा कि मैं वहाँ किसी भी कीमत पर काम नहीं कर सकता, चाहे मुझे कोई एक लाख रुपये महीना भी दे। उन्होंने आपको भी वहाँ जाने से रोका। इसके बावजूद आपने वहाँ वर्कशॉप लगाने पर सहमति दे दी।

धनसिंह के न चाहने पर भी आपने उन्हें वहाँ हिस्सेदार बनाया। इसके अलावा उन दो धनाढ्य साथियों के साथ 25-25 प्रतिशत की हिस्सेदारी में वर्कशॉप का काम शुरू कर दिया। मशीनें वगैरह पंजाब से मंगवाई गईं। वर्कशॉप के लिए बड़बिल के बाहरी क्षेत्र में एक प्लाट 10 रुपये मासिक किराए पर लिया गया। इसी दौरान उन हिस्सेदारों की रुचि कम हो गई, क्योंकि वहाँ उनके ट्रक लाभ नहीं दे पा रहे थे, इसलिए वे धीरे-धीरे लौटने लगे। इसके बावजूद आप के उत्साह में कमी नहीं

आई और वर्कशॉप के लिए काम जारी रखा। हिस्सेदारों ने वर्कशॉप लगाने के लिए पैसा देने से भी हाथ खींच लिए। धनाभाव के बावजूद आपने किराए पर वैल्डिंग की छोटी मशीन ली और लेथ और अन्य मशीनें वहाँ रखवाकर ऊपर टीन की छत डालकर काम शुरू कर दिया।

वर्कशॉप का नाम रोहतक इंजीनियरिंग वर्क्स रखा गया। बिजली का कनेक्शन न मिलने की वजह से मशीनें हाथ से चलाने की व्यवस्था की गई। धीरे-धीरे काम चल निकला और लाभ बढ़ता गया। बड़बिल वर्कशॉप में यह नियम बनाया गया था कि सारी आय सीधे रोहतक कार्यालय भेजी जाएगी। इस तरह सन् 1961 से 1963 तक आपने ड्राफ्ट से एक लाख, 60 हजार और नकदी के रूप में भी हजारों रुपये भेजे।

आपका धनाढ्य हिस्सेदार सारी कमाई अपने पास रखता था। आपने जब उससे हिसाब मांगा, तो उसने आनाकानी की, साथ ही कहा अगर 20-25 हजार रुपये चाहिए तो ले लो। आपने इस तरह पैसे लेने से इनकार किया और कहा कि हिसाब करके ही पैसा लूंगा।

जब अति हो गई तो 21 जनवरी, 1964 में आपने अपने सभी हिस्सेदारों को पत्र लिखा कि हिसाब सही नहीं कर रहे हो, इसलिए यह वर्कशॉप ले लो या मुझे दे दो। आप रोहतक आए और मिल-बैठकर बटवारे की बात चली। उन्होंने कुल 42 हजार रुपये की कमाई कागजों में दिखाई और उसके बाद मशीनों की घिसाई के 40 हजार रुपये काटकर कहा कि दो हजार रुपये आय बनती है जबकि उस दिन आप उन मशीनों को 50 हजार में भी लेने को तैयार थे, लेकिन आपके एक हिस्सेदार ने कहा कि मैं ये मशीनें नहीं दूंगा, पैसे मैंने लगाए हैं। आपने कहा कि हम चारों साथी 25-25 प्रतिशत के हिस्सेदार हैं, तो उसने कहा कि आज तक मैंने दो आने से ज्यादा का हिस्सेदार नहीं रखा, पच्चीस प्रतिशत की बात कहाँ से आ गई।

आप कानूनी रूप से कुछ नहीं कर सकते थे, क्योंकि आपने विश्वास में वर्कशॉप का हिस्सेदारी अनुबंध नहीं लिखवाया था, इसी कारण कानूनन वर्कशॉप का मालिक वही था। बहरहाल, उसने ताकतवर होने का दुरुपयोग किया और आपको किनारे कर दिया। चौ. मित्रसेन जी और धन सिंह को साढ़े तीन वर्ष का कुल लाभ और वेतनादि मिलाकर 5900 रुपये मिले। आपके गाँव का रामेश्वर दास बंसल वहाँ मुनीम था। यह अन्याय देखकर वह दुखी हुआ। इसके बाद सन् 1964 में जनवरी से लेकर मार्च तक आपने अपनी रोहतक वर्कशॉप में ही काम किया।

बड़बिल में अलग वर्कशॉप

रोहतक-दिल्ली ट्रांसपोर्ट कंपनी के मालिक श्री वेदप्रकाश नन्दा ने उदयपुर की अपनी वर्कशॉप की लैथ मशीनें उठवाकर रोहतक में रख ली थीं। ऐसा इस कारण हुआ था कि जब से आपने उनकी उदयपुर की वर्कशॉप से काम छोड़ा था, तब से कोई मैकेनिक न

मिलने के कारण नन्दा साहब उन मशीनों से काम नहीं ले पाए थे। जब आपको इसका पता चला तो आपने वेदप्रकाश नन्दा के साले भरत लाल वर्मा से मशीनें खरीदने की मंशा प्रकट की। इस पर वर्मा जी ने कहा कि ये मशीनें तो उसी दिन से बंद पड़ी हैं, जिस दिन से आपने काम छोड़ा था। शायद परमात्मा ने आपके लिए ही इन्हें बचाकर रखा है। मोल-भाव की बात चली तो श्री वर्मा ने कहा कि जितनी मर्जी हो, उतने पैसे दे जाना। जोर देने पर उन्होंने छह हजार रुपये मांगे। बाद में पांच हजार में सौदा हुआ।

आपने मात्र तीन सप्ताह के अंदर-अंदर मशीनें बड़बिल पहुँचाकर काम शुरू कर दिया। आपने इस वर्कशॉप का नाम रोहताश इंजीनियरिंग वर्क्स रखा। 23 अप्रैल, 1964 में आपने उसी पुरानी वर्कशॉप के सामने किराए पर जगह लेकर काम शुरू किया। काम चलाने के लिए आपने बड़बिल के सरदार सन्तोख सिंह से पांच हजार रुपये उधार लिए थे। आप वहाँ बिजली बोर्ड के कर्मचारी शिवकुमार को बिजली का कनेक्शन लगवाने का जिम्मा सौंप आए थे। आपकी वापसी तक कनेक्शन लगा मिला। यह वर्कशॉप 23 अप्रैल, 1964 को शुरू हो गई।

कार्य विस्तार

नवा मंडी, बिहार (वर्तमान झारखंड) में सरदार गुरदयाल सिंह की एक ट्रांसपोर्ट कंपनी थी। उनके 40 ट्रक थे और नवा मंडी में वर्कशॉप भी थी। उनकी वर्कशॉप में लेथ मशीन तो थी, लेकिन कोई कारीगर नहीं था। लेथ का काम करवाने के लिए सरदार जी आपकी वर्कशॉप में आते थे। एक दिन बात-बात में गुरदयाल सिंह ने आपसे कहा कि चौधरी साहब, मेरी मशीनें ले लो। आपने भी सहमति जताई और 10 हजार रुपये में उनकी वर्कशॉप ले ली। आपने नवंबर, 1964 में वहाँ काम शुरू कर दिया। उस वर्कशॉप का नाम आपने हरियाणा इंजीनियरिंग वर्क्स रखा, जबकि तब हरियाणा बना भी नहीं था। उस वर्कशॉप का इंचार्ज आपने अपने चचेरे भाई धर्मपाल को बनाया।

कुछ दिन बाद ही सन् 1965 में आपने उड़ीसा के जोड़ा कस्बे में सिन्धु इंजीनियरिंग वर्क्स की स्थापना की। इस तरह एक वर्ष के अंदर-अंदर आपने उस क्षेत्र में तीन वर्कशॉप शुरू कर दिए। विशेष बात यह थी कि अपने पुराने साथी धनसिंह की हिस्सेदारी सभी वर्कशॉपों में रखी, जबकि वे वहाँ जाना भी पसंद नहीं करते थे। आपके पुराने धनाढ्य व्यवसायी हिस्सेदार ने आपके काम में वहाँ भी बाधा डाली, परंतु परमात्मा आपके साथ था। सन् 1964 से 67 तक आपका कारोबार बहुत अच्छा चला। अब जनवरी, 1968 में आपने ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में कदम रखा और तीन ट्रक खरीदे।

माइनिंग के क्षेत्र में

कारोबार बढ़ाने की योजना के तहत अब आपने माइनिंग (खनन) के क्षेत्र में रुचि लेनी

शुरू कर दी थी। आपने सन् 1967 में माइनिंग का कार्य शुरू कर दिया। आज आपका माइनिंग कारोबार इतना फैल चुका है कि आप उड़ीसा, बिहार और छत्तीसगढ़ के नामी-गिरामी माइनिंग कारोबारियों में गिने जाते हैं। आप शुरू से ही भावी पीढ़ी को तैयार करने की तरफ लगातार प्रयासरत रहे हैं। उन दिनों जब आप रोहतक जाते और वहाँ बच्चों की छुट्टियां होती तो उन्हें एक-एक माह तक उड़ीसा में कारोबार का प्रशिक्षण देते। यह प्रशिक्षण आज उनके काम आ रहा है। आपने अपने जीवन को कभी भाग्य के सहारे नहीं छोड़ा, बल्कि मेहनत और पुरुषार्थ से सब कुछ हासिल किया।

योग वशिष्ठ ने भी कहा है कि *जो जिस पदार्थ को पाने की इच्छा करता है और उसे प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्न करता है, वह उसे हर सूरत में पा लेता है, यदि बीच में प्रयत्न न छोड़ दे।* कुछ ऐसा ही चौ. मित्रसेन जी का नजरिया भी है। उन्होंने जब भी कोई काम शुरू किया तो उसे सिरे चढ़ाकर ही दम लिया। कहा भी गया है कि जो लोग उद्योग (परिश्रम) को छोड़कर भाग्य पर भरोसा करते हैं, वे अपने दुश्मन होते हैं। ऐसा करके वे धर्म, अर्थ और काम सबको नष्ट कर देते हैं। हमारे श्रद्धेय चौ. मित्रसेन जी ने भाग्य पर भरोसा न करके पुरुषार्थ और परिश्रम के बूते हर काम में न केवल सफलता हासिल की बल्कि उसमें बुलंदियों को छुआ।

आपने कभी लॉटरी का टिकट नहीं खरीदा और भविष्य जानने के लिए कभी किसी ज्योतिषी वगैरा को हाथ नहीं दिखाया। आपने आज तक किसी परिजन की जन्मपत्री भी नहीं बनवाई। आप केवल कर्म, पुरुषार्थ और परमात्मा में विश्वास रखने वाले सात्विक भाव के व्यक्ति हैं। यही आस्था आप की कामयाबी का राज है।

हिस्सेदार से बटवारा

बात सन् 1978 की है। आप का कार्यक्षेत्र उड़ीसा था और आपके हिस्सेदार भी रोहतक से बड़बिल आ चुके थे। कैश का सारा हिसाब उनके पास ही होता था, लेकिन इस बीच उनके व्यवहार में बदलाव आ गया और वे हिसाब-किताब देने में आनाकानी करने लगे। आपके बड़े बेटे रुद्रसेन सेना में चले गए थे। इसलिए आप वहाँ अकेले थे। हिस्सेदार एवं उसके बेटों को लगने लगा था कि आपका काम उनके सहारे चल रहा है, इसलिए आप अलग नहीं हो सकते। काम अलग करने के बारे में बता दें कि आपके पिता श्री शीशराम आर्य ने हिस्सेदार का व्यवहार देखकर दोनों को अलग-अलग कारोबार करने की सलाह दी थी। उनका कहना था कि बहुत वर्ष इकट्ठे काम कर लिया। हिस्सेदार के बेटे ताना देते थे कि मित्रसेन तो हमारे बिना काम नहीं कर सकते, भूखे मर जाएंगे। ऐसी बातें आप तीन-चार वर्षों से सुनते आ रहे थे। अंततः सन् 1978 में आपने अलग होने का फैसला कर लिया। आपने हिस्सेदार से पिछला हिसाब-

किताब मांगा, तो उन्होंने कहा कि मेरे पास कोई हिसाब-किताब नहीं है। उन्होंने उलटे कहा कि 23 हजार रुपये आप की तरफ निकलते हैं।

बहरहाल, एक दिन बड़बिल में आपने चौ. प्रियव्रत को मध्यस्थ बनाकर हिसाब-किताब और बटवारा करने की बात कही। चौ. प्रियव्रत ने आप दोनों से लिखवा लिया कि वह जो फैसला करेंगे, उन्हें मान्य होगा। उनके कहने पर आपने चल-अचल संपत्ति की सूची बनाकर दे दी। आपने बड़प्पन का परिचय दिया और उदार हृदय से बटवारे को स्वीकार कर लिया। बटवारे में हुआ यह था कि कई अच्छी संपत्तियां और फायदे वाली खानें आपके हिस्सेदार ने अपने पास रख लीं और कम फायदे या घाटे वाली खानें और अन्य चीजें आपको दे दीं। यह सब चौ. प्रियव्रत और श्री टेकचंद मोल्डर देख रहे थे। आपकी निश्चिंतता और बड़प्पन देखकर दोनों कहने लगे कि कमाल की सहन शक्ति है इस शख्स में। सब कुछ गलत होते देखकर भी बिना किसी प्रतिकार के चुपचाप स्वीकार करता जा रहा है।

ऐसी पुण्यात्मा का भला कोई क्या बिगाड़ सकता है ? चौ. मित्रसेन जी का जीवन देखकर ही अनुमान हो जाता है कि ऐसी दिव्य आत्मा का कोई कुछ नुकसान नहीं कर सकता, चाहे लाख कोशिशें कर ले। उस बटवारे में सब कुछ मिलाकर हिस्सेदार ने आप की तरफ 50 हजार रुपये निकाले। यह तय हुआ कि टाटा कंपनी से जो डेढ़ लाख रुपये आने हैं। उनमें से पहली किस्त 50 हजार रुपये उनके हिस्सेदार को दी जाएगी और बाकी के एक लाख बराबर बांटे जाएंगे।

चौ. मित्रसेन जी के जीवन में कई संगी-साथी आए। कार्यक्षेत्र और कारोबार में अनेक सहयोगी और हिस्सेदार रहे। उन्होंने आपके साथ अच्छा-बुरा सब तरह का बर्ताव किया। आपने सब कुछ निरपेक्ष भाव से सहन किया। अन्याय हुआ तो उफ् तक नहीं की और भला हुआ तो ज्यादा आह्लादित नहीं हुए, यानी आपने स्थितप्रज्ञ होकर अच्छा-बुरा सब ग्रहण किया। आपने कभी किसी का अनिष्ट करने या नुकसान पहुँचाने की नहीं सोची, क्योंकि आपके संस्कारों और सार्थक सोच ने कभी आपको लालच के वशीभूत नहीं होने दिया। आपके जीवन-दर्शन का सार है कि दूसरों का बुरा करने से खुद का ही नुकसान होता है। इसलिए आप ऐसी प्रवृत्ति के लोगों और उनकी करनी को अनदेखा करते हुए निरंतर आगे बढ़ते और उन्नति करते गए। ईश्वर में पूर्ण आस्था रखते हुए आपने कर्म से कभी मुंह नहीं मोड़ा, क्योंकि गीता का कर्म सिद्धांत आपकी सोच की बुनियाद है। आपका मानना है कि निष्काम कर्म करेंगे तो उसका सुफल आपको निश्चित तौर पर मिलेगा। भले ही उसमें कुछ देर लगे। इसके साथ ही आप नीर-क्षीर विवेकी पुरुष हैं। आपने अपने साथी-सहयोगियों के अच्छे गुणों को ग्रहण किया और दुर्गुणों को अनदेखा किया। आपने कभी

अपने साथियों से उनके दुर्गुणों की चर्चा नहीं की, क्योंकि आपका मानना है कि बुरी बातों या चीजों की शिकायत करने से वह बीमारी खुद को भी लग जाती है। इसलिए ऐसी चर्चा हानिकारक है, उसका परित्याग ही समस्या का निदान है।

आप राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की इस बात से बहुत प्रभावित हैं कि बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा मत करो। बस अच्छा सोचो, करो और आगे बढ़ो। इस तरह आप हर बुरी बात या अन्याय को भूल कर, नई उमंग, नए उत्साह और नई दृष्टि से कदम-दर-कदम आगे बढ़ाते गए और नित नई मंजिलें छूते गए। आप का मानना है कि हर नया सवेरा शुभकारक, मंगलदायक और नई प्रेरणा देने वाला होता है। हमें इसी नजरिए से उसका स्वागत करना चाहिए।

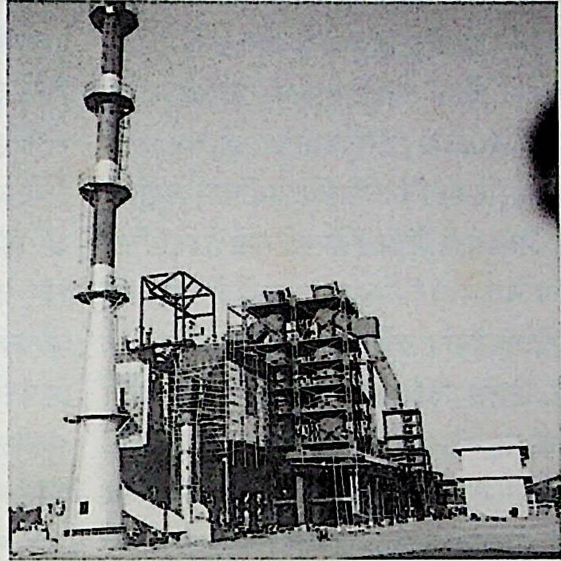
नए उत्साह से उदय की ओर

सन् 1978 में बटवारा होने के बाद आपके पास बहुत कम पूंजी एवं संसाधन बच पाए। कुछ अच्छे कारीगर तथा अन्य व्यक्ति भी दूसरी तरफ चले गए। कह सकते हैं कि सन् 1978 में आपके काम में बाधा आई और आर्थिक स्थिति काफी कमजोर हो गई थी। विरोधी तो यहाँ तक कटाक्ष करने लगे थे कि आप उड़ीसा छोड़कर चले जाएंगे, लेकिन वे गलत थे। वे आपके साथ रहकर भी आपके व्यक्तित्व और पुरुषार्थ के गुणों को नहीं समझ पाए थे। उन्हें मालूम नहीं था कि आपके संस्कार आपके जीवन की पूंजी हैं और पुरुषार्थ आपका स्वभाव। इनके बूते पर आपने इतना आत्मिक बल अर्जित कर लिया था कि भौतिक स्वार्थ, भय और लाभ-हानि की बातें आपको कभी विचलित नहीं कर पाईं।

आप परमात्मा पर भरोसा करके कर्म को प्रधानता देते हैं, इसलिए कभी सत्मार्ग से विचलित नहीं हुए। इसी पुख्ता सोच का प्रताप था कि सन् 1978 में बटवारे के बाद आपने नई उमंग, उत्साह और संकल्प के साथ काम शुरू किया और कारोबार रफ्तार पकड़ते-पकड़ते आसमान की ऊंचाइयां छूता चला गया। प्रारम्भ में विरोधियों ने आपको असफल करने के तमाम तरह के प्रयास किए। आप काम न कर सकें, इसके लिए घाटे के टेंडर तक उन्होंने भरे। उनकी सोच थी कि वे सभी मिलकर घाटा पूरा कर लेंगे, लेकिन परमात्मा को यह सब मंजूर नहीं था। परमात्मा तो आपकी राह के कांटे खुद ही साफ कर रहा था। विरोधियों के कम रेट के टेंडर के मुकाबले आपका टेंडर कम का निकला। वह भी इतना कम कि आधा पैसा प्रति टन, सभी हैरान थे। भगवान की कृपा कहें या आपका भाग्य, इसके बाद तो उड़ीसा और आसपास के राज्यों में खनन के टेंडर आप को मिलने लगे।

सन् 1979 में आपके सुपुत्र वीरसेन पढ़ाई पूरी कर बड़बिल आ गए। सन् 1982 में कैप्टन रुद्रसेन जी सेना से अवकाश लेकर आ गए। कैप्टन रुद्रसेन और वीरसेन के आने से उद्योग को नए आयाम और दिशा मिली। अब आपके

व्यवसाय की गति इतनी बढ़ चुकी थी कि आप को मिटाने की सोचने वाले बहुत पीछे रह गए थे। उसके बाद आपने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आपने वहाँ जो सिद्धांत और मर्यादाएं स्थापित कीं, उनका पालन आज भी हो रहा है, तभी तो उन्नति बरकरार है।



उड़ीसा में संबलपुर के नजदीक एक मार्च, 2006 को शुरू हुआ 'आर्यन स्टील एंड पावर प्लांट'।

व्यावसायिक साम्राज्य

आज आपका व्यावसायिक साम्राज्य देशभर में फैला हुआ है। अलग-अलग प्रकार के व्यवसाय चल रहे हैं। छत्तीसगढ़, बिहार और झारखंड में जहाँ कोल वासरी, कोयला खनन एवं ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में आपकी पताका फहरा रही है, वहीं स्टील प्लांट एवं थर्मल पावर प्लांट शुरू हो चुके हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी आपका उल्लेखनीय योगदान है। वित्त बाजार में भी व्यवसाय चल रहा है। सीमेंट प्लांट, होटल व्यवसाय, वित्त कंपनी के अतिरिक्त दैनिक हरिभूमि अखबार हरियाणा, दिल्ली और छत्तीसगढ़ राज्यों में अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। निकट भविष्य में हरिभूमि के संस्करण अन्य प्रांतों में शुरू करने की योजना है। इसके अलावा कृषि और बागवानी क्षेत्र में भी आपके निर्देशन में काम निरंतर बढ़ता जा रहा है। आपके संस्थानों में काम करके आज हजारों कर्मचारी और अधिकारी आजीविका चला रहे हैं।

जितना बड़ा आपका व्यावसायिक साम्राज्य है, उससे कहीं बड़ा और उदार आप का हृदय है। जरूरतमंदों की मदद करना आप का स्वभाव है। बातचीत में जब किसी को आपके व्यक्तित्व, कृतित्व और गुणों का पता चलता है तो श्रद्धा से उसका शीश आपके बड़प्पन और उदारता के समक्ष झुक जाता है। आप में व्यावसायिक दक्षता और मानवीयता का अद्भुत संगम मिलता है जबकि ये दोनों बातें एक-दूसरे के उलट हैं। आपके उदार व्यक्तित्व और मानवीय सोच को देखकर बरबस ही कहना पड़ता है कि धन्य है वह माता जिसने ऐसा हीरा पैदा किया और साधुवाद है उस पिता को जिसने बेटे को ऐसे संस्कारित किया कि आज दुनिया जिसका लोहा मानती है।

आपने अपने सभी बेटों को अपने कारोबार

की बुनियादी शिक्षा स्कूली समय से ही देनी शुरू कर दी थी। छुट्टियों में आप उन्हें उड़ीसा ले जाते थे और कारोबार की बारीकियों के बारे में बताते थे। उसके बाद उन्हें उच्च शिक्षा दिलाई। आप बिना हिचक स्वीकार करते हैं कि अकाउंट्स में आप कमजोर रहे हैं। इसलिए आप चाहते थे कि आपके बच्चों में यह कमी न रहे, इसलिए उन्हें प्रबन्धन एवं अर्थव्यवस्था की शिक्षा दिलवाई। आपके सभी बच्चे सुशिक्षित और सुसंस्कारित हैं। इसलिए उन्होंने हर काम अल्प समय में बारीकी से सीख कर उसमें महारत हासिल कर ली। किसी परियोजना के लागत मूल्य में नियंत्रण और अन्य आर्थिक पहलुओं की बारीक से बारीक जानकारी आपके पुत्रों को है। मशीनों की कार्यक्षमता कैसे बढ़े और लागत मूल्य में कमी कैसे की जाए, इसे कैप्टन रुद्रसेन से अच्छा कौन जानता है? आपके मित्र चौ. प्रियव्रत अकसर कहते थे कि बच्चों को डॉक्टर और इंजीनियर बनाओ, पर आपने तीन बेटों को सेना में भेजकर अनुशासन और कठिन कार्य हल करने की शिक्षा दिलवाई। आज आपके बेटे कारोबार और उद्योग क्षेत्र के सशक्त हस्ताक्षर हैं। सन् 1983 में बोकारो स्टील थर्मल प्लांट और चन्द्रपुर थर्मल प्लांट का कार्य शुरू किया। इसके विकसित होते-होते आपने कोल ट्रांसपोर्टिंग का कार्य शुरू कर दिया।

चौ. मित्रसेन जी ने उड़ीसा के राउरकेला, सुंदरगढ़, ब्रजराजनगर, भुवनेश्वर, कटक आदि शहरों में लगभग 30 वर्षों तक निर्विघ्न रूप से कारोबार किया। कोयले का खनन कार्य एवं ट्रांसपोर्ट व्यवसाय आपके लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुए। सुयोग्य पुत्रों के कारोबार संभाल लेने पर आप सन् 1992 में उड़ीसा छोड़कर रोहतक आ गए और अपने द्वारा चलाई जा रही शिक्षण संस्थाओं तथा आर्य समाज और उसकी गुरुकुलादि संस्थाओं की मदद करने में जुट गए। इसके अलावा समाज सेवा आपकी दिनचर्या बन गई है। कारोबार की सफलता और दानशीलता ने आपकी प्रतिष्ठा और बढ़ा दी है। आप देश के गणमान्य व्यक्तियों में शुमार हैं। कारोबार करते हुए भी आप साधारण व्यापारी जैसे नहीं, अपितु एक आदर्श कारोबारी रहे हैं। आपकी सफलता का कारण आपकी निष्ठा और कारोबार एवं उद्योग को स्वस्थ रूप से आगे बढ़ाने का नजरिया है।

आपने प्रबुद्ध, ईमानदार, सफल कारोबारी तथा उच्च कोटि के दानी के रूप में अपूर्व ख्याति अर्जित की है। आप जैसे भद्र पुरुष, निष्कपट व्यक्तित्व और आदर्श कारोबारी की सफलता से प्रभावित होकर वैदिक विद्वानों और संन्यासियों ने व्यापार के सम्बंध में पूर्व प्रचलित विचारों 'व्यापार की सफलता के लिए झूठे और अनुचित तरीके अपनाने पड़ते हैं' को बदल लिया है। उनका इस बात में विश्वास हो गया है कि शिक्षित लोगों, श्रेष्ठ पुरुषों और वैदिक पथ के पथिकों को कारोबार में अधिक से अधिक आना चाहिए। स्वतंत्र देशों में सफल कारोबारी वही लोग बने, जिन्होंने शिक्षा के

साथ-साथ सचाई, निष्कपटता, दृढ़ निश्चय और लगन से कार्य किया। आपने अपने जीवन से एक उदाहरण, एक आदर्श प्रस्तुत किया है कि एक साधारण किसान का बेटा वैदिक जीवन पद्धति और पुरुषार्थ के बल से कहाँ से कहाँ पहुंच सकता है। आपका मानना है कि आप जितना अधिक दान करते हैं, उससे कई गुणा अधिक लाभ भगवान आपको देते हैं। इस सत्य को ईश्वर सत्ता के दर्शन में आपने प्रत्यक्ष अनुभव करके देखा है। आपके कारोबार के उन्नति के चरम पर पहुँचने का एक कारण ईश्वर सत्ता में आपका दृढ़ विश्वास भी है। आप अपने कर्तव्य से कभी विमुख नहीं हुए। आप जिस काम को करने का निश्चय कर लेते हैं, उस को उसी समय करने के प्रयत्न में लग जाते हैं और सफलता मिलने तक लगे रहते। **'न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'** भर्तृहरि की इस सूक्ति के अनुसार धैर्यशाली व्यक्ति न्याय के रास्ते से कभी नहीं डिगते, चाहे उनके मार्ग में कितनी ही रुकावटें क्यों न आएं। ठीक इसी प्रकार कारोबार के क्षेत्र में आपने कार्य किया है और अब आपके सुपुत्र कर रहे हैं।

आप अपनी अतुल धन-दौलत का सदुपयोग करते आ रहे हैं। त्याग के महान आदर्श को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया है, परिणामस्वरूप आप और आपका परिवार धन-धान्य से संपन्न है। आप मानते हैं कि ज्यादा धन होने की सूरत में मनुष्य को जो दुर्व्यसन लग जाते हैं, आर्य समाज के पथ पर चलकर उनसे बचा जा सकता है। आपका कहना है कि जिस प्रभु ने मुझ पर और मेरे परिवार पर इतनी कृपा की है, उसके नाम पर जो दान करूं, वही थोड़ा है। आपने कारोबार को कभी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं समझा। यह अन्य महत् उद्देश्यों के लिए है। कारोबार, विशेषतः बड़े कारोबार और उद्योग एक देश की उन्नति के लिए उसी प्रकार आवश्यक हैं जिस प्रकार शिक्षा, स्वास्थ्य और दूसरी सेवाएं। आपके अनुसार 'बड़ा कारोबार' एक कला के रूप में करना चाहिए न कि धोखाधड़ी के लिए। आपके अनुसार कारोबार ऊंचा उठता हुआ एक मार्ग है और कारोबारियों में पर्वतारोहियों की तरह ऊंचे शिखरों को जीतने की आकांक्षा होनी चाहिए। इसके लिए चारित्रिक बल चाहिए। सफलता के शिखर स्पष्ट उद्देश्य, निष्ठा और दृढ़ इच्छाशक्ति से ही हासिल किए जा सकते हैं, अन्यथा एक कारोबारी अपने सेवकों को तो भूखा मारेगा, अपनी शक्ति का भी दुरुपयोग करेगा।

चौ. मित्रसेन जी कारोबारी वर्ग के कृत्यों और अनुचित कार्यकलापों से अनभिज्ञ नहीं हैं। आप इस वर्ग से अनुरोध करते रहे हैं कि कारोबार में स्वच्छ तरीके अपनाएं। उपभोक्ताओं के हितों में लापरवाही और व्यक्तिगत लाभ पर ध्यान केंद्रित होने के कारण इस वर्ग के नाम पर धब्बा लगा हुआ है। आप अनुचित कार्य करने वाले व्यक्तियों और कारोबारियों के कट्टर विरोधी हैं। जो व्यापारी असामाजिक कार्य, कालाबाजारी और

चोरबाजारी करते हैं, आप उनका सामाजिक बहिष्कार करने के पक्षधर हैं।

आपका विचार है कि भ्रष्टाचार से जाति, समाज और देश तबाह हो जाते हैं। आप अत्यधिक लाभ उठाने वाले अनुचित कार्यों के प्रबल विरोधी और कारोबार के ईमानदार तरीकों के पक्षधर हैं। आपके स्पष्ट विचार हैं कि देश की समृद्धि और उन्नति कृषि, व्यापार और औद्योगिक उत्पादन पर निर्भर करती है। किसान और कारोबारी को अपना दृष्टिकोण विस्तृत करना चाहिए, इसी में व्यक्ति, समाज और अंतत: देश का भला है।

श्रीमती परमेश्वरी देवी का परिचय

यद्यपि यह अभिनन्दन ग्रन्थ निष्काम कर्मयोगी चौ. मित्रसेन जी पर लिखा जा रहा है फिर भी उनकी सहधर्मिणी श्रीमती परमेश्वरी देवी के बारे में कुछ लिखना आवश्यक है। चौ. मित्रसेन जी के जीवन में इनका योगदान सबके सामने है। उन्हें उन्नति, प्रसिद्धि और विकास की बुलंदियों तक पहुंचाने में श्रीमती परमेश्वरी देवी का योगदान अविस्मरणीय है।


श्रीमती परमेश्वरी देवी

आप हर स्थिति में एक सबल सहारा बनकर चौ. मित्रसेन जी के संग खड़ी रहीं। आपका व्यक्तित्व स्वयं बोलता है। चौ. मित्रसेन जी की भांति आप भी निष्काम कर्मयोगी, त्यागी और दृढ़ निश्चय की धनी हैं। आपका स्नेहमयी व्यवहार और आतिथ्य सभी का मन जीत लेता है। अपनी सन्ततियों को संस्कारित करने और सबल बनाने में आपकी भूमिका सबके सामने है।

हरियाणा के जींद जिले का एक गाँव है – जुलानी। इसी गाँव के किसान चौधरी उजाला सिंह के बेटे चौ. अमृत सिंह के घर एक नन्ही–सी परी ने जन्म लिया। आंगन में इस बच्ची की किलकारी गूंजते ही पिता अमृत सिंह और माता भरपाई देवी का हृदय खुशियों और आनन्द से भर गया। माता–पिता के हृदय से आवाज आई – परमेश्वर ने हमें अपने यहाँ से लक्ष्मी का दान दिया है। दोनों ने खुशी–खुशी परमेश्वर की इस भेंट का नामकरण किया– परमेश्वरी देवी। इस नन्ही परी में बचपन से ही गजब का आत्म–विश्वास और धैर्य था। बड़ी होने के साथ इन गुणों का उत्तरोत्तर विकास होता गया। परमेश्वरी देवी जैसे–जैसे बड़ी होती गई, वैसे–वैसे परिवार का दायित्व संभालती गई। आप नौ भाइयों की बड़ी बहन हैं। जब कभी किसी पारिवारिक समस्या को निपटाने या किसी जिम्मेदारी को पूरा करने की बात आती तो परमेश्वरी देवी आगे रहतीं और सहर्ष सब सुलझातीं और जिम्मा निभातीं। कोई कुछ कहता तो सीधा–सा जवाब होता, 'भला, मैं किसी बेटे से कम हूं क्या?' यही आत्मविश्वास परमेश्वरी देवी का सबसे बड़ा गुण और पूंजी है। आगे चलकर जीवन में इस


श्रीमती परमेश्वरी देवी के पिता चौ. अमृत सिंह


श्रीमती परमेश्वरी देवी की दादी मामो देवी

मिलना सोने पर सुहागे की तरह था। उन्होंने अपनी लगन, निष्ठा, परिश्रम, ममतामयी शीतलता और स्नेहमयी स्निग्धता से इस सोने रूपी परिवार को कुंदन सरीखा बना दिया। श्रीमती परमेश्वरी देवी का मानना है कि व्यवस्था घर का सौंदर्य है, सन्तोष घर की बरकत है, आतिथ्य घर की शान है और धर्मशीलता घर का मंगल कलश होती है। आपके आचार-व्यवहार में इन चारों विचारों का सुंदर सम्मिश्रण है, तभी तो आप का घर, घर नहीं बल्कि एक वेद मंदिर है, जिस के शीतल आश्रय में सब मानवतावादी दृष्टि से विकास पथ पर अग्रसर हैं। श्रीमती परमेश्वरी देवी ने सन् 1955 में उदयपुर में रहते हुए चौ. मित्रसेन जी से हिंदी का सामान्य ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद निरंतर अभ्यास से भाषा ज्ञान अर्जित किया। अब आपने आर्य साहित्य और दूसरे पावन ग्रन्थों का अध्ययन किया। साथ ही आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में जाना शुरू कर दिया।

आपने इस दौरान व्यावहारिक ज्ञान अर्जित किया। आपके जीवन की खासियत है कि चौ. मित्रसेन जी और आपके ससुर चौ. शीशराम जी ने जो बात कह दी, उस पर कभी संदेह नहीं किया, बल्कि उसे उसकी मूल भावना के साथ अंगीकार करते हुए उस पर अमल किया। आपने तमाम कठिनाइयों के बावजूद पुरुषार्थ, मेहनत, लगन और स्वाध्याय से जीवन

आत्मविश्वास ने उन्हें और उनके परिवार को कितना आगे बढ़ाया वह सबके सामने है।

चौ. अमृत सिंह का परिवार शुभ संस्कारों और पौराणिक विचारों वाला जरूर था, लेकिन मूर्ति पूजक नहीं था। बच्ची परमेश्वरी देवी धीरे-धीरे बड़ी हो गई। माता-पिता ने सन् 1948 में आपकी शादी चौ. मित्रसेन जी के साथ की। आपका गौणा सन् 1953 में हुआ। इसके बाद चौ. मित्रसेन जी और श्रीमती परमेश्वरी देवी कंधे से कंधा और कदम से कदम मिलाकर इस तरह चले और उन्नति तथा विकास की ऐसी बुलंदिया छुईं कि देखने वाले बस देखते ही रह जाते हैं। शादी के बाद श्रीमती परमेश्वरी देवी ने चौ. मित्रसेन जी के परिवार का दायित्व संभाल लिया। चौ. मित्रसेन जी की काम के प्रति लगन, कर्म के प्रति निष्ठा और व्यवस्थित दिनचर्या को देखकर श्रीमती परमेश्वरी देवी ने भी सहज भाव से कुशल गृहिणी की तरह सारा काम संभाल लिया। एक नेक और सुसंस्कारित परिवार की बेटी को वैसा ही सुसंस्कारित और नेक परिवार

में और ज्यादा मजबूती लाने का संकल्प लिया। इस तरह दोनों पति-पत्नी एकत्व के भाव से काम करने लगे। श्रीमती परमेश्वरी देवी को चाहे गाँव में रखा गया या शहर में, उन्होंने कभी विरोध नहीं किया। उदयपुर, हिसार या रोहतक में रहते हुए चौ. मित्रसेन जी के सामने कई बार ऐसी परिस्थितियां आईं कि आपको खांडा खेड़ी में रहना पड़ा। इस दौरान आपने कभी कमजोरी नहीं दिखाई और किसी प्रकार का विरोध नहीं किया।

सन् 1961 में जब चौ. मित्रसेन जी उड़ीसा में अपना व्यवसाय शुरू करने जा रहे थे तो उनकी माता श्रीमती जीवनीदेवी ने विरोध किया, लेकिन श्रीमती परमेश्वरी देवी ने बड़ी हिम्मत के साथ खुशी-खुशी आपको विदा किया। उस वक्त आपकी सास जीवनीदेवी ने निर्णय किया कि अब हम रोहतक से जाकर खांडा खेड़ी रहेंगे तो वह निर्णय भी आपने सहर्ष स्वीकार कर लिया। उस वक्त आपका बड़ा बेटा रुद्रसेन रोहतक में पहली कक्षा का छात्र था। बाद में रुद्रसेन ने दूसरी कक्षा अपने ननिहाल जुलानी से पास की तथा तीसरी कक्षा खांडा खेड़ी से उतीर्ण की। यह सोचकर कि कहीं रुद्रसेन पढ़ाई में कमजोर न पड़ जाए, आपने उसे चौथी कक्षा में सिंहपुरा-सुन्दरपुर गुरुकुल में भेज दिया।

समय निरंतर प्रवहमान है। समय का प्रवाह अपने साथ अच्छा-बुरा, सफलता - असफलता, पाप-पुण्य, रात-दिन, और अंधेरा -उजाला लेकर चलता है। इसमें से किसी के हिस्से कुछ आता है तो किसी के हिस्से कुछ। ऐसा ही कुछ चौ. मित्रसेन जी के परिवार के साथ भी गुजरा। आर्थिक नजरिए से बुरा वक्त भी आया, लेकिन संस्कार और मानव मूल्य रूपी संपत्ति का खजाना निरंतर बढ़ता ही गया। ईश्वर विश्वास के सहारे नवदंपति श्रीमती परमेश्वरी देवी और चौ. मित्रसेन जी ने मन ही मन नया इतिहास लिखने का संकल्प लिया। श्रीमती परमेश्वरी देवी ने पूरे धैर्य, साहस और निष्ठा के साथ अपने कर्मयोगी पति के कंधे से कंधा मिलाकर कदम बढ़ाए। दो शब्दों में कहें तो इतना पर्याप्त है कि चौ. मित्रसेन जी की अनुपस्थिति में जब कभी आपके परिवार पर कोई संकट या विपत्ति आई तो श्रीमती परमेश्वरी देवी ने बिना किसी घबराहट और डर के दृढ़ता के साथ सक्षम गृहिणी की तरह हालात का मुकाबला किया और सफल होकर निकलीं। परिस्थितियों से घबराकर और हताश होकर बैठना आपका स्वभाव नहीं है। वैदिक मान्यताओं के प्रति अटूट विश्वास, सुसंस्कार और ईश्वर के प्रति आस्था जैसे गुण आपको पूर्वजों से आशीर्वाद के रूप में मिले हैं।

सदाचरण, साधु-संन्यासियों की सेवा-शुश्रूषा और दान-पुण्य करना आप का स्वभाव है। आप और आपके पति चौ. मित्रसेन जी सदैव वैदिक साधु-सन्तों और ऋषि-मुनियों के सम्पर्क में रहे हैं। इसी का नतीजा है कि आप दोनों में धार्मिकता और मानवीय गुणों का समावेश जीवन दर्शन स्तर तक हुआ है।

बात सन् 1955 की है। आप पति-पत्नी चितौड़गढ़ गुरुकुल (राजस्थान) में आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी के दर्शनार्थ गए, पर उन दिनों स्वामी जी मौन व्रत में थे। दूसरी बार आप जब गुरुकुल पहुंचे तो स्वामी जी ने आशीर्वाद दिया-पुत्री! तुझे पुत्र रत्न प्राप्त होगा। उसे गुरुकुल में पढ़ाना। भगवत् कृपा से सन् 1956 में रुद्रसेन का जन्म हुआ। बाद में स्वामी जी के आदेशानुसार बालक रुद्रसेन को पढ़ाई के लिए सिंहपुरा - सुंदरपुर गुरुकुल में प्रवेश कराया गया। आज के विख्यात योगीराज स्वामी सतपति जी महाराज तब आचार्य मनुदेव नाम से जाने जाते थे। अरसे के बाद एक दिन स्वामी सतपति जी महाराज रोहतक में सिन्धु भवन पधारे। उन्हें देखते ही कैप्टन रुद्रसेन ने स्वामी जी से प्रार्थना की कि बांसुरी सुना दीजिए। स्वामी जी ने कहा, 'बांसुरी तो है नहीं और छोड़े हुए भी कई वर्ष बीत गए हैं, लेकिन बेटा, तुम्हें कैसे पता चला कि मैं बांसुरी बजाता हूँ।' तब कैप्टन रुद्रसेन ने बताया कि स्वामी जी मैं सिंहपुरा-सुंदरपुर गुरुकुल में आपका शिष्य रह चुका हूं।

आदर्श भारतीय नारी : श्रीमती परमेश्वरी देवी ने जीवन के हर पक्ष की गरिमा को बनाए रखा। जब आप माता-पिता के घर में रही तो वह परिवार स्वयं को खुशनसीब मानता रहा और जब गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया तो सिन्धु परिवार ने आपको पाकर ईश्वर का धन्यवाद किया। आपने सास-ससुर को माता-पिता समझकर हर प्रकार से उनकी सेवा-शुश्रूषा करके पुण्य कमाया। आज जिस सुखद और शांत स्थिति में आप वैभवशाली वैदिक जीवन पद्धति को साकार कर रही हैं, यह सब उन पवित्र आत्माओं की सेवा और आशीर्वाद का प्रतिफल है। अपनी मेहनत और लगन के अलावा बुजुर्गों और पुण्यात्माओं का आशीर्वाद आदमी को सदैव प्रेरणा देता है और साथ ही अच्छा जीवन जीने का रास्ता दिखाता है।

आदर्श बहन और मां : बालपन से ही श्रीमती परमेश्वरी देवी ने अपने सभी नौ छोटे भाइयों सर्वश्री सतबीर, अमर सिंह, दिलबाग सिंह, राजबीर सिंह, राज सिंह, सुरेश कुमार, रामनिवास, बलजीत सिंह और सत्यवान सिंह को जहाँ बहन का प्यार दिया, वहीं मां की तरह उन पर ममता भी लुटाई। आज आपके भाई सफल व्यवसायी और पोते-पोतियों वाले भरे-पूरे परिवारों में रह रहे हैं। आपकी शीतल ममता, स्नेह और आशीर्वाद आज भी उन्हें आनंदित करता है। सिन्धु परिवार में आपकी सभी पुत्र वधुएं आपको अपनी जननी जैसा सम्मान देकर स्वयं को सौभाग्यवती मानती हैं और आपके आदेशों का पालन करना अपना परम सौभाग्य समझती हैं। ईश्वर कृपा से सभी पुत्रवधुएं सम्मानित और प्रतिष्ठित परिवारों से आई हैं।

गोमाता की सेवा : अपने पितृकुल में परमेश्वरी जी को गो आदि पशुओं से बहुत प्यार था। आपको गायों और अन्य पशुओं से

विशेष लगाव है। खासकर, गो माता तो आपकी पूजनीया है। जब तक आप एक बार स्वयं गोशाला जाकर उन्हें दुलार न लें, तब तक आप को चैन नहीं आता है।

पंचयज्ञ और उपदेश : परमेश्वरी देवी जी का जीवन उदात्त, आदर्श और सबको प्रेरणा देने वाला है। एक सफल, सुयोग्य और सार्थक गृहिणी के अलावा आप आदर्श माता, आदर्श पत्नी, धर्म परायण महिला और आदर्श नागरिक हैं। आप नित्य प्रति पंचयज्ञ संपन्न करती हैं। आपकी योग में विशेष रुचि है। बच्चों के जम्मदिन, विवाह की सालगिरह और विभिन्न तीज-त्योहारों पर विशेष पूजा-पाठ, यज्ञादि करना और दान-दक्षिणा देना आपकी जीवनचर्या का अभिन्न अंग हो गया है। साधु-सन्तों और विद्वानों की सेवा-शुश्रूषा को आप अपना दायित्व मानती हैं। आप सर्वगुण संपन्न, दानशील और ममतामयी हैं। इतना सब होने के बावजूद आप सरल और सहज भाव से कहती हैं-मैं क्या हूं, मैं कौन हूं देने वाली, यह सब तो उस परमपिता परमेश्वर का दिया हुआ है। मैं तो निमित्तमात्र हूं। यह आपकी उदारता और विद्वता का परिचायक है। आप स्पष्ट और सार्थक विचारों की मालकिन हैं। आप अपने परिचितों, बच्चों और शुभचिंतकों को सदैव सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं। आपका वेद वाक्य है -बड़ों का सम्मान करो, छोटों को स्नेह दो ओर नेक बनो-परमात्मा आपका कल्याण करेगा।

दानशीलता और आदर्श-श्रीमती परमेश्वरी देवी जी दानशीलता और आदर्श से भरपूर व्यक्तित्व हैं। आप अपने साधनों का सदुपयोग करते हुए सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक संस्थाओं, गुरुकुलों, अनाथों, वनवासी क्षेत्रों के गरीबों को समय-समय पर आर्थिक सहयोग देती रहती हैं। जहाँ तक दान देने की बात है तो अथर्ववेद में कहा गया है कि **शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर।** आपका यह गुण है कि सदैव गुणीजनों, बुद्धिजीवियों का आदर और सम्मान करती हैं। करुणा, दानशीलता आपके चरित्र की विशेषताएं हैं। जीवन में अन्य गुणों को धारण करना आसान होता है, किन्तु सेवा रूपी गुण का जीवन के धरातल में प्रतिष्ठित होना बहुत कठिन है।

श्रीमती परमेश्वरी देवी आदर्श मां हैं। माता सन्तान के माध्यम से समाज का निर्माण करने वाली होती है। वह कुल धन्य होता है और वह सन्तान बड़ी भाग्यवान होती है, जिसके माता-पिता धार्मिक प्रवृत्ति वाले और विद्वान् होते हैं। अपने बच्चों से जितना स्नेह और ममता माता को होती है, उतनी किसी और को नहीं हो सकती। इसी तरह अपनी सन्तानों का जितना उपकार माता करती है और चाहती है, उतना कोई दूसरा नहीं कर सकता। सन्तान की असली निर्माता मां ही है। इसलिए मां को भगवान से बड़ा कहा गया है। श्रीमती परमेश्वरी देवी ने अपनी सन्तानों को सुयोग्य बनाया। आपको नारी जाति और मातृ शक्ति का गौरव कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

श्रीमती परमेश्वरी देवी की स्नेहमयी स्निग्ध छाया में चल रहे मित्रसेन जी के परिवार में सचमुच देवताओं का वास है, तभी तो जीवन के तमाम उतार-चढ़ावों के बावजूद यह परिवार निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यह माता परमेश्वरी देवी के व्यक्तित्व और सात्विक सोच का प्रतिफल है कि सिन्धु परिवार आज भी एकजुट है, जबकि आज एकल परिवार प्रणाली समाज का सच बन गई है। भारतीय गृहस्थ जीवन में पदे-पदे नारी के महत्त्व की व्यावहारिक सार्थकता सिद्ध होती है। श्रीमती परमेश्वरी देवी के स्नेह और ममता रूपी दौलत से सभी चमत्कृत और अभिभूत हैं।

सुयोग्य सन्तान का परिचय

ईश्वर इस चराचर जगत् का रचनाकार है और मनुष्य उस प्रभु की सर्वश्रेष्ठ रचना है। मानव जीवन का प्रवाह अनंतकाल से अविच्छिन्न चला आ रहा है। हर युग में मानव ने अपनी इच्छा शक्ति के बल पर प्रगति के नये-नये आयाम स्थापित किए। इस समय प्रवाह में कुछ शख्स अपने व्यक्तित्व और कृतित्व की ऐसी अमिट छाप छोड़ते हैं जिसे मिटाना आसान नहीं। चौ. मित्रसेन जी भी एक ऐसी ही विभूति हैं, जिन्होंने अपनी विशेष छाप छोड़ी है। इस शख्सियत ने विपरीत हालात से जूझते हुए वह मुकाम हासिल किया, जिसे पाना हर किसी का सपना है।

चौ. मित्रसेन जी ने अपनी सन्ततियों को भी सुयोग्य ओर सुसंस्कारित बनाया है। धन्य होते हैं वे महापुरुष जो अपनी सन्तान को सामाजिक सरोकारों से जोड़ते हुए उनमें नैतिकता, संवेदनशीलता, ज्ञान पिपासा, दयाशीलता, दान- शीलता, दृढ़ निश्चय और ईश आस्था जैसे गुण संप्रेषित करते हैं। चौ. मित्रसेन जी भी ऐसे ही व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपनी सन्तान को इन सब गुणों से युक्त करके समग्र और जागरूक इन्सान बनाया। उनमें मानव मूल्यों और गुणों का संप्रेषण इस कदर किया कि आज वे जीवन के हर क्षेत्र में सफल और और सशक्त हस्ताक्षर हैं। आपके बच्चों को देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि ये चौ. मित्रसेन जी की सन्तानें हैं। आप के छह सुपुत्र और तीन सुपुत्रियां हैं।

1. कैप्टन रुद्रसेन

1. **जन्म :** आप चौ. मित्रसेन जी के सबसे बड़े बेटे हैं। आपका जन्म 2 फरवरी, 1956 को हुआ। आप सरल और सादगी से परिपूर्ण शख्सियत हैं। आप माता-पिता के परम भक्त और सेवा भावना से ओत-प्रोत हैं। आपने सभी भाई-बहनों के आदर्श के रूप में स्वयं को स्थापित किया है।

2. **शिक्षा :** कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की, एक वर्ष के प्रशिक्षण के बाद पांच साल तक भारतीय सेना में बतौर कैप्टन मातृभूमि की सेवा की।

3. **सहधर्मिणी :** श्रीमती सरोज सिन्धु। एम.ए., बी.एड.। बहुत ही सरल तथा हंसमुख स्वभाव की स्वामिनी हैं। सदैव परिवार को



कैप्टन रूद्रसेन



श्रीमती सरोज सिंधु

जोड़कर रखने और सबको साथ लेकर चलना आप की खूबी है।

4. **बाल-गोपाल :** आपके चार बच्चे हैं- सुमति, सुरभि, शाइस्ता और सर्वेश। सुमति कंप्यूटर इंजीनियर है। सुरभि ने वाणिज्य में स्नातक की डिग्री हासिल कर अब अमेरिका में एमबीए कर रही हैं। शाइस्ता-बीए द्वितीय और सर्वेश-दसवीं कक्षा का छात्र है।

5. **विचारधारा :** आप भी वैदिक विचारधारा के पथिक और सात्विक कर्मयोगी हैं। यज्ञकर्म में आस्था है। नित्यप्रति हवन करते हैं। कोई भी शुभ कार्य करने से पहले वैदिक परम्परा के अनुसार यज्ञ करना आपका सहज स्वभाव है। आप मानवीय गुणों और मूल्यों से ओत-प्रोत विचारवान व्यक्ति हैं। वैदिक मूल्यों की अनुपालना करते हुए भी आधुनिक जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना आपकी विशिष्टतम उपलब्धि है।

6. **कर्तव्यनिष्ठ :** पिताजी के कार्यों को आगे बढ़ाया और नित नए आयाम स्थापित किए। सभी भाई-बहनों और बच्चों को आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रोत्साहित किया।

8. **मार्गदर्शक :** माता-पिताजी को मार्ग-दर्शक समझा और सदैव परिवार को साथ लेकर कार्य करते हैं।

9. **व्यवहार-कुशल :** आप बेहद व्यवहार कुशल हैं। सबसे सरलता से मिलते हैं। छोटों को प्यार बांटते है और बड़ों के साथ पूरे आदर-सम्मान से पेश आते हैं। आपका बड़प्पन सराहनीय है।

10. **व्यक्तित्व :** आप प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी हैं। सेना में कैप्टन रहने के बाद अब आप सिन्धु परिवार का सारा कारोबार संभाल रहे हैं। आप आज पिताश्री द्वारा स्थापित समस्त कारोबार के केन्द्र बिन्दु तथा योजनाकार हैं। उद्योग-व्यवसाय को विकसित करने में मुख्य भूमिका कैप्टन साहब की है। आप बेहद अनुशासनप्रिय, शुभसंकल्प और दृढ़ कर्मशक्ति के धनी हैं। उड़ीसा, छत्तीसगढ़, बिहार, मध्य प्रदेश आदि में जितनी भी औद्योगिक इकाइयां हैं तथा हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, राजस्थान आदि में जितने व्यावसायिक समूह हैं, सब आपके मार्गदर्शन से निरंतर आगे बढ़ रहे है। व्यवसाय की समस्त योजनाओं, विकास एवं प्रबन्ध के आप निर्देशक हैं। आपका व्यवहार मृदुं है तथा आप सभी के साथ बड़े सहज भाव से मिलते हैं।

2. वीरसेन आर्य

1. **जन्म :** आपका जन्म 3 दिसंबर, 1960 को हुआ। आप चौ. मित्रसेन जी की तीसरी सन्तान हैं।

2. **शिक्षा :** स्नातक की डिग्री प्रथम श्रेणी में रोहतक में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से


वीरसेन आर्य


श्रीमती शशि सिंधु

पास की। पिताजी का सहयोग करने के लिए 19 साल की उम्र में उड़ीसा चले गए।

3. **सहधर्मिणी :** श्रीमती शशि सिन्धु। सरल स्वभाव की हैं और आप में भी सबको साथ लेकर चलने की भावना है।

4. **बाल-गोपाल :** सौरभ, सोमवीर और श्वेता आपकी तीन सन्ततियां हैं। सभी इस समय विद्यार्थी जीवन में हैं।

5. **विचारधारा :** हर रविवार और शुभ अवसर पर वैदिक हवन करते हैं। ईश्वर में अटूट निष्ठा है। परिवार के संस्कार आप में कूट-कूट कर भरे हैं। निरंतर कर्मशील बने रहना आपका मूल मंत्र है। परिवार व व्यावसायिक संस्थानों में संगठन की भावना कूट-कूट कर भरने में आप विशेष रूप से सफल रहे हैं।

6. **कर्तव्यनिष्ठ :** छोटी उम्र में पिताजी के साथ कारोबार में सहयोगी बनने तथा लगातार काम को बढ़ाने की मंशा रखते हैं। सभी भाई-बहनों की हर तरह से मदद करते हैं।

8. **मार्गदर्शक :** बड़े भाई और माता-पिताजी को आदर्श मानते हैं। हर कार्य में मन से सहयोग करते हैं। अच्छी बातों को सीखना और फैलाना आप का सबसे बड़ा गुण है।

9. **व्यवहार-कुशल :** आप 'खुश रहो और सभी को खुश रखो' के मूल सिद्धांत पर विश्वास रखने वाले हैं। आप हंसमुख प्रवृत्ति वाले हैं। बच्चों से आपको बेहद लगाव है।

10. **व्यक्तित्व :** प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी हैं। आप बहुत परिश्रमी, संयमी, विवेकी और सहनशील हैं। अपने कारोबार को आगे बढ़ाने में अपने पिता चौ. मित्रसेन जी एवं अग्रज कैप्टन रुद्रसेन जी के दाएं हाथ के समान हैं।

3. व्रतपाल आर्य

1. **जन्म :** आप चौ. मित्रसेन की पांचवीं सन्तान है। आपका जन्म 5 फरवरी, 1965 को हुआ।

2. **शिक्षा :** वाणिज्य में स्नातक की डिग्री महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से प्राप्त की।

3. **सहधर्मिणी :** श्रीमती उषा सिन्धु। आपने भी एम.ए. महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय से पास की। मिलनसार और


व्रतपाल आर्य


श्रीमती उषा सिंधु

सहयोगिनी हैं।

4. **बाल-गोपाल :** स्मृति, सुमेधा, सृजना और स्ताव्य आपके चार बच्चे हैं। स्मृति और सुमेधा स्कूल में पढ़ती हैं।

5. **विचारधारा :** हर रविवार और शुभ अवसर पर वैदिक हवन करते हैं। ईश्वर में

अटूट विश्वास रखते हैं।

6. **कर्तव्यनिष्ठ :** सदैव कार्य करने की इच्छा से भरे व्यक्ति हैं। कर्म प्रधानता आप का गुण हैं। बड़े भाइयों के मार्गदर्शन में कार्य करते हैं।

8. **मार्गदर्शक :** बड़े भाइयों और माता-पिताजी को आदर्श मानकर चलते हैं। हर प्रकार से परिवार का सहयोग करते हैं।

9. **व्यवहार-कुशल :** हंसमुख, सरल और सबको खुश रखने वाले हैं।

10. **व्यक्तित्व :** प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी हैं। मिलनसार और मानवीय गुणों से ओत-प्रोत हैं। आपके कर्मचारियों के प्रति प्रेम और स्पष्टवादिता के सभी कायल हैं।

4. कैप्टन अभिमन्यु

1. **जन्म :** आपका जन्म 18 दिसंबर, 1967 को हुआ।

2. **शिक्षा :** आपने वाणिज्य में स्नातक की डिग्री महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक



कैप्टन अभिमन्यु



डा. एकता सिंधु

से पास की। फिर फौज में रहकर पांच साल तक भारत माता की सेवा की। सबसे कम उम्र में सेना में कमीशन प्राप्त किया और कैप्टन बने। सेना से लौटने के बाद आपने आईएएस पास की, पर नौकरी नहीं की। इसके बाद कानूनी मामलों में दक्षता के लिए आपने एलएलबी की।

3. **सहधर्मिणी :** डॉ. एकता सिन्धु। आपने पीएचडी की है। आप हंसमुख, मिलनसार और व्यवहार-कुशल हैं। शिक्षा के प्रचार-प्रसार में आपकी विशेष रुचि हैं।

4. **बाल-गोपाल :** श्रेया, सात्विक और शाश्वत आपके तीन बच्चे हैं।

5. **विचारधारा :** आप प्रतिदिन और शुभ अवसर पर यज्ञ हवन करते हैं। बच्चों को वैदिक धर्म के बारे में बराबर शिक्षा देते हैं। ईश्वर में अटूट विश्वास रखते हैं। मानव मूल्यों में आपकी दृढ़ आस्था है।

6. **कर्तव्यनिष्ठ :** सदैव कुछ नया करने की भावना आप में कूट-कूट कर भरी हुई है। परिवार को सदैव साथ लेकर चलना आपका मुख्य गुण है। अनुशासनप्रियता और समय की पाबंदी आपकी खासियतें हैं।

8. **मार्गदर्शक :** आप बड़े भाइयों और माता-पिताजी के मार्गदर्शन में चलने वाले हैं। परिवार के साथ-साथ देश की सेवा करने की भावना आपके व्यक्तित्व का हिस्सा है।

9. **व्यवहार-कुशल :** हंसमुख और सबकी मदद करने को सदैव तत्पर रहते हैं। मिलनसार होने के साथ -साथ आप प्रेरक व्यक्तित्व के धनी पुरुष हैं।

10. **व्यक्तित्व :** कैप्टन अभिमन्यु बहुत मेधावी और सुलझे हुए विचारों के व्यक्ति हैं।

रोहतक, दिल्ली तथा छत्तीसगढ़ से प्रकाशित दैनिक हरिभूमि एवं वित्त कंपनी के संचालन में आपका विशेष योगदान है। पत्रकारिता क्षेत्र में कैप्टन अभिमन्यु को हरियाणा सरकार ने **माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार** देकर सम्मानित किया है। अनुशासनप्रिय जीवन और निरंतर कर्मशील रहकर आगे बढ़ना आपकी खासियत है। बाधाओं से हारने और निराश होने को आप मानव की कमजोरी मानते हैं। आप हार को जीत की राह मानते हैं। निरंतर संघर्ष करके राहें सुलभ बनाना आप का मूल मंत्र है। आपसे मिलने वाला व्यक्ति आपके मृदु व्यवहार का कायल हो जाता है।

5. मेजर सत्यपाल आर्य

1. **जन्म :** 12 मई, 1970 को आपका जन्म हुआ। बाल्यकाल रोहतक में बीता।

2. **शिक्षा :** सन् 1988 में 12वीं कक्षा रोहतक से पास की। फिर एन.डी.ए. की परीक्षा


मेजर सत्यपाल आर्य


श्रीमती अनिका सिंधु

पास कर फौज में भर्ती हो गए और 12 साल देश की सेवा करके मेजर के पद से सेवानिवृत्त हुए। आप इलैक्ट्रिकल इंजिनियर भी हैं।

3. **सहधर्मिणी :** श्रीमती अनिका सिन्धु। एम.ए. (अर्थशास्त्र) हैं। आप सीधी-सादी, सद्‌विचारों वाली तथा मिलनसार महिला हैं।

4. **बाल-गोपाल :** शौर्य और सुरुचि- आपकी दो सन्तानें हैं। दोनों विद्यार्थी जीवन में हैं।

5. **विचारधारा :** हर रविवार और शुभ मौके पर आप यज्ञ और हवन करते हैं। बच्चों को वैदिक धर्म का ज्ञान बराबर देते रहते हैं। ईश्वर में आपका अटूट विश्वास हैं।

6. **कर्तव्यनिष्ठ :** परिवार तथा व्यवसाय के प्रति सभी कर्तव्यों को पूरी संजीदगी से निभाते हैं।

8. **मार्गदर्शक :** बड़े भाइयों और माता-पिताजी को अपना मार्गदर्शक मानते हैं।

9. **व्यवहार-कुशल :** सरल, सादगीभरा और अनुशासित जीवन जीना पसन्द करते हैं।

10. **व्यक्तित्व :** प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी हैं। अनुशासनप्रियता आपका गुण हैं। सेना में रहते हुए आपने जो अनुशासन सीखा उसको सामाजिक जीवन में भी कायम रखे हुए हैं।

6. देवसुमन आर्य

1. **जन्म :** 24 अगस्त, 1975 को रोहतक में आपका जन्म हुआ।

2. **शिक्षा :** वाणिज्य में स्नातक की डिग्री दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इंग्लैंड से एमबीए किया।

3. **सहधर्मिणी :** श्रीमती रचना सिन्धु हैं। आपने भी एमबीए की हुई है।



देवसुमन आर्य



श्रीमती रचना सिंधु

4. **बाल-गोपाल :** स्वस्ति।

5. **विचारधारा :** हर रविवार और शुभ अवसर पर हवन करते हैं। बच्चों को वैदिक धर्म के बारे में बताते रहते हैं। ईश्वर में अटूट विश्वास रखते हैं। प्रगतिशील विचारों के धनी हैं।

6. **कर्तव्यनिष्ठ :** सदैव बड़ों की आज्ञा के अनुसार चलने वाले हैं। बच्चों को प्यार और बड़ों को सम्मान देना आपका गुण है।

8. **मार्गदर्शक :** बड़े भाइयों और माता-पिताजी को आदर्श मानते हैं। उन्हीं के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से 54 देशों के प्रतिनिधि के रूप में कामनवेल्थ यूथ कॉकस के चेयरमैन का पद प्राप्त किया।

9. **व्यवहार-कुशल :** हंसमुख और शांत स्वभाव के मालिक हैं और सदैव मदद करने को तत्पर हैं। मृदुभाषी और कर्तव्यनिष्ठ हैं।

10. **व्यक्तित्व :** प्रभावशाली व्यक्तित्व। चौ. मित्रसेन और परमेश्वरी देवी के सबसे छोटे सुपुत्र देवसुमन नम्र एवं सेवाभाव वाले हैं। व्यापार प्रबन्धन की पढ़ाई लन्दन से पूरी करने के बाद परिवार के व्यवसाय में हाथ बंटा रहे हैं। वर्तमान में कामन वेल्थ यूथ कॉकस के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। 14 जून, 2003 के 'अमर उजाला' ने लिखा था-भारतीय यूथ की इन्टरनेशनल पहचान हैं-देवसुमन।

कॉमनवेल्थ यूथ प्रोग्राम

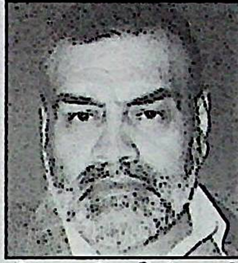
कॉमनवेल्थ सन् 1974 से 54 देशों में अपने युवा कल्याण कार्यक्रम चला रहा है और इस दिशा में प्रयासरत हजारों समाजसेवी संगठनों को आर्थिक सहायता देता है। युवा कार्यक्रमों के तहत नीति निर्धारक क्षेत्र में युवाओं के नेतृत्व को उभारना, सामाजिक सहायता, कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना, उन्हें रोजगार, प्रशिक्षण और ऋण देना, लैंगिक सहायता के कार्यक्रम चलाना आदि शामिल हैं। यूथ कॉकस को चार मुख्य क्षेत्रों में बांटा गया है-एशिया, साउथ पैसेफिक, कैरेबिया और अफ्रीका। इनके रीजनल कार्यालय क्रमशः भारत (चंडीगढ़), आस्ट्रेलिया, गुयाना और जांबिया में है और मुख्यालय लंदन में। इसका अध्यक्ष कॉमनवेल्थ के सभी देशों की युवा कल्याण नीतियों को तो प्रभावित करता ही है, कॉमनवैल्थ से जुड़े सभी कार्यक्रमों, बैठकों और सम्मेलनों में भाग लेता है। संयुक्त राष्ट्र के विशेष कार्यक्रमों में भी उसे भाग लेने का मौका मिलता है।

7. पुत्री दयावती

1. **जन्म :** 13 जनवरी, 1959 को आपका जन्म हुआ।

2. **शिक्षा :** 12वीं कक्षा रोहतक से।

3. **पति :** श्री राजबीर सिंह वर्मा से आपकी शादी हुई। अति शिक्षित परिवार में जन्मे श्री

पुत्री दयावती श्री राजबीर सिंह वर्मा

वर्मा ने स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करने के बाद लम्बे समय तक महत्वपूर्ण सरकारी पदों पर कार्य किया। स्वैच्छिक सेवानिवृति प्राप्त कर अब अपना व्यवसाय चला रहे हैं। श्री राजबीर बहुत ही अनुभवी एवं समझदार व्यक्ति हैं। आप संस्कारी परिवार से हैं। बालपन से ही भारतीय संस्कृति को आत्मसात् करने वाले, सेवा कार्यों से जीवन संग्राम में सदैव विजयी रहे हैं। आध्यात्मिक पथ के पथिक, ईश्वर कृपा से कुल का गौरव बढ़ा रहे हैं। मिलने वाला तो आपसे ऐसा प्रभावित होता है कि आपका परमस्नेही बन जाता है।

4. **बाल-गोपाल :** विवेक-व्यवसाय, विशाल-कंप्यूटर इंजीनियर।

5. **विचारधारा :** ईश्वर में अटूट निष्ठा, वैदिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर शामिल होती हैं।

6. **कर्तव्यनिष्ठ :** पूरे परिवार का सहयोग करती हैं और सबको साथ लेकर चलती हैं।

7. **उदात्त भावना :** धर्मप्रिय कार्यों में उदारता के साथ सहयोग करती हैं। बहुत ही धार्मिक विचार रखने वाली हैं।

8. **मार्गदर्शक :** सम्पर्क में आने वाले लोगों का खुले मन से मार्गदर्शन और आर्थिक सहयोग करना आपका विशेष गुण है।

9. **व्यवहार-कुशल :** आप बहुत ही हंसमुख, मददगार और मिलनसार व्यवहार की स्वामिनी हैं।

10. **व्यक्तित्व :** आप अतिथि को भगवान का दर्जा देती हैं। आपका व्यक्तित्व स्मरणीय है।

8. पुत्री विमला

1. **जन्म :** आपका जन्म 23 मार्च, 1963 को हुआ। बचपन रोहतक में बीता।

2. **शिक्षा :** एम.ए. (सोसियोलॉजी) में विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। बी.एड. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से की। आप खेलकूद में हमेशा आगे रही हैं।




पुत्री विमला श्री कुलबीर सुरजेवाला

3. **पति :** श्री कुलबीर सुरजेवाला, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से बी.ए., एल.एल.बी. करके हरियाणा सरकार में कार्यरत हुए। अब आठ साल से खुद के व्यवसाय में व्यस्त हैं। श्री सुरजेवाला मित्रों एवं सहयोगियों में लोकप्रिय हैं। आप स्नेहदिल, मृदुभाषी और ईश्वर विश्वासी हैं।

4. बाल गोपाल : सुमित (ज्येष्ठ पुत्र) और सुप्रीत। सुमित वाणिज्य की पढ़ाई हेतु अमेरिका गया है। सुप्रीत भी वाणिज्य की पढ़ाई कर रहा है।

5. विचारधारा : धार्मिक विचारों वाली हैं। वैदिक विचारधारा और भारतीय संस्कृति में अटूट विश्वास रखती हैं।

6. कर्तव्यनिष्ठ : कर्तव्य की भावना आप में कूट-कूट कर भरी हुई है, यही भावना आप बच्चों में भी भरने का प्रयास करती हैं।

7. उदात्त भावना : आप सभी प्रकार के धार्मिक कार्यों एवं जनसाधारण के प्रति उदार भावना रखती हैं।

8. मार्गदर्शक/सहयोग : पिता जी और भाई रुद्रसेन जी के मार्गदर्शन में चलना और कुलबीर जी का सहयोग आपकी पूंजी है।

9. व्यवहार-कुशल : आप विश्वविद्यालय की डिबेट में बढ़-चढ़कर भाग लेती रहीं हैं, जिसके फलस्वरूप आपकी वाक्पटुता एवं व्यवहार कौशल अनुकरणीय है।

10. व्यक्तित्व : सौम्य व्यक्तित्व की धनी हैं।



पुत्री मधु



श्री शमशेर सिंह

9. पुत्री मधु

1. जन्म : 13 मई, 1972 में रोहतक में आपका जन्म हुआ।

2. शिक्षा : एम.ए., बी.एड. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से की।

3. पति : श्री शमशेर सिंह जी से आपकी शादी हुई। वे स्वच्छ छवि के मालिक है और भारतीय पुलिस सेवा में कर्तव्य पालन कर रहे हैं। आपकी सौम्यता और सुमधुर व्यवहार आपके धर्मनिष्ठ पूर्वजों का आशीर्वाद है।

4. बालगोपाल : आपके तीन बाल गोपाल हैं - महक, आदित्य और आर्यमन।

5. विचारधारा : ईश्वर में अटूट विश्वास एवं वैदिक विचारधारा की धनी हैं। आप धार्मिक अनुष्ठानों में बढ़-चढ़कर भाग लेती हैं।

6. कर्तव्यनिष्ठ : कर्तव्य की भावना के साथ परिवार के सभी सदस्यों के साथ चलने वाली हैं।

7. उदात्त भावना : आप साामजिक एवं धार्मिक कार्यों में उदार भावना का परिचय देती हैं।

8. मार्गदर्शक/सहयोग : सभी बड़े बुजुर्गों का मार्गदर्शन लेती रहती हैं और अपने से छोटों का हमेशा सहयोग करती हैं।

9. व्यवहार-कुशल : आप हंसमुख, मिलनसार एवं बच्चों से बहुत प्यार करती हैं।

10. व्यक्तित्व : आप बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी हैं।

द्वितीय अध्याय

आर्य समाज सेवक के रूप में

2. आर्य समाज सेवक के रूप में

तीर्थराज प्रयाग में गंगा-यमुना का संगम है। इस संगम में स्नान करना अनेक पुण्यों का फलदायक माना जाता है। गंगा पतित-पावनी मानी जाती है। जब यमुना उसमें मिल जाती है, तब उसकी पतित-पावनी शक्ति द्विगुणित हो जाती है। इसी तरह जब मनुष्य के जीवन में धर्म-सत्कर्म रूपी गंगा और पुरुषार्थ, लोक कल्याण एवं मानवता रूपी यमुना की धाराएं समन्वित होती हैं तो यह संगम प्रयाग से भी अधिक पावन बन जाता है, क्योंकि यह संगम मानव कल्याण के लिए जो योगदान देता है, उसकी मिसाल नहीं मिलती है। हमारे चरितनायक चौ. मित्रसेन जी के जीवन में धार्मिकता रूपी गंगा और समाजसेवा रूपी यमुना का समन्वय प्रत्यक्ष सिद्ध है। इसमें जिस-जिस ने भी स्नान किया, वही-वही पवित्र और धन्य हो गया। इस अध्याय में उनके जीवन रूपी इस पुनीत सरोवर से मोती निकालने का प्रयास किया जाएगा।

आर्यसमाज का प्रभाव

पचहत्तर वर्ष के यज्ञमय जीवन के प्रतीक, समाज सेवकों के लिए अनुकरणीय, महान व्यक्तित्व के धनी, संकल्पशील, सुव्यवस्था के प्रतिष्ठापक, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा के दीवाने, परिस्थितियों के कुशल पारखी चौ. मित्रसेन जी को वैदिक धर्म की शिक्षा माता-पिता से प्राप्त हुई। जिस शख्स के पिता आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, लाहौर के भजनोपदेशक रहे हों, उनका बेटा आर्यत्व के रंग से सराबोर और राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत न हो, ऐसा कैसे संभव हो सकता है ? आज भारत में पुनर्जागरण, राष्ट्रीय एकता और संघर्षों के बाद प्राप्त जो स्वतंत्रता दिखाई देती है, उसमें महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने प्रबल शक्ति के रूप में काम किया है।

चौ. मित्रसेन जी का परिवार तो उन दिनों देशभक्तों और क्रांतिकारियों के लिए आश्रय स्थल था। जैसा कि पीछे भी बताया जा चुका हैं कि शहीद-ए-आजम सरदार भगतसिंह, भाई परमानन्द जैसे देशभक्तों को इस कुल ने अपने परिवार का सदस्य समझ कर ही तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार आश्रय दिया था। सरदार भगत सिंह को सेठ छाजूराम के पास कलकत्ता (अब कोलकाता) भेजने की योजना बनाई थी। भाई परमानन्द इसी परिवार की योजना के अनुसार कुछ समय इस क्षेत्र में रहे और नारनौंद में आर्य समाज की स्थापना की। उस युग में आर्य समाजी बनना ऊंचे दर्जे की देशभक्ति, धार्मिकता और राष्ट्रभक्ति का परिचायक था। अंग्रेजों के डर से तब लोग आर्य बनने पर हुक्का-पानी बंद करके बिरादरी से बहिष्कृत कर देते थे। ऐसे एक नहीं, सैकड़ों



अपने दैनिक जीवन के अभिन्न अंग यज्ञ में आहुति देते हुए श्री मित्रसेन आर्य और उनकी धर्मपत्नी।

परिवारों के उदाहरण हैं, जब लोगों ने तरह-तरह के कष्ट सहन करके भी आर्य समाजी बनना पसंद किया। इस क्षेत्र को ऊंचा उठाने, राष्ट्रीयता को सुसंगठित करने और जन-जागृति लाने में दो बातों पर विशेष ध्यान दिया गया। भारत भूमि के गौरव पर आस्था बढ़ाई जाए और भविष्य में भारत को महान बनाने के लिए आशा का उदय करके उसके अनुरूप प्रयत्न किए जाएं। इसी कार्यक्रम को लेकर चौ. मित्रसेन जी के परिवार के बुजुर्गों चौ.राजमल जैलदार और चौ. शीशराम आर्य, हरियाणा के ग्रामीण समाज के मसीहा डॉ. रामजीलाल आर्य, सहायक सर्जन हिसार, निवासी गाँव लुदास, पं. लखपतराय, बाबू चूड़ामणि आदि से मिलकर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में जुटे हुए थे। चौ. मित्रसेन जी भी कृषि, कारोबार आदि के साथ-साथ आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय हुए। उन्होंने राष्ट्रवादी विचारधारा के चलते तीन पुत्रों को फौज में भेजा।

डॉ. रामजीलाल सांघी और उनके चचेरे भाई चौ. मातुराम जैलदार के साथ इस परिवार से घनिष्ठ सम्बंध थे। डॉ. साहब के बेटे चौ. रणजीत सिंह खांडा खेड़ी में इन्हीं के कुटुंब में विवाहित थे। खांडा निवासी चौ. मामनसिंह डिप्टी डायरेक्टर, डॉ. साहब की प्रेरणा और सहयोग से उच्चाधिकारी बने। चौ. मातुराम जैलदार ने हिसार जिले के बड़े गाँव कापड़ो में आर्य समाज की स्थापना की। वहाँ प्रचार कार्य में चौ. शीशराम आर्य उपदेशक का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि इस क्षेत्र और दूर के स्थानों पर भी आर्य समाज की शिरोमणि सभाएं चौ. शीशराम आर्य को ही प्रचार कार्य के लिए बुलाती थीं। इसे आर्य समाज का प्रभाव ही कहेंगे कि चौ. मित्रसेन जी सन् 1949 से लेकर आज तक आर्य समाज से

जुड़े हुए हैं। पीछे बताया भी जा चुका है कि पहले-पहल आप आर्य समाज, झज्जर रोड, रोहतक के सक्रिय सदस्य बने और कारोबार से समय निकाल कर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों में समय लगाया। यहाँ आर्य समाज के उच्च कोटि के संन्यासी, वेदज्ञ और विद्वान स्वामी स्वतंत्रानन्द, स्वामी सर्वदानन्द जी, आनन्द स्वामी जी, स्वामी दीक्षानन्द, स्वामी ओमानन्द आदि बराबर आते रहते थे। इनके सम्पर्क से चौ. मित्रसेन जी को नई प्रेरणा, दिशा और ज्ञान मिला। इसके बाद उन्होंने खुद को तन,मन और धन से आर्य समाज के लिए समर्पित कर दिया।

सन् 1957 में जब पंजाब की प्रताप सिंह कैरों सरकार ने हिन्दी पर तरजीह देकर पहली कक्षा से पंजाबी पढ़ना अनिवार्य कर दिया, तब आर्य समाज ने इसका विरोध किया। आर्य समाज ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में हिन्दी सत्याग्रह किया। सरकार ने इस आंदोलन को कुचलने के लिए लगभग 50 हजार लोगों को जेलों में ठूंस दिया। चौ. मित्रसेन जी ने भी कारोबार को छोड़कर एक वर्ष तक इस सत्याग्रह में भाग लिया। साथियों सहित आप भी चार माह तक हिसार जेल में नजरबंद रहे। इस दौरान आप पं. बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द), पं. जगदेवसिंह सिद्धांती आदि विद्वानों के सम्पर्क में आए । जेल में कई महान विभूतियों से आपका सम्पर्क हुआ और उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला।

गुरुकुल, आमसेना से सम्पर्क

करीब 20-22 वर्ष पहले आर्य समाज, भुवनेश्वर के वार्षिक उत्सव (महोत्सव) पर गुरुकुल, आमसेना के ब्रह्मचारी वामदेव जी आदि कुछ ब्रह्मचारी व्यायाम प्रदर्शन करने गए थे। ब्रह्मचारी वामदेव जी के व्यायाम प्रदर्शन से चौ. मित्रसेन जी और आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश जी बहुत प्रभावित हुए। व्यायाम प्रदर्शन के बाद स्वामी जी ने ब्रह्मचारी वामदेव जी को बुलाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। स्वामी जी ने चौ. मित्रसेन जी से कहा कि आर्य समाज के असली भवन ये ब्रह्मचारी हैं। आप इन्हें संभालने पर विशेष ध्यान दीजिए। स्वामी सत्यप्रकाश जी, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के सुपुत्र थे। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन विभाग के अध्यक्ष रह चुके थे। स्वामी जी ने अपने विद्वान पिता का अनुकरण करते हुए आर्य संन्यासी के रूप में आर्य समाज की सेवा की और आर्य प्रादेशिक सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में रहकर पं. प्रकाशवीर शास्त्री (सांसद) के साथ मिलकर वेद प्रतिष्ठान के अधीन चारों वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। ऐसे आर्य विद्वान हमारे चरितनायक चौ. मित्रसेन जी आर्य के आर्यत्व का सम्मान करते हैं।

आप उन दिनों आर्य समाज, भुवनेश्वर के प्रधान थे। स्वामी सत्यप्रकाश जी से चौ. मित्रसेन जी विशेष प्रभावित हुए। उनकी सलाह के बाद आपने ब्रह्मचारियों को संभालने का विचार किया। जब ये ब्रह्मचारी शहर से घूमकर



गुरुकुल आश्रम आमसेना चौ. मित्रसेन के कार्यक्षेत्र का आत्मीय अंग रहा है। कन्या गुरुकुल आमसेना की रजत जयंती-2004 पर गुरुकुलवासियों के साथ चौ. मित्रसेन तथा धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी।

आए तब चौ. मित्रसेन जी ने इन्हें बुलाया, आशीर्वाद दिया और इन्हें उत्साहित करने के लिए गुरुकुल को आर्थिक सहयोग भी दिया। ब्रह्मचारी वामदेव जी ने आपको गुरुकुल पधारने का आग्रह किया। आप फरवरी, 1984 को वार्षिक महोत्सव पर गुरुकुल में पधारे। तब गुरुकुल की प्रबन्धकारिणी की आमसभा ने आग्रहपूर्वक चौ. मित्रसेन जी को गुरुकुल का प्रधान बनने के लिए मना लिया। इसी समय से आपका गुरुकुल से सीधा सम्पर्क हो गया। अब चौ. मित्रसेन जी के सारे परिवार का ध्यान गुरुकुल की उन्नति पर है। फलस्वरूप गुरुकुल निरंतर प्रगति पथ पर है। आपके परिवार के सहकारितापूर्ण सहयोग से आज गुरुकुल सब ओर से सक्षम और समर्थ बन गया है। अनेक योग्य ब्रह्मचारी और विद्वान यहाँ दीक्षित हो रहे हैं।

आपके परिवार की गुरुकुल और स्वामी धर्मानन्द जी के प्रति कितनी श्रद्धा है, यह तब ज्ञात हुआ जब स्वामी धर्मानन्द जी निरंतर परिश्रम के कारण 12 अप्रैल, 2000 को मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित होकर बेहोश हो गए। जब गुरुकुल और रायपुर अस्पताल में भी इनकी चिकित्सा न हो सकी, तब मित्रसेन जी को स्वामी जी की बीमारी की सूचना दी गई। सूचना मिलते ही आपका सारा परिवार चिंतित हो गया। आपने फौरन अपने सुपुत्रों कैप्टन रुद्रसेन जी और वीरसेन जी को स्वामी जी के पास भेजा। आपका परिवार महीनों स्वामी धर्मानन्द जी की सेवा-शुश्रूषा और इलाज कराने में लगा रहा। चौ. मित्रसेन जी की व्यथा का तो कहना ही क्या था। कोई दो महीने पहले ही आपके हृदय का आपरेशन हुआ था। स्वामी जी की बीमारी का समाचार सुनकर आप विचलित हो गए। परिवार ने आपको संभाला और सुपुत्रों ने आपको आश्वस्त किया

कि हम स्वामी जी की सेवा-शुश्रूषा और चिकित्सा में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे और आशा है कि वे शीघ्र ही ठीक हो जाएंगे। मित्रसेन जी को विश्वास था कि स्वामी जी अवश्य ही स्वस्थ होंगे। इस प्रकार जहाँ स्वामी जी की बीमारी से गुरुकुल की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हुई, वहीं मित्रसेन जी का सारा परिवार भी चिन्तित हो उठा। तब गुरुकुल आमसेना को अनुभव हुआ कि चौ. मित्रसेन, उनकी धर्मपत्नी और सुपुत्रों का स्वामी धर्मानन्द जी तथा गुरुकुल के प्रति कितना स्नेह है। स्वामी धर्मानन्द जी के समर्पित जीवन और आर्य समाज के प्रति सेवाओं का आदर करते हुए वैद्यनाथ भवन, नागपुर के वरिष्ठ प्रबन्धक राव हरिश्चंद्र आर्य ने अपने ट्रस्ट की ओर से अपने ग्राम वीगोपुर (नारनौल) में उन्हें आर्यरत्न की उपाधि और एक लाख रुपये से सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता चौ. मित्रसेन जी ने की थी और मुख्य अतिथि थे तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री साहिब सिंह वर्मा।

गुरुकुल, झज्जर से सम्पर्क

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने जब गुरुकुल, झज्जर का कार्यभार संभाला, तब वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी आचार्य भगवानदेव के नाम से विख्यात थे। चौ. मित्रसेन जी ने भी लगभग इन्हीं दिनों रोहतक में अपना कारोबार शुरू किया था। तभी से गुरुकुल, झज्जर और आचार्य भगवानदेव जी से आपका सम्पर्क हुआ। आपने गुरुकुल, झज्जर को कई बार आर्थिक सहयोग दिया। सन् 1949 में चौ. मित्रसेन जी जब आर्य समाज झज्जर रोड, रोहतक के सदस्य बने, तब आर्य समाज में गुरुकुल, झज्जर के आचार्य भगवानदेव जी का काफी आना-जाना था। अतः गुरुकुल, झज्जर के साथ आपके घनिष्ठ सम्बंध हो गए। चौ. मित्रसेन जी स्वामी ओमानन्द सरस्वती के तप-त्याग और नेतृत्व से भली-भांति परिचित हैं और आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा और दयानन्द मठ, रोहतक की रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय सहयोग में कभी पीछे नहीं रहे। स्वामी ओमानन्द को तो आप गुरु तुल्य मानकर आशीर्वाद लेने के लिए आर्य पर्व व विशेषकर मकर संक्रांति पर वर्षों तक गुरुदक्षिणा देकर स्वयं को सौभाग्यशाली समझते रहे हैं। आप स्वामी ओमानन्द को व्यक्ति नहीं, अपितु संस्था मानते थे। उन्होंने गुरुकुल, झज्जर में बहुमूल्य धरोहर राष्ट्रीय संग्रहालय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और सत्यार्थ प्रकाश ताम्रपत्रों पर प्रकाशित कराया, आदर्श गोशाला, गुरुकुल, झज्जर प्रकाशन, आयुर्वेद औषधालय और कैंसर अस्पताल की आधारशिला रखने समेत कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए और अपनी पैतृक भूमि और संपत्ति कन्या गुरुकुल, नरेला को दान करके शिक्षा-संस्था प्रकाश का आर्ष पाठविधि से संचालन किया। यह बहुत बड़ा त्याग है।

स्वामी ओमानन्द जी एक बार अस्वस्थ थे, तब चौ. मित्रसेन जी और उनकी पत्नी परमेश्वरी देवी स्वामी जी का हाल-चाल पूछने

गुरुकुल पहुँचे। स्वामी जी की कुशलक्षेम पूछी। उन्होंने देखा कि स्वामी जी के वस्त्र कुछ मैले थे। कारण सम्भवतः तेल की मालिश करना भी हो सकता है। आपने गुरुकुल के अध्यापकों को बुलाकर कहा कि हम एक वाशिंग मशीन और दस जोड़े वस्त्र स्वामी जी के लिए भेज रहे हैं। कृपया वस्त्र साफ करके ही इन्हें दें। इनके लिए यदि आप किसी नौकर की व्यवस्था कर सकें तो हम उसका वेतन दे देंगे। आप इस त्यागी-तपस्वी संन्यासी से कितने प्रभावित थे और आपके दिल में उनकी क्या जगह थी, यह इस घटना से साबित होती है। आज वैदिक धर्म के अनुयायी वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में जाने की मर्यादा का पालन नहीं कर रहे, क्योंकि गृहस्थ उनके लिए जरूरी सुविधाएं और जीवनोपार्जन के आवश्यक साधन जुटाने का कर्तव्य निभाने में असमर्थ हो रहे हैं अथवा ज्यादा रुचि नहीं ले रहे हैं।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती वृद्धावस्था में भी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। इस पुनीत कार्य में उन्होंने अपने स्वास्थ्य तक की परवाह नहीं की। एक बार स्वामी जी नई दिल्ली में पालम अड्डे से हवाई जहाज से रायपुर जा रहे थे। उनके पास एक काला बैग था, जिसमें उनका टिकट, दूसरा जरूरी सामान आदि था। वे बैग को हवाई अड्डे के स्वागत कक्ष में भूलकर जहाज में चढ़ने के लिए चल दिए। जहाज से उतरते समय एक महिला के पास अपने बैग जैसा बैग देखकर स्वामी जी ने महिला से कहा कि यह तो मेरा है। महिला आश्चर्यचकित हुई कि यह संन्यासी उसका बैग लेना चाहता है।

सौभाग्य से स्वामी जी की टिकट आदि की व्यवस्था करने वाले कैप्टन रुद्रसेन हवाई अड्डे पर ही थे। जब उन्होंने इस घटना को देखा तो तुरंत स्वामी जी के पास पहुँचे और चरण-स्पर्श करके कहा कि स्वामी जी यह आपका बैग नहीं है। आपका बैग मैं तलाश करुंगा। कैप्टन रुद्रसेन ने टेलीफोन से अपने पिताश्री से सम्पर्क कर स्थिति समझा दी। इसके बाद पालम हवाई अड्डे से स्वामी जी का बैग प्राप्त कर उनके पास भिजवा दिया गया। मैं भी चौ. मित्रसेन जी की उदात्त भावना से भली-भांति परिचित हूं।

ऐसे अनेक मौके आए जब उन्होंने स्वयं को कष्ट में रखकर दूसरों का बोझ अपने कंधों पर लिया और किसी को कानों-कान भी खबर नहीं होने दी। आपका मानना है कि निःस्वार्थ भाव से काम करना परमार्थ है। आप की इस उदारता और उत्कट मानवीयता में जहाँ एक सफल, निष्ठावान उद्योगपति, एक समाज सेवक, यम-नियमों को अपने जीवन में धारण करने वाले आर्य की योग्यता सहायक बनी, वहीं आपका वैदिक दृष्टिकोण, वैदिक सिद्धान्तों में दृढ़ विश्वास, ईश्वर पर आस्था, अनुशासन में बंधा जीवन और उच्च चरित्र भी कम सहायक नहीं है। आज चौ. मित्रसेन जी 75 वर्ष के हैं और धन-दौलत और मान-सम्मांन की दृष्टि से शिखर पर हैं, आप खुद को समाज का

अनुशासनप्रिय सेवक और आम आदमी मानते हैं। यह आप का बड़प्पन और सज्जनता है।

गृहस्थ के विशेष गुण

चौ. मित्रसेन जी आर्य में उदारता, दानशीलता, जनसेवा की भावना, परोपकारी दृष्टिकोण और निःस्वार्थता के गुण जन्मजात हैं। आपके माता-पिता धर्मात्मा और उत्तम स्वभाव के धनी थे। दोनों में मानवीयता और वैदिक संस्कार कूट-कूट कर भरे थे। अतः सेवाभाव, करुणा और मानवीय दृष्टिकोण समेत तमाम गुण आपको विरासत में मिले। अतिथियों और रोगियों-दुःखियों की सेवा, गरीबों की रक्षा, प्रेम-सद्भावना, एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझना, छोटों से प्रेम, बड़ों का सम्मान करना आदि उज्ज्वल गुणों का प्रभाव हमारे चरितनायक चौ. मित्रसेन जी पर पड़ा। रोहतक में आपका निवास स्थान आपके इन्हीं गुणों और सेवाभाव के कारण अरबपति का निवास स्थान न रहकर साधु-संन्यासियों, विद्वानों, धर्म प्रचारकों से भरा रहने के कारण सत्संग भवन मालूम पड़ता है।

आपके आवास पर गोशालाओं और गुरुकुलों के संचालकों, गरीबों, निर्धनों, असहाय कन्याओं के सामूहिक विवाह करने की योजना बनाने वालों, प्रादेशिक प्रतिनिधि सभाओं और प्रांतीय सभाओं के विद्वानों, उपदेशकों, डीएवी संस्थाओं, आर्य शिक्षण संस्थाओं के कर्ताधर्ताओं और शिक्षकों, धर्मशाला और मंदिर बनाने वालों, आर्य समाज के वार्षिक उत्सवों के आयोजकों आदि का आना-जाना लगा रहता है। आपके द्वार से कभी कोई निराश नहीं लौटता है। बहुधा यहाँ आने वाले व्यक्ति आपके गुणों को देखकर सोचने लगते हैं कि यह आर्य पुरुष, यह महान उद्योगपति इस लोक के पोषण में संलग्न हैं अथवा उभय लोकों के पोषण में संलग्न है। यह आपकी दानशीलता, निष्काम सेवा और निष्कपट सोच का ही प्रताप है कि जीवन में तमाम तरह की बाधाओं और संकटों के बावजूद आपका परिवार और कारोबार निरंतर फला-फूला।

गृहस्थ होते हुए भी आप सेवा धर्म का सम्यक पालन कर रहे हैं। इस धर्म का पालन ईश्वर-चिंतन करने वाले और संसार का मोह त्याग चुके योगी भी नहीं कर सकते हैं। आप किसी-न-किसी प्रसंग पर सन्तों के इन शब्दों को दोहराते हैं कि *'सेवक जब तक माता का दिल साथ में नहीं रखता, तब तक वह मानव जाति की यथायोग्य सेवा करने में समर्थ नहीं होता। मानव में जैसे-जैसे सेवावृत्ति आती जाएगी, वैसे-वैसे वह महान बनता जाएगा। यदि आज सभी समाज सुधारक और धनी व्यक्ति इस शिक्षा को जीवन में ढाल लें तो मानवता का बड़ा कल्याण हो सकता है।'* दो वर्ष पूर्व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में डीएवी पब्लिक स्कूल, जींद में महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह मनाया गया। इसकी अध्यक्षता पदमश्री प्रिंसिपल ज्ञान प्रकाश जी चोपड़ा, प्रधान डीएवी प्रबन्धन सभा, नई दिल्ली ने की। उस अवसर पर

आर्थिक दृष्टि से कमजोर 125 बेटियों के सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया, उसमें चौ. मित्रसेन जी का योगदान उल्लेखनीय था। आपके बारे में कहा जा सकता है कि आप एक ऐसे गृहस्थ हैं जिसमें सन्तों का वास है। आप गृहस्थों, उद्योगपतियों, कारोबारियों और समाज के अन्य लोगों के लिए समुद्र में स्थापित उस दीप स्तंभ के समान हैं, जो सबका मार्गदर्शन करता है। आप गृहस्थ रूपी ऐसे पुष्प हैं, जिसकी खुशबू को चारों ओर फैलाने की जरूरत है। आप समाज की अमूल्य निधि हैं।

चौ. मित्रसेन के निवास स्थान सिन्धु भवन, रोहतक में दीनबन्धु चौ. छोटूराम का आकर्षक भित्तिचित्र।

तृतीय अध्याय

शिक्षा क्षेत्र में योगदान

3. शिक्षा क्षेत्र में योगदान

मनुष्य को निरक्षरता से उठाकर श्रमसाध्य दुर्लभ देवत्व की प्राप्ति में अन्य साधनों के साथ शिक्षा का मुख्य योगदान है। शिक्षा से मनुष्य के अंत:करण में विद्यमान जन्म-जन्मांतरों के कुसंस्कार, अज्ञान और दुर्वासनाओं का विनाश होता है और तत्वज्ञान की प्राप्ति होती है। शिक्षा के प्रकाश में मनुष्य जहाँ स्वयं सचाई, मानवता और कल्याण के रास्तों को स्पष्ट रूप से देखता है, वहीं अन्यों को भी लाभान्वित करने में सक्षम होता है। मानव और समाज का कल्याण करने वाली इस शिक्षा व्यवस्था में सच्चा योगदान करने वाले लोग गिने-चुने ही होते हैं। लोकोपकार के इस मौलिक और महत्त्वपूर्ण कार्य करने वालों में चौ. मित्रसेन जी और उनके परिवार का स्थान हरियाणा में अग्रणी है।

आजादी से पूर्व हिसार क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने के साधन नाममात्र ही थी। समूचे क्षेत्र में कोई अच्छी शिक्षा संस्था दिखाई नहीं देती थी। उस जमान में चौ. मित्रसेन जी के परिवार के निकट के साथी डॉ. रामजी लाल आर्य, सहायक सर्जन हिसार, सेठ छाजूराम कलकत्ता आदि बुजुर्गों ने चौ. राजमल जैलदार और चौ. शीशराम जी से विचार-विमर्श करके जहाँ हिसार शहर में जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना की, वहीं खांडा खेड़ी में भी चौ. राजमल जैलदार की इच्छा पर सेठ छाजूराम ने आर्य कन्या पाठशाला खोली। तत्पश्चात सरकार द्वारा एंग्लो मिडल स्कूल भी स्थापित कराया।

1. मित्रसेन जी आर्य ने अपनी पवित्र कमाई में से लाखों रुपये खर्च करके खांडा खेड़ी गाँव में कन्याओं की शिक्षा के लिए स्कूल स्थापित किया है। साथ ही यहाँ आधुनिक युग के मुताबिक कंप्यूटर आदि नवीन तकनीकी शिक्षा पर आधारित रोजगार देने वाले परममित्र आर्य कन्या विद्यानिकेतन महाविद्यालय की स्थापना की है। वर्तमान में इस (विद्या निकेतन) परममित्र आर्य कन्या विद्या निकेतन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में बारहवीं तक एक हजार छात्राएं अध्ययन कर रही हैं। इसी तरह आर्य कन्या महाविद्यालय प्रगति के पथ पर है, जहाँ आसपास के गाँवों की कन्याएं भी कालेज की उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

2. महीपालपुर दिल्ली में आपका **डिफेंस पब्लिक स्कूल** चल रहा है। ऋषभ तीर्थ दमऊधारा, (छत्तीसगढ़) में छठीं से 12वीं तक का स्कूल आपके सुपुत्रों के संचालन और स्वामी धर्मानन्द जी की देखरेख में चल रहा है। आपके परिवार का 'परममित्र मानव निर्माण संस्थान' विभिन्न गुरुकुलों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान करता है।

3. **दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुर्ग (छत्तीसगढ़)** इस संस्था को दिल्ली पब्लिक



चौ. मित्रसेन जी के सहयोग से दमऊधारा में चले रहे 'श्री जगन्नाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का भवन।

स्कूल सोसाइटी, नई दिल्ली चला रही है। इसमें नर्सरी से 10+2 तक छात्र-छात्राओं की संख्या लगभग 1800 है। पहले यह विद्यालय 36 एकड़ में था, जो अब 56 एकड़ में हो गया है। यहाँ बारहवीं कक्षा तक हजारों विद्यार्थी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित कमरों में पढ़ाई कर रहे हैं। इस स्कूल की सोसाइटी के चेयरमैन श्री नरेंद्र कुमार हैं। वाइसचेयरमैन श्री वीके सांगलू और प्रो-वाइस चेयरमैन कैप्टन अभिमन्यु हैं। इसके सदस्यों में श्री व्रतपाल और श्री वीरसेन भी शामिल हैं।

दुर्ग और भिलाई के क्षेत्र में चौ. मित्रसेन जी ने दीर्घकाल तक वैदिक धर्म का प्रचार कर आर्य समाज की स्थिति सुदृढ़ की है। मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के भी आप सक्रिय सदस्य रहे हैं। आर्य समाज, दुर्ग आपका प्रिय समाज रहा है और कार्यक्षेत्र भी है।

4. गुरुकुल आश्रम, आमसेना : रायपुर - विशाखापट्टनम रेलवे लाइन पर रायपुर से 110 किलोमीटर दूर उड़ीसा का पहला रेलवे स्टेशन खरियार रोड है। यह स्थान उड़ीसा-छत्तीसगढ़ की सीमा पर उड़ीसा में है। इसी स्टेशन से गुरुकुल आमसेना तीन किलोमीटर दूर एक छोटे से गाँव आमसेना के पास स्थित है। खरियार रोड से रेल और बस की सुविधा रायपुर, संबलपुर, टिटिलागढ़, वाल्टियर आदि के लिए भी है। आमसेना गुरुकुल की स्थापना 7 मार्च, 1968, परिचालना समिति का पंजीयन 23 नवंबर, 1970, नए विद्यालय भवन का उद्घाटन जनवरी, 1971, पुस्तकालय का उद्घाटन 30 दिसंबर, 1972 को किया गया।

5. कन्या गुरुकुल, आमसेना : कन्या गुरुकुल, आमसेना की स्थापना सन् 1981 में हुई। इसकी रजत जयंती 29 से 31 दिसंबर, 2004 में मनाई गई। यहाँ धर्मार्थ चिकित्सालय का उद्घाटन 13 फरवरी, 1994 में हुआ।

संग्रहालय का उद्घाटन 28 अक्तूबर, 1999 में किया गया।

इस गुरुकुल में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक का पाठ्यक्रम है। यहाँ पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री और आचार्य की शिक्षा दी जाती हैं, जो क्रमशः प्रथमा (मिडल), पूर्वमध्यमा (नौवीं और दशमी), उत्तर मध्यमा (बारहवीं), शास्त्री (बीए) और आचार्य (एमए) के समकक्ष हैं।

गुरुकुल आश्रम न्यास और उसकी स्थायी निधि के बारे में चौ. मित्रसेन जी के जीवन पर आधारित शीर्षक **'यज्ञमय जीवन के प्रतीक चौ. मित्रसेन आर्य'** लिखा गया है। स्थायी निधि में आपने बहुत बड़ी राशि दी है। आप ही इस संस्था के प्रधान हैं। गुरुकुल के रामदुलारी बृजकिशोर धर्मार्थ चिकित्सालय के संस्थापक नवल किशोर हैं। इस चिकित्सालय में तीन लाख की एक्स-रे मशीन इसी परिवार ने दी है। 100 बिस्तरों के इस अस्पताल को भी आप आर्थिक मदद देते रहते हैं।

गुरुकुल के पास अपनी 70 एकड़ भूमि है, जिसमें ट्यूबवैल लगे हैं और यहाँ अनाज और सब्जी उत्पादन भी होता है। ये दोनों गुरुकुल चौ. मित्रसेन जी के परिवार की देखरेख और सहयोग से प्रगति पथ पर हैं। ये दोनों संस्थाएं यहाँ के वनवासियों के लिए बहुत लाभदायक हैं। 9 से 11 फरवरी, 2004 को गुरुकुल, आमसेना का वार्षिकोत्सव चौ. मित्रसेन जी के पिता चौ. शीशराम जी स्मृति में आयोजित किया गया। उत्सव में आर्य रत्न पुरस्कार से सम्मानित स्वामी धर्मानन्द जी का सम्मान चौ. मित्रसेन जी ने किया। समारोह में परम मित्र मानव निर्माण संस्थान, रोहतक ने तीन तपस्वियों को भी सम्मानित किया गया। इस उत्सव में यहाँ के विधायक श्री बसंत कुमार पांडा भी शामिल हुए।

इनके अलावा स्वामी सुमेधानन्द (चंबा-हिमाचल), स्वामी प्रणवानन्द (राउरकेला), वानप्रस्थी शिवमुनि जी को 15-15 हजार रुपये की राशि भेंट कर चौ. मित्रसेन जी और उनकी सहधर्मिणी श्रीमती परमेश्वरी देवी ने सम्मानित किया। उन्हें अभिनन्दन पत्र और स्मृतिचिह्न भी दिए गए। यहाँ प्रतिवर्ष तीन विद्वानों को सम्मानित किया जाता है। इसी प्रकार कन्या गुरुकुल की रजत जयंती पर तीन तपस्वियों को सम्मानित किया गया। गुरुकुल के उत्सव पर भोजनादि की व्यवस्था के लिए भी चौ. मित्रसेन जी ने 51 हजार रुपये का दान किया। ऐसा कार्यक्रम आप वर्षों से करते आ रहे हैं।

6. श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय : श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय, गौतमनगर, नई दिल्ली की स्थापना आचार्य राजेंद्रनाथ (स्वामी सच्चिदानन्द जी योगी) ने 24 अगस्त, 1934 में की थी। अब इसके आचार्य हरिदेव वेदाचार्य हैं। दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के पीछे, गौतमनगर में आधुनिक भवनों से सुसज्जित यह वेद विद्यालय (गुरुकुल) स्थित है। राजधानी दिल्ली का सबसे पुराना आर्ष गुरुकुल लगभग 72 वर्ष से भारतीय

सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए संस्कृत माध्यम से वेद, शास्त्र, उपनिषद आदि की शिक्षा प्रदान करके भावी पीढ़ियों को चरित्रवान, विद्वान और बलवान बनाने में सतत् प्रयत्नशील है। इस समय भारत के विभिन्न प्रांतों से करीब 300 विद्यार्थी यहाँ अध्ययनरत हैं। वेद विद्यालय, यज्ञशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, गोशाला, पाकशाला, अतिथिशाला, संग्रहालय, औषधालय, आर्य साहित्य संस्थान आदि सभी प्रकार की व्यवस्था यहाँ है। इस गुरुकुल की अन्य शाखाएं हैं :-

1. **गुरुकुल यमुना तट मंझावली, फरीदाबाद**
2. **आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा, देहरादून**
3. **गुरुकुल योगाश्रम नरसिंहनाथपुर, उड़ीसा**

चौ. मित्रसेन जी आर्य का परिवार इन गुरुकुलों के संचालन में भी अहम भूमिका निभा रहा है।

7. परममित्र आर्य कन्या विद्यानिकेतन विद्यालय, खांडा खेड़ी (हिसार) : चौ. मित्रसेन जी ने अपने परदादा जैलदार राजमल के समय से चली आ रही आर्य कन्या पाठशाला की भांति भव्य भवन बनाकर गाँव में नर्सरी से बारहवीं तक की कक्षाओं के लिए आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का निर्माण कराया। यह विद्यालय खांडा खेड़ी और आसपास के गाँवों की कन्याओं को स्नातक स्तर तक की शिक्षा उपलब्ध करा रहा है और आर्य समाज की विचारधारा से अवगत करा रहा है।

8. परम मित्र आर्य कन्या विद्यानिकेतन महाविद्यालय की स्थापना : चौ. मित्रसेन जी ने कन्याओं को कालेज की शिक्षा खांडा खेड़ी में ही उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से गाँव से लगती 8 एकड़ भूमि ख़रीद कर आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना की है, जिसके भवन बनकर तैयार हैं। यह सब व्यवस्था कैप्टन रुद्रसेन और कैप्टन अभिमन्यु संभालते हैं। आर्य कन्या, महाविद्यालय प्रगति पथ पर है।

9. इंडस पब्लिक स्कूल, जींद : यह विद्यालय अर्बन एस्टेट जींद में स्थापित है। यह विस्तृत भूभाग में भव्य भवनों में स्थित है। इसमें आधुनिक सुविधाओं से युक्त क्लासरूम हैं। यहाँ हजारों छात्र विद्या ग्रहण कर रहे हैं। यहाँ के छात्र सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विशेष स्थान रखते हैं। इस स्कूल में कंप्यूटर शिक्षा प्रारंभिक कक्षा से दी जाती है। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले बच्चों को वैदिक विचारधारा, महर्षि दयानन्द, आर्य समाज, नैतिक शिक्षा और मानवता के संस्कार भी दिए जाते हैं।

10. इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक : यह स्कूल सीबीएसई, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है। यह स्कूल लगभग 11 एकड़ में भव्य भवन में स्थापित है। इसमें बारहवीं तक की कक्षाओं के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त खुले हवादार कमरे हैं। इस स्कूल में लगभग एक हजार छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। यहाँ

के छात्र सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में विशेष स्थान प्राप्त करते हैं। यहाँ आर्य समाज और महर्षि दयानन्द की विचारधारा से भी छात्र-छात्राओं को परिचित करा उनमें वैदिक संस्कार संप्रेषित करने का प्रयास किया जाता है।

11. **दिल्ली पब्लिक स्कूल, बिलासपुर** : डीपीएस सोसाइटी, नई दिल्ली द्वारा संचालित 'दिल्ली पब्लिक स्कूल, बिलासपुर' कोई 80 एकड़ भूमि पर स्थित है। इसका भवन आधुनिक सुविधाओं से युक्त हैं। यहाँ नर्सरी से बारहवीं तक सभी संकायों की पढ़ाई होती है।

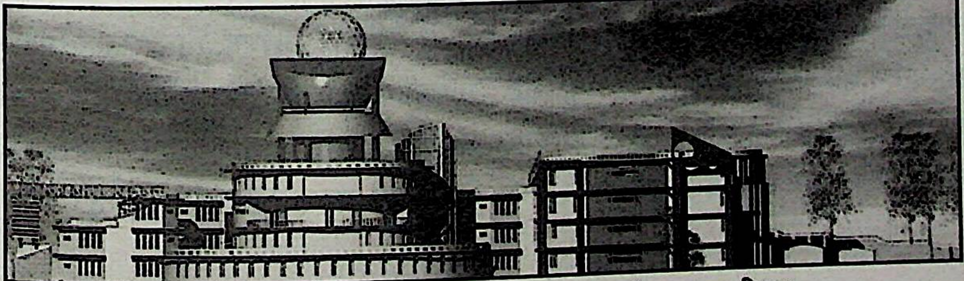
12. **इंडस वैली विश्वविद्यालय की स्थापना** : चौ. मित्रसेन जी शिक्षा को लोकोपकार का मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य मानते हैं। इसी भावना से आपने यह निश्चय किया कि इंडस वैली विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए। आपके ज्येष्ठ पुत्र कैप्टन रुद्रसेन ने विश्वविद्यालय की योजना का प्रारूप तैयार किया और रायपुर (छत्तीसगढ़) में भूमि खरीदकर विश्वविद्यालय के भवनों का निर्माण शुरू किया। यह महान अमर स्मारक है। चौ. मित्रसेन जी और आपका परिवार धन्य है, जिसे परमात्मा ने इतनी सामर्थ्य दी है कि जनहित के लिए विश्वविद्यालय का निर्माण करने की ठानी है।

13. सन् 1977 में उड़ीसा के कोयड़ा जिला सुंदरगढ़ में आपने खनन कार्य शुरू किया। वहाँ आपने **नेशनल इंजीनियरिंग वर्क्स** नाम से एक इकाई स्थापित की। कस्बे में शिक्षा का कोई साधन नहीं था, इसलिए आपने वहाँ एक स्नातक युवक से स्कूल शुरू करवाया। आपने स्कूल के स्टाफ का वेतन और किताबों आदि का लगभग पूरा खर्चा आठ वर्ष तक दिया। उसके बाद स्कूल को मान्यता मिलने पर वह सरकारी सहायता से चलने लगा।

14. इसी तरह आपने बड़बिल में कालेज बनवाया। भुवनेश्वर में डीएवी स्कूल के दो अध्यापकों को लगातार छह वर्ष तक वेतन देते रहे। बाद में वहाँ भी सरकारी अनुदान मिलने लगा। स्वामी ब्रह्मानन्द से आपका सम्पर्क सन् 1962 में हुआ। उसके बाद आपने कई जगह गुरुकुल और स्कूल आदि स्थापित किए। इनमें निम्न प्रमुख हैः-

क) गुरुकुल वेदव्यास, राउरकेला।

ख) गुरुकुल शान्ति आश्रम, किस्को-मोड़, लोहरदगा (झारखंड)।



सिंधु समूह द्वारा छत्तीसगढ़ के दुर्ग में चलाए जा रहे डीपीएस स्कूल के भवन का चित्र।

ग) आदिम गुरुकुल आश्रम, कुंदली हाटपदा, कोरापुट (उड़ीसा)।

घ) श्री जगन्नाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दमउधारा (महर्षि दयानन्द विद्यापीठ), जांजगीर चांपा (छत्तीसगढ़)।

ङ) माता परमेश्वरी देवी कन्या छात्रावास एवं प्राथमिक विद्यालय सोनाबेड़ा, नवापारा (उड़ीसा)।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए वनवासी क्षेत्र में किया गया चौ. मित्रसेन जी का यह महान उपकार का कार्य है। ये सभी संस्थाएं गुरुकुल, आमसेना के प्रधान चौ. मित्रसेन जी के प्रयत्नों का फल हैं। इन्हें स्वामी धर्मानन्द जी ही संभालते हैं। चौ. मित्रसेन जी का परिवार इनके लिए हर समय हरसंभव सहायता के लिए तत्पर रहता है। इनके अतिरिक्त, कन्या गुरुकुल, चोटीपुरा, गुरुकुल सिद्धपुर लोवा, गुरुकुल, लाढौत, दर्शनयोग महाविद्यालय, रोजड़ आदि संस्थाओं को भी चौ. मित्रसेन सहायता प्रदान करते हैं।

जाट संस्थाओं को सहयोग

दीनबंधु सर छोटूराम धर्मशाला परिवार तथा बहादुरगढ़ की सभी ट्रांसपोर्ट यूनियनों के लिए अभिनन्दन पत्र से ज्ञात होता है कि आप जाट शिक्षण संस्थाओं को भी बराबर आर्थिक सहयोग देते रहे हैं। सूरजमल स्मृति शिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के आप ट्रस्टी हैं। बहादुरगढ़ स्थित छोटूराम धर्मशाला के प्रांगण के फर्श, खुले हाल की ऊपरी मंजिल पर शौर्य कक्ष और कुछ आधुनिक सुविधाओं से युक्त कक्षों का निर्माण आपने ही कराया है।

किसान जाट परिवार का कुलदीपक होने के कारण इस समाज की कठिनाइयों से आप भली-भांति परिचित हैं। संगठन को शक्ति देने के लिए आप तन, मन और धन से सहयोग देते रहते हैं। दिल्ली में आपका एक भवन है, जिसे आपने अखिल भारतीय जाट महासभा को कार्य संचालन के लिए निःशुल्क दे रखा है। देश के विभिन्न स्थानों से जाट संस्थाओं के संचालक जब भी आपके पास आर्थिक सहयोग के लिए आते हैं, आप उदारतापूर्वक मदद देते हैं। यही नहीं, आप अपने बुजुर्गों की भांति देहातों में आर्य भजन मंडलियों को भेजकर वैदिक धर्म का प्रचार और शिक्षा जागरण का संदेश पहुँचाते हैं। हमारे चरितनायक चौ. मित्रसेन जी विद्या के प्रचार और प्रसार के लिए जाट शिक्षण संस्थाओं को भी आर्थिक सहयोग देते हैं। जाट संस्था रोहतक, जीन्द तथा नरवाना में भी आपका योगदान सराहनीय है।

देहातों में चरित्र निर्माण, योगासन, प्राणायाम आदि के लिए आर्य वीर दल के जो शिविर लगते हैं, उनमें पहुँचकर हरसंभव मदद देना आप अपना कर्तव्य समझते हैं।

चतुर्थ अध्याय

जीवन के अनछुए पहलू

५. जीवन के अनछुए पहलू

समय निरंतर प्रवाहमान है। समय के साथ-साथ मानव जीवन में नित नई घटनाएं घटती हैं। मनुष्य के जीवन में कई अनछुए पहलू और घटनाएं दूसरों को प्रेरणा देने वाली और ज्ञानप्रद होती हैं। छोटी-छोटी मानी जाने वाली ये घटनाएं दरअसल बहुत गहरे अर्थ वाली होती हैं। इससे व्यक्ति की दृष्टि और सोच का पता चलता है। प्रस्तुत अध्याय में चौ. मित्रसेन जी के जीवन के कुछ ऐसे ही अनछुए पक्षों का हम आनन्द लेंगे। ये अनछुए पक्ष हमें नई ऊर्जा और जिंदगी को अलग नजर से देखने की प्रेरणा देते हैं।

आदर्श दिनचर्या

रोहतक आने के बाद चौ. मित्रसेन जी झज्जर रोड स्थित आर्य समाज के सदस्य बने। इस दौरान आप आचार्य भगवान देव जी के सम्पर्क में आए। आप उनके उपदेशों से बहुत प्रभावित हुए। जैसा कि बताया जा चुका है कि चौ. मित्रसेन जी ने अपने प्रयासों से भाषा का ज्ञान प्राप्त किया है। आचार्य भगवान देव जी के सम्पर्क में आने के बाद आपने उनकी 'ब्रह्मचर्य अमृत' और अनेक पुस्तकें पढ़ी। आचार्य जी की पुस्तकों से प्रेरणा लेकर आपने ब्रह्मचर्य का पालन प्रारम्भ कर दिया। प्रतिदिन प्रातः चार बजे उठना, व्यायाम, आसान, प्राणायाम, स्नान, संध्या आदि करना आप के जीवन का हिस्सा बन गए। सभी प्रकार के तामसिक, राजसिक भोजन और मिर्च-मसाले आदि का प्रयोग भी आपने पूर्णतया बंद कर दिया। आपने करीब एक वर्ष तक नमक भी नहीं खाया। आपने भूमि या तख्त पर सोने का निरंतर अभ्यास किया। दरअसल, आप अप्रत्यक्ष रूप से जीवन को भविष्य के लिए तैयार कर रहे थे। आप जीवन को परीक्षाओं और अभ्यास की भट्ठी में तपाकर कुंदन बनाने की प्रक्रिया में थे, जिसका सुबूत हमें तब मिलता है, जब हम आज एक महापुरुष और भव्य आत्मा को अपने सम्मुख पाते हैं। आप का कुंदन जैसा जीवन एक दिन की कोशिश का नतीजा नहीं, बल्कि सतत् साधना का सुफल है। महापुरुषों का जीवन निरंतर साधना के बाद ही श्रेष्ठता हासिल करता है। उसमें छोटी-छोटी बातों और घटनाओं का भी योगदान होता है। बूंद-बूंद साधना से समुद्र बना ऐसा जीवन भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत होता है। अनुभवों, साधना और परीक्षाओं की भट्ठी में तपकर कुंदन बना चौ. मित्रसेन जी का जीवन भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

इसी बीच आपने महात्मा नारायण स्वामी के लिखित कर्तव्य दर्पण, सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथों का भी गहन अध्ययन किया। इनसे आपको नव जीवन निर्माण की प्रेरणा मिली। आपने नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, पं. जवाहर लाल नेहरू तथा महात्मा गांधी आदि राष्ट्रीय

नेताओं के विचारों को गहराई से अपनाया।

आपने एक मिनट से शीर्षासन का अभ्यास प्रारम्भ करके इसे पच्चीस मिनट तक बढ़ाया। नित्य वंदना, प्राणायाम आदि में आप दो घंटे लगाते थे। आपकी ऐसी दिनचर्या एक्सीडेंट होने से पहले सन् 1992 तक जारी रही। आप चाहे रोहतक में रहे या उदयपुर में अथवा बड़बिल में, दिनचर्या के पालन में कभी कोताही नहीं बरती। बड़बिल में चारों ओर घने जंगल थे। वहाँ शेर, बाघ, चीते आदि हिंसक जानवरों की भरमार थी। इस बात का अनुमान इससे लगता है कि बड़बिल में प्रसिद्ध शिकारी अकरम खान ने (जो आपका घनिष्ठ मित्र हैं) एक वर्ष में उन दिनों कई नरभक्षी बाघ मारे थे। उनके भाई हसन ने भी कई नरभक्षी बाघों का शिकार किया था।

इतना खतरा होने के बावजूद आप प्रातः चार बजे उठकर बस्ती से दो किलोमीटर दूर जंगल के बीच कारो नदी पर जाते। वहाँ एकांत में नित्य की दिनचर्या पूरी करके लौटते। आपके हितैषियों ने आपको घने जंगल में जाने से रोका भी, परंतु आप निर्भीकतापूर्वक वहाँ जाकर अपनी दिनचर्या का पालन करते। कभी शेर या बाघ सामने नहीं आया। हां, एक बार रात को बड़बिल से जोड़ा जाते हुए एक शेर सामने आ गया, लेकिन आप घबराए नहीं, बल्कि निर्भीकतापूर्वक शांत भाव से निकल गए। शेर ने भी कुछ नहीं कहा। असल में जिन पुरुषों में नैतिक और आत्मिक बल होता है और जिनकी प्रभु में अटूट आस्था होती है, उन्हें बाह्य चीजों का भय नहीं सताता है। चौ. मित्रसेन भी आत्मिक और नैतिक रूप से इतने सबल हैं कि सांसारिक भय उन्हें अपने लक्ष्य से डिगा नहीं पाए। इसी बल का सुफल है कि आप हर बाधा को सबक मानते हुए और हर मुश्किल को परीक्षा मानते हुए भौतिक, लौकिक और पारलौकिक पथ पर उन्नति दर उन्नति करते चले गए।

आदर्श साधक

महात्मा नारायण स्वामी कृत कर्तव्य दर्पण आदि पुस्तकें पढ़ने से चौ. मित्रसेन जी में ईश्वर उपासना के प्रति विशेष रुचि जगी। आपको जब भी समय मिलता, ध्यान करने बैठ जाते। इस प्रकार निरंतर ध्यान से आप में आत्मिक दृढ़ता, नैतिक बल और मानसिक शांति उत्तरोत्तर बढ़ती गई। कहा भी गया है कि चिंता रहित ध्यान पराभक्ति है। आप का ध्यान भी इसी श्रेणी में आता है। उड़िया बाबा ने भी कहा है कि मंत्र ध्यान स्थूल है, चिंतामय ध्यान सूक्ष्म है और चिंतारहित ध्यान पराभक्ति है। साधना का मार्ग जटिल होता है, चाहे वह किसी प्रकार की हो।

साधना के महामार्ग पर वीर पुरुष ही चल सकते हैं। चौ. मित्रसेन जी साधना पथ के वीर हैं। इन्होंने अपनी साधना के बल पर ही जहाँ भौतिक साम्राज्य खड़ा किया, वहीं आत्मिक बल हासिल किया और आत्मोन्नति से समाज में नाम कमाया। आप साधना और परिश्रम के सागर में तब तक डुबकी लगाते रहे, जब तक आपको सफलता हाथ नहीं

लग गई। रामकृष्ण परमहंस ने भी कहा है, *'पहली डुबकी में यदि रत्न न मिले, तो रत्नाकर को रत्नहीन नहीं समझना चाहिए। धीरज के साथ साधना करते रहो। समय पर भगवत्कृपा अवश्य होगी।'* चौ. मित्रसेन जी भी धीरज के धनी और पुरुषार्थ पर भरोसा करने वाले हैं, इसी कारण इन्होंने संसार रूपी रत्नाकर से रत्नों का भंडार संजोया। इनकी साधना और पुरुषार्थ से सभी चमत्कृत हैं।

मौलवी का हृदय परिवर्तन

जब आपने बड़बिल में नया-नया कार्य आरंभ किया तो आपकी वर्कशॉप के साथ एक मौलवी और एक सरदार जी रहते थे। सरदार जी का होटल था। उसमें मांस, मदिरा आदि भी बेची जाती थी। मौलवी आपकी वर्कशॉप के साथ अपने घर के बाहर शाम को मुर्गा लेकर उसकी गर्दन काटता और पंख निकालकर वहीं फेंक देता। हर रोज यह जीव हत्या देखकर आपका मन खिन्न हो जाता। आपके मन में इस हत्या को बंद करने का विचार आया।

कुछ सोच-विचार के बाद एक दिन आपने मौलवी को अपने पास बुलाया। बातों-बातों में उसे बस्ती से थोड़ी दूर रेल लाइन के किनारे ले गए। वहाँ एकांत में आपने दोनों हाथों से उसकी गर्दन पकड़ ली। घबराए हुए मौलवी ने पूछा, 'मैंने क्या गलती कर दी? आप मुझे क्यों मार रहे है?' इस पर आपने कहा कि मेरे मन में आज यह विचार आ रहा है कि जैसे तू प्रतिदिन मुर्गियां मारता है, वैसे ही आज मैं तुझे मार दूं। इस पर मौलवी बहुत घबरा गया।

उसने वादा किया कि आगे से वह आपके सामने ऐसा कृत्य नहीं करेगा। उसके वचन देने पर ही आपने उसे छोड़ा। उसने यह कार्य उसी दिन से बंद कर दिया। समय बीतने के साथ-साथ आपने बराबर वाली जगह भी खरीद ली, तब सरदार को भी अपना होटल बंद करके वहां से जाना पड़ा। इस प्रकार आपने साहस और सूझ-बूझ से विपरीत स्वभाव के दोनों व्यक्तियों से छुटकारा पा लिया।

दयालु और उदारमना मित्रसेन आर्य

(क) चौ. मित्रसेन जी के एक निकट सहयोगी ने बताया कि एक बार बड़बिल में कार्य करते समय तीन कार्यकर्ताओं ने पैसों के लेन-देन में बहुत गड़बड़ कर दी। जांच करने पर उनकी चालाकी पकड़ी गई। इस पर चौ. मित्रसेन जी ने उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने उन्हें हवालात में डाल दिया। अगले दिन तीनों के बाल-बच्चों ने आकर आपके घर के सामने धरना दे दिया। उनकी पत्नियों ने कहा कि हमने क्या दोष किया, हमारा पेट क्यों काटा जा रहा है? उनकी बातों से आप पिघल गए और फौरन थाने पहुँचे और तीनों को छुड़वा दिया। आप सचमुच उदारचित्त और दयालु हैं। आपसे किसी का कष्ट देखा नहीं जाता है। आपकी नजर में सबसे बड़ी उदारता है - अनुदार के

प्रति उदार बनना। तभी तो आपने धोखा करने वालों को भी बख्श दिया। कहा भी गया है कि दुखी पर दया दर्शाना मानवोचित है और उसके दुख का निवारण करना देवोचित है। चौ. मित्रसेन जी भी दयालुता की प्रतिमूर्ति हैं। आपके जीवन प्रसंगों को सुनने-पढ़ने से इसका परिचय मिलता है। जैसा कि चिंतक जेम्स ऐलन कहते हैं, *'आदमी की दयालुता चरित्र को सुंदर बनाती है। बढ़ती हुई उम्र के साथ ही वह चेहरे को भी सुंदर बनाती जाती है।'* चौ. मित्रसेन के भव्य व्यक्तित्व और मुख की कांति देखकर उक्त बात चरितार्थ होती है। उनकी यह भव्यता और कांति दयालुता का ही प्रतिफल है।

(ख) एक बार चौ. मित्रसेन जी अकेले ही अपनी कार से कलकत्ता जा रहे थे। सड़क पर किसी गाड़ी की टक्कर से एक व्यक्ति मरणासन्न पड़ा था। आप अन्य लोगों की तरह उसे उसकी हालत पर छोड़कर नहीं निकले, बल्कि आपने उसे उठा कर गाड़ी में लिटाया और अस्पताल में दाखिल कराया। उसके इलाज की उचित व्यवस्था करके घर आए, कपड़े बदले और फिर कलकत्ता के लिए रवाना हुए। आपने किसी से इस घटना का जिक्र तक नहीं किया। बाद में पता चला कि वह डॉक्टर था। यह घटना आपकी दयालुता का परिचय देती है। परोपकार तो जैसे आपके लिए नित्य कर्म है। चाणक्य नीति में भी कहा गया है कि *जिनके हृदय में परोपकार की भावना रहती है, उनकी विपत्तियां नष्ट हो जाती हैं और पग-पग पर संपत्ति प्राप्त होती है।* चौ. मित्रसेन जी ने अपने परोपकार और दयालुता के कारण ही इतना बड़ा साम्राज्य खड़ा किया है। आपके परोपकार के फल से आपकी विपत्तियां स्वतः नष्ट होकर संपत्तियां बनती गईं। इन्हीं गुणों के प्रताप से आप निरंतर उन्नति करते चले गए, चाहे लौकिक पक्ष हो और चाहे अलौकिक। चौ. मित्रसेन जी के जीवन का एक सूत्र है-सत्यनिष्ठा से कर्म करना, ईश्वर में अटूट आस्था, निष्काम सेवा भावना, दयालुता और परोपकारता। महान आत्माएं ही इन गुणों को धारण कर सकती हैं, सामान्य जन नहीं।

सरकारी तंत्र और मित्रसेन जी

पहली घटना

यह बात सन् 1973-74 की है। तत्कालीन उत्तरी उड़ीसा बिजली विभाग में राउरकेला के सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर नारायण चंद्र दास थे। उन्होंने चौ. मित्रसेन जी के साथ छह वर्ष तक काम किया। उन दिनों विश्व बैंक से एक योजना ग्रामीण बिजली वितरण के अंतर्गत आई कि जितना काम उतना पैसा। इस योजना के अनुसार नियत समय अवधि यानी एक महीने के अंदर उड़ीसा बिजली बोर्ड द्वारा आन्ध्र प्रदेश को लाइन सप्लाई करने का टेंडर था। समय पर कार्य के लिए एक करोड़ रुपये का ईनाम और समय पर काम पूरा नहीं होने की स्थिति में हर्जाना भरना था।

कार्य संपन्न होने से जहाँ राज्य के मान-सम्मान की बात जुड़ी हुई थी, वहीं सबसे बढ़कर यह आर्थिक नुकसान से भी संबंधित थी। इसके लिए बौद्ध गया (बिहार) से हजारों इंसुलेटर लाकर खंबों पर लगाने थे। उसी के बाद बिजली आंध्र प्रदेश जा सकती थी। समय कम था। इसलिए पंद्रह दिन के अंदर-अंदर इंसुलेटर लाने बेहद जरूरी थे। इसके लिए भुवनेश्वर में राज्य स्तर के अधिकारियों की बैठक हुई। बैठक में अफसरों ने उपस्थित ठेकेदारों के सामने वस्तुस्थिति रखी। उन्हें बताया गया कि काम पूरा करने के लिए मात्र एक महीने का समय है। शर्त सुनते ही सभी ठेकेदारों ने हाथ खड़े कर दिए। ऐसे में अफसरों में सुगबुगाहट शुरू हो गई। इस पर सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर नारायण चंद्र दास ने कहा कि मेरे एक ठेकेदार मित्र हैं चौ. मित्रसेन जी, वे इस काम को इस समयावधि में पूरा करेंगे। इस समय तक उड़ीसा में यह बात प्रसिद्ध हो चुकी थी कि जिस काम को कोई नहीं कर सकता है, उसे करने में चौ. मित्रसेन जी सक्षम हैं।

भुवनेश्वर से 300 किलोमीटर की दूरी तय करके आए नारायण चंद्र दास ने चौ. मित्रसेन जी से कहा, चौधरी साहब, आपके भरोसे यह काम ओट लिया है। अब आप को मेरी लाज रखनी है। हमारे पास केवल एक महीना है। इसी में बौद्ध गया से कच्चा माल लाना है और रामगढ़-रांची होकर जयपुर-कोरापुट पहुँचाना है। समय बहुत कम है, लेकिन मुझे आप पर भरोसा है। इस पर चौ. मित्रसेन जी ने अपने साथी धनसिंह जी से बात की, तो उन्होंने कहा कि ये जापानी इंसुलेटर बड़े कीमती हैं। जल्दबाजी में इनकी टूट-फूट की बड़ी संभावना है। इसलिए यह काम बड़ा मुश्किल है।

नारायण चंद्र दास ने कहा कि मुझे आप पर भरोसा है। आप यह कार्य कीजिए। चौ. मित्रसेन जी बड़बिल से अपने चार ट्रक लेकर गए और चार ट्रक वहाँ किराए पर ले लिए। उधर, सरकार ने बिजली महकमे के एसडीओ श्रीपति के साथ-साथ एक ओवरसियर को भी बौद्ध गया भेज दिया और कहा कि माल उठवा लो। सर्कल कार्यालय जाने पर पता चला कि यह माल जापान से 15 वर्ष पूर्व आया था। चीनी के बड़े-बड़े इंसुलेटरों की लकड़ी की पेटियां सड़ चुकी हैं। अब आपके लोगों से कहा गया कि इन्हें उठाने से पहले लकड़ी के बक्से बनवाओ, अन्यथा ये टूट जाएंगे। इसका पता करने आप गया पहुँचे। वहाँ इंसुलेटरों की पेटी बनाने वालों से बात की तो बताया गया कि इन्हें बनाने में 50 हजार रुपये लगेंगे। सारे मसले पर चौ. मित्रसेन की दास साहब से बात हुई। तय हुआ कि पेटियां बनवा ली जाएं, लेकिन कारीगरों ने कहा कि इसमें कम से कम तीन महीने लगेंगे। सारी स्थिति जानकर एसडीओ साहब घबरा गए कि यह कार्य कैसे संभव होगा? उन्होंने फोन पर दास साहब को सारी स्थिति बताई। इस पर दास साहब ने कहा कि फोन चौ.

मित्रसेन जी को दो। उन्होंने चौधरी साहब से कहा कि मैं कुछ नहीं जानता, पेटियां कब बनेंगी, मुझे तो बस माल चाहिए। तब आपने दास साहब से कहा कि आप अपने एसडीओ से कहें कि मेरे काम में दखलंदाजी न करें और ऐसा ही हुआ।

अब चौ. मित्रसेन जी व्यवस्था में लग गए। आपने धान का पराल ट्रकों में एक-एक फुट तक बिछा दिया और वह गद्दे जैसा बन गया। इसके बाद इंसुलेटर लोड किए। फिर इनके ऊपर पराल की मोटी परत बनाई और इंसुलेटर लोड कर लिए। यह सोच कर आपने 25 बक्से अतिरिक्त लोड कर लिए कि रास्ते में कुछ टूट सकते हैं। माल लेकर काफिला चल पड़ा। चौ. मित्रसेन जी सबसे पीछे वाली गाड़ी में बैठ गए। रांची से जोड़ा आना था और यहाँ किराए के ट्रकों की जगह अपने ट्रकों में सामान बदलना था। इसी बीच एक हादसा हो गया। ऊंची पहाड़ी पर पीछे से आते एक ट्रक के ब्रेक फेल हो गए। रात 11 बजे का समय था। ट्रक ड्राइवर बदहवास होकर जोर-जोर से चिल्ला रहा था, बचो-बचो। चौ. मित्रसेन जी ने अपने ड्राइवर से कहा कि गाड़ी पहाड़ी की तरफ एक किनारे कर लो, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। पीछे से आने वाले ट्रक ने आपके ट्रक को टक्कर मार दी। ट्रक के एक साइड के दोनों टायर फट गए और दोनों गाड़ियां आपस में फंस गईं। बहरहाल, ड्राइवर की जान बच गई। अब उसने कहा कि आप मेरे लिए भगवान हो। आज तो मैं मर ही गया होता, लेकिन गाड़ी का नुकसान देखकर मेरा मालिक बहुत नाराज होगा। ड्राइवर को घबराया और परेशान देखकर चौ. मित्रसेन जी ने उसे ढाढस बंधाया और कहा कि घबराओ मत, तुम अपने मालिक को सब सच-सच बता देना, सब ठीक होगा। कुल मिलाकर, यह हादसा इतना भयानक था कि यदि भगवान ने रक्षा न की होती तो गाड़ियां सैकड़ों फुट गहरी खाई में समा गई होती। ऐसे में इनमें सवार लोगों का बचना नामुमकिन था, लेकिन भगवान को ऐसा मंजूर नहीं था। ट्रक में सवार पुण्यात्मा चौ. मित्रसेन जी के कर्मों का सुफल, अटूट ईश्वर आस्था और प्रारब्ध था, जिसके सामने यह भीषण हादसा टल गया। पुण्य आत्माएं अपने साथ-साथ औरों का भी कल्याण करती हैं। यह इस हादसे से साबित हो गया।

उधर, बाकी सभी गाड़ियां चाईबासा से 100 किलोमीटर दूर चक्रधरपुर गईं और जब तक वापस आईं तब तक ट्रकों के फटे टायर आदि चौ. मित्रसेन जी और अन्यों ने ठीक कर दिए थे। इस तरह चक्रधरपुर पहुँचते-पहुंचते सुबह हो गई। दूसरे चक्कर में चार ट्रकों से सारा माल यथास्थान पहुंच गया। माल पहुँचने से नारायण चंद्र दास बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे, मेरे पास देने को कुछ नहीं है। सरकार की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। मेरा आशीर्वाद आपके साथ है। आप जीवनभर सदा सुखी रहोगे। चौधरी साहब,

आप ने हमारा ही नहीं, पूरे उड़ीसा का मान-सम्मान रखा है। हमारे लिए सम्मान ही सब कुछ है। भगवान आपको सम्मान देगा। संभवतया ऐसी दुआओं और शुभाशीषों का प्रताप है कि चौ. मित्रसेन जी दिन दुगनी और रात चौगुनी तरक्की करते हुए अपने पुरुषार्थ के बल से हमारे लिए एक नजीर बने।

अब आपने कहा कि इंसुलेटर गिन लो। गिनती करने पर कभी माल घटा, तो कभी बढ़ा। कर्मचारी बेचारे चकरा गए। दूसरी-तीसरी बार गिनने पर फिर माल बढ़ गया। अंत में स्थिति को स्पष्ट करते हुए आपने कहा कि टूट-फूट के डर से मैंने 25 पेटियां अतिरिक्त इंसुलेटर लोड कर लिए थे। आप अपनी गिनती पूरी करके माल रख लो और अतिरिक्त माल मेरी गाड़ी में डाल दो। इसके तीसरे दिन माल पहुँचने का प्रमाणपत्र मिल गया। प्रभु कृपा से उस समय चाहे टाटा-टिस्को हो या इलेक्ट्रिकल विभाग हो अथवा माइनिंग कार्पोरेशन उड़ीसा, यह बात प्रसिद्ध थी कि जो काम किसी से नहीं होता हो, वह चौ. मित्रसेन जी कर देंगे। न कुछ मांगेंगे, न देर करेंगे और न ही किसी प्रकार का लालच उन्हें अपने मार्ग से डिगा सकता है।

कोई भी कार्य करते समय चौ. मित्रसेन जी की अंतरात्मा से एक आवाज आती है कि यह काम करो, यह ठीक है और यह मत करो। आप जीवनभर अंतरात्मा की आवाज पर ही कार्य करते रहे। आपका मानना है, चूंकि आत्मा परमात्मा का अंश है, इसलिए आत्मा की आवाज परमात्मा की आवाज होती है। आत्मा की पुकार की अनदेखी करने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता है। आप का मानना है कि मन, वचन और कर्म में सामंजस्य बिठाकर कोई भी काम किया जाए तो सफलता आपसे दूर नहीं। आप न सिर्फ ऐसा कहते हैं, बल्कि इसे आचरण में लाते भी हैं और लोगों के सामने उदाहरण पेश करते हैं। यही आपकी सफलता और कामयाबी का राज है।

दूसरी घटना

दूसरी घटना भी उड़ीसा माइनिंग कार्पोरेशन से संबंधित है। इस कार्पोरेशन में बड़े स्तर पर कार्य होता है। वहाँ एक प्राइवेट खान थी, जिसे सरकार द्वारा अधिगृहित किए जाने के कारण 1975 में सरकारी टेंडर निकला। चौ. मित्रसेन जी और धनसिंह लगभग 30 वर्ष तक एक साथ काम करने के बाद जब अलग हुए तब ईर्ष्यालु स्वभाव के कुछ लोग धनसिंह के साथ जुड़ गए। उनमें से एक सरदार पूनम सिंह ने धनसिंह से कहा कि टेंडर चालू रेट से कम भर दो। हानि-लाभ बराबर कर लेंगे, पर इस चौधरी को ठेका नहीं लेने देंगे। इसे यहाँ से वापस भगाएंगे।

इन लोगों में से अधिकतर अशिक्षित, अहंकारी और द्वेष भाव से भरे हुए थे। उनको मालूम नहीं था कि द्वेष भाव आदमी की बुद्धि और विवेक को खा जाता है। द्वेषी व्यक्ति दूसरों का नुकसान करने के चक्कर में अपना ही नुकसान कर बैठता है। आपके

सहयोगी सरदार दयाल सिंह और सरदार महेंद्र सिंह आपका बहुत अहसान मानते थे, क्योंकि आपने उनका सहयोग किया था। उन्होंने आपसे कहा कि आप टेंडर रेट इतना कम भर दो कि वे लोग यह काम न ले सकें। चौ. मित्रसेन जी ने उनकी बात सुनी-अनसुनी कर दी और अगले दिन संध्या से उठते ही अपनी अंतरात्मा की आवाज पर रेट भर दिया। जब आठ सदस्यों की समिति के समक्ष टेंडर खुला तो चौ. मित्रसेन जी का टेंडर टोटल वेल्यू में से 600 रुपया कम पाया गया। यही नहीं यह सबसे कम भी था। सभी सदस्य, यहाँ तक कि चेयरमैन और एमडी साहब कहने लगे कि चौधरी जी कहीं आप ने इनका टेंडर देखा-पढ़ा तो नहीं था? आपने कहा कि ये लोग अपना टेंडर मुझे क्यों दिखाने लगे? इस पर उन्होंने कहा, आपका टेंडर तो लोएस्ट है। आपको बहुत नुकसान होगा। बहरहाल, फैसला आपके पक्ष में गया। विरोधी पक्ष के सदस्य अहंकारवश बोले-इन टेंडरों का पुनरीक्षण होगा, उसमें रेट और कम कर देंगे। कहने लगे हम दोबारा देखेंगे और नेगोसिएशन कराएंगे। उसमें डाउन रेट देने से सरकार हमें बुलाएगी। इस पर बात करते-करते वे लोग चले गए।

अगले दिन सुबह चौ. मित्रसेन जी ने एमडी साहब को फोन किया और पूछा कि टेंडर का क्या हुआ, इसमें आपकी क्या राय है? उन्होंने कहा इससे कम रेट नहीं हो सकता। तुम घाटा खाओगे। चेयरमैन साहब ने कहा-फिर भी 11 बजे आप ऑफिस आओ, बात करेंगे। मुख्य अधिकारियों ने मीटिंग में आपसे कहा कि आप रेट और कम कर दो, तो आपने खाली लैटर पैड पर हस्ताक्षर करके उनको दे दिया और कहा आपकी जो मर्जी हो, वह रेट भर दीजिए। उन्होंने इनकार कर दिया और औपचारिक कार्यवाही करते हुए कहा कि रेट 10 पैसे प्रति प्रति टन कम कर दो। इस तरह से 36 हजार टन पर 3600 रुपया कम कर दिया और टेंडर चौ. मित्रसेन जी को दे दिया। अब ये निश्‍चिंत होकर बड़बिल आकर घर में सो गए।

सोमवार बीता, मंगलवार बीता और बुधवार आ गया। प्रतियोगी बात करने लगे कि तीन दिन बीत गए और कुछ पता न चला। जब कार्यालय जाकर पूछताछ की तब संबंधित अधिकारियों ने उनको बताया कि हमने तो उसी दिन चौधरी साहब को लैटर दे दिया था। खैर, परमात्मा की कृपा से चौ. मित्रसेन जी का उनके साथी कर्मचारियों ने पूरा-पूरा साथ दिया और उस कार्य में लाभ हुआ। चौ. मित्रसेन जी अपने सब कार्यों में साथियों के अलावा परमात्मा को ही परम सहयोगी मानते हैं।

तीसरी घटना

तीसरी घटना भी उड़ीसा माइनिंग कार्पोरेशन से संबंधित है। तब यह खान बीजू पटनायक के पास थी। लेबर केस होने के कारण तत्कालीन केन्द्र सरकार ने 1964 में यह खान उनसे लेकर उड़ीसा सरकार को दे

दी थी। उक्त खान 11 वर्ष तक बंद पड़ी रही और राज्य सरकार ने 1975 में उनके टेंडर निकाले। चौ. मित्रसेन जी ने भी उस समय टेंडर भरा। टेंडर की स्वीकृति के बाद वहाँ के डीसी और एसपी साहब ने कहा कि चौ. साहब काम होगा नहीं, क्योंकि वहाँ सीपीएम का प्रभाव अधिक होने के कारण कर्मचारी संगठनों का वर्चस्व है। डीसी और एसपी की बातें सुनकर चौ. मित्रसेन जी ने विचार किया कि आखिरकार लेबर एक दिन का काम पूरा करके ही मजदूरी मांगेगी या महीने भर के बाद। अगर मजदूरी नहीं मिलेगी तभी तो झगड़ा होगा।

कर्मचारियों की संभावित विद्रोह की आशंका के चलते एसपी साहब ने 75 किलोमीटर दूर से सर्कल इंस्पेक्टर भेजकर कहा कि चौधरी साहब से पूछो कि माइन्स में काम शुरू करना है तो झगड़ा तो होगा, उन्हें सिक्योरिटी भी चाहिए। पुलिस अफसर ने चौ. मित्रसेन से बात की। तब आपने शांत भाव से कहा कि आप ऐसा सोचते ही क्यों हैं कि झगड़ा होगा। जब सब काम ठीक-ठाक करेंगे और हम समय पर पैसा देंगे, तब भला झगड़ा क्यों होगा। अंततः आपने खुद अकेले ही खदान जाने का निर्णय किया। वहाँ जाकर खदान के आसपास रहने वालों से चर्चा की। बातचीत में पता चला कि वे लोग बड़े सीधे-सादे और भोले-भाले हैं।

आपने जब उनके साथ काम की बात की तो बहुत खुश हुए और कहने लगे, बाबू पत्थर तोड़ते-तोड़ते हमारे बाल सफेद हो गए हैं, परंतु खदान बंद होने से हमारे बच्चे भूखे मर रहे हैं। इसीलिए आप काम शुरू करो-हम इसे पूरा करेंगे, हमारे बच्चे काम करेंगे। उन भोले-भाले इंसानों ने चौ. मित्रसेन जी से कहा कि हम जानते हैं कि आप पिछला पैसा कैसे देंगे? जो काम आपने किया ही नहीं-उसका कैसा पैसा? वह तो सरकार से मांगेंगे। आप निश्चिंत होकर काम शुरू करो। आपको हमारे किसी विरोधी ने भड़का दिया होगा। हमने भी यह नियम बना रखा है कि कार्य के समय कोई भी यूनियन लीडर नहीं आएगा। यदि आएगा और कार्य में व्यवधान पैदा करना चाहेगा तो हम उसके हाथ-पैर तोड़ देंगे।

आखिरकार नारियल तोड़कर आपने कार्य आरंभ किया। काम शुरू हुआ तो फिर पता ही नहीं चला कि एक वर्ष का समय कैसे बीत गया। वहाँ सबको इस बात का पता था कि गैर कानूनी कार्य करने वालों को मारकर फेंक दिया जाता है। इसलिए चौ. मित्रसेन जी ने पुख्ता व्यवस्था की। कर्मचारियों के पीएफ, सभी तरह की छुट्टियों आदि का पक्का हिसाब बनाया। आपने यह भी तय कर दिया कि एक सप्ताह में पेमेंट मिलेगी। सारे नियम-कायदे बनाने के बाद आपने सबको ऐसा पत्र दे दिया। एक वर्ष का फाइनल पेमेंट पीएफ सहित एक लाख साठ हजार लेबर का बना।

कुछ दिन बाद अन्य ठेकेदार शाम के समय चौ. मित्रसेन जी के पास आए और

कहने लगे कि आपने यह नया कानून क्या बनाया है ? हम तो बीस पैसे भी नहीं देते। उन्होंने प्रलोभन दिया कि आप हमारी बात मान लो, तो हम आपका एक लाख रुपया बचा देंगे। आप यहाँ कमाने आए हो न कि लुटाने, पर शायद उन्हें पता नहीं था कि आप लालच और प्रलोभन से ऊपर उठी हुई एक नेक आत्मा के मालिक हैं। आप स्वार्थ के लिए अपनी आत्मा की आवाज नहीं दबा सकते। बहरहाल, आपने कहा कि यदि आप मेरे हितैषी बनकर आए हैं तो मेरे हित की बात नहीं कर रहे हैं। सरकार से लेबर के लिए पैसा लिया है। उसे न देना तो पाप है।

आपने अगली पेमेंट भी कर दी। इस पर ठेकेदारों ने कहा कि यह चौधरी तो हम सबको मरवा डालेगा। जले-भुने ठेकेदारों ने चौ.मित्रसेन जी के कार्य में विघ्न डालने के लिए अनेकानेक हथकंडे अपनाए। आपके खिलाफ बड़ी-बड़ी साजिशें रची, लेकिन ईश्वर की अनुकंपा से धीरे-धीरे सब शांत हो गए। कोई आपका कुछ नहीं बिगाड़ सका।

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना की स्थिर निधि

सन् 1988 में चौ. मित्रसेन जी को गुरुकुल, आमसेना की प्रबन्धकारिणी सभा के प्रधान पद पर सुशोभित किया गया। तब गुरुकुल की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इसी तरह भवन आदि की स्थिति भी सन्तोषजनक नहीं थी। ऐसे में चौ. मित्रसेन जी का प्रधान बनना गुरुकुल के लिए वरदान साबित हुआ। आपने इस संस्था की बुनियाद को मजबूत बनाने का लक्ष्य तय किया और छात्रावास, पुस्तकालय, वाचनालय, संग्रहालय, अस्पताल अतिथि भवन आदि का निर्माण करवाया। इसमें आपने अपनी तरफ से भी पूरा सहयोग दिया। आपने गुरुकुल की काया ही पलट दी। जिन्होंने आमसेना, गुरुकुल पहले देखा है और अब देखेंगे, उन्हें सहज ही अनुभव हो जाएगा कि चौ. मित्रसेन जी का गुरुकुल को क्या योगदान है। ऐसे में सभी उनके सत्यनिष्ठ आर्यत्व के लिए साधुवाद देते हैं। आज योग्य, तपस्वी, विद्वान कार्यकर्ताओं की कमी से वैदिक धर्म के तमाम हितैषी आर्यजन चिन्तित हैं। इस चिंता को मिटाने का उपाय है -श्रद्धालु उत्साही नवयुवकों को देश और धर्म के लिए अर्पित होने के लिए तैयार करना। ऐसा तभी संभव होगा जब योग्य व्यक्तियों को सुशिक्षित, संस्कारित और नैतिक रूप से सबल बनाकर और नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा देकर समाज में जागृति फैलाने के लिए उतारा जाए।

गुरुकुल आश्रम, आमसेना ने इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर स्थायी न्यास के तहत निधि बनाकर यह कार्य प्रारंभ कर दिया। गुरुकुल आश्रम, आमसेना के प्रधान चौ. मित्रसेन जी ने प्राचीन भारतीय विद्या सभा आश्रम न्यास की स्थापना की है। उन्होंने स्वयं स्थायी निधि में बड़ी राशि दान दी। गुरुकुल आश्रम के संचालन की व्यवस्था और कामकाज में स्थायित्व लाने के लिए आपने न्यास का पंजीकरण करवा लिया। इसके लिए

अभी 17 आजीवन ट्रस्टी बनाए गए हैं। इस न्यास के प्रधान चौ. मित्रसेन जी, मुख्य प्रबन्ध न्यासी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, प्रबन्ध न्यासी स्वामी व्रतानन्द सरस्वती और सह प्रबन्ध न्यासी कुंजदेव मनीषी को बनाया गया है। न्यास के कारगर संचालन के लिए 31 सदस्यीय परिचालन समिति भी बनाई गई है। इस समिति का कार्यकाल पांच वर्ष रखा गया।

इस न्यास की स्थापना के साथ ही 20 ब्रह्मचारी युवक और कन्याएं विशेष दीक्षा ग्रहण करने के बाद समाज में जागृति लाने के पुनीत कार्य में जुट गए हैं। इन सबके भविष्य की सुरक्षा तथा इन्हें जीवनयापन योग्य तमाम सुविधाएं देने के लिए स्थायी निधि बनाई गई है ताकि सभी निश्चिंत होकर अपना निर्धारित कार्य करते रहें।

भव्य वेदमन्दिर

रोहतक के सेक्टर-14 में श्रद्धेय मित्रसेन जी के निवास स्थान सिन्धु भवन के प्रांगण में एक भव्य वेद मन्दिर है और पुस्तकालय है। यज्ञशाला में नित्य हवन, यज्ञ, वेद-वचन आदि होते रहते हैं। आर्य जगत का ऐसा कौन-सा वैदिक विद्वान, साधु, संन्यासी, वानप्रस्थी, आर्य भजनोपदेशक है, जिसने यहाँ आकर वेद प्रवचनों, उपदेशों और संगीत की अमृतवर्षा न की हो। आर्य जगत के महान् संन्यासी स्व. स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज, स्व. स्वामी ओमानन्द जी, गुरुकुल झज्जर, आचार्य बलदेव जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, दयानन्द मठ, रोहतक, स्वामी धर्मानन्द जी गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा), स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी देवव्रत, प्रियव्रत दास (भुवनेश्वर), सन्नो देवी (भुवनेश्वर), प्रो. उमाकान्त उपाध्याय, स्वामी व्रतानन्द जी गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा), स्वामी सुमेधानन्द जी, दयानन्द मठ, चम्बा, हिमाचल प्रदेश, स्वामी सत्यपति जी महाराज, अहमदाबाद (गुजरात), स्वामी रामदेव जी, संचालक पतंजलि योगपीठ, कनखल (हरिद्वार), स्वामी सुमेधानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (राजस्थान), स्व. स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज, वैदिक विद्वान लेखक डॉ.भवानीलाल भारतीय नन्दनवन, जोधपुर (राजस्थान), प्रो. राजेंद्र जिज्ञासु, वेद सदन, अबोहर (पंजाब), स्व. स्वामी सर्वानन्द जी (पंजाब), डॉ. सोमदेव शास्त्री आर्य समाज, मुंबई (महाराष्ट्र), डॉ. धर्मवीर सिंह मंत्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर (राजस्थान), ब्रह्मचारी आचार्य आर्य नरेश जी (हिमाचल), भजनोपदेशिका आचार्या कलावती गुरुकुल, गणियार (महेंद्रगढ़), आर्या भजनोपदेशिका श्रीमती पुष्पा शास्त्री, आर्य भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश, आर्य भजनोपदेशक ओमप्रकाश वर्मा (यमुनानगर), आर्य भजनोपदेशक सत्यपाल जी पथिक (अमृतसर), आर्य भजनोपदेशक चंद्रभान आर्य (जीन्द), रामनिवास आर्य भजनीक (कुरुक्षेत्र), आर्य भजनोपदेशक महाशय बेगराज जी (उत्तर प्रदेश), चौ ईश्वरसिंह तूफान, भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा, वैदिक विद्वान आचार्य सुदर्शनदेव, रोहतक,

युवा वैदिक विद्वान प्रतापसिंह शास्त्री (हिसार), डॉ. सुरेंद्र सिंह, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, आर्य समाज के ओजस्वी वक्ता राममेहर एडवोकेट, रोहतक, सुखदेव शास्त्री अवैतनिक सभा उपदेशक, दयानन्द मठ, रोहतक, आचार्य विजयपाल गुरुकुल, झज्जर, आचार्या डॉ. दर्शनाकुमारी कन्या गुरुकुल, खरल (जींद), स्वामी गोरक्षानन्द जी, उचाना गोशाला (जींद), प्रो. सुरेंद्र कुमार जी (झज्जर), डॉ. सर्वदानन्द आर्य पूर्व कुलपति, चौ. चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, आचार्य डॉ. बलबीर आदि सैकड़ों नाम इस शृंखला में लिखे जा सकते हैं, जिन्होंने चौ. मित्रसेन जी के आवास में स्थापित वेद मन्दिर में बैठकर ईश्वर की अमरवाणी और वेदमंत्रों का उच्चारण करते हुए आर्य जनता को वेद का संदेश देते रहते हैं। ये सभी विद्वान और सुधीजन आर्य समाज के कार्यक्रमों और वैदिक विचारधारा, महर्षि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा वेदभाष्य के अनमोल उपदेश सुनाकर श्रोताओं को आनंदित करते रहते हैं। इसी तरह का एक वेद मंदिर गरुड़ नगर, गेवरा (छत्तीसगढ़) में भी बनाया गया है।

चौ. मित्रसेन जी वर्षों से ऐसे विशेष कार्यक्रम करवाकर और आयजनों में प्रीतिभोज देकर अपने कर्तव्य पालन से ऋषि ऋण से उऋण होने का सार्थक प्रयास कर रहे हैं। आप कहते हैं कि मेरे पिताजी चौ. शीशराम जी भजनोपदेशक थे। उन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब का अवैतनिक उपदेशक बनकर वेद प्रचार किया था। मैंने उनकी विरासत को आगे बढ़ाने का प्रण ले रखा है और यथासंभव इसे पूरा करने की चेष्टा में रहता हूं। मुझे ऐसे कार्यक्रमों में आत्मिक शांति, सन्तुष्टि, ऋषि ऋण उतारने की विधि और विद्वानों-संन्यासियों के सत्संग के साथ-साथ उनका आदर-सत्कार करने का अवसर मिलता है। आप बड़ी विनम्रता से कहते हैं कि जिस आर्य समाज के संसर्ग से मैं सब प्रकार के दोषों से बचा रहा और जिस प्रभु ने मुझ पर इतनी कृपा की है, उसके नाम पर वेद मन्दिर बनाकर वेदप्रचार करना मेरा परम कर्तव्य है। इस वेद मन्दिर का महत्त्व इसलिए है कि हरियाणा समेत बाकी जगहों के लोग यहाँ आकर अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाते हैं और आर्य समाज की विचारधारा तथा वेद प्रचार की कारगर और क्रियात्मक योजनाएं बनाने का प्रयास करते हैं। इससे मुझे असीम सुख की अनुभूति होती है। यह सुख ही मेरी पूंजी है। भला मैं इस पूंजी को कैसे खो सकता हूं।

आदर्श किसान

कृषि हो या उद्योग या फिर कोई अन्य क्षेत्र, इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां हमें ललकार रही हैं। इन चुनौतियों को मात देती शख्सियत चौ. मित्रसेन जी ने जहाँ उद्योग और व्यापार जगत में बुलंदियों को चूमा, वहीं वे कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के बूते किसान वर्ग के भी प्रेरणास्रोत बने हैं। सामान्य व्यक्ति जहाँ

कार्य करने की सोच तक नहीं सकता, ऐसे जंगलों और टीलों में आपकी सूझबूझ और परिश्रम से हरियाली छा गई है। चौ. मित्रसेन जी के नेतृत्व में सिन्धु फार्म्ज ने कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग के जरिए उत्कृष्ट फार्म स्थापित कर किसानों की समृद्धि के लिए कमर कस ली है।

भारत मूल रूप से छोटे किसानों का देश है। हरित क्रान्ति के शुरुआती दौर में ही चौ. मित्रसेन जी ने आशंका जताई थी कि यह क्रांति बाद में छोटे किसानों के पतन का कारण बनेगी। इस पतन को रोकने के लिए अभी से कदम उठाने होंगे। आपकी आशंका सही साबित हुई। अनाज आदि की स्थानीय किस्मों में जो विविधता थी, वह हरित क्रान्ति की किस्मों के आने से सिमटने लगी। हरित क्रान्ति के दौर में थोड़ी-सी किस्में बड़े क्षेत्रों में छा गई और उनका आनुवांशिक आधार भी प्रायः संकीर्ण ही पाया गया। इससे फसलों में बीमारियां लगने लगीं और कीड़ों का प्रकोप तेजी से फैलने की संभावना बढ़ गई। तभी से चौ. मित्रसेन जी ने प्रण लिया कि वे ऐसी फार्मिंग विकसित करेंगे, जो न केवल किसान वर्ग की समृद्धि के उपयुक्त हो वरन् जिससे व्यापक पैमाने पर रोजगार का भी सृजन हो और सबसे बढ़कर जो प्रकृति के अनुरूप हो।

चौ. मित्रसेन जी ने छोटी जोत वाले किसानों और इकाइयों का आह्वान किया कि वे ग्रुप बनाकर आपस में कृषि कार्यों को बांटकर बड़ी जोतों के रूप में काम करें ताकि अधिक से अधिक सुविधाएं और मशीनें कृषि कार्यों के लिए जुटाई जा सकें। इस प्रकार की खेती से जहाँ किसानों का खर्चा प्रति एकड़ कम होगा, वहीं प्रति एकड़ पैदावार में वृद्धि होगी। अपनी दूरगामी सोच, प्रगतिशील विचार और कल्याणकारी योजनाओं को मूर्तरूप प्रदान करके चौ. मित्रसेन जी ने हरियाणा और छत्तीसगढ़ में ऐसे फार्म स्थापित कर मिसाल कायम की है, जहाँ पर अत्याधुनिक तरीकों से खेतीबाड़ी की जाती है। जो जमीन कृषि कार्यों के लिए अनुपयुक्त थीं, जहाँ किसानों का आवागमन भी नहीं था, आपने उस जमीन को न केवल उपजाऊ बनाया बल्कि फसलों का विविधीकरण करके वहाँ बागवानी का कार्य अत्यन्त सफलतापूर्वक किया।

कृषि विशेषज्ञ और बागवानी सलाहकार शक्तिसिंह ने बताया कि माड़ौधी फार्म, रोहतक, हरियाणा (सिन्धु फार्म्स की इकाई) वर्ष 2002-03 में जिले में प्रथम रहा है। कृषि और बागवानी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारत सरकार ने चौ. मित्रसेन जी को **'कृषि विशारद'** की उपाधि से सम्मानित किया है। इसी तरह हरियाणा सरकार ने **'चौ. देवीलाल किसान पुरस्कार'** से सम्मानित किया। शक्तिसिंह ने बताया कि यह माड़ौधी फार्म गाँव सुनारियां (रोहतक) से पश्चिम की तरफ चार किलोमीटर दूर अत्यन्त रेतीले टिब्बे पर स्थित है। यहाँ टपका सिंचाई विधि से सिंचाई की जाती है और फलों की नई-नई किस्में लगाई गई हैं। इनमें मुख्यतः किन्नू, आंवला, बेर, अमरूद, अनार और नींबू शामिल हैं। इसके अलावा फार्म की एक खूबी यह भी है कि यहाँ बागवानी के साथ-साथ इंटर-क्रॉपिंग

के माध्यम से विभिन्न सब्जियां और फसलें ली जाती हैं। फार्म पर मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए हरी खाद, गोबर की खाद, केंचुए की खाद आदि जैविक खादों का प्रयोग किया जाता है। रासायनिक खादों का प्रयोग बहुत कम किया जाता है।

आधुनिक कृषि तकनीकें और संसाधन स्वयं उपलब्ध नहीं होते, वरन् उनके लिए कठिन परिश्रम एवं निष्ठा के साथ कार्य करना होता है। सुरेश सिन्धु ने चौ. मित्रसेन जी के मार्गदर्शन में उपरोक्त कार्यशैली को बखूबी अंजाम दिया। निरंतर कार्य करते हुए आपने न केवल कार्यक्षमता बढ़ाई वरन् गुणवत्ता का ध्यान रखते हुए फार्म को उत्कृष्ट बनाने में पूरी तरह प्रयासरत हैं। सिन्धु फार्म की दूसरी इकाई रायपुर (छत्तीसगढ़) से 40 किलोमीटर दूर सिमगा के पास स्थित है। इस फार्म पर मुख्यतः आम की फसल ली जाती है। अत्यन्त पिछड़े इस इलाके में आधुनिक फार्म की स्थापना चौ. मित्रसेन जी का सपना और निश्चय था। यहाँ भी बागवानी कार्य टपका सिंचाई विधि से किया जाता है। इंटर क्रॉपिंग में मुख्यतः खरीफ में सोयाबीन और रबी में चने की फसल ली जाती है। सब्जियां भी उगाई जाती हैं। यहाँ कृषि और बागवानी की विशेषता यह है कि फार्म के कार्यों में कृषि विशेषज्ञों की तकनीक और किसानों के अनुभव को एकसूत्र में पिरोकर काम किया जाता है।

चौ. मित्रसेन जी बताते हैं कि कृषि और कृषि तकनीक में एक महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि फसल-चक्र और किसी फसल की किस्मों को यदि बदलना है तो यह बदलाव किस आधार पर किया जाए? प्रायः देखा गया है कि फसल की जो किस्म कुछ ज्यादा उपज दे रही हो या जिससे अल्पकाल में कुछ अधिक आमदनी की उम्मीद हो, उसी को प्राथमिकता दी जाती है। हरित क्रान्ति के समय भी यही किया गया। तब जिन नई किस्मों से कुछ समय के लिए कुछ बेहतर उत्पादकता की उम्मीद थी, उन्हें बड़े पैमाने पर अपनाया गया। उनके लिए महंगी रासायनिक खादों और कीटनाशकों, खरपतवारनाशकों आदि की व्यवस्था भी की गई। ये रसायन इन किस्मों की ऊंची उत्पादकता के लिए आवश्यक पाए गए थे। अधिक उपज और कम समय में ज्यादा आमदनी देने वाली इन किस्मों को अपनाने में जल्दबाजी के कारण इनसे जुड़े अनेक अन्य मसलों और दिक्कतों पर ध्यान नहीं दिया गया। चौ. मित्रसेन जी बताते हैं कि इनमें एक महत्त्वपूर्ण सवाल यह भी है कि रासायनिक खादों और कीटनाशकों की मदद से उगाई जाने वाली फसल का मिट्टी पर क्या असर होगा? मिट्टी के उपजाऊपन पर रसायनों का क्या प्रतिकूल प्रभाव होगा? इस दीर्घकालिक नुकसान पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। उनके अनुसार इन रसायनों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरा शक्ति का तेजी से ह्रास हुआ है और महत्त्वपूर्ण सूक्ष्म पोषण तत्वों में कमी आई है।

आपका मानना है कि मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए अनेक सूक्ष्म जीवों, केंचुओं आदि के लिए तो ये रसायन कहर बनकर

आते हैं। रासायनिक खाद के अधिक प्रयोग से केंचुओं को तड़पता हुआ देखा जा सकता है। साथ ही किसानों के मित्र अनेक कीट-पतंगों, पक्षियों और अन्य जीवों के लिए भी ये रसायन हानिकारक हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इनकी मदद से तैयार हुआ अनाज मानव जीवन के लिए कितना हानिकारक है, इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। सभी ज्यादा से ज्यादा अनाज पैदा करने की होड़ में लगे हुए हैं। आरंभिक वर्षों में अधिक रासायनिक खाद के उपयोग के बेहतर परिणाम मिलते हैं, पर कुछ वर्ष बाद रासायनिक खाद और कीटनाशक का खर्च बढ़ते जाने से उत्पादन उम्मीद से कम होता है और खेती कभी-कभी तो घाटे का सौदा बन जाती है।

चौ. मित्रसेन जी का मानना है कि कृषि उत्पादों की प्रत्यक्ष बिक्री से किसानों को अपने उत्पाद का उचित मूल्य कभी नहीं मिल पाएगा, बल्कि कृषि उत्पादों से उप-उत्पाद तैयार करके ही वे अधिक धन कमा सकते हैं। आपका सपना है कि देश में बड़े पैमाने पर कृषि के विविधीकरण की योजना तैयार हो। सिन्धु फार्म्स इस दिशा में सही अवसर सुलभ करवा रहे हैं। आपका सोचना है कि कृषि और उद्योगों के विकास से ही किसान समृद्धि के पथ पर जा सकता है। आप धरा को हरा-भरा रखने और प्रकृति के अनुसार खेती करने के पक्षधर हैं। आप प्रकृति के प्रेमी और उसके अनन्य भक्त भी हैं। आप प्रकृति से तालमेल करके काम करने के पक्षधर हैं और उससे होड़ के खिलाफ। इसके अतिरिक्त दर्जनों संस्थाओं ने आपको अभिनन्दन पत्र देकर आपका और अपना गौरव बढ़ाया है। आप अनेक संस्थाओं के संरक्षक और प्रेरक सदस्य हैं। चौ. मित्रसेन जी पूर्ण सत्य, निष्ठा, निःस्वार्थभाव और निर्भयतापूर्वक अपने ध्येय के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा देते हैं और स्वयं भी सदैव इस मार्ग पर अग्रसर रहना चाहते हैं-

जिस दिन से चला हूँ मेरी मंजिल पर नजर है,
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।

सही मायने में चौ. मित्रसेन जी ने संसार के कर्म क्षेत्र में जिस दिन से कदम रखा है, उस दिन के बाद रुके नहीं हैं बल्कि नित नई मंजिलें छू रहे हैं।

गोभक्त

आर्य समाज, अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में ही आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का कार्यालय है। यह सभा डीएवी प्रबन्धकर्त्री सभा की मातृसंस्था है। पिछले साल 29 और 30 मई को यहाँ सभा और डीएवी का चुनाव था। देशभर के विभिन्न आर्य समाजों से प्रतिनिधि आए हुए थे। हिसार नगर से आर्य समाजों के प्रतिनिधि दिल्ली से हिसार जाते हुए रोहतक में चौ. मित्रसेन जी के निवास स्थान सिन्धु भवन में पधारे। अतिथि सत्कार, भव्य वेद मन्दिर और चारदीवारी पर निर्मित चित्रकला में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, ब्रह्मा आदि से जैमिनी पर्यन्त-ऋषियों के भव्य चित्रों, रामायण, महाभारत से वर्तमान काल तक के ऐतिहासिक वीरों के चित्रों, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र

जी और योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज और कौरव-पांडव पर्यन्त चक्रवर्ती राजाओं के चित्रों, महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना से वर्तमान तक के आर्य महापुरुषों और हमारे स्वतंत्रता संग्राम के महानायकों और अन्य विभूतियों के भव्य चित्रों को देखकर वे चौ. मित्रसेन जी की प्रशंसा कर रहे थे। जो व्यक्ति चाय के आदी नहीं थे, उन्हें गाय का दूध दिया गया। चौ. मित्रसेन जी ने मेहमानों को बताया कि यहाँ शहर के पास ही हमारे कृषि फार्म में 22 दुधारू गाएं हैं। इस कारण दूध की कमी नहीं है। यदि आप सभी चाय की बजाय दूध लें तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

चौ. मित्रसेन जी के इस विनम्र निवेदन से इस बात का प्रमाण मिल गया कि वे कितने गोभक्त हैं। बहुत-सी गोशालाओं में तो दूध देनेवाली 8-10 गाएं भी नहीं होती और यहाँ चौ. मित्रसेन जी ने अपने फार्म पर निजी गोशाला बनाकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। जो व्यक्ति किसी बात का स्वयं अपने जीवन में आचरण करता है और फिर दूसरों को कहता है, उसी से लोग प्रभावित होते हैं।

किसी भी राष्ट्र की सुख-समृद्धि के लिए आवश्यक है कि उसमें (1) श्रेष्ठ ब्राह्मण अर्थात बुद्धिजीवी बड़ी संख्या में हों। (2) दुष्टों का दमन करने वाले और आक्रमणकारियों का संहार करने में समर्थ क्षत्रिय अर्थात सेना और पुलिस हो। (3) प्रचुर मात्रा में दूध देने वाली गाएं हों। (4) कृषि कार्य के लिए हल चलाने और भार ढोने वाले शक्तिशाली बैल हों। (5) युद्ध में काम आने वाले और आवश्यकतानुसार लोगों को इधर-उधर ले जाने वाले शीघ्रगामी घोड़े हों अर्थात यातायात के साधन सुलभ हों। (6) नगर का नेतृत्व करने वाली सशक्त नारियां हों अर्थात नारी जाति का सम्मान हो, वह अबला न होकर सबला बने। (7) युद्ध क्षेत्र में विजय प्राप्त करने वाला, राजकार्य में दक्ष युवा वर्ग हो, अर्थात शारीरिक, मानसिक दृष्टि से देश का युवा वर्ग स्वस्थ हो। (8) अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि के कारण होने वाली हानियों से बचाव के लिए पर्यावरण की शुद्धि के साथ-साथ वृक्षों के संरक्षण और यज्ञादि द्वारा अपेक्षित समय पर वर्षा हो। (9) अपेक्षित मात्रा में अन्न, फल आदि के उत्पादन और सुरक्षा की व्यवस्था हो अर्थात राष्ट्र में अन्न, धन, वनस्पति, फल आदि की कमी न रहे। (10) किसी प्रकार का अभाव न हो और प्राप्त सामग्री की रक्षा तथा वितरण का समुचित प्रबन्ध हो। समाज और राष्ट्र के लिए कल्याणकारी इस व्यवस्था में पशुओं के पालन-पोषण तथा विकास पर पर्याप्त बल दिया गया है। शरीर के पोषण के लिए जल के बाद अन्न महत्त्वपूर्ण है। उसके बाद दूध की सबसे ज्यादा जरूरत है। यह हमें पशुओं से प्राप्त होता है। पशुओं में भी गाय का दूध सर्वश्रेष्ठ माना गया है। गाय के दूध को अमृत कहा गया है।

गाय मानव संस्कृति की आत्मा है। गाय हमारे कृषि प्रधान देश की रीढ़ है। हमारी संस्कृति में गोवंश को मानव परिवार में स्थान मिला है। गाय को माता कहा गया है। मानवीय सम्बंधों का वह सर्वोत्तम उदाहरण है। वस्तुतः

गाय हमारे सुखों की स्रोत है, निर्धन का धन और जीवन है, धनवान की शोभा है, परोपकार की प्रतिमा है। सरलता और सौम्यता की सजीव मूर्ति है और निःस्वार्थता का प्रतिरूप है। चौ. मित्रसेन जी गोमाता के भक्त हैं। आपका गो प्रेम अतुलनीय है।

चौ. मित्रसेन जी को आर्य समाज और महर्षि दयानन्द की विचारधारा विरासत में मिली है, अतः आप महर्षि दयानन्द के बताए कार्यों को मन, वचन और कर्म से पूरा करने के लिए कृतसंकल्प हैं। आपके परदादा राजमल जैलदार और पिता चौ. शीशराम जी, हरियाणा के अधिकांश गाँवों में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करने वाली विभूतियों में से थे। अतः पशुपालन और गोसेवा चौ. मित्रसेन जी को बाल्यकाल से प्रिय रही है। गोसेवा, समाज सुधार, देशभक्ति, दलितों, पतितों, अछूतों का उद्धार, लोगों में शिक्षा और वैदिक धर्म का प्रचार करना आपके बुजुर्गों, आपके और आपकी सन्ततियों के जीवन का हिस्सा है। आपके बुजुर्गों के समाज सुधार कार्यों से मुसलमान रांघड़ उनके दुश्मन हो गए थे। वे बराबर धमकियां देते थे कि यदि इसी तरह समाज सुधार और गोसेवा के कार्यों में लगे रहे तो तुम्हें यमलोक पहुँचा दिया जाएगा। चौ. राजमल जैलदार के मित्र दानवीर सेठ छाजूराम को भी ऐसी धमकियां दी गई थीं। उन्होंने चौ. राजमल जैलदार को इस बावत बताया तो उन्होंने चौ. मित्रसेन के परिवार में चाचा चौ. बलवीर सिंह को उनका अंगरक्षक बनाकर कलकत्ता भेज दिया था। भक्त फूलसिंह कन्या गुरुकुल, खानपुर (सोनीपत) और गुरुकुल भैंसवाल कलां के संस्थापक, समाज सुधारक और गोभक्त थे। उन्हें भी मुसलमान रांघड़ों ने जान से मारने की धमकी दी थी जबकि उन्होंने हिसार के मोठ गाँव में हरिजनों के उद्धार के लिए अनशन किया था। उन्होंने हरिजनों को कुएं पर पानी न पीने देने का खुलकर विरोध किया था। तब भी मुसलमान रांघड़ भक्त फूलसिंह को जान से मारने पर आमादा थे। यदि राजमल जैलदार उनकी सहायता न करते तो उनका जीवन संकट में पड़ सकता था। क्रांतिकारी और आर्य समाज के विद्वान भाई परमानन्द उन दिनों नारनौंद में आर्य समाज की स्थापना के कार्य में लगे हुए थे। आपने उस अनशन में भक्त फूल सिंह का साथ दिया था। इन्हीं परिस्थितियों में गोभक्त और समाज सुधारक राजमल जैलदार को सन् 1930 में रांघड़ मुसलमानों ने गोली मारकर शहीद कर दिया। इसके बाद सन् 1942 में गोभक्त और समाज सुधारक भक्त फूलसिंह को भी मुसलमानों ने गोली मारकर शहीद कर दिया। ऐतिहासिक तथ्य यही बताते हैं कि चौ. मित्रसेन जी का परिवार परंपरा से पशुपालक और गोभक्त रहा है। चौ. मित्रसेन जी ने 18-19 वर्ष की आयु तक कृषि, गोपालन, पशुपालन और गोसेवा की है। आज भी अपने कृषि फार्मों पर सब जगह पशुधन में गाय को विशेष महत्त्व देते हैं। आपके विशेष सहयोग से संचालित कई गुरुकुलों में गोशालाएं भी स्थापित की गई हैं। गोसंवर्धन का कार्य भी बराबर चल रहा है। आप अपने घर पर गाय

का घी, दूध और लस्सी ही प्रयोग करते हैं। किसी विद्वान का कथन है-

'गोषु भक्तश्च लभते यदिच्छति मानवः,
धनार्थी लभते वित्तं धर्मार्थी धर्ममानुपातः।'

अर्थात् गोभक्त मनुष्य जिस चीज की इच्छा करता है, वह उसे प्राप्त होती है। धन चाहने वाले को धन और धर्म चाहने वाले को धर्म प्राप्त होता है। शायद गोभक्ति का ही वरदान है कि चौ. मित्रसेन जी को धन, ऐश्वर्य, कीर्ति, विजय, शांति और धर्म की प्राप्ति हुई है।

चौ. मित्रसेन जी निःसंदेह सच्चे गोभक्त हैं। गोशाला, उचाना मंडी (जींद) के संचालक स्वामी गोरक्षानन्द जी भी परम गोभक्त हैं। उनकी इच्छा और परामर्श से चौ. मित्रसेन जी ने 10-15 गोशालाओं में जाकर उन्हें विकसित करने के लिए हर प्रकार से मदद दी है। हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द मठ, रोहतक के प्रधान, गुरुकुल कालवा और गोशाला कालवा, जींद के संचालक आचार्य बलदेव जी को गोसंवर्धन कार्य के लिए आप सदैव आर्थिक सहयोग देते रहते हैं। उनकी धड़ौली गोशाला को राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र बनाया गया है। गोरक्षा के लिए आर्य समाज के माध्यम से आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब और हरियाणा अथवा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के नेतृत्व में जब-जब गोवध के खिलाफ सत्याग्रह अथवा आंदोलन हुआ तब-तब चौ. मित्रसेन जी ने तन, मन और धन से सहयोग किया है। ऐसे गोभक्त , परमार्थी और सज्जन पुरुष ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते। ऐसी महान आत्मा को शत-शत नमन।

रचनात्मक सोच

रोहतक में *सिन्धु भवन* के मुख्यद्वार की छत पर **'कालो अश्व वहति सप्तरश्मीः'** अंकित किया हुआ है। इस वेदमन्त्र का अभिप्राय चित्रों में दर्शाया गया है। इस चित्रावली में आर्यावर्त का इतिहास प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक विविध चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है, जो आगंतुकों को सहज ही आकर्षित और सम्मोहित कर लेता है। आगंतुक जिज्ञासावश पूछ बैठता है कि इस भव्य रचनात्मक सोच के पीछे मूल विचार किसका है। पता चलने पर वे चौ. मित्रसेन जी की सोच के कायल हो जाते हैं। पूर्वजन्म के शुभकर्मों के फलस्वरूप न्यायकारी परमेश्वर ने चौ. मित्रसेन की आत्मिक चेतना में एक अद्भुत तेज प्रतिस्थापित किया है, समय के साथ-साथ पल्लवित और पुष्पित होकर यह तेज समाज, देश और चारों दिशाओं को आलोकित कर रहा है।

सूर्य की रश्मियां करोड़ों-करोड़ मीलों की यात्रा करके जब पृथ्वी के प्रांगण पर कदम रखती हैं तब कण-कण को प्रकाशमान करने के साथ-साथ अलौकिक सात रंग भी प्रदान करती हैं। वैदिक पथ के पथिक हमारे आदर्श चौ. मित्रसेन जी की सोच को भी सूर्य रश्मियों की उपमा दी जा सकती है। आपका वैदिक चिंतन, देशभक्ति की समर्पित भावना और सार्थक सोच समाज, संगी-साथियों और देश को एक दिशा देने का काम कर रही है। आपकी सोच आगामी पीढ़ियों के लिए दिशा-निर्देश का कार्य करने वाली है।



छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में हरिभूमि समाचार पत्र के लोकार्पण कार्यक्रम में चौ. मित्रसेन अतिथिगण के साथ।

ऐसे महापुरुष का अभिनन्दन करना गर्व और सौभाग्य की बात है। आप केवल एक व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि एक संस्था हैं। ऐसी संस्था जिसकी अनेकानेक शाखाएं हैं। इन शाखाओं में समाज सेवा, परमार्थ, परोपकार, दयालुता और वसुधैव कुटुंबकम् के पुष्प खिले हुए हैं, जिनकी खुशबू से बहुतों का जीवन महक रहा है। ऐसी संस्था चौ. मित्रसेन जी का संग मिलना परम सौभाग्य की बात है। आपकी श्रेष्ठता का बखान शब्दों में करना संभव नहीं है। आपकी रचनात्मक सोच और देश-प्रेम निर्विवाद है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी आपकी जीवन की राहों में उजाला करने वाली देवी हैं। परम मित्र मानव निर्माण संस्थान शुरू में आप दोनों का सपना था, जो अब साकार होकर परोपकारी कार्यों में श्रद्धा और निष्ठा से सलंग्न है। इस संस्था के माध्यम से आपका परिवार जनहित कार्यों को अंजाम देकर आपकी रचनात्मक सोच को आगे बढ़ा रहा है।

पत्रकारिता क्षेत्र में पदार्पण

जीवन और जगत के हर क्षेत्र में कामयाबी की इबारत लिखने के बाद चौ. मित्रसेन जी ने पत्रकारिता जगत में कदम रखने की ठानी। इसी सोच को साकार रूप देने के लिए परिजनों और सुधीजनों के बीच चर्चा हुई और एक संकल्प किया गया। आपके बड़े बेटे कैप्टन रुद्रसेन प्रतिभा संपन्न, सफल योजनाकार और सक्षम उद्योगपति हैं। उनकी देखरेख में अखबार निकालने की योजना बनी, प्रारूप तैयार हुआ और काम शुरू हो गया। कैप्टन रुद्रसेन ने अपने छोटे भाई कैप्टन अभिमन्यु को इस परियोजना का जिम्मा सौंपा।

चौ. मित्रसेन जी का आशीर्वाद, कैप्टन रुद्रसेन जी की योजना और कैप्टन अभिमन्यु की लगन-मेहनत ने साकार रूप दिया *'दैनिक हरिभूमि'* को। नाम तय हुआ और अखबार का पंजीकरण करवाया गया। इस तरह एक सोच विकसित होते-होते आज बड़े हरिभूमि समाचारपत्र के रूप में सबके सामने है। कैप्टन अभिमन्यु के नेतृत्व में हरिभूमि ने अल्पकाल में ही पत्रकारिता के क्षेत्र में नाम कमाया। आज यह समाचारपत्र एक विचार का वाहक है और हरियाणाा, दिल्ली और छत्तीसगढ़ में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। इस समाचारपत्र के विस्तार की कई योजनाओं पर काम चल रहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि भविष्य में हरिभूमि अखबारी जगत में नई बुलंदियों को हासिल करेगा।

भैंसे की बलि रुकवाई

उड़ीसा के जोड़ा कस्बे में चौ. मित्रसेन जी ने सन् 1965 में वर्कशाप खोली थी। वहाँ जाकर आपने देखा कि हर वर्ष देवी के मेले में हजारों वनवासी आते हैं और भैंसे की बलि देते हैं। इसके बाद छोटे-मोटे और पशु-पक्षियों की बलि भी दी जाती थी। इस घटना से आपके मन को ठेस लगी। आपने इसे धर्म के विपरीत पाया। चूंकि आप अहिंसा के प्रबल समर्थक हैं, इसलिए बलि की यह घटना आपको अंदर तक कचोटती चली गई। शास्त्रों की इस बात का आप पर गहरा असर है कि अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम तप है, अहिंसा परम ज्ञान है और अहिंसा ही परम पद है। आप मानते हैं कि जो किसी को दुख नहीं देता है, सबका भला चाहता और करता है, वह अत्यन्त सुखी रहता है। आप ऐसा सिर्फ सोचते ही नहीं, अपने आचार, व्यवहार और कर्म में इसे उतारते भी हैं। इस कारण आपने येन-केन-प्रकारेण बलि बंद करवाने की सोची। आपके बारे में यह भी सच है कि आप जो ठान लेते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

यह एक संयोग था कि उस वक्त जोड़ा का थाना प्रभारी आपका परिचित था। आपकी उससे वैचारिक एकता थी। आप रोहतक से ले जाकर उन्हें आर्य समाज की पुस्तकें देते थे। आपने थानेदार से कहा कि यह पशु बलि बंद होनी चाहिए। इसके लिए आपने उन्हें अपनी योजना भी समझाई।

योजना ऐसी थी कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। योजना के मुताबिक आपका चचेरा भाई धर्मपाल बंधे हुए भैंसे को इस तरीके से लाठी मारेगा, जिससे वह रस्सी तोड़कर भाग जाए। अगर वनवासी धर्मपाल को पकड़ लेते हैं, तो चौ. मित्रसेन जी के दूसरे साथी सूरजभान, रुपे लुहार और भतीजा कृपाल हो-हल्ला करके उसे पकड़कर पुलिस को सौंप देंगे ताकि वह वनवासियों के गुस्से से बच जाए। थानेदार योजना सुनकर घबरा गया और कहने लगा कि चौधरी साहब इससे तो यहाँ दंगा भड़क जाएगा। कृपया ऐसा मत करना, पर चूंकि आप धुन के पक्के हैं, इसलिए पीछे नहीं हटे और अपनी सोची कर डाली। योजना

के अनुसार भैंसा रस्सी तोड़कर भाग गया।

शराब के नशे में नाच-गा रहे वनवासियों को लाठी मारने की बात भी पता नहीं चली। उधर, आपके सभी साथियों ने हो-हल्ला शुरू कर दिया कि देवी माता भैंसे की बलि नहीं चाहती हैं। सभी कहने लगे कि देखो देवी कितनी शक्तिवान है, उसकी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। भैंसा देवी की इच्छा से ही भागा है। इस मामले पर वहाँ पंचायत हुई। पंचायत में चौ. मित्रसेन जी भी शामिल हुए। आपने कहा कि भगवान जगन्नाथ, वैतरणी माता और मुर्गा महादेव को भी नारियल का भोग लगता है। देवी मां चाहती हैं कि उन्हें भी नारियल का ही भोग लगे। देवी मां नहीं चाहती हैं कि उसके नाम पर भैंसे और अन्य पशुओं की बलि दी जाए, वरना क्या ऐसा संभव था कि भैंसा भाग जाता। वनवासी चूंकि प्रकृति के ज्यादा करीब, भोले-भाले, भगवान से डरने वाले और सच कही बात को मानने वाले होते हैं। इसलिए उन्हें चौ. मित्रसेन जी की बात में दम लगा और उनसे सहमत हो गए। इसके बाद वहाँ भैंसे की बलि बंद हो गई और नारियल का भोग लगने लगा जो आज भी जारी है।

चौ. मित्रसेन जी धर्मग्रन्थों की इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि अगर वृक्षों को छिन्न-भिन्न करने, पशुओं की हत्या करने और खून-खराबा करने से स्वर्ग मिलता है, तो फिर नरक में कौन जाएगा। भगवान महावीर ने भी कहा हैं कि जो प्राणियों की हिंसा स्वयं करता है, दूसरों से कराता है या हिंसा करने वालों का समर्थन करता है, वह संसार में अपने लिए वैर को बढ़ाता है। यही बात चौ. मित्रसेन जी भी मानते हैं।

चूंकि आप मन, वचन और कर्म किसी भी स्तर पर हिंसा के समर्थक नहीं हैं, इसलिए आप सफल हैं। इसका फल भी मिल रहा है और तमाम बाधाओं के बावजूद आज आप बुलंदी पर हैं। आप जैसी सोच अगर सबकी हो जाए तो आज समाज में जो मार-काट, अशांति और दुख-दर्द फैला हुआ है, जैसा अनाचार, कदाचार और भ्रष्टाचार है, वह नहीं रहेगा। इसलिए आपकी सोच को बांटने और बढ़ाने की जरूरत है।

भूत बंगला बनाया देव बंगला

जोड़ा के पास बासपानी में मोहम्मद मुस्तफा का एक बड़ा बंगला था। कुछ लोग उस बंगले पर कब्जा करना चाहते थे, इसलिए अफवाह फैला दी गयी थी कि इसमें भूत रहते हैं। इस मकान में जो भी रहता है। रात को उसकी मृत्यु हो जाती है। इसलिए कोई भी उसे किराए पर नहीं लेता था। आपने जब यह अफवाह सुनी तो फौरन सारा माजरा समझ गए। फिर क्या था, आपने उस भूत बंगले में रहने का फैसला कर लिया ।

आपने मोहम्मद मुस्तफा से मकान किराए पर लेने की बात की। परेशानहाल मुस्तफा साहब ने मुफ्त में ही रहने के लिए कह दिया, पर आप बेवजह किसी का अहसान लेना पसंद

नहीं करते हैं, इसलिए कहा कि आप किराया देकर ही रहना चाहते हैं।

बहरहाल, 25 रुपये प्रति माह किराया तय हो गया। आपने मकान की सफाई करवाई। वहाँ पर दो घड़े पानी और चारपाई रखवा दी। रात को आप अपने चचेरे भाई धर्मपाल के साथ रहने के लिए वहाँ गए। आप दूर द्रष्टा हैं और इस बात को जान गए कि जिन बदमाशों ने भूत की अफवाह फैलाई है, वे कोई न कोई हरकत जरूर करेंगे, सो आपने उनसे निपटने के लिए तैयारी कर रखी थी। आपने दो लाठियां और लालटेन वहाँ रख दी थी।

वही हुआ, जिसका अंदेशा था। रात को आम के पेड़ों के बीच से किसी ने अजीब-सी आवाजें निकालते हुए मकान पर पत्थर फेंके। आप पहले से ही इसके लिए तैयार थे। आपके बारे में चर्चित भी है कि बदमाशों को छोड़ते नहीं और गरीब को छेड़ते नहीं। पत्थर फेंके जाने के फौरन बाद आप धर्मपाल के साथ लाठी लेकर आम के पेड़ों के पास पहुंचे और बदमाशों को ललकारा। आप की हिम्मत देखकर बदमाश घबरा गए और सिर पर पैर रखकर भागते नजर आए।

जिन्न का भय मिटाया

बात उस जमाने की है जब चौ. मित्रसेन जी पहली बार उदयपुर गए थे। उदयपुर में आपको दानवीर भामाशाह के पैतृक मकान में भी तीन माह तक किराए पर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां रहते हुए आप उदयपुर क्षेत्र के भ्रमण पर निकल जाते थे। साइकिल किराए पर लेकर किसी एक दिशा में निकल जाते और वहाँ के इतिहास और संस्कृति के बारे में जानने का प्रयास करते।

तीन माह बाद आपने वह मकान खाली कर दिया और पड़ोस के ही एक मकान में रहने लगे। उस मकान का मालिक पुजारी था। उस पुजारी को महाराणा प्रताप की गद्दी की तरफ से वह मकान मिला था। उसी मकान में मेडिकल कालेज के एक डॉक्टर तथा उसकी धर्मपत्नी भी किराएदार थे। ऐसी मान्यता थी उस मकान के बगीचे में जांटी के एक पेड़ में मेवाड़ का सबसे बड़ा जिन्न रहता है। उसकी पूजा के लिए ही यह सारा बगीचा पुजारी को दिया हुआ था ताकि वह जिन्न शांत रहे। एक दिन आप जांटी के उस पेड़ की आड़ में लघुशंका के लिए गए। पुजारी ने आपको देख लिया। उसे बहुत बुरा लगा और वह यह कहता हुआ आपकी तरफ दौड़ा कि यह तो अनिष्ट हो गया। उसके हाथ में फरसा था। डॉक्टर और अन्य लोगों ने पुजारी को इस डर से पकड़ लिया कि कहीं वह आप पर हमला न कर दे। आप जिन्न वाली बात से अनजान थे। आपने पूछा कि क्या माजरा है। तब आपको बताया गया कि आपकी गलती से जिन्न नाराज हो जाएगा और पूरे मेवाड़ पर प्राकृतिक आपदाएं आ जाएंगी। इस पर आपने कहा कि पहले तो मैंने अनजाने में यहाँ लघुशंका की थी, लेकिन अब जान-बूझकर किया करूंगा। आपने कहा कि या तो मुझे वह जिन्न

दिखाओ या फिर शास्त्र के आधार पर उसका वजूद सिद्ध कर दो। तब मैं मान जाऊंगा। इस पर वह पुजारी सिर पकड़कर कहने लगा कि यह कैसा नास्तिक आ गया है। पुजारी के बच्चे और डॉक्टर दंपति आपके पक्ष में थे। पुजारी किसी भी तरीके से आपको सन्तुष्ट नहीं कर पाया। आपकी सोच स्पष्ट है। आप अंधविश्वासों को नहीं मानते हैं। आप का मानना है कि आस्था और अंधविश्वास अलग-अलग हैं। आस्था इन्सान को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है जबकि अंधविश्वास उसकी उन्नति की राह को रोकते हैं। आपने जीवन में कभी अंधविश्वासों को नहीं माना। चाहे जोड़ा बासपानी में भूत बंगले की बात हो या फिर उदयपुर में जिन्न का प्रकरण या फिर उड़ीसा के जोड़ा में देवी माता के नाम पर भैंसे की बलि का प्रकरण, आपने सभी मामलों में अंधविश्वास का खंडन करते हुए दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

मानवता के पुरोधा

मोहम्मद सिराजुद्दीन उड़ीसा के शक्तिशाली, और सुविधा संपन्न उद्योगपति थे। उन्हें रुपयों के बादशाह के नाम से जाना जाता था। केंद्र सरकार के वरिष्ठ नेताओं और अफसरों से उनकी अच्छी दोस्ती थी। वे खदानों से 'मैगनीज ओर' निकालकर विदेशों में निर्यात करते थे। किसी मसले में टैक्स कम देने का केस बनाकर उन पर करोड़ों रुपये जुर्माना कर दिया गया। इस कारण उनकी स्थिति कमजोर होती गई। धीरे-धीरे उनकी खान में काम करने वाले मजदूर भी बेरोजगार हो गए। हिम्मत न हारते हुए कुछ दिन बाद मोहम्मद सिराजुद्दीन ने नए सिरे से शुरुआत की और खदानों में स्वयं मौजूद रहकर काम शुरू करने की योजना बनाई। उनकी खानों में खातीवास खेड़ी (हरियाणा) के राव देवकराम, सरदार सन्तोख सिंह, सरदार साहिब सिंह तथा आपके ट्रक लगे हुए थे। यह बात 1970-71 के आसपास की है।

खान में काम शुरू करने के लिए सबसे पहले बुलडोजर की आवश्यकता थी, क्योंकि सिराजुद्दीन का बुलडोजर खराब हो गया था। उसे ठीक करवाने का ठेका कोलकाता की एक फर्म को 42 हजार रुपये में दिया गया था। उस फर्म के मैकेनिकों ने एक बार बुलडोजर को ठीक कर चलाया तो उसका इंजन जाम हो गया। बड़ी मेहनत की पर वे इसे ठीक नहीं कर पाए और हार कर लौट गए। इस पर राव देवकराम ने सिराजुद्दीन के दामाद मुर्तजा साहब को बताया कि रोहतक इंजीनियरिंग वर्क्स के चौ. मित्रसेन जी इस बुलडोजर को ठीक कर सकते हैं। मुर्तजा साहब आपके पास बड़बिल आए और बताया कि मोहम्मद सिराजुद्दीन ने आपको गुढ़ा बुलाया है। आप गए तो सिराजुद्दीन ने कहा कि हमारे इस बुलडोजर को ठीक कर दो ताकि मैगनीज की खानों में काम शुरू किया जा सके और मजदूरों को काम मिल सके। आपने कहा कि

परमात्मा ने चाहा तो आपका बुलडोजर ठीक हो जाएगा। आपके दूसरे हिस्सेदार ने समझाया कि पागल मत बनो। इस कंपनी से हमें 65 हजार रुपये पहले ही लेने हैं, अगर इनका बुलडोजर ठीक नहीं हुआ तो ये बहाना बनाकर हमारे पैसे मार जाएंगे। आपने अपने हिस्सेदार को समझाया कि गलत मत सोचो, भगवान सब ठीक करेगा।

आपने बुलडोजर ठीक करने के लिए काम शुरू कर दिया। दिल्ली में डोजर कंपनी के पुर्जे उपलब्ध नहीं थे और विदेश से मंगवाने में महीनों लगते और पैसे भी अधिक खर्च होते। आपने तरकीब निकाली। आपने आयशर ट्रैक्टर के पुर्जे देखे और उन्हें बुलडोजर की मशीन के अनुरूप पाया, क्योंकि आयशर भी जर्मन कंपनी थी। उनकी कीमत भी बहुत कम थी। आपने 2100 रुपये में छह सैट खरीदे। गुढ़ा आकर आपने बुलडोजर को ठीक करके चला दिया। सिराजुद्दीन साहब ने जब मरम्मत का बिल मांगा तो आपने 2100 रुपये की पर्ची उन्हें थमा दी। उन्होंने कहा कि आप पूरा बिल बनाकर दीजिए, इस पर्ची का मैं क्या करूंगा। आपने फिर कहा कि 21 सौ रुपये ही बने हैं और मैं इतने ही लूंगा। सिराजुद्दीन ने कहा कि कलकत्ता की कंपनी तो 42 हजार में इसे ठीक न कर पाई और आप मात्र 21 सौ रुपये ले रहे है। क्या बात है आप ऐसा क्यों कर रहे हैं। इस पर आपने उन्हें अपने संकल्प के बारे में बताया कि मैंने प्रण किया था अगर बुलडोजर ठीक हो गया तो मैं केवल लागत मूल्य ही लूंगा, किसी प्रकार की मेहनत और किराया-भाड़ा आदि नहीं लूंगा। आप ने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि बुलडोजर खराब होने से दस हजार खदान कर्मचारी खाली बैठे थे। बुलडोजर ठीक होने से उन्हें काम मिलना था। आपके संकल्प के पीछे जनहित की भावना और परोपकार की सोच थी, इसलिए सिराजुद्दीन के लाख कहने पर भी आपने मात्र 21 सौ रुपये ही लिए।

इसके बाद सिराजुद्दीन तो जैसे आपके प्रशंसक हो गए। उन्होंने आप की हरसंभव सहायता करने का वादा किया, पर आपने उनसे कभी कोई मदद नहीं ली। आप परोपकार को अपना सामाजिक सरोकार मानते हैं। शायद किसी ने आप जैसे महापुरुष को देखकर ही कहा होगा कि परोपकारी अपने कष्ट नहीं देखता, क्योंकि वह पर दुखजनित करुणा से ओत-प्रोत होता है। आप मानते हैं अगर मनुष्य परोपकारी नहीं है तो उसमें और दीवार पर उतारे गए चित्र में कोई अंतर नहीं है। यह आपकी परोपकार भरी सोच ही थी जो आपने सिराजुद्दीन से मात्र 21 सौ रुपये लिए, नहीं तो 42 हजार रुपये किसे अच्छे नहीं लगते हैं। आप लालच को पाप मानते हैं।

आप बराबर कहते हैं कि किसी की जरूरत पूरी की जा सकती है, लालच पूरा नहीं किया जा सकता। लालच वह भूख है, जिसे जितना मिटाया जाए, वह उतनी ही भड़कती है। आप तो सन्तोषी पुरुष हैं और आपका सन्तोष दूसरे के सुख में हैं। आपके अनुसार लालची पूरी

दुनिया मिलने से भी सन्तुष्ट नहीं होता, पर सन्तोषी को एक रोटी से तृप्ति हो जाती है। सन्तोष के आनन्द को आप जैसे महापुरुष ही समझ सकते हैं।

उदार हृदय

जब उड़ीसा आदि में आपका काम ठीक चल निकला और पूर्व हिस्सेदार धनाढ्य व्यवसायी को वहाँ घाटा होने लगा तो उसने स्वयं तथा झज्जर गुरुकुल के आचार्य भगवान देव से पत्र लिखवाया कि वह आपके साथ समझौता करना चाहता है। यह बात सन् 1968 की है। इसके बाद आप जब रोहतक आए तो वहाँ पंद्रह-सोलह प्रमुख व्यक्तियों की बैठक हुई और उसने सभी के बीच अपनी गलती मानी कि मैंने चौ. मित्रसेन जी के साथ अच्छा नहीं किया था।

उस व्यवसायी ने यह भी कहा कि उड़ीसा से मेरा नाम न मिट जाए, इसलिए हम पुनः वहाँ इकट्ठे होकर काम करें तो अच्छा रहेगा। उदार हृदय चौ. मित्रसेन ने उन्हें माफ करके समझौता कर लिया। चौ. मित्रसेन जी का मानना है कि कोई अपनी भूल स्वीकार करता है तो उसे माफ कर देना चाहिए, क्योंकि क्षमा करने वाला ही शक्तिशाली होता है। लड़ाई जहाँ समाप्त होती हो, वहीं खत्म कर देनी चाहिए, क्योंकि अगर यह लंबी चलती है तो इससे भविष्य में भी नुकसान होता है। इसके बाद आपने बड़बिल की दोनों वर्कशॉपों को इकट्ठा कर दिया, जो आज तक रोहतक इंजीनियरिंग के नाम से चल रही हैं।

आपकी उदारता का कोई सानी नहीं है। कहा भी गया है कि उदारता मनुष्य के सब दुखों का इलाज है। जो भाग्यशाली है, वह उदार होता है और उदारता से ही आदमी भाग्यशाली बनता है। यह उक्ति आप पर चरितार्थ होती है। आपकी उदारता ही है जो आपने धोखा करने वालों को भी माफ कर दिया। आपकी कीर्ति, समृद्धि और संपत्ति इसी उदारता का प्रतिफल है।

राजनीति में कुछ दिन

यह घटना सन् 1980 में उड़ीसा के बड़बिल की है। चौ. मित्रसेन जी राजनीति से बिल्कुल दूर रहने वाली शख्सियत हैं। आप तपस्वी सरीखा पाक-साफ जीवन जीने के आदि हैं। बड़बिल में रहते बड़े-बड़ों से लेकर आम आदमी तक से आपका गहन परिचय हो गया था। सभी जान गए थे कि आप सच्चे, पक्के, सात्विक और धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। लालच, छल-प्रपंच, झूठ आदि आपसे कोसों दूर हैं। इसी कारण लोग आपकी कद्र और इज्जत करते थे। अब तक आपका कार्यक्षेत्र विस्तृत हो चुका था। सन् 1980 में चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री बने, बीजू पटनायक इस्पात मंत्री और रविराय स्वास्थ्य मंत्री बने। सभी चरणसिंह की लोकदल पार्टी की तरफ से थे।

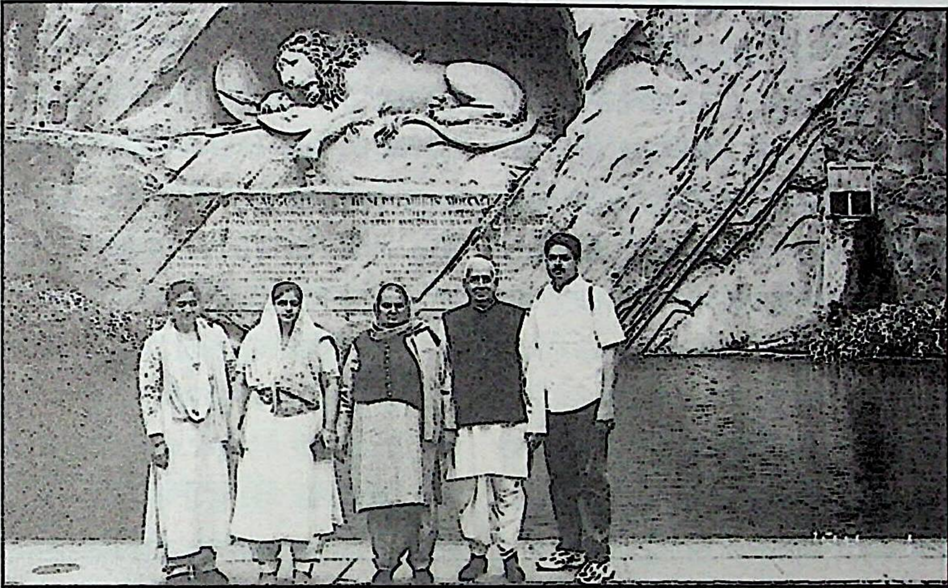
क्योंझार जिले में बड़बिल ही बड़ा शहर है। बीजू पटनायक ने क्योंझार में पार्टी का जिला प्रधान बनाने की बात कार्यकर्ताओं की

बैठक में पूछी, तो सबने आपकी अनुपस्थिति में आपको लोकदल का जिला प्रधान बना दिया। उस वक्त आप रोहतक आए हुए थे। वहाँ लोगों ने बीजू पटनायक से कहा कि वैसे तो चौ. मित्रसेन जी राजनीतिक व्यक्ति नहीं हैं, लेकिन हमें भरोसा है कि हमारी बात रख लेंगे। आपको प्रधान बनाने की खबर अखबारों में भी छप गई। एक सप्ताह बाद जब आप बड़बिल पहुंचे, तो लोग बधाई देने आने लगे। आपने उनसे साफ-साफ कहा कि राजनीति मेरा रास्ता नहीं है, आपने मुझे प्रधान बनवाकर गलत काम किया है। उन लोगों ने आग्रह किया बड़बिल में एक माह बाद एक बड़ी जनसभा रखी है, तब तक आप पद संभाल लीजिए। उसके बाद आप बेशक पद छोड़ सकते हैं। आपने उनकी बात मान ली। अगले माह बड़ी जनसभा हुई और रविराय ने आपका परिचय लेकर भाषण में उड़ीसा के लोगों से कहा कि इनसे कुछ सीखो, ऐसा सात्विक, मेहतनी, परोपकारी और उदारमना व्यक्ति आपके बीच हैं। जनसभा के बाद आपने प्रधान पद छोड़ दिया।

कुछ दिन बाद चुनाव हुए और वहाँ सरकार बदल गई। उड़ीसा के मुख्यमंत्री जानकी बल्लभ पटनायक बन गए। अब आपके विरोधी लोगों ने प्रचार करना शुरू कर दिया कि चौ. मित्रसेन जी तो लोकदल के आदमी हैं। उन्होंने आपको नुकसान पहुंचाने के नजरिए से अखबारों में छपी खबरों की प्रतियां मुख्यमंत्री को भेजीं। इसके बाद राज्य सरकार ने आपके कारोबार में रुकावटें भी डालीं। उस वक्त केन्द्रीय मंत्री दलबीर सिंह (सिरसा वाले) को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने मुख्यमंत्री जानकी बल्लभ पटनायक को फोन कर कहा, अगर चौ. मित्रसेन जी में कोई और दोष है, तो अलग बात है, लेकिन लोकदल का आदमी होने की बात कहकर इनका नुकसान मत करो। बहरहांल, धीरे-धीरे सब कुछ ठीक-ठाक हो गया। इसके बाद हरियाणा में पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल और जाने-माने उद्योगपति तथा राजनीतिज्ञ ओपी जिंदल (अब स्वर्गीय) ने आपको राजनीति में लाने की काफी कोशिशें की, पर आपने इस क्षेत्र में कदम नहीं रखा। आप राजनीति से दूर ही रहे। राजनेताओं की आज जो हालत होती जा रही है, उसे देखते हुए आप राजनीति को दूर से ही नमस्कार करते हैं। आपकी असली राजनीति तो परोपकार, दयालुता और पर दुख कातरता है।

विदेश यात्रा

आपने सन् 1999 में यूरोप के आठ देशों की यात्रा की। इनमें इटली, फ्रांस, बेल्जियम, हालैंड, इंग्लैंड, आस्ट्रिया तथा जर्मनी आदि प्रमुख हैं। आप वहाँ एक पर्यटक के रूप में नहीं, बल्कि एक जिज्ञासु बनकर गए थे। आप वहाँ के लोगों की सभ्यता, संस्कृति, आचार-व्यवहार और उनके जीने के तौर-तरीके सीखने की भावना से गए थे। आपने देखा कि भारत और यूरोप की जीवन पद्धति और सोच में भारी अंतर है। उन देशों ने चाहे भौतिक उन्नति



विदेश यात्रा के दौरान इटली में एक मनमोहक दृश्य के सामने खड़े चौ. मित्रसेन आर्य और उनके परिजन।

कर ली हो, बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएं और सड़कें बना ली हों, लेकिन मानवता, दया, क्षमा, करुणा आदि मानवीय मूल्यों से वे कोसों दूर हैं, जबकि ये मूल्य और गुण भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व हैं। भारतीय संस्कृति का भव्य प्रासाद मानवीय मूल्यों की बुनियाद पर टिका हुआ है। आपके अनुसार, जिसमें मानव मूल्य और गुण नहीं, वह तो पशुवत् होता है। भारत में अतिथि देवता समान होता है, लेकिन पश्चिम में ऐसा नहीं है। वहाँ पारिवारिक व्यवस्था भी ठीक नहीं है। संयुक्त परिवार बहुत कम हैं। वहाँ समाज में कर्तव्य और अधिकार की कमजोर व्यवस्था है। वहाँ मानव एक मशीन की तरह काम करता है। मानव मूल्यों पर स्वार्थ हावी हैं। पारिवारिक रिश्तों की मधुरता वहाँ एक सपने के समान है। पारिवारिक व्यवस्था पर निजता इतनी हावी है कि आप पहले से समय लिए बिना किसी से मिल भी नहीं सकते हैं। मानव जीवन की इससे बड़ी विडंबना क्या हो सकती है कि अपनों से भी समय लेकर मिले। भारत में ऐसा नहीं है।

गुणीजनों की सहायता

चौ. मित्रसेन जी ने केवल उद्योग जगत में ही अपनी काबिलियत और सफलता के झंडे नहीं गाड़े, बल्कि समाज सेवा और परोपकार के क्षेत्र में भी नाम कमाया। तमाम व्यस्तताओं के बीच से समय निकालकर आपने सामाजिक और कल्याण कार्यों में संलग्न संगठनों से नाता जोड़ा। आपने सात वर्ष तक आर्य समाज शहीद नगर, भुवनेश्वर के प्रधान पद को सुशोभित

किया। आपके कार्यकाल में आर्य समाज भुवनेश्वर की खूब उन्नति हुई।

आप अपने नाम को भी सार्थक करते हैं। आप दुश्मन के लिए भी मित्रवत् हैं। कहने का मतलब है कि आप आदर्श मित्रभाव के धनी हैं। आपके एक उड़िया मित्र आदित्य कुमार महापात्रा एक कंपनी में गैरिज इंचार्ज थे। महापात्रा जी भी पवित्रात्मा थे, लेकिन फक्कड़ स्वभाव के कारण झगड़े-झमेले में सत्य और न्याय का पक्ष लेते थे। उनकी सज्जनता और ईमानदारी भी एक मिसाल थी। उन्होंने कभी उड़िया तथा गैर उड़िया में भेदभाव नहीं किया। महापात्रा जी लगातार तीन बार बड़बिल नगर पालिका के अध्यक्ष चुने गए। अध्यक्ष बनने के बाद उनके खर्चे तो बढ़ गए जबकि वेतन वही था जो उन्हें कंपनी से मिलता था। इस तरह घर की आर्थिक हालत कमजोर हो गई। ऐसे लोभरहित, जात-पात के विचारों से ऊपर उठे और सरल स्वभाव वाले इंसान से आपकी प्रगाढ़ मित्रता हो गई। महापात्रा जी को दस बेटियों की शिक्षा-दीक्षा का खर्च उठाने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। यह सब आपसे देखा नहीं गया। एक मित्र की मदद करने की भावना से आपने सन् 1968 में एक ट्रक खरीदकर महापात्रा के नाम कर दिया। उनको ट्रक की चाबी देते हुए आपने कहा कि आज से यह ट्रक आपका हुआ। यह चाबी लेकर अपने हाथ से हमें दे दें। महापात्रा ने यह कहते हुए ट्रक लेने से इनकार कर दिया कि आप मुझे लोभ दे रहे हैं, कैसे दोस्त हैं, मुझे नहीं लेना है। वह बहुत नाराज हुए।

आप उनकी इस भावना के कायल हो गए। आपने देखा कि सेवानिवृत्ति पर जो पैसा महापात्रा जी को मिला था, उससे उसने एक छोटा-सा मकान खरीद लिया था। पेंशन होती नहीं थीं। बड़ी मुश्किल से उनका गुजारा चल रहा था। परिवार की चिंता में महापात्रा जी को मधुमेह का रोग लग गया। इसे देखते हुए चौ. मित्रसेन जी ने उनके परिवार का भरण-पोषण करने की भावना से अपने बेटे वीरसेन को कहा कि इस परिवार को प्रतिमास पांच हजार रुपये का सहयोग दिया जाए। यह सहयोग अनेक वर्षों से जारी है। महापात्रा जी के जीते जी उनकी पांच बेटियों की शादी हो गई थी और उनके स्वर्गवास के बाद तीन बेटियों की शादी चौ. मित्रसेन जी करवा चुके हैं। आपने सच्चे मित्र के धर्म का पालन करते हुए महापात्रा जी की सभी बेटियों की शादी के समय तमाम जिम्मेदारियां निभाने और खर्चे के अलावा 25-25 हजार रुपये की मदद अलग से भेजी। अब उनकी दो पुत्रियों की शादी होने को है। इस परिवार पर आज भी चौ. साहब की कृपादृष्टि बनी हुई है। आप यह मदद नाम कमाने या दिखावे के लिए नहीं कर रहे हैं बल्कि दोस्त के प्रति सम्मान, सच्ची भावना और अपना सामाजिक दायित्व समझते हुए आत्म सन्तोष के लिए कर रहे हैं। आपका मानना है कि दूसरे की मदद करके आप अपनी ही मदद करते हैं। आपकी नजर

में सन्तोष से बढ़कर कोई दौलत नहीं है और यह दौलत पैसे से नहीं खरीदी जा सकती है बल्कि परोपकार से मिलती है। किसी की मदद करने से जो सन्तोष आपको होता है, उसे आप अपनी पूंजी मानते हैं। कहा भी गया है कि नि:स्वार्थ सेवा का फल सदैव मीठा होता है। चौ. मित्रसेन जी को भी नि:स्वार्थ सेवा का फल सफलता, समृद्धि, यश और कीर्ति के रूप में मिला है।

ड्राइविंग लाइसेंस बनवाना

बात उन दिनों की है जब आप उदयपुर में थे। उदयपुर में परिवहन अधिकारी मोहम्मद अली के पास एक कीमती विदेशी गुप्ती थी। उस गुप्ती का लॉक खराब हो गया। अली साहब ने वह लॉक कई जगह खुलवाने का प्रयास किया, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली। किसी ने उन्हें बताया कि उदयपुर गैरिज में एक अनुभवी मैकेनिक त्यागी जी हैं, वही इसे ठीक कर सकते हैं। उन दिनों उदयपुर में आपको त्यागी जी के नाम से जाना जाता था। अली साहब आपके पास वर्कशॉप में आए और अपनी समस्या रखी। आपने उस गुप्ती के लॉक को आधे घंटे में ही ठीक कर दिया। इस पर अली साहब ने कहा कि आपने हमारे ऊपर बड़ा उपकार किया है। हम इसे उतार नहीं सकते। अगर ताला ठीक न होता तो हमें गुप्ती तोड़नी पड़ती और इसमें हमें काफी नुकसान होता। आपके काम से खुश अली साहब ने गद्‌गद भाव से कहा कि कभी हमारे लायक कोई काम-सेवा हो तो जरूर बताना। उन दिनों आपको ड्राइविंग लाइसेंस की बहुत आवश्यकता थी। आपने अली साहब से इस बात का जिक्र किया। बाद में अली साहब आपके घर आए और लाइसेंस बनाने का फार्म, फोटो और दूसरे जरूरी कागज ले गए। कुछ दिन बाद वे आपका ड्राइविंग लाइसेंस घर आकर दे गए।

धर्म और जाति से ऊपर

उदारमना चौ. मित्रसेन जी पुण्यात्मा हैं। आप धर्म, जाति और छुआछूत की भावना से ऊपर उठे हुए हैं। आपका मानना है कि मनुष्यों की जाति एक है। उसमें बटवारा इन्सान ने किया है। भगवान के घर से इन्सान ने सिर्फ इन्सान बनकर जन्म लिया है, उसे जातियों और समुदायों में हम लोगों ने बांटा है। आपकी नजर में मनु महाराज ने चार वर्णों की जो व्यवस्था बनाई थी, वह समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए बनाई थी। इसको वैदिक साम्यवाद भी कहते है। इस व्यवस्था का मुख्य कार्य मानव को मानव से जोड़ना है तोड़ना नहीं। यह गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर है और उसमें कोई छोटा बड़ा नहीं होता। उस व्यवस्था का मकसद समाज में भेदभाव पैदा करना नहीं था। ऐसा तो बाद में हुआ। आपके अनुसार धर्म मानव के दायित्वों से जुड़ा हुआ है। समाज में रहते हुए अलग-अलग भूमिकाओं में मनुष्य को जो जिम्मेदारी निभानी पड़ती है, वही उसका धर्म है।

आपके पूर्वजों ने भी जात-पात और सामाजिक बुराइयों का डटकर विरोध किया। आज से 70-80 साल पहले जिन दिनों हरियाणा में घोर जातिवाद था, उन दिनों आपके पूर्वज हरिजनों, दलितों, पिछड़ों को अपने बर्तनों में खाना खिलाते थे। उन्हें अपना मानते थे। आपके पूर्वजों की इस सोच का आपके जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव है। आपने कभी बुराई और जात-पात का समर्थन नहीं किया। आप जिंदगी को एक नदी मानते हैं। उसका मकसद सबकी प्यास बुझाना और समृद्धि फैलाना है। आप पर महान चिंतक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की यह उक्ति सटीक बैठती है। उन्होंने लिखा है, *''जिंदगी को मैं छोटी-सी टिमटिमाती हुई मोमबती नहीं मानता। मेरी नजर में जिंदगी एक बड़ी मशाल है, जिसे मैं एक निश्चित समय के लिए हाथों में थामे हुए हूं। आने वाली पीढ़ी को यह मशाल सौंपने से पहले मैं चाहता हूं कि यह अच्छी तरह जले और खूब प्रकाश फैलाए।''* चौ. मित्रसेन जी ने भी अपने मशाल रूपी जीवन से बहुतों की जिंदगियों में उजाला किया है। बहुतों की जिंदगी संवारी और अनेकानेक पुण्य के कार्य किए। औरों की जिंदगियों में उजाला भरते, उनमें खुशियां बांटते और पुण्य कार्य करते समय आपने कभी धर्म, जाति और संप्रदाय को आड़े नहीं आने दिया। आपकी नजर में मानवता और परोपकार सबसे बड़ा धर्म है और सही मायने में इन्सान बनकर काम करना सबसे बड़ी जाति है। अन्य सांसारिक भेद हैं, जिन्हें आप कोई तरजीह नहीं देते।

चौ. मित्रसेन जी छुआछूत के कितने विरोधी हैं, इसका एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा। बात सन् 1970 की है। उन दिनों उड़ीसा में आपकी इंजीनियरिंग की वर्कशॉप थी। अब तक खनन और ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में भी आप पदार्पण कर चुके थे। जैसा कि पीछे बताया जा चुका है कि आपने वहाँ के बड़े मुसलिम व्यवसायी मोहम्मद सिराजुद्दीन का बुलडोजर मात्र 21 सौ रुपयों में ठीक किया था जबकि वे आपको हजारों रुपये देने को तैयार थे। वह कार्य भी आपने लागत मूल्य पर मात्र इसलिए किया था, क्योंकि बुलडोजर ठीक होने से हजारों मजदूरों की रोजी-रोटी का मसला जुड़ा हुआ था।

आप बुलडोजर मरम्मत का बिल लेने के लिए बड़बिल से गुढ़ा माइंस दोपहर करीब 12 बजे पहुंचे थे। सिराजुद्दीन से बात करते-करते एक बज गया। उन्होंने आपके लिए चाय-बिस्कुट आदि मंगवाए तो आपने साफ-साफ कहा कि साहब, इससे काम नहीं चलेगा, खाने का वक्त है, हम तो भोजन करेंगे। आपके इतना कहते ही सिराजुद्दीन ने कहा, 'माफ करना मुझ से गलती हो गई। मैंने सोचा कि आप हिन्दू हैं और अन्य लोगों की भांति आप भी हमारे यहाँ खाना कहाँ खाएंगे।' इस पर आपका जवाब लाजवाब था।

आपने कहा कि सिराजुद्दीन साहब रोटी हिन्दू या मुसलमान की नहीं होती है, यह, अन्न की बनती है। अन्न की कोई जात,

संप्रदाय या मजहब नहीं होता। उसका मजहब है–भूखे की भूख मिटाना और तृप्ति प्रदान करना। आपने यह भी कहा कि अन्न सबसे बड़ा धन है। जो इन्सान अन्न की कदर नहीं करता, वह कभी सफल नहीं हो सकता। अन्न इन्सान को दी हुई भगवान की सबसे बड़ी नेमत है।

आपकी बातों से सिराजुद्दीन जी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने फौरन अपने खानसामों को बुलाया और खाना तैयार करने को कहा। इसके बाद सिराजुद्दीन ने भी आपके साथ बैठकर खाना खाया। उन्होंने गद्‌गद भाव से कहा कि चौधरी साहब जिंदगी में ऐसी भूल दोबारा नहीं करूंगा। सिराजुद्दीन आपके पक्के दोस्त बन गए और आपके भाइचारे के कायल हो गए। आपकी व्यापक दृष्टि और भाइचारे की यह तो एक मिसाल है। आपका जीवन ऐसे अनेकानेक प्रसंगों से भरा हुआ है, जहाँ आपने इन्सानियत की अतुलनीय मिसालें पेश की हैं।

दुर्घटना

उड़ीसा के जोड़ा कस्बे की सन् 1971 की घटना है। जून महीने का शाम का समय था। चौ. मित्रसेन एक ट्रक का वजन करवाने धर्मकांटे पर गए। धर्मकांटे की कोई प्लेट उखड़ी हुई थी। अंधेरे के कारण चौ. मित्रसेन जी इसे देख न सके और कोई 10 फुट गहरे गड्ढे में गिर गए। इससे आपके पांव की हड्डी टूट गई और कई जगह चोटें लगीं। किसी तरह आप गड्ढे से निकले और साथ गए वेल्डर शम्मसुद्दीन के साथ खुद ही जीप चलाते हुए जोड़ा आ गए। आपके घर के सामने डॉक्टर सत्यपति थे। उन्होंने प्राथमिक उपचार के बाद बड़े अस्पताल में इलाज करवाने की सलाह दी। यह भी संयोग था कि उसी दिन आपके एक ट्रक की क्रेंक टूट गई। आपके हिस्सेदार को आपसे ज्यादा चिंता क्रेंक की हुई। वह आपको घायल हालत में छोड़कर क्रेंक लेने कोलकाता चले गए। दूसरे दिन चौ. मित्रसेन को उनके मित्र चिरंजीलाल और दुर्गादास (हिसार के देपल गाँव के निवासी) ने अस्पताल में दाखिल करवाया। वहाँ डॉक्टर ने आपके पांव पर प्लास्टर चढ़ाया। इसके बाद आप जोड़ा लौट आए। तीसरे दिन आपका हिस्सेदार आया। आपको देखकर उसके मन में विचार आया कि डेढ़ माह तक आप बिस्तर पर रहेंगे, सेवा–टहल करनी पड़ेगी। इसलिए क्यों न आपको रोहतक भेज दिया जाए। उसके कहने पर आप तैयार हो गए।

वहाँ काम कर रहे छुड़ानी गाँव के सूबेदार जयनारायण आपको बड़बिल लेकर आ गए। बड़बिल से रात को 150 किलोमीटर दूर राउरकेला में ट्रेन पकड़नी थी। किन्हीं कारणों से उस दिन बस बड़बिल नहीं आई। वर्षा ऋतु शुरू हो गई थी। बस के इंतजार में आपको पूरी रात अड्डे पर बितानी पड़ी। सुबह साढ़े तीन बजे आपने सूबेदार जयनारायण को अपने मित्र सरदार सोहन सिंह जट्ट को बुलाने भेजा। सरदार सोहन सिंह अपनी कार लेकर आए। उसने खफा होकर कहा कि रात को ही क्यों

नहीं बुला लिया। इसके बाद वह आपको राउरकेला में ट्रेन में बैठा आया। हालांकि सोहन सिंह आपको अकेले भेजने के पक्ष में नहीं थे, लेकिन आपकी जिद के आगे उसकी नहीं चली। अगले स्टेशन झारंसुखड़ा में गाड़ी रुकी तो वहाँ एक सिख परिवार आपके पास की सीटों पर आया। सरदार जी को आपकी स्थिति समझते देर नहीं लगी। उन्होंने पूछा कि आपके साथ कौन है। इस पर आपने जवाब दिया कि आप हैं और परमात्मा है। सरदार जी ने बताया कि वे बुरला मेडिकल कालेज के चीफ मेडिकल अफसर हैं। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी और दो डॉक्टर बेटियां भी थीं। उनके पास दवाएं आदि भी हैं, इसलिए चिंता की बात नहीं है। अगले दिन गाड़ी दिल्ली निजामुद्दीन पहुँची। सिख दंपति ने आपको रोहतक वाली ट्रेन में बिठा दिया।

एक सप्ताह बाद ही दुर्योग से आपका वह हिस्सेदार उड़ीसा के क्योंझर में दुर्घटना का शिकार हो गया। उनके कई जगह फ्रैक्चर हो गए। पता चलते ही आप रोहतक से क्योंझार के लिए निकल पड़े। आपके पांव का प्लास्टर ताजा होने के कारण रास्ते में खराब हो गया। आपने वहाँ जाकर देखा तो आपका हिस्सेदार बेहोश था। आपने पांव का प्लास्टर कटवाया और हिस्सेदार को अच्छे अस्पताल में दाखिल करवाया। पहले वाला डॉक्टर पैसे ऐंठना चाहता था, इसलिए आपने सूबेदार जयनारायण को नवा मंडी भेजकर डॉक्टरों की टीम और एंबुलेंस मंगवाई। फिर हिस्सेदार को नवा मंडी के टिस्को अस्पताल में भर्ती करवाया। वहाँ उन्हें सोलह दिन बाद होश आया। चौ. मित्रसेन ने परिजनों से बढ़कर उनकी सेवा की और वे स्वस्थ हो गए। यह आपकी उदारता ही है जो आप अपनी पीड़ा भूलकर साथी की अपने से ज्यादा देखभाल की जबकि उन्होंने आपको घायल हालत में सेवा करने के डर से रोहतक भेज दिया था।

हक की लड़ाई जीती

यह घटना वर्ष 1974 की है, जिसमें ट्रक बुकिंग मामले में 10 महीने लड़ाई लड़कर जहाँ अपना हक प्राप्त किया, वहीं उत्कल ऑटोमोबाइल के स्वामी नगीन दास पारीख को सबक भी सिखाया। पारीख की उत्कल ऑटोमोबाइल नाम से उड़ीसा और बिहार में टाटा ऑटोमोबाइल की एजेंसियां थीं। वे धनवान थे। उनके पास अपना हवाई जहाज तक था। वे स्टेट बैंक के डायरेक्टर भी बनाए गए थे। बड़बिल के ट्रक ऑपरेटरों ने उनकी ऑटो मोबाइल कंपनी टाटानगर में 123 ट्रक बुक करवाए थे। प्रति ट्रक 80 हजार रुपये जमा करवाए गए थे। उस वक्त यह रकम ट्रक की कुल कीमत थी। चौ. मित्रसेन ने भी पांच ट्रक बुक करवाए थे। बुकिंग के चार माह बाद टाटा कंपनी ने ट्रक की कीमत 16 हजार रुपये बढ़ा दी। उत्कल ऑटो मोबाइल ने सभी गाड़ियां पुरानी कीमत पर ही ली हुई थीं। लालच में आकर उत्कल कंपनी ने सभी ट्रक खरीदारों को तार से सूचित किया कि 16

हजार बढ़ी हुई कीमत जमा करवाकर अपनी-अपनी गाड़ी ले जाएं।

चौ. मित्रसेन, सरदार सोहन सिंह, सूबेदार जेअंत सिंह, सरदार दर्शन सिंह और पाल सिंह आदि 150 किलोमीटर दूर उत्कल ऑटो मोबाइल टाटा नगर जाकर पारीख साहब से मिले और गाड़ी पुरानी दर पर देने की मांग की। आपने कहा कि हमने चार महीने पहले गाड़ी की पूरी कीमत जमा करवा दी है, ऐसे में बढ़े हुए रेट देने का सवाल ही पैदा नहीं होता। चौ. मित्रसेन ने कहा कि वे अन्याय बर्दाश्त नहीं करेंगे और वहाँ से चले आए।

चौ. मित्रसेन ने चाईबासा में शंकर बाबू नामक वकील से शिकायत ड्राफ्ट करवाकर केंद्र सरकार, सीबीआई, जिला उपायुक्त और टेल्को कंपनी को भेजी। इसकी प्रति उत्कल ऑटोमोबाइल को भी भेजी गई। शिकायत के बाद टेल्को कंपनी के बिक्री अधिकारी के. नारायणन का पत्र आया, जिसमें स्वीकारा गया था कि डीलर ने गड़बड़ की है। इसके बाद पारीख साहब आपके पास बड़बिल आए और कहा कि आप पुराने रेट पर गाड़ियां ले लीजिए और हस्ताक्षर बढ़े हुए रेट पर कर दीजिए। उन्होंने आपको लालच दिया कि चाहो तो 5-10 गाड़ियां मुफ्त ले लो, लेकिन आप लालच में नहीं आए। आपने कहा कि गाड़ियां भी पुराने रेट पर लूंगा और बिल पर हस्ताक्षर भी उसी रेट के हिसाब से करूंगा।

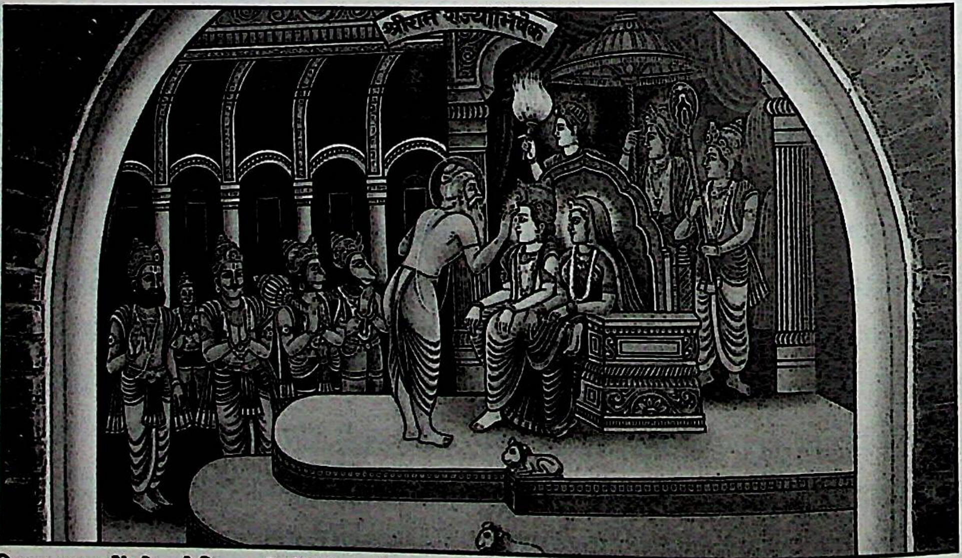
फिर पारीख साहब ने एक और चाल चली। उन्होंने सभी ट्रक ऑपरेटरों को दो से पांच हजार रुपये का लालच देकर गाड़ियों की डिलीवरी शुरू कर दी। आपके अलावा सभी ने गाड़ियां ले लीं। इसी बीच केंद्र सरकार ने उत्कल ऑटो मोबाइल की जांच के लिए उपायुक्त को पत्र भेज दिया। उपायुक्त ने जांच के लिए क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी मोहम्मद उस्मान को लगाया। उत्कल कंपनी वालों ने परिवहन अधिकारी को सिफारिश करवा दी कि जांच उनके हक में की जाए। जब इसका पता चौ. मित्रसेन को लगा तो आप अपने एक मित्र के साथ कार्यालय में उस्मान साहब से मिले। आपने परिवहन अधिकारी से कहा कि खुदा ने आपको न्याय की कुर्सी पर बैठाया है। आप निष्पक्ष जांच करना। लगे हाथ आपने चेता भी दिया कि अगर गलत रिपोर्ट लिखी तो आपकी खैर नहीं, इतना समझ लीजिएगा। परिवहन अधिकारी आपकी ईमानदारी और दृढ़ता को भांप गए और कहा कि आप निश्चिंत रहो, इंसाफ होगा। आपके जाते ही परिवहन अधिकारी ने उपायुक्त को लिखकर दे दिया कि वे इस मामले की जांच नहीं करेंगे। परिवहन अधिकारी ने पारीख साहब को बुलाकर कहा कि तुम सच्चे और सीधे-सादे आदमी से भिड़ गए हो, अब तुम्हारी खैर नहीं है। कहावत भी है कि चालबाज और धूर्त को सबसे ज्यादा व्याकुलता तब होती है जब उसका पाला किसी सीधे-सादे और सच्चे आदमी से पड़ता है। चौ. मित्रसेन जी की ईमानदारी और सचाई से पारीख डर गए।

इसके बाद वे आपका मूल पता-ठिकाना

खोजते हुए हिसार में अपने दोस्त पूर्व विधायक बाबू गुलाब सिंह जैन के पास आ गए। श्री जैन ने आपके परिवार में बड़े भाई सरूप सिंह और केंद्रीय मंत्री दलबीर सिंह से इस मामले में हस्तक्षेप करके मदद की मांग की। उन दोनों ने कहा कि मित्रसेन कोई गलत काम नहीं करता है और अगर वह गलत नहीं है तो हमारी भी नहीं मानेगा।

इसके बाद पारीख साहब , उनके तीन भाई और मैनेजर रणछोर जानीबाबू बड़बिल आए। उन्होंने आपसे समझौते की बात की। आपने कहा कि समझौता ट्रक यूनियन में बैठकर करेंगे। ट्रक यूनियन में समझौता हुआ। इसके अनुसार पारीख साहब ने यूनियन से लिखित माफी मांगी। सभी 123 गाड़ियों का पुराना रेट लगाया गया। उन्होंने जुर्माने के रूप में एक नई जीप भी दी। तब आपने कहा कि मैं इतना करूंगा कि पिछली बात जहाँ है, वहीं रहेगी। बस आगे नई कार्रवाई नहीं करूंगा और न ही इस पर जोर दूंगा। जो जांच चल रही उसका सामना आप करें। इसके बाद पारीख साहब ने एक निवेदन और किया कि इन 123 गाड़ियों की फाइल आप किसी और को न दें। यह बात आपने मान ली।

आपकी यह लड़ाई 10 माह तक चली और आपने जीत हासिल की। उत्कल ऑटो मोबाइल को भारी घाटा हुआ। जांच में उनकी उड़ीसा की आधी एजेंसियां और बिहार की मिथिला मोटर नामक एजेंसी भी चली गई। इस तरह चौ. मित्रसेन जी ने सचाई और इंसाफ के लिए लोभ और भय रहित होकर एक बड़े कारोबारी से टक्कर लेकर विजय प्राप्त की।


सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में श्रीराम के राज्याभिषेक का चित्र।

पंचम अध्याय

चिंतन

5. चिंतन

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। विवेक उसे सृष्टि के अन्य प्राणियों से अलग करता है। विवेकहीन मनुष्य पशु तुल्य है। विवेक बिना ज्ञान व्यर्थ है। विवेक जीवन का सर्वश्रेष्ठ गुण और मूल्य है। विवेक नियंत्रित मनुष्य जीवन में कभी दुखी नहीं रहता। विवेकी मनुष्य जब बुद्धि और ज्ञान के संयोग से पुरुषार्थ करता है, तब सफलता उसके कदम चूमती है। कहा जाता है कि इस सृष्टि में जागृत कौन है ? उत्तर है – जो विवेकी और ज्ञानवान है, वही जागृत है। चौ. मित्रसेन जी भी ऐसे ही विवेकी और ज्ञानी पुरुष हैं, जिन्होंने अपने पुरुषार्थ और परिश्रम से समाज में सम्माननीय जगह बनाई। आपका कृतित्व समाज के लिए एक नजीर है और व्यक्तित्व एक दीप स्तंभ है, जिसकी रोशनी दूसरों को राह दिखाती है। ऐसे महापुरुष समाज की अमूल्य निधि होते हैं। ऐसे प्रज्ञा पुरुषों के व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रकाश सब दिशाओं में फैलाने की जरूरत है।

महान चिंतक मैथ्यू ने अपनी कृति 'सरमन ऑन द माउंट' में संभवतया आप जैसे महापुरुषों को देखकर ही लिखा है कि *'तुम दुनिया के प्रकाश हो! प्रकाश को ढक कर नहीं रखा जाता। तुम्हारा प्रकाश लोगों के सामने इस तरह चमके कि वे तुम्हारे नेक कार्यों को देखकर ईश्वर के ऐश्वर्य की झलक पा सकें।'* श्रद्धेय चौ. मित्रसेन जी के व्यक्तित्व और कृतित्व रूपी प्रकाश में हमें प्रभु के ऐश्वर्य की झलक मिलती है। उन्होंने जीवन में कठिन परिस्थितियों का विवेक, बुद्धि और साहस के साथ सामना किया और सफल होकर समाज के समक्ष उदाहरण पेश किया। विपरीत परिस्थितियों का सामना करते समय आपने अपने आदर्शों और मूल्यों से कभी समझौता नहीं किया। जैसा कि हम पीछे भी पढ़ चुके हैं कि चौ. मित्रसेन जी राग-द्वेष, लोभ-लालच, लाभ-हानि और मेरे-तेरे के भेद से ऊपर उठे हुए पुरुष हैं। उनका एक लक्ष्य है, एक आदर्श है-आनन्द की सृष्टि का सृजन करना, उस आनन्द में दूसरों को शामिल करना और सार्थक सोच के साथ आगे बढ़ना। चौ. मित्रसेन जी को जितना हमने जाना-समझा है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि वे ऐसे महापुरुष हैं जो भूतकाल से सबक ग्रहण करते हैं, वर्तमान से तालमेल करते हुए उनकी नजर भविष्य पर रहती है। यह अपने आप में बहुत बड़ा गुण है। भूतकाल, वर्तमान और भविष्य पर जो पुरुष तीक्ष्ण दृष्टि रखता है, उसे मात देना कठिन होता है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति हर स्थिति का मुकाबला करने में सक्षम होता है।

चौ. मित्रसेन जी के जीवन और दर्शन की एक खासियत है कि उनका कर्म उनके ज्ञान

का अनुगामी है और उनकी इच्छाओं का ज्ञान और कर्म दोनों से तालमेल है। विद्वानों का मानना भी है कि मनुष्य के ज्ञान (Knowledge), कर्म (Action) और इच्छा (Desire) के बीच तालमेल होना जरूरी है। अगर इन तीनों में तालमेल नहीं होगा तो मनुष्य सदैव दुखी रहेगा। महाकवि जयशंकर प्रसाद भी अपने विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायनी' में इसे और स्पष्ट करते हुए लिखा हैं:

ज्ञान दूर कुछ, क्रिया भिन्न है
इच्छा पूरी क्यों हो मन की।
एक-दूसरे से न मिल सके
यही विडंबना है जीवन की।

सामान्य इन्सान के जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि उसका ज्ञान, कर्म और इच्छाएं एक-दूसरे के विपरीत हैं। यही उसके दुखों और तकलीफों का सबसे बड़ा कारण है। पर जब मनुष्य ज्ञान, क्रिया और इच्छा में तालमेल बिठाकर जीवन पथ पर आगे बढ़ता है, तब चौ. मित्रसेन जी जैसा सफल महापुरुष सामने आता है। खुद भी आनन्द, आदर्श और ज्ञान से संपन्न और दूसरों को भी इसी राह पर ले चलने को प्रेरित करता हुआ। चौ. मित्रसेन जी का जैसा ज्ञान है, वैसा ही उनका कर्म है और इन दोनों के अनुरूप ही उनकी इच्छा चली, तभी तो वे सफल, शांत और खुश हैं। जयशंकर प्रसाद जी ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायनी' में इन तीनों में तालमेल पर सटीक ढंग से लिखा है कि-

स्वप्न, स्वाप, जागरण, भस्म हो
इच्छा, क्रिया, ज्ञान मिल लय थे।
दिव्य अनहत निनाद पर
श्रद्धायुत मनु बस तन्मय थे।

कहने का मतलब जब इच्छा, क्रिया और ज्ञान में सामंजस्य हो जाता है तब आदमी आनन्द के सागर में गोते लगाता है। यह आनन्द चिरस्थायी और सदैव प्रसन्नता देने वाला है। इसकी तुलना किसी दौलत से नहीं की जा सकती है। सच्चा आनन्द और शांति सबसे बड़ी दौलत है और मित्रसेन जी के पास इस दौलत का अक्षय भंडार है।

श्रद्धेय चौ. मित्रसेन जी का जीवन इस दर्शन का प्रकट प्रमाण है। उसके लिए और प्रमाण जुटाने की जरूरत नहीं। आप आदर्श पथ के राही हैं, आपकी नजरों में मानव कल्याण की भावना और आपके कर्म में समाज के सरोकार रहते हैं। आपके कल्याण और सरोकार के मूल में आदर्श और सत्य का वास है। आप पर समर्थ गुरु रामदास जी की यह उक्ति सटीक बैठती है कि *'आदर्श पुरुष सत्कार्य का सदा समर्थन करता है और दुष्कार्य में कभी शरीक नहीं होता। कठिनाइयों में घिर जाने पर उसे बाहर निकलने का रास्ता मालूम रहता है। वह किसी को कभी अप्रसन्न नहीं करता। वह सबको प्रसन्न करने की कोशिश करता है।'*

चौ. मित्रसेन जी की मन, वचन और कर्म की सात्विकता ही है, जिसके बूते उन्होंने सफलता की ऐसी इबारत लिखी, जिसकी

मिसाल कम ही मिलती है। आपका मानना है कि इन्सान कोई भी काम करे, पूरी निष्ठा, ईमानदारी और लगन से करना चाहिए, तभी सफलता मिलेगी। इसी तरह आदमी के हर कर्म के मूल में समाजहित, मानव और देश कल्याण की भावना होनी चाहिए, तभी उसे सार्थक कर्म कहा जाएगा। आप कहते हैं कि मनुष्य भूतकाल में नहीं जा सकता है, लेकिन उससे शिक्षा ली जा सकती है। भविष्य हमारे आज के कर्म पर आधारित है। अगर हम अपने वर्तमान को संभालेंगे तभी भविष्य अच्छा होगा। आप मानवतावाद के प्रबल पक्षधर हैं। आप मानते हैं कि मनुष्य में यदि मानवता, मानव मूल्य और सामाजिक सरोकार नहीं है तो वह पशु तुल्य है। मानवता उसे कहते हैं जो बांटकर खाता है, अपने साथ-साथ दूसरे का भी हित करता है। आपकी नजर में सत्य दुनिया का आधार है और सत्य की रक्षा आदमी को जान देकर भी करनी चाहिए। दुनिया के सभी धर्मग्रन्थों ने भी माना है कि सत्य ही विश्व का आधार है। असत्य सदैव अनिष्टकारक होता है, किसी बात को घुमा-फिरा कर कहना भी असत्य है। शास्त्रों में भी कहा गया है कि सच के बराबर तप नहीं और झूठ के बराबर पाप नहीं। आपके मत में सत्य बोलना जितना सरल है, झूठ बोलना उतना ही कठिन। आप की नजर में जो मनुष्य विचारवान हैं, वही सत्य को जानते हैं। वे हमेशा कुछ सीखने की भावना रखते हैं और प्राणिमात्र का भला चाहते हैं। सही मायने में सत्य को जानने वाला हजारों में एकाध व्यक्ति ही होता हैं। कुछ लोग सब-कुछ जानते हुए भी अपने जीवन में परिवर्तन नहीं चाहते। उनकी मूढ़मति उन्हें आगे नहीं बढ़ने देती है। ऐसे लोग सब कुछ होते हुए भी खुश नहीं रहते।

आपको जीने की यह कला और सोच विरासत में मिली है। आपने पूरी निष्ठा और ईमानदारी से शरीर रूपी इस संपत्ति का सदुपयोग किया। आपने जीवन में हर चीज का सदुपयोग किया। आप का विचार है कि हर चीज प्रभु ने विशेष मकसद से बनाई है और यदि हम उस मकसद के विपरीत उसका उपयोग करते हैं तो यह प्रभु के विधान की मुखालफत और उसकी नेमत का दुरुपयोग है। इस सिद्धांत को आप जड़ और चेतन-दोनों प्रकार की चीजों के उपयोग पर लागू करते हैं।

> परिस्थितियाँ और आर्थिक दशा बदलती रहती है, लेकिन मनुष्य को अपने विचार और सत्य नहीं बदलना चाहिए। चाहे जो भी परिस्थितियाँ आएं, मनुष्य को अपने मूल्यों, सिद्धांतों तथा मर्यादा के साथ जीना चाहिए।

आपके पिता श्री शीशराम जी ने आपको जीवन संग्राम के लिए तैयार करते हुए बताया था कि इन्सान को न तो हीन भावना का शिकार

होना चाहिए और न ही नकारात्मक सोच रखनी चाहिए, क्योंकि ये दोनों इन्सान की उन्नति में बाधक हैं। इसलिए आपने जीवन में न तो कभी नकारात्मक ढंग से सोचा और न ही कभी हीन भावना आने दी। आप हमेशा सिर उठाकर जिए और सकारात्मक चिंतन को तरजीह दी। आप अपने बच्चों और बाकी लोगों को भी यही उपदेश देते हैं। आप जीवन में नौ विकारों पर काबू पाने की वकालत करते हैं। आपके अनुसार यदि मनुष्य इन विकारों पर विजय पा लेता है तो उसे न कभी दुख होगा, न कोई क्लेश सताएगा और न ही कोई पीड़ा पहुँचा पाएगा। इन नौ विकारों में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, अभाव, अन्याय, अज्ञान और आलस्य शामिल हैं। आप मानते हैं अगर मनुष्य इन सभी विकारों पर विजय पा लेता है, तो ये सब उसकी शक्तियां बन जाती हैं। आप सिर्फ उपदेश के लिए ऐसा नहीं करते हैं बल्कि जीवन में इन विचारों पर आचरण किया है। आपका सफल, शांत और श्रेष्ठ जीवन इस बात का प्रमाण है कि ये नौ विकार आपकी शक्तियां है, बाधाएं नहीं ।

परिवार के संस्कार, महान ग्रंथों के अध्ययन, विद्वानों के सत्संग और उपदेशों से आपको यह दृष्टि मिली कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। संस्कार, अध्ययन और सत्संग ने आपको यह बल दिया कि इन्सान को भय और लालच के वशीभूत होकर कुछ नहीं करना चाहिए। मन, वचन और कर्म से हमें प्राणीमात्र और समाज का हित करना चाहिए, अहित नहीं। अन्न भी मन पर प्रभाव डालता है। इसलिए आपने सात्विक भोजन का महत्त्व समझ कर उसे जीवन का हिस्सा बनाया। आप भोजन करते वक्त गो-ग्रास रखते हैं और उसे कीट-पतंगों आदि को अर्पित करते हैं। आप तड़क-भड़क वाले भोजन के पक्ष में नहीं हैं। आपके अनुसार शाकाहारी और ताजा भोजन शरीर की आवश्यकतानुसार करना चाहिए। इससे स्वस्थ शरीर और लंबी उम्र मिलती है। हमारा सात्विक आचरण ही हमें सुख और आनन्द देता है। बाहर आनन्द ढूंढ़ना बेमानी है। आनन्द इन्सान के भीतर होता है, पर वह कस्तूरी मृग की भांति उसे बाहर तलाशते हुए पागल बना रहता है। इस तलाश में प्रकृति की गति के खिलाफ चलकर दुखों का शिकार हो जाता है। यही आदमी की मूर्खता है।

आपने अपना जीवन हमेशा सात्विक ढंग और विधान से जिया। आपके अनुसार विधान तीन प्रकार के होते हैं। एक विधान परमात्मा का बनाया हुआ है, उसे कोई नहीं तोड़ सकता। इसमें सांस लेना, भूख-प्यास लगना, भोजन आदि जीवन की जरूरतें आती हैं। यह विधान निरंतर प्रवाहमान है। सूर्योदय और सूर्यास्त, वायु का प्रवाहित होना और ऋतुओं का बदलना परमात्मा के विधान हैं। इनके मूल में प्रकृति का परिवर्तन का सिद्धांत है। यह परिवर्तन नित नए रूप में हमारे सामने आता है और आनन्द का सृजन करता है। दूसरा विधान मनु महाराज ने बनाया था-

सामाजिक व्यवस्था का। इसमें मनु महाराज ने राजा-प्रजा के अधिकार और कर्तव्य बताए हैं। उन्होंने पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन आदि रिश्तों का विधान तय किया गया है और उनकी मर्यादाएं बताईं हैं। मनु ने समाज को जीने का एक तरीका दिया। तीसरा विधान होता है-राजनैतिक। इसमें देश के संविधान और सीमाओं को विधान माना गया है। हालांकि आप देश के संविधान में कुछ खामियां मानते हैं, फिर भी आपकी उसमें पूर्ण आस्था है। आप तीनों विधानों का सम्मान करते हैं।

आपकी नजर में मनुष्य के लिए भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान जरूरी हैं। आपका मानना है कि आदमी को संसार के भौतिक सुख भोगने का पूरा अधिकार है, लेकिन इस भोग में उसे मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। मर्यादाओं का उल्लंघन करके किया गया भोग दुख का कारण बनता है। इससे हमारी आत्मा का हनन होता है। आत्मा का हनन इन्सान को कभी ऊपर नहीं उठने देता है, क्योंकि प्रकारांतर से आत्मा की पवित्रता ही हमें सत्कार्यों के लिए प्रेरित करती है। आत्मा के विकास का मतलब है जीवन का विकास और जीवन के विकास का अर्थ है-सुख, समृद्धि और शांति। आत्मा आनन्द का स्वरूप है। उपनिषदों में भी कहा गया है कि केवल आत्मा की सुननी चाहिए, उसी पर सोचना चाहिए, उसी पर विचार करना चाहिए और यह न जानने की चीज है और इसे न कोई जानने वाला है। इसलिए चौ. मित्रसेन जी इसी आत्मा की पवित्रता और उन्नयन की बात करते हैं। आप आत्मस्वरूप प्राप्त करने का सरल और सहज तरीका निष्काम कर्मयोग को मानते हैं। आत्मशुद्धि से सब कुछ शुद्ध हो जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की यह बात आपके जीवन का अंग है कि वातावरण बदलने के लिए और बाहरी बंधनों को ढीला करने के लिए आत्मशुद्धि अमोघ उपाय है। चौ. मित्रसेन जी आत्मशुद्धि के कारण ही हर चीज को अपने हिसाब से बदलने में समर्थ हुए हैं। आपकी शुद्ध, पवित्र और उर्ध्वगामी आत्मा ही आपको जीवन में उन्नति के सोपान पर चढ़ाती गई। वैसे तो आपके घर में वेद मंदिर है, पर सही मायने में आपकी शुद्ध आत्मा आपका वेद मंदिर है जो आपके तन, मन, धन और कर्म को सदा शुद्ध रखती है।

आप संदेह को विघटनकारी मानते हैं, इसलिए बराबर कहते हैं कि संदेह को जीवन में स्थान नहीं देना चाहिए। इसकी जगह

> दान सुपात्र को ही देना चाहिए। दया, लगाव और परिचय के कारण अपात्र को दान देना अच्छा नहीं है। अपने तथा परिवार का पालन और सुरक्षा प्रथम कर्तव्य है। उसके बाद बचे हुए का दसवें से सौंवा भाग दान के लिए उपयुक्त माना गया है।

विश्वास जीवन का आधार है। विश्वास ही विकास और पुरुषार्थ का निर्माण करता है। आपकी दृष्टि में विश्वास जीवन की शक्ति है और विश्वास को बल प्रदान करने वाली चीजों में नीति परायणता से बढ़कर कोई नहीं है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी कहा है, *'विश्वास कोई नाजुक फूल नहीं है, जो जरा से तूफानी मौसम में कुम्हला जाए, वह तो अटल हिमालय के समान है, बड़े से बड़ा तूफान भी उसे नहीं हिला सकता है।'* चौ. मित्रसेन जी का विश्वास ही उन्हें सफलता के सोपान-दर-सोपान चढ़ाता गया। जैसा कि हम पीछे भी पढ़ आए हैं कि हर हालत और हर सूरत में चौ. मित्रसेन जी ने विश्वास का दामन नहीं छोड़ा। किसी ने धोखा दिया, किसी ने नुकसान पहुँचाया और किसी ने आपको बर्बाद करने की साजिश रची, पर चूंकि आपका विश्वास हिमालय की तरह अडिग है, सो आप हर परिस्थिति से जूझते हुए सफल होकर निकले। असल में शुद्ध और पवित्रात्मा का स्वामी ही दृढ़ विश्वासी होता है। कोई चाहकर भी उसका अनिष्ट नहीं कर सकता।

आपका मानना है कि आदमी को खुले मन और बुद्धि से अध्ययन करना चाहिए। अगर अध्ययन करते समय किसी प्रकार की शंका हो तो विद्वानों से पूछ लेना श्रेयस्कर है। इस पर भी कोई बात स्पष्ट न हो और शंका रहे तो उसे त्यागना ही ठीक है। कहा भी गया है कि आदमी को सत्य को अपनाने और झूठ को त्यागने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। आप महाशय बेगराज की इन पंक्तियों को बहुत पसंद करते है जिसमें कहा गया है कि

दोष अपने तो हर कोई छुपा लेता है।
दोष औरों के छिपाए तो कोई बात बनें॥

आपकी नजर में सर्वहित की भावना से जीना यज्ञ है। आपके अनुसार आदमी को अपने इष्ट देव का प्रतिदिन स्मरण करना चाहिए, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि इष्ट देव का नाम लेकर समय नष्ट किया जाए। स्मरण का तात्पर्य है-अपने इष्ट के गुणों को जीवन में धारण करना और उन्हें आचरण में उतारना। यही इष्ट की सच्ची पूजा है।

आपका कहना है कि अगर कोई व्यक्ति वेदादि पावन ग्रंथों को पढ़ने में सक्षम न हो तो कोई बात नहीं, उसे कम-से-कम जीवन जीने का तरीका तो हर सूरत में सीखना चाहिए। यह सब सीखने के लिए समाज हमारे सामने है। उससे भी बढ़कर माता-पिता और शिक्षक मनुष्य के सच्चे गुरु होते हैं। मनुष्य तब तक सीखता रहता है जब तक उसमें शिष्य भाव और सीखने की लगन हो। सिखाने वाले के प्रति श्रद्धा भाव न हो तो सीखा हुआ व्यर्थ चला जाता है। गीता में भी कहा गया है कि श्रद्धावान ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है और ज्ञान प्राप्ति के बाद ही इंद्रियों को संयत रखा जा सकता है। विश्वास की तरह श्रद्धा आपके जीवन का सूत्र है। आपने किसी भी सूरत में श्रद्धा का दामन नहीं छोड़ा, इसका फल सफलता के रूप में आपको मिला। रामकृष्ण परमहंस ने भी कहा है कि *'बुद्धि पंगु है।*

श्रद्धा सर्व समर्थ है। बुद्धि बहुत नहीं चलती, वह थककर कहीं-न-कहीं ठहर जाती है, लेकिन श्रद्धा अघटित कार्य सिद्ध कर दिखाती है।' चौ.मित्रसेन जी के जीवन और उनकी सफलता का अवलोकन करने से सहज ही ज्ञात हो जाता है कि इस महापुरुष की श्रद्धा और विश्वास कितने अटल हैं। आपका मानना है कि घर के कार्यों तथा व्यवसाय से जो समय बच जाए, वह जनहित में लगाना चाहिए। सत्पुरुषों का सत्संग आपको बुरी संगत से बचाता है। आपका दृढ़ विश्वास है यदि आपके मन में प्रबल इच्छा और शुभ संकल्प हो तो कोई कुछ भी कहता और करता रहे, आपको आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता। पुरुषार्थ रूपी तप, ईमानदारी, स्वेच्छा और स्वच्छ मन से किए गए कर्म का फल सदैव अच्छा ही मिलता है।

अपनी सामर्थ्य का लाभ अपने से कमजोर व्यक्ति को देने तथा सर्वहित की भावना से कार्य करने को ही आप यज्ञ कहते हैं। अपने से कमजोर के प्रति दया भाव रखना चाहिए और उसका कभी बुरा नहीं करना चाहिए। आपकी नजर में दानशीलता आदमी के सब दर्दों की दवा है। आप दान को सर्वोत्तम कार्य मानते हैं और इसी के अनुसार आचरण करते हैं। दान की महिमा को बखानते हुए महर्षि रमण भी कहते हैं, *'जो कुछ हम दूसरों को देते हैं, वास्तव में वह सब हम अपने आप को देते हैं। अगर इस तथ्य को पहचान लिया जाए तो फिर ऐसा कौन है जो दूसरों को न दे।'* चौ. मित्रसेन जी की सोच, दृष्टि और कर्म इसी नजरिए से प्रेरित है। दानशीलता आपका गुण और धर्म है।

आपने सभी धर्मों की पुस्तकों का अध्ययन पूरी निष्ठा और श्रद्धा से किया है और उनसे जीवन जीने का नजरिया ग्रहण किया। इसके अलावा आपने विद्वानों की रचनाओं का गूढ़ अध्ययन किया। आपने रामायण और महाभारत पढ़कर उनसे मर्यादा और सामाजिक व्यवस्था के सिद्धांत सीखे। आपने जीने की कला महात्मा नारायण स्वामी की किताब **कर्तव्य दर्पण** को पढ़ कर सिखी। इसके अलावा आपने आचार्य भगवान देव, महात्मा आनन्द स्वामी, आचार्य रजनीश, स्वेट मार्टन, जदूद कृष्णमूर्ति आदि लेखकों की पुस्तकों का गूढ़ अध्ययन किया और उनसे विचार रूपी मोती ग्रहण करते हुए उन्हें जीवन में धारण करने का प्रयास किया। आप सत्यार्थ प्रकाश को कई हजार ग्रन्थों के बराबर मानते हैं। आपके अनुसार नकारात्मक सोच के साथ कोई भी पुस्तक पढ़ने से कोई लाभ नहीं होता। उससे हमारा समय नष्ट और बुद्धि भ्रमित होती है। सकारात्मक सोच से किया अध्ययन आपको जीवन रूपी सागर में अपनी वैतरिणी पार लगाने का नजरिया और दृष्टिकोण देता है। यही सकारात्मक सोच हमें जीवन रूपी समुद्र से सफलता रूपी मोती ढूंढ़ निकालने की काबिलियत भी देती है। आप मानते हैं कि सकारात्मक सोच इन्सान के तन, मन और आत्मा को शक्ति प्रदान करती है। आपकी

विशेषता है कि आपने अपने जीवन में जितना सीखा है, उसे औरों को भी सिखाया है। उड़ीसा में वनवासियों को जीवन जीने का तरीका, आचार-व्यवहार और दुनियादारी की बातें सिखाईं। इसके बाद उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार तकनीकी और दूसरे कार्यों में दक्ष बनाकर उन्हें स्थापित किया। यह आपकी मानव कल्याण की सोच का ही नतीजा है।

साधुओं, महात्माओं, विद्वानों और अन्य सुधीजनों के साथ चौ. मित्रसेन जी की अनेक यादें जुड़ी हुई हैं। अनेक ऐसी घटनाएं हैं, जिनसे हमें प्रेरणा मिलती है। कितने लोगों का सहयोग आपने निःस्वार्थ भाव से किया। आज देशभर में कितनी ही संस्थाएं हैं, जिनको आप आर्थिक सहयोग दे रहे हैं, यह शायद आप स्वयं भी नहीं बता सकते।

किसी भी धर्म और संप्रदाय की पूजा-पद्धति हो आपने हमेशा उसके गुणों को देखा है और उन्हें ग्रहण किया और उन पर चिंतन किया। आपने कभी उसकी कमजोरियों को नहीं देखा। चौ. मित्रसेन जी का कहना है कि जीने की पद्धति का निर्माण सामाजिक परिवेश, माता-पिता और परिवार के संस्कारों और पूर्वजन्म के आधार पर होता है। आपका मानना है कि मनुष्य को परमात्मा ने कोरा भेजा है, लेकिन उसमें सीखने की सामर्थ्य बहुत दी है। उसके पूर्वजन्म के कर्म और संस्कारों की शक्ति सूक्ष्म शरीर के रूप में होती है।

आपके पिताजी, दादाजी तथा परदादा जी के संस्कारों का सीधा-सीधा प्रभाव आपके जीवन पर पड़ा है। उनके विचारों की संपत्ति और दिशा देने की योग्यता ने आपको बचपन से ही दृष्टिवान, पारखी और अच्छे-बुरे का भेद करने में सक्षम बना दिया था। आपके दादा जी, पिता जी और चाचा जी ने आपको पुरुषार्थ का तरीका सिखाया। उन्होंने बताया कि इससे अपार सफलता मिलती है। मजबूरी तथा भय में किए गए कर्म को पुरुषार्थ नहीं कहा जाता।

आपका मानना है कि मां के गर्भ से लेकर आठ वर्ष की आयु तक बच्चे के जीवन, सोच, दृष्टि और व्यक्तित्व का 80 प्रतिशत तक निर्माण हो चुका होता है। बाकी का 20 प्रतिशत निर्माण आगे चलकर समाज के प्रभाव, गुरुजनों के ज्ञान, महापुरुषों के सत्संग और अन्य लोगों के सम्पर्क से होता है। आपका मानना है कि अगर आदमी मर्यादाओं में रहे तो कम से कम 100 वर्ष और योग साधना से 100 वर्ष से भी अधिक समय तक जीवन जी सकता है। सादा जीवन, उच्च विचार और कर्म परायणता आपके व्यक्तित्व की पहचान हैं। आपकी दिनचर्या प्रभु स्मरण से शुरू होती है और रात को सोने से पूर्व प्रभु के प्रति आभार और वंदना से पूर्ण होती है। आप पुरुषार्थ से जीवन को ऊंचा उठाने का संकल्प लेकर सदा आगे बढ़ते रहे। आप दूरद्रष्टा और स्पष्ट सोच वाले व्यक्ति हैं। आप उचित-अनुचित के अंतर को बखूबी समझते हैं।

छठा अध्याय

सर्वमेध यज्ञ

6. सर्वमेध यज्ञ

वैदिक साहित्य ज्ञान का अथाह सागर है। वेदों में यज्ञ का विशेष महत्त्व बताया गया है। यहाँ यज्ञ विशिष्ट और विस्तृत भाव का द्योतक है। यज्ञ सुधा है। हमारे शास्त्रों में सुधा के नौ कुंड माने गए हैं–अत्यन्त दयालु चित्त, सुमधुर वचन, प्रसन्न चित्त उज्ज्वल दृष्टि, नीति से भरी हुई मति, क्षमाशील शक्ति, शीलयुक्त रूप, दीन–दुखियों की दीनता को नष्ट करने वाली लक्ष्मी, मद रहित युवावस्था और उद्धता रहित प्रभुता। दिव्यात्माओं में सुधा के ये नौ कुंड होते हैं। चौ. मित्रसेन जी के व्यक्तित्व में सुधा के नौ कुंड अपनी पूर्णता के साथ विद्यमान हैं। आपकी सोच का मूल मंत्र है कि जो सबके लिए हितकारी हो और खुद के लिए भी सुख देनेवाला हो, उसी का सदा आचरण करना चाहिए, क्योंकि वही सर्वार्थ सिद्धि का मूल है। इसी में मानवता का कल्याण निहित है। जीवन का यज्ञ मानवता की सेवा करना ही तो है। यज्ञकर्ता को स्वाहा कहते समय यही तो संकेत दिया जाता है कि अपनी संपत्ति से यथासंभव दीन–दुखियों की सेवा में मदद की आहुति डालो। यह व्यक्तिवाद से ऊपर उठकर समष्टिवाद तक पहुंचने का उपक्रम है। यह बूंद से समुद्र बनने की प्रक्रिया है–वह अथाह समुद्र, जिसमें बूंद ही सब कुछ है और कुछ भी नहीं है। श्रेष्ठ मनुष्य का अन्तिम, उदात्त और सच्चा स्वरूप है कि जहां तक संभव हो सके, सृष्टि से प्राणियों के कष्टों और दुखों का निवारण करते हुए उदात्त भावना का परिचय दे।

सन्त विनोबा भावे ने लिखा भी है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की शिक्षाओं का निचोड़ उन्होंने तीन शब्दों में पाया है–

1. सत्य–जीवन का लक्ष्य
2. संयम–जीवन की पद्धति
3. सेवा–जीवन का कार्य

सत्य, संयम और सेवा का संगम जिस व्यक्ति के जीवन में होता है, उसकी श्रेष्ठता को बताने की जरूरत नहीं होती है, वह स्वयं सिद्ध हो जाती है। चौ. मित्रसेन जी के सर्वमेध यज्ञ रूपी जीवन में सत्य, संयम और सेवा का अद्‌भुत सम्मिश्रण है। उनके जीवन का लक्ष्य स्पष्ट है, जीवन की पद्धति तय है और जीवन का कार्य प्रवाहमान है। उनके सद्‌गुणों ने उन्हें अपने निर्धारित लक्ष्य से कभी भटकने नहीं दिया। आपने समाज के हर उस कार्य में येन–केन–प्रकारेण सहयोग दिया, जिसमें मानवहित निहित हो। आपका विराट व्यक्तित्व ऐसा है कि उससे भलाई सदैव इस तरह अनजाने, सहज और स्वाभाविक रूप से होती रही है – जैसे फूल से खुशबू, सूरज से रोशनी और चांद से स्निग्ध चांदनी निकलती रहती है।

शिक्षण संस्थाओं को योगदान

चौ. मित्रसेन जी और उनका परिवार विद्या प्रेमी है। आपकी नजर में विद्या से अमृत मिलता

है। चाणक्य नीति का सूत्र वाक्य है कि जो विद्याहीन हैं, अगर वे खूबसूरत हों, जवान हों और बड़े घर में भी पैदा हुए हों, तो भी गंधहीन टेसू के फूल की तरह शोभा नहीं पाते। इसलिए चौ. मित्रसेन जी की सदैव कोशिश रही कि विद्या का प्रचार-प्रसार किया जाए। इसके लिए आपने हरसंभव प्रयास किए। आप की नजर में विद्या धन सब धनों से श्रेष्ठ है। इसलिए शिक्षा और विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए आपने दिन-रात एक कर दिए और अब भी कर रहे हैं। शिक्षा संस्थानों को उन्नत करना और उन्हें प्रोत्साहन देना आप के कर्म का हिस्सा है। आपने अपने पुरुषार्थ से जो अथाह दौलत कमाई, उसका काफी हिस्सा उत्तर एवं दक्षिण भारत और हरियाणा के पिछड़े क्षेत्रों के जरूरतमंद लोगों के कल्याण कार्यों पर न्योछावर कर दिया। आपके आर्थिक सहयोग से अनेकानेक संस्थाएं फलीभूत हो रही हैं। आप शिक्षण संस्थाओं की मदद दिल खोलकर करते हैं। आप नाम कमाने के लिए किसी की मदद नहीं करते। आप अपना दायित्व समझ कर और आत्म सन्तोष के लिए यह सब करते हैं। आपने कभी पसंद नहीं किया कि किसी शिक्षण संस्थान को दान या मदद के बाद आपके नाम का बखान किया जाए। आप निष्काम सेवक, सहयोगी और कर्ता हैं। आपने कभी प्रचार का लोभ नहीं किया, लेकिन समाज में स्वतः आपकी प्रसिद्धि, नाम और गुणगान होता है।

चाणक्य नीति की यह बात जैसे आपके जीवन में घुल-मिल गई है कि *'विद्या के समान नेत्र नहीं, सत्य के समान तप नहीं और त्याग के समान सुख नहीं।'* शिक्षा संस्थाओं के संदर्भ में आपके नेत्र, तप और सुख विद्या, शिक्षा और ज्ञान का प्रचार-प्रसार है। यह आपकी लगन ही है कि जहाँ कहीं भी कोई स्कूल, आर्य शिक्षण संस्था, डीएवी पब्लिक स्कूल अथवा डीएवी कालेज, गुरुकुल और कन्या गुरुकुल की स्थापना हुई और किसी ने आपको सूचित कर दिया, तो आप वहाँ पहुँचे और यथेष्ठ सहायता देकर आए। आर्य समाज की विभिन्न शैक्षणिक और वैदिक संस्थाओं को आप निरंतर आर्थिक सहायता देते आ रहे हैं –

1. गुरुकुल, झज्जर (हरियाणा)
2. गुरुकुल,सिंहपुरा-सुन्दरपुर (रोहतक)
3. गुरुकुल, लाढौत-बैयापुर (रोहतक)
4. गुरुकुल, सुन्दरपुर (रोहतक)
5. गुरुकुल, गौतमनगर (दिल्ली)
6. गुरुकुल, इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)
7. गुरुकुल, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
8. कन्या गुरुकुल, खानपुर (सोनीपत)
9. गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा)
10. कन्या गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा)
11. गुरुकुल कोसरंगी, जिला महासमुंद (छ.ग)
12. गुरुकुल कालवा, जिला जीन्द (हरियाणा)
13. गुरुकुल वेदव्यास, पानपोस(उड़ीसा)
14. परोपकारिणी सभा, अजमेर (राजस्थान)
15. सत्यार्थप्रकाश न्यास (उदयपुर)

16. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग (दिल्ली)
17. आर्य प्रतिनिधि सभा, जालन्धर (पंजाब)
18. हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द मठ (रोहतक)
19. आर्य समाज लाजपतराय चौक, नागोरी गेट (हिसार)
20. आर्यसमाज झज्जर रोड (रोहतक)
21. कन्या गुरुकुल, द्रोणस्थली, (देहरादून)
22. उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा (उड़ीसा)
23. आर्यसमाज (भुवनेश्वर व सम्बलपुर)
24 उपदेशक विद्यालय, रायगढ़ (छ.ग.)
25. स्वामी रामदेव जी योगी, पतंजलि योग पीठ, कनखल (हरिद्वार) ने ट्रस्ट बनाकर लगभग 100 एकड़ में भव्य योगाश्रम बनाया है, जिसमें आयुर्वेदिक फार्मेसी में जड़ी-बूटियों के उत्पादन से असाध्य रोगों का भी सफलता पूर्वक उपचार करते हैं। चौ. मित्रसेन जी तथा इनके सपुत्र, दोनों ही स्वामी जी के ट्रस्ट के संस्थापक सदस्य हैं। आपने आश्रम के लिए भूमि खरीदने और आश्रम निर्माण में विशेष आर्थिक सहयोग किया।
26. स्वामी अग्निवेश और स्वामी इन्द्रवेश द्वारा स्थापित आर्य युवक परिषद् तथा आर्य सभा और उनके प्रचार के लिए आप आर्थिक सहयोग देते रहे है। इसके अलावा आर्यसमाज की इकाइयों और शिक्षण संस्थानों को महत्त्वपूर्ण आर्थिक सहयोग देते आ रहे हैं।

सरस्वती और लक्ष्मी का समन्वय

जल और अग्नि का पारस्परिक विरोध है, परंतु जल से पूर्ण समुद्र में वड़वाग्नि रहती है। दोनों एकत्र रहते हुए भी एक-दूसरे के पूरक बने रहते हैं। इसी प्रकार लक्ष्मी और सरस्वती को परस्पर विरोधी माना जाता है, परंतु महापुरुषों के जीवन में दोनों समन्वय बनाकर चलती हैं। सरस्वती और लक्ष्मी का मणिकंचनमय संयोग चौ. मित्रसेन जी के जीवन में भी देखने को मिलता है। महापुरुषों के जीवन में सरस्वती और लक्ष्मी अपना-अपना योगदान देकर उनके जीवन को उदात्त बना देती हैं। चौ. मित्रसेन जी के संदर्भ में भी ऐसा ही है। उनके जीवन में लक्ष्मी और सरस्वती-दोनों ही अपना विरोध छोड़कर एक-दूसरे की सहायिकाएं बनकर उन्हें पूर्ण मानव के रूप में उपस्थित करती हैं। लक्ष्मी के सदुपयोग के विषय में महाकवि भारवी अपने **'किरातार्जुनीयम्'** महाकाव्य में लिखते हैं:

सा लक्ष्मीरूपकुरुते यया परेषाम्

अर्थात लक्ष्मी वही है जो दूसरों की भलाई में काम आए। यह गुण मित्रसेन जी के जीवन में अक्षरशः पाया जाता है।

'धर्माय यशसेऽर्थाय आत्मने स्वजनाय
पञ्चधा विभजन्वित्तमिहामुच।'

अर्थात सबसे प्रथम भाग धर्म के लिए है। मित्रसेन जी ने समाज और देश को जब-जब आर्थिक मदद की जरूरत हुई, तब-तब उदारतापूर्वक दान दिया है।

कारगिल युद्ध के समय मोर्चे पर जो भारतीय सैनिक वीरतापूर्वक लड़े और दुश्मनों

के छक्के छुड़ाते हुए जिन्होंने अपने प्राण देश पर न्योछावर कर दिए, उनमें हरियाणा के 250 रणबांकुरे शामिल थे। आपने इन शहीदों के परिवारों को एक-एक लाख रुपये की मदद दी। राष्ट्र की पुकार और प्रधानमन्त्री की अपील पर चौ. मित्रसेन जी ने बहुत बड़ी राशि रक्षा कोष में देकर अपने कर्तव्य का तो पालन किया, साथ ही धन का सदुपयोग भी किया। इससे पूर्व भारत-पाक युद्ध में आपने रक्षा कोष में इसी तरह महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया था। यही नहीं, राष्ट्र में प्राकृतिक आपदा, महामारी और अकाल के समय लोगों की आर्थिक सहायता करने में आप कभी पीछे नहीं रहे। जब महाराष्ट्र के लातूर में विनाशकारी भूकंप आया तब आपने तन, मन और धन से जुटकर उन लोगों को संभालने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। कच्छ और भुज (गुजरात) में इतना भयंकर विनाशकारी भूकंप आया था कि नगर के नगर धराशयी हो गए थे। तब आपने मानवता की रक्षा के लिए उदारतापूर्वक धन और अन्य सामग्री का दान किया। कच्छ और भुज में आपके सभी सुपुत्र आपके कंधे से कंधा मिलाकर दिन-रात राहत कार्यों में लगे रहे। वहाँ के भूकंप पीड़ितों के पुनर्वास के लिए आपने दो गाँवों को गोद लिया, जिनमें दिल खोलकर उदारतापूर्वक पैसा खर्च किया। गुजरात में सबसे पहला पुनर्वासित गाँव था- इन्द्रप्रस्थ। इसमें लगभग 800 परिवार आबाद किए गए। चौ. मित्रसेन जी का परिवार महीने में आज भी एक बार अवश्य वहाँ जाकर लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करता है। दलितों, पतितों, दीन-दुखियों के रक्षक मित्रसेन आर्य के पास यदि कोई निर्धन व्यक्ति आया तो आपने उसकी सहायता की। गरीबी के अभाव में शिक्षा से वंचित रहने के भय से यदि कोई गरीब छात्र आपके पास आया तो आपने उसे छात्रवृत्ति और दूसरी जरूरी सहायता देकर आगे पढ़ने के लिए आर्थिक चिन्ता से मुक्त कर दिया।

भुवनेश्वर के एक स्कूल में जब अध्यापकों का वेतन एक-दो वर्ष तक न दे पाने की नौबत आई, तब वहाँ के आर्य समाजियों ने आपके सम्मुख यह समस्या रखी। इस पर आपने उनको यह आश्वासन देकर निश्चिंत कर दिया कि तीन-चार अध्यापकों का वेतन मैं स्वयं दूंगा। इसके बाद आपने दो वर्ष तक अध्यापकों का वेतन दिया। इससे इस स्कूल को प्रगति करने का संबल मिला। आर्य समाज और उसकी शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुल आदि में यज्ञशालाओं के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने में आप कभी पीछे नहीं रहे।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में आर्य समाजी नेता राममेहर एडवोकेट ने विश्वविद्यालय परिसर में महर्षि दयानन्द की प्रतिमा और यज्ञशाला का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाई। इस पुनीत कार्य में चौ.मित्रसेन जी भी अपने साथी राममेहर सिंह के साथ खड़े रहे।

महर्षि की जयंती हो अथवा महर्षि निर्वाण-दिवस, जब भी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में यज्ञ, हवन का कार्यक्रम होता है, उस में चौ. मित्रसेन जी आर्थिक सहयोग देने में कभी

पीछे नहीं रहते। परोपकार कार्यों में चौ. मित्रसेन जी विशेष रुचि रखते हैं। समाज के जो साधु-संन्यासी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए, वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए, योगासन, प्राणायाम तथा प्राकृतिक चिकित्सा के महत्त्व को समझाने के लिए प्राकृतिक चिकित्सालय, योगाश्रम बनाते हैं, उनमें भी मित्रसेन जी का सहयोग पहुंचता है।

चौ. मित्रसेन जी परम दयालु, धर्मात्मा और सत्यपथ के राही हैं। उनका सुख औरों को सुखी देखने में है। चाणक्य नीति की यह उक्ति उन पर सटीक बैठती है, *'शांति के समान कोई तप नहीं है, सन्तोष से बढ़कर कोई भी सुख नहीं हैं, तृष्णा से बढ़कर कोई व्याधि नहीं है और दया के समान कोई धर्म नहीं है।'* चौ. मित्रसेन जी का तप, सन्तोष, धर्म सब समाज सेवा और सामाजिक सरोकार के इर्द-गिर्द घूमता है। आपने कभी यश कमाने के लिए दान, मदद या किसी प्रकार का सहयोग नहीं दिया। आप सब कार्य निष्काम भाव से मानव और समाज कल्याण के लिए करते हैं।

महान विज्ञानी एल्बर्ट आइंस्टाइन ने लिखा हैं, *'मैं तो हर रोज यह अनुभव करता हूं कि मेरे भीतरी और बाहरी जीवन के निर्माण में कितने अनगिनत व्यक्तियों के श्रम का हाथ रहा है और इस अनुभूति में उद्दीप्त मेरा अंत:करण कितना छटपटाता है कि मैं कम-से-कम इतना तो इस दुनिया को दे सकूं, जितना कि मैंने उससे अभी तक लिया है।'* श्रद्धेय मित्रसेन जी में भी समाज को ज्यादा से ज्यादा देने की अभूतपूर्व छटपटाहट है। इसी छटपटाहट का नतीजा है कि जहाँ कहीं से भी मदद की पुकार आती है वे वहाँ पहुँचे मिलते हैं।

वैदिक और लौकिक साहित्य के प्रति जागरूक

बड़े आदमी दो प्रकार के होते हैं-एक धन की दृष्टि से, दूसरे धर्म की दृष्टि से। जो धर्म और धन दोनों दृष्टियों से बड़े होते हैं, उनके बड़प्पन का कहना ही क्या? मित्रसेन जी भी दोनों दृष्टियों से संपन्न हैं। आपने महर्षि दयानन्द विरचित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन परम मित्र मानव निर्माण संस्थान के माध्यम से केवल इसलिए किया कि आगंतुक मित्रों, विद्वानों, उपदेशकों, विद्यार्थियों और ग्रामीण जनों तक इसके पहुंचने से वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार होगा और लोग महर्षि दयानन्द के विचारों और आर्य समाज के सिद्धान्तों को जान सकेंगे। लोगों को यह ग्रन्थ भेंट स्वरूप दिया जाता है। राष्ट्रीय स्तर के वैदिक साहित्य के लेखकों, विद्वानों को भी आप समय-समय पर आर्थिक सहयोग प्रदान करते रहते हैं। गुरुकुल, आमसेना की मासिक पत्रिका 'कुलभूमि' का प्रकाशन तो आप वर्षों से करवा रहे हैं, जिसमें अनेक वैदिक विद्वानों के लेख, वैदिक और लौकिक साहित्य के प्रेरक प्रसंग होते हैं।

आप परम मित्र मानव निर्माण संस्थान की ओर से नए संवत्सर पर भव्य रंगीन कैलेंडर छपवाते हैं, इसमें भारतीय नववर्ष, तिथियों

और तीज-त्योहारों की महत्त्वपूर्ण जानकारी होती है। इसके पीछे आपका मकसद यह भी है कि लोग अपनी परम्परा से परिचित रहें। महर्षि दयानन्द की जयंती पर आप लोगों में उनका भव्य चित्र भी वितरित करते हैं।

स्वामी दयानंद द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा के आप वरिष्ठ उप-प्रधान हैं और पिछले कई वर्षों से सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य को आधे मूल्य पर लोगों तक पहुंचाने के लिए प्रतिवर्ष एक लाख रुपये दान देते हैं। आप पूज्य पिता चौ. शीशराम जी स्मृति ग्रंथमाला के अन्तर्गत भी कई महत्त्वपूर्ण विषयों की पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं और यह सिलसिला जारी है। गुरुकुल, आमसेना में आपने उड़िया और हिन्दी भाषा में अनेक पुस्तकें प्रकाशित करवाकर साहित्य के प्रति जागरुकता का परिचय दिया है। आपके आर्थिक और वैचारिक सहयोग से अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनमें से कुछ पुस्तकों/ग्रन्थों की सूची निम्नलिखित हैं :-

1. सत्यार्थप्रकाश एवं संस्कार विधि (उड़िया)
2. खिलते फूल
3. छात्र जीवन, योग और स्वास्थ्य
4. योगासन
5. गीत कुंज
6. फिटकरी-तुलसी
7. त्रिफला भाग 1-2
8. शान्ति का मार्ग ईश्वरभक्ति
9. वैदिक लोरियां
10. दैनिक उपासना
11. ईश्वर कहाँ है ?
12. आर्यपर्व पद्धति
13. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (उड़िया)
14. प्यारा ऋषि
15. वृद्धावस्था में स्वस्थ सुखी कैसे रहें ?
16. सच्चा सुखी कौन ?
17. सरल चिकित्सा पद्धति (उड़िया)
18. वैदिक गल्पमाला (उड़िया)
19. उनकी राह पर (स्वामी समर्पणानंद के भजन, गीत व कविता संग्रह)
20. निष्काम कर्मयोगी : पं. लखपतराय
21. दादा बस्तीराम सर्वस्व
22. प्रभाकर चतुर्वेद शतकम्
23. सामवेद भाष्यम् (स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती)
24. प्रेमी भजन मंजूषा (कवि : पं. शोभाराम प्रेमी)
25. स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद : एक तुलनात्मक अध्ययन (डॉ. भवानीलाल भारतीय)
26. सत्यार्थ प्रकाश (हिन्दी)

खंड – 2

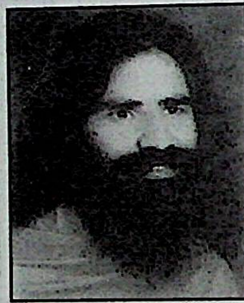
- आशीर्वाद
- संस्मरण
- शुभकामनाएं
- काव्यकुंज



आशीर्वाद

1. सद्गुणों की खान : चौधरी मित्रसेन

योगगुरु स्वामी रामदेव जी विश्व में आरोग्य व योग-प्राणायाम की संस्कृति के पर्याय बन गये हैं। प्राण को अस्तित्व का आधार मान कर आप द्वारा सिखाएं जा रहे योग-प्रायाणाम को अपनाकर विश्व के करोड़ों लोग शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक और आर्थिक लाभ प्राप्त कर चुके हैं। चौ. मित्रसेन आपके स्नेहाशीर्वाद के विशेष पात्र रहे हैं।



चौधरी मित्रसेन आर्य एक ऐसा उन्नत एवं व्यापक व्यक्तित्व है जो आज के समाज में अपने आप में एक आदर्श है। हरियाणा के हिसार जिला के गाँव खांडा-खेड़ी में जन्मे इस अदम्य साहसी, स्वाभिमानी, ऊर्जावान्, विनम्र एवं विलक्षण व्यक्ति ने अपने कठिन तप, संघर्ष, आत्मविश्वास, दृढ़संकल्प से आज बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित किया है। सत्य, संयम, सदाचार, धर्म, संस्कृति एवं आदर्शों पर चलकर व्यक्ति जीवन में ब्रह्म एवं आन्तरिक विकास के शिखर पर कैसे आरूढ़ हो सकता है, इसके प्रत्यक्ष उदाहरण श्री मित्रसेन आर्य हैं।

भौतिक समृद्धि से इन्होंने आध्यात्मिक मूल्यों का संरक्षण किया। शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में आर्य जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पूरे परिवार में संतुलित सात्विक भोजन एवं उच्च विचार, निर्व्यसनी जीवन एवं वैदिक संस्कारों की उदात्त परम्परा देखकर प्राचीन भारतीय संस्कृति यहाँ मूर्तरूप में दृश्यमान होती है। सुयोग्य, विद्वान् एवं ऊर्जावान् पुत्रों में अगाध प्रेम एवं श्रद्धा, घर में विद्वानों का सम्मान, सद्कर्मों में दान, सत्य के प्रति दृढ़ता एवं बड़ों के प्रति विनम्रता आदि सद्गुणों से ओत-प्रोत इनका परिवार अपने आप में गृहस्थ आश्रम की गरिमा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। पुत्रों को सम्पत्ति एवं संस्कारों की एक साथ विरासत देने वाले चौ. मित्रसेन जी के सुयोग्य सुपुत्रों कैप्टन रुद्रसेन, श्री वीरसेन, श्री व्रतपाल, कैप्टन अभिमन्यु, मेजर सत्यपाल, प्रिय देवसुमन एवं सुपुत्रियों बहिन दयावती, बिमला एवं मधु के लिए ईश्वर से प्रार्थना है कि ये पिता की विरासत को इसी तरह संभालते हुए वैदिक संस्कारों की परम्परा को अक्षुण्ण रखें।

जीवन के 75 वर्ष पूर्ण करने पर आर्य जी के स्वस्थ एवं शतायु जीवन के लिए प्रभु के चरणों में प्रार्थना एवं इस अमृत महोत्सव को यादगार बनाने के लिए अतीत की स्मृतियों,

भविष्य के स्वर्णिम संकल्पों एवं वर्तमान के पुरुषार्थ को लिपिबद्ध करते हुए प्रकाशित होने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए भी मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

स्वामी रामदेव
संस्थापक अध्यक्ष, दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट)
व पतंजलि योग पीठ (ट्रस्ट), हरिद्वार
आजीवन कुलाधिपति, पतंजलि योगपीठ
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तरांचल)

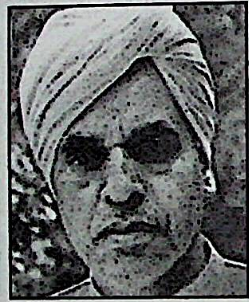


सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में भारत के राष्ट्रपतियों के चित्र।

2. आर्य रत्न श्री मित्रसेन का अभिनन्दन

श्री स्वामी सुमेधानंद जी सरस्वती अपने सुमधुर व्यवहार और लेखनी के बल पर समाज में जागृति लाने के लिए सतत् प्रयासरत हैं। आप विभिन्न भाषाओं के विद्वान हैं और दयानंद मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश) के संस्थापक हैं।

आर्यरत्न श्री मित्रसेन आर्य के अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित होने के सु-समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई। समाज में उत्तम कार्य करने वालों का मूल्यांकन होना ही चाहिए। जब उन्हें समाज सम्मानित करता है तो दूसरों को भी उत्तम कार्य करने की प्रेरणा मिलती रहती है।



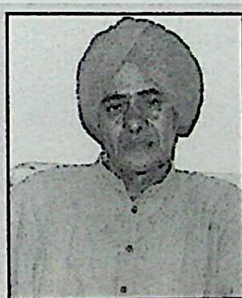
आर्यसमाज के यशस्वी भजनोपदेशक चौ. शीशराम आर्य के घर, माता जीवनी देवी जी की कोख से जन्मे श्री मित्रसेन आर्य को बचपन से ही वैदिक विचार और संस्कार प्राप्त हुए। 20 वर्ष की आयु में सन् 1950 में ही कारोबार से श्री मित्रसेन जी ऐसे जुड़े कि यश और वैभव के शिखर पर पहुंच गए। सन् 1950 में रोहतक में एक दुकान में लेथ मशीन पर कार्य प्रारम्भ किया और आज कई औद्योगिक इकाइयों के स्वामी हैं। मित्रसेन जी आर्य ऐसे अद्भुत दाता बने कि प्रभु ने उनकी झोली खाली ही नहीं होने दी। लोक कल्याण हेतु आर्य वीर, धर्मपत्नी एवं उनके पुत्र, सभी एकजुट होकर उन प्रतिष्ठानों की उन्नति में लगे हैं जो श्री आर्य ने स्थापित किए। प्रभु से प्रार्थना है कि आर्यरत्न श्री मित्रसेन जी आर्य को रोग और शोक से रहित उत्तम स्वास्थ्ययुक्त दीर्घ जीवन दे, जिससे आर्यों को उनका संरक्षण और सहयोग सतत् प्राप्त होता रहे।

स्वामी सुमेधानंद
दयानंद मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

"धर्म एक आदर्श जीवन शैली है, सुख से रहने की पावन पद्धति है, शांति प्राप्त करने का सुगम पथ है, अनुशासन में रहने की शिक्षा है एवं सर्वोपरि जनकल्याणकारी आचार संहिता है।"

3. वैदिक धर्म के लिए समर्पित चौ. मित्रसेन

श्री स्वामी इन्द्रवेश जी ने युवावस्था में ही समस्त भौतिक साधनों को त्याग कर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर वेद, उपनिषद्, व्याकरण व दर्शन आदि का गंभीर अध्ययन कर कई वर्ष तक गुरुकुल, झज्जर तथा आर्य सभा बनाकर महत्त्वपूर्ण कार्य किए थे। गौरक्षा सत्याग्रह और आपातकाल में जेल यात्रा की थी। पूर्व सांसद स्वामी जी की गिनती आर्य जगत के प्रमुख संन्यासियों में होती है।



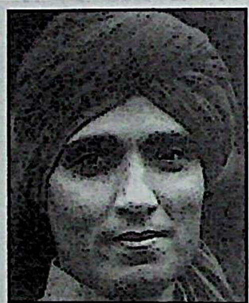
मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि चौ. मित्रसेन जी का आर्य जगत् की ओर से अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। चौ. मित्रसेन जी उन गिने-चुने अग्रणी व्यक्तियों में हैं, जिन पर आर्य समाज गर्व करता है। पिछले 35 वर्षों से चौ. मित्रसेन से निकट संपर्क रहा। श्रद्धा, निष्ठा, कर्मठता और वैदिक धर्म के लिए समर्पण – चौ. मित्रसेन की यह अपनी विशेषता है। भगवत् कृपा और अपने पुरुषार्थ के बल पर चौ. मित्रसेन जी उद्योग जगत में निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। आपकी श्रीमती, बहन परमेश्वरी देवी भी आपकी तरह परम श्रद्धामयी हैं। आपके सभी पुत्र और पुत्रियां पूर्णरूपेण आर्यत्व से युक्त हैं। मैंने अपने जीवन में ऐसा संस्कारशील परिवार दूसरा नहीं देखा। ऐसे आदर्श व्यक्तियों का आर्य जगत में सम्मान और अभिनन्दन गौरव की बात है। मैं आदरणीय मित्रसेन जी की दीर्घायु और हर प्रकार के मंगल की कामना करता हूं।

स्वामी इन्द्रवेश
दयानन्द मठ, रोहतक (हरियाणा)

"गुण न हो तो रूप व्यर्थ है, विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है,
उपयोग के बिना धन व्यर्थ है, साहस के बिना हथियार व्यर्थ है,
भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है, होश न हो तो जोश व्यर्थ है
और उपकार न करने वाले का तो जीवन ही व्यर्थ है।"

4. चौधरी मित्रसेन : एक आदर्श व्यक्तित्व

आर्य समाज के अग्रणी नेता स्वामी अग्निवेश जी बन्धुवा मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान का दायित्व संभाल रहे हैं। 'सर्वधर्म समभाव' के विचार का देश-विदेश में प्रचार-प्रसार करने के लिए आपको अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।



बात 1967 की है, जब मैं सेंट जेवियर्स कालेज कलकता में कॉमर्स एवं बिजनेस मैनेजमेंट के प्राध्यापक पद को छोड़कर गुरुकुल, झज्जर, हरियाणा में स्वामी इंद्रवेश जी (तब ब्र. इंद्रवेश मेधार्थी) से मिला और हम दोनों ने अपने अन्य जीवनदानी साथियों के साथ हरियाणा में कार्य शुरू किया तो जिन लोगों ने आगे बढ़कर हमारे इस निर्णय का स्वागत किया उनमें चौधरी मित्रसेन आर्य का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। चौधरी मित्रसेन जी का जन्म भले ही हिसार जिले के गाँव खांडा खेड़ी में हुआ था, किन्तु वे रोहतक में ऐसे रच-बस गए थे कि उन्हें आज तक लोग रोहतक का ही मूल निवासी मानते हैं। चौधरी साहब से जब हमारा संबंध निरंतर गहरा होने लगा, तब इनकी आर्थिक स्थिति मध्यम स्तर की थी। परिवार के विस्तार एवं जमीन जायदाद के विभाजन के कारण इन्हें रोहतक आकर स्वयं को व्यवसाय में लगाना पड़ा। परमात्मा की विशेष कृपा इनके ऊपर यही रही कि इन्हें संतान ऐसी होनहार मिली, जिस पर जितना गर्व किया जाए, उतना कम है। उनके सुपुत्र कैप्टन रूद्रसेन, वीरसेन और अभिमन्यु प्रायः हमारे झज्जर रोड स्थित आर्य सभा के मुख्य कार्यालय में खेलने आते थे। तभी से इनकी प्रतिभा से यह संकेत मिलते थे कि बड़े होकर ये बच्चे अपने पिता के कार्य को न केवल भली-भांति संभाल लेंगे बल्कि समाज में अपना नाम भी रोशन करेंगे।

आज हम कह सकते हैं कि 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' की कहावत चौधरी मित्रसेन की योग्य संतान पर पूरी तरह से चारितार्थ हो रही है। चौधरी साहब द्वारा बचपन से दिए गए संस्कार एंव परवरिश ही इस सफलता का आधार है। उनका व्यावसायिक वट वृक्ष धन्य है, ऋषि दयानंद के सिद्धांतों की चौ. मित्रसेन के जीवन पर अमिट छाप है। उनके अंदर दूर-दूर तक अहंकार देखने को नहीं मिलता। जिन लोगों

के साथ उनकी चालीस साल पहले से आत्मीयता थी या परिचय था, उनके साथ उन्होंने अपनी मित्रता उतनी ही प्रगाढ़ रखी। उनके मृदुभाषी एवं आत्मीयतापूर्ण व्यवहार ने उन्हें हजारों नए शुभचिंतक प्रदान किए है। वे बेहद सहृदय, शालीन, शांतचित्त एवं संवेदनशील व्यक्ति हैं। अपने इन्हीं गुणों के कारण अपने पूरे परिवार को जहां वे संयुक्त रख पाने में सक्षम सिद्ध हो रहे हैं, वहीं समाज में भी उन्हें निंरतर एक उदार समाज सेवी की प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है।

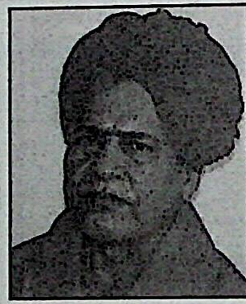
अपने पांच पुत्रों कैप्टन रूद्रसेन, वीरसेन, व्रतपाल, मेजर सत्यपाल एवं देव सुमन को पूरे व्यवसाय का कार्यभार सौंपकर तथा कैप्टन अभिमन्यु को राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उतार कर चौधरी साहब ने अपना व्यापक वर्चस्व कायम किया है। चौधरी मित्रसेन की इस यश कीर्ति के पीछे यदि किसी एक व्यक्तित्व को चिन्हित करना हो तो वे हैं – उनकी धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी। यद्यपि वे केवल साक्षर हैं, किन्तु उन्होंने संतान निर्माण में अपनी जो भूमिका निभाई, वह कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी क्या निभाएगा।

अतिथि सत्कार में इनका कोई सानी नहीं है। हमने चाहे आर्य सभा के माध्यम से राजनैतिक संघर्ष किए अथवा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से बेजुबान लोगों के लिए संघर्ष किया, आपका हमें तन-मन-धन से सदैव सहयोग मिला है। आज भी जब आर्य समाज के संगठन में जबरदस्त द्वंद्व चल रहा है, तब भी आप चट्टान की तरह हमारे साथ खड़े हैं। यह आपकी उदारता एवं महानता है। आर्य समाज की अनेक शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों व विभिन्न गतिविधियों के लिए लाखों रुपये दान देकर तथा अपने पारिवारिक ट्रस्ट "परममित्र मानव निर्माण संस्थान" के माध्यम से अनेक शिक्षण संस्थाओं एवं लोक कल्याणकारी कार्यों पर करोड़ों रुपये खर्च करके दान का जो कीर्तिमान आपने स्थापित किया है, वैसे उदाहरण बहुत कम देखने को मिलते हैं। गुरुकुल आमसेना के माध्यम से उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्रों में आप सेवा के विशेष प्रकल्प चला रहे हैं तथा स्वामी धर्मानंद जी महाराज के नेतृत्व में कई संस्थाओं का संचालन कर रहे हैं। गुजरात में आए भीषण भूकंप के बाद पूरी तरह से बर्बाद हुए एक गाँव के लगभग आठ सौ परिवारों को नए मकान एवं एक परिवार के लिए अपेक्षित सभी आवश्यक वस्तुएं मुहैया कराकर इंद्रप्रस्थ नगर नाम से नया गाँव बसाकर आपने अपना नाम इतिहास में अंकित करवा लिया है। मैं चौधरी साहब की शतायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना के साथ प्रभु से प्रार्थना हूं कि उनकी परोपकार की यह भावना इसी प्रकार बनी रहे।

स्वामी अग्निवेश
नई दिल्ली

5. सार्थक जीवन

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी पतञ्जलि योगधाम, ज्वालापुर के संचालक हैं। महर्षि पतञ्जलि योग विषय में डॉक्टरेट स्वामी दिव्यानंद जी योग साधना के प्रचारक, उच्चकोटि के साधक तथा गुरुकुल, झज्जर के प्रतिष्ठित स्नातकों में से एक हैं।



मानव जीवन को सफल, सार्थक और धन्य बनाने के लिए अनेक गुण भारतीय संस्कृति के आधारभूत महापुरुषों में परिलक्षित किए जाते हैं। जिन महापुरुषों में धरा धाम पर जीवन धारण करने वाले प्राणिमात्र के लिए समानता की दृष्टि होती है, जो देश-विदेश, प्रदेश या मंडल की लघु और तुच्छ भावना से उठकर उच्च स्तरीय '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' को निज उदारभाव की चादर से आदरपूर्वक आच्छादित कर देते हैं, ऐसे उदारमना, धर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ और समाजसेवी महानुभावों का वन्दन, अभिनन्दन, स्वागत, सम्मान आभार-प्रदर्शन एवं कृतज्ञता ज्ञापन जिस राष्ट्र और समाज में किया जाता है, वहाँ जनसामान्य प्रोत्साहन प्राप्त कर पुण्य सलिल-सरिता में स्नान के समान शान्ति अनुभव करता है, साथ ही यह अभिनन्दन कर्तव्यहीन, स्वार्थी, अधर्मी, पक्षपाती लोगों को '**महाजनो येन गतः सः पन्था**' लोकोक्ति के अनुसार प्रभूत उत्कृष्ट मार्ग का अनुगामी बनाता है।

इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ में आर्य विचार भी स्तुत्य हैं। इस अवसर पर मैं भी आर्य मित्रसेन जी के उदात्त गुणों को स्मरण करता हुआ उनकी दीर्घायु की मंगल कामना करता हूं।

स्वामी दिव्यानंद सरस्वती
अध्यक्ष,पतञ्जलि योगधाम
हरिद्वार (उत्तरांचल) एवं
फरीदाबाद (हरियाणा)

''परिवर्तन संसार का नियम है, जिसको तुम मृत्यु समझते हो, यहीं तो जीवन है। एक मिनट में तुम करोड़ों के स्वामी होते हो, दूसरे ही क्षण दरिद्र बन जाते हो।
तेरा-मेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया मन से मिटा दो,
फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।''

6. सौम्यता की मूर्ति चौ. मित्रसेन

स्वामी देवव्रत सरस्वती तपस्वी, विद्वान् और कर्मठ संन्यासी हैं। आप धनुर्विद्या के विशेषज्ञ तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संचालक हैं। आप धनुर्विद्या में पीएच. डी. करने वाले विशिष्ट विद्वानों में से एक हैं।



महापुरुषों का जीवन विलक्षण होता है। वे लक्ष्मी को अधिक महत्त्व न देकर लक्ष्मीपति को अपना आराध्य बनाते हैं। लक्ष्मी को दौलत भी कहते हैं। जब वह आती है तो एक लात व्यक्ति की छाती पर मारती है, जिसके कारण उसकी गर्दन अकड़ जाती है और वह चाहता है कि लोग सदैव उसे पुष्पमालाओं से लाद दें और सभा-सम्मेलनों में उनकी विरुदावलियां गाएं। कहा भी है-

जिसके पास धन है, उसे ही लोग ऊंचे खानदान वाला मानते हैं। वही पंडित,विद्वान्,उत्तमवेत्ता और दर्शनीय माना जाता है। वस्तुतः धन के ऊपर सभी गुण आश्रित हैं।

परंतु कुछ अपवाद भी होते हैं। चौ. मित्रसेन उन्हीं महापुरुषों में से एक हैं, जिन्होंने पुरुषार्थ से लक्ष्मी की आराधना कर उसकी कृपा प्राप्त की है, लेकिन वे लक्ष्मी के स्वामी विष्णु को नहीं भूले और न ही दौलत की लात खाकर उनकी गर्दन अकड़ी। जनहित एवं आध्यात्मिकता उनके जीवन के अंग हैं। आर्य समाज के संस्कार इन्हें विरासत में मिले हैं। अनेक गुरुकुल, विद्यालय तथा सेवा प्रकल्पों के माध्यम से आज इनकी यश कीर्ति दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। हर रचनात्मक कार्य को इनका आशीर्वाद मिलता ही है। आपके जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि जलसों-जुलूसों में जाकर भी आप दिखावे से दूर रहते हैं। सम्भवतः रहीम का यह दोहा आपके हृदय में समा गया है -

देने वाला और है, देता है दिन रैन।
लोग मुझे दानी कहें, ता विध नीचे नैन॥

प्रायः होता है कि प्रभुताई पाकर व्यक्ति धर्म, कर्म और ईश्वर को भुला देता है और विलासिता में डूब जाता है, परन्तु चौ. मित्रसेन का जीवन इन से दूर है। यह कृपा सदैव बनी रहे, ऐसी परमपिता से प्रार्थना है। सार्वदेशिक आर्यवीर दल की ओर से मैं उनके शतायु एवं पूर्ण स्वस्थ रहने की कामना करता हूं।

स्वामी देवव्रत सरस्वती
अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य वीर दल
दिल्ली

7. आदर्श व्यक्तित्व - चौधरी मित्रसेन जी

श्री स्वामी संकल्पानंद सरस्वती महाराष्ट्र प्रांत में वैदिक धर्म के दीवाने प्रचारक संन्यासी हैं। आपने अर्जित सम्पत्ति से वैदिक सिद्धान्तों के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किए हैं। आप अनेक भाषाओं के विद्वान थे और अनेक वर्षों तक अमेरिका में रहकर आपने आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार किया।

वैदिक पथ के स्वनामधन्य पथिक श्रीमान मित्रसेन आर्य का हृदय से अभिनन्दन करते हुए हर आर्य का सिर ऊंचा हो उठता है। लक्ष्मी और सरस्वती- दोनों देवियों का सुमधुर संगम देखकर सभी आर्य फूले नहीं समाते। आर्य तथा वैदिक परंपरा की विरासत जिन्हें प्राप्त है और जो उसे अपने जीवन का अभिन्न अंग मानकर जीवनयापन कर रहे हैं, ऐसे श्रेष्ठ, उच्च विवेकी, सत् चरित्र और दानवीर व्यक्तित्व का अभिनन्दन यथार्थ और वास्तविक है। उनका जीवन दर्शन प्रत्येक आर्य के लिए अनुसरणीय है।

एक बार आर्य समाज के मंच पर कुछ विद्वान् उपस्थित थे। इतने में एक धनी मानी, परन्तु त्यागी व्यक्ति आ पहुँचे। वे भी मंच पर विराजमान हुए। सभी उपस्थित श्रोतागण आश्चर्य चकित हुए। किसी के मुख से एकदम शब्द प्रस्फुटित हुए कि देखो! धनी-मानियों का सम्मान एवं सत्कार मंच पर हो रहा है। यह शब्द मंचासीन विद्वान ने सुने, उन्होंने तुरन्त उठकर कहा, आर्य समाजी तर्क तो जोरदार करते हैं। किन्तु मैं प्रस्तुत करना चाहता हूं कि दुनिया में अपनी जेब भरने वाले जगह-जगह मिलेंगे, किन्तु इन महानुभाव ने अपनी जेब रिक्त कर दानस्वरूप जो त्याग किया है, उन दैवी गुणों का यह सम्मान है। ऐसी दैवी गुण-सम्पदा के अधिकारी विरले ही होते हैं, उनमें से यह महान् आत्मा यहाँ विद्यमान है। इसीलिए यह पूज्यभाव जानिएगा। यही उदाहरण मैं श्री मित्रसेन जी आर्य के लिये उपयुक्त समझता हूं।

श्रीमान् मित्रसेन का कार्य दानवृत्ति के कारण अभिनन्दनीय है। वेद में मंत्रांश आया है कि **"दानं मित्रं मरिष्यतः।"**

हे मरणधर्मा मनुष्य! तेरा एक ही मित्र है जो दानधर्म है। आर्य समाज में ऐसे कितने सदस्य हैं जो नियमानुसार अपनी आय का शतांश देते हैं? शतांश से अधिक देने वाले ही वेदवाणी को जीवन में उतारते हैं, वे निश्चय ही देव हैं। यही देवजन यहाँ के बैंक बैलेन्स का ध्यान कम रखते हैं, परन्तु परलोक के बैंक का बैलेन्स बढ़ाते रहते हैं। वे धन्य हैं, ऐसा कौन नहीं कहेगा? ऐसे देवजन हैं - हमारे मित्रसेन जी!

गृहस्थ धर्म की सफलता किस बात से होती है, मनीषी विद्वज्जन बताते हैं कि गृहस्थ धर्म की सफलता सुसंस्कारित सन्तानों के निर्माण में है। चौधरी मित्रसेन जी ने अपना गृहस्थ धर्म सफल बनाया। समाज, देश तथा धर्म के लिए इन्होंने अपनी सन्तानों को समर्पित किया है। इस कार्य में इनकी धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी का शत-प्रतिशत सहयोग है। गृहस्थी चलाते हुए कोठियां तो बहुत धनी-मानी बनाते हैं, परन्तु घर कैसा हो? इसकी जानकारी अथर्ववेद 1/3/7 मंत्र में दी गयी है। आदर्श भवन वह है, जिसमें यज्ञ शाला, पाकशाला, स्त्री जाति के लिए स्वतंत्र कमरा, पुरुषों के लिए बैठक, अतिथि निवास आदि हो। चौधरी जी के घर में प्रतिदिन यज्ञ होता है, तभी तो सही मायने में आर्य पुरुष हैं।

चौधरी मित्रसेन तथा सौभाग्यवती परमेश्वरी देवी का दर्शन करने का सौभाग्य मुझे सांताक्रुज (मुंबई) आर्य समाज में स्वामी धर्मानन्द जी के सम्मान समारोह में प्राप्त हुआ।

उनके विचार भी सुने। उसी समारोह में स्वामी धर्मानंद जी को एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह की राशि प्रदान की गयी, समाज के पदाधिकारियों के आह्वान पर इससे भी ज्यादा राशि जमा हुई थी, तब दानदाता चौधरी जी ने भी आर्य समाज सांताक्रुज द्वारा संचालित "विद्वत् सेवा निधि योजना में एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह की राशि प्रदान कर समारोह में चार चांद लगा दिए थे।"

इन्होंने नौकरी से ऊपर उठकर स्वतंत्र रूप से अपना कारोबार प्रारंभ किया। आप निरंतर परिश्रम, सत्यता, विश्वस्तरीय उत्पादन, नम्रता, विनम्रता – इन गुणों से बहुत उच्चता प्राप्त कर सके। आपके सुयोग्य सुपुत्रों ने इस कार्य को बहुत ऊंचा उठाया है। नेक और पवित्र कमाई से समाज के विविध क्षेत्रों में इस परिवार ने हाथ बटाया है।

चौधरी मित्रसेन के सादगीपूर्ण और मिलनसार, व्यवहार से उनमें निरभिमानता का गुण ओत-प्रोत दिखाई पड़ता है। अहंकार शून्यता एक दैवी गुण सम्पदा है। उच्च पद और प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति को मद होना स्वाभाविक है, परन्तु इस परिवार में मद, प्रमाद और उन्माद नहीं, पर प्रसाद गुण है। व्यक्तित्व विकास के विविध पहलू हैं, उनमें से कुछ आवश्यक पहलू; जैसे मानसिक तनाव से मुक्त, सद्भावना से संलग्न आत्मा और मानव सेवा, ये इनमें कूट-कूटकर भरे हैं। उनका व्यक्तित्व एक आदर्श है, उन्हें हमारा शत-शत वंदन।

मैं परमपिता परमात्मा से उनकी दीर्घायु तथा आरोग्यता की प्रार्थना करता हूं।

स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती
आर्य समाज, सेक्टर-4
हिरणमगरी, उदयपुर (राजस्थान)

8. अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी

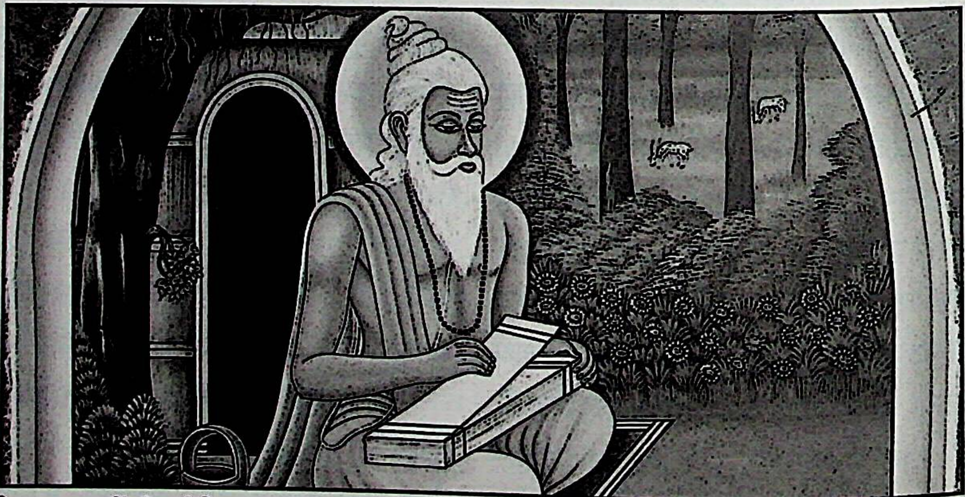
उच्चकोटि के महात्मा स्वामी विवेकानंद आर्यसमाज के प्रचारक व गुरुकुल शिक्षा पद्धति के समर्थक है।



यह जानकार अपार हर्ष हुआ कि आप कर्मयोगी चौ. मित्रसेन आर्य का अभिनन्दन कर रहे हैं। सत्पुरुषों का अभिनन्दन जगत कल्याण का उत्तम कार्य है। चौधरी साहब के अनुकरणीय जीवन एवं पुण्य कार्यों से अनेक आत्माओं को प्रेरणा प्राप्त होगी और वे भी तापत्रय से मुक्त होने के लिए पुण्य मार्ग के पथिक बनेगें।

चौधरी मित्रसेन आर्य के संकल्पित जीवन से ऋषियों का यह वाक्य चरितार्थ हुआ है कि 'संकल्पमयोऽयं पुरुषः' अर्थात मनुष्य जैसा संकल्प करता है वैसा ही बन जाता है। क्योंकि आत्मा की शक्तियां अद्‌भुत हैं। उन शक्तियों का सदुपयोग मानव को कितना उत्कर्ष प्रदान करता है, इसका निदर्शन आर्य जी के अतिरिक्त और कौन हो सकता है। परम पिता प्रभु से प्रार्थना है कि चौ. मित्रसेन आर्य 'जीवेमः शरदः शतम्' की भावना को चरितार्थ करें।

स्वामी विवेकानंद
गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल,
मेरठ (उत्तरप्रदेश)



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में महर्षि पतञ्जलि का चित्र।

9. मेरे पथ प्रदर्शक चौ. मित्रसेन

स्वामी प्रणवानंद ने गुरुकुल वेदविद्यालय, गौतम नगर का उद्धार किया तथा आर्ष गुरुकुलों की भी स्थापना की। आप वैदिक विद्वान हैं।



मुझे यह बात बहुत समय तक चिन्तित करती रही कि मैं कुबेर और कर्ण जैसे दानवीरों के समय उत्पन्न न हो सका और ऐसे दानियों के दर्शनों से वंचित रहा, परन्तु जब मैं श्री चौधरी मित्रसेन के सम्पर्क में आया तो उस अभाव की पूर्ति हो गई और भूतकालीन दानवीरों के युग में उत्पन्न न होने का दुःख जाता रहा।

चौधरी मित्रसेन सदा सुपात्र – कुपात्र का विचार करके दान देते हैं। कोई भी सत्यपात्र इनके द्वार से रिक्तहस्त नहीं जाता। इन्होंने अपने पवित्रदान से श्रीमद् दयानंद वेदार्ष महाविद्यालय न्यास से सम्बद्ध चारों संस्थाओं की भरपूर सहायता की है और कर भी रहे हैं। जैसे गुरुकुल गौतम नगर(दिल्ली), गुरुकुल यमुनातट, मंझावली (फरीदाबाद), आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौंधा (देहरादून), गुरुकुल, पाईकमाल (उड़ीसा) चौधरी जी के दान के कारण दिन दूनी – रात चौगुनी उन्नति करते जा रहे हैं।

चौ. मित्रसेन के बड़े सुपुत्र कैप्टन रुद्रसेन इन चारों गुरुकुलों की संचालक संस्था श्रीमद् दयानंद वेदार्ष महाविद्यालय न्यास के मंत्री हैं। इनकी चहुंमुखी प्रतिभा के कारण हमारी गम्भीर समस्याएं भी चुटकियों में सुलझ जाती हैं। चौ. मित्रसेन के पूज्य पिता चौ. शीशराम दृढ़ आर्य विचारों के सज्जन थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। तत्कालीन पंजाब प्रदेश में सर्वप्रथम कन्या पाठशाला का निर्माण करके शिक्षा जगत में क्रान्ति लाई थी, क्योंकि बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कन्याओं को पढाना वर्जित समझा जाता था, ऐसे समय में कन्या पाठशाला खोलना बहुत बड़े साहस का कार्य था। फलतः चौ. मित्रसेन जी वैदिक धर्म में दृढ़ आस्थावान होकर हरियाणा के अतिरिक्त उड़ीसा,छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में दर्जनों विद्यालय,अनाथालय,औषधालय तथा छात्रावासों का सफल संचालन कर रहे हैं। इनका स्वयं का जीवन अति पवित्र, सादा और निरभिमान है।

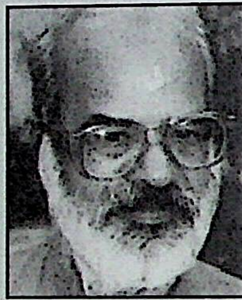
ऐसे सज्जन स्वस्थ रहते हुए शताधिक वर्षों तक हमें आशीर्वाद देकर हमारा मार्गदर्शन करते रहें। प्रभु से यही प्रार्थना है।

स्वामी प्रणवानंद, नई दिल्ली

10. चौधरी मित्रसेन - एक आदर्श व्यक्तित्व

उच्च कोटी के विद्वान व लेखक स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती दिल्ली में वैदिक विचारों के प्रचारक हैं। आप वेदभाष्यकार भी हैं।

चौधरी मित्रसेन जी दानवीर, अग्निहोत्री, अतिथि सेवक, मिलनसार, उदार, चिन्तक-विचारक, स्वाध्याय-शील और सर्वोपरि आदर्श गृहस्थ हैं।



आप दौलतमंद हैं, परन्तु निरभिमानी और अत्यन्त विनम्र हैं। सम्पत्ति पाकर मनुष्य अभिमानी बन जाता है। कहा भी गया है – **'सम्पत्ति पाय काहे मद नाही'** परंतु आप इसका अपवाद हैं।

आपने अनेक गुरुकुलों के संचालन का भार लिया है। विद्यादान देकर आपने आर्य जगत् के लिए कितने ही उपदेशक, प्रचारक, नैष्ठिक ब्रह्मचारी प्रदान किए हैं। प्रकाशन के क्षेत्र में आपने कितने ही दुर्लभ और नए उदीयमान लेखकों की रचनाओं को प्रकाशित करवाया है।

आप सच्चे गोभक्त हैं, एक अत्युत्तम गोशाला चला रहे हैं। कृषि क्षेत्र में नए-नए परीक्षण कराते रहते हैं। आपने अपने सभी पुत्र और पुत्रियों को वैदिक संस्कार दिए हैं। आपके सभी पुत्र उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। सभी आर्य समाज से जुड़े हुए हैं। वे सभी **'अनुव्रता पितुः पुत्रः'** अथर्ववेद की इस शिक्षा के अनुसार पिता का अनुवर्तन करते हुए अपने पिता के कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। पिता से उत्तम संस्कार पाने के कारण आज के इस दूषित माहौल में भी वे शराब, कबाब, बीड़ी-सिगरेट आदि दुर्व्यसनों से बचे हुए हैं।

श्री मित्रसेन जी कला प्रेमी हैं। आपने अपनी कोठी में भव्य यज्ञशाला का निर्माण कराया है। अन्दर और बाहर उसकी दीवारों पर चित्रकारी कराई है। सारी कोठी में भी ऋषि-मुनियों के चित्र बनवाए हैं। इस चित्रकारी से कोठी दर्शनीय बन गई है। चौधरी जी महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य भक्त और अनुयायी हैं। आप निरन्तर फलें-फूलें और ऋषि की वाटिका को सींचते रहे। आप अपने जीवन से दूसरों को प्रेरित करते हुए शतायु और सहस्रायु आमोद-प्रमोद से युक्त होकर ठाठ-बाट से जीये।

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
वेद मन्दिर, इब्राहिमपुर (दिल्ली)

11. श्री मित्रसेन : एक प्रेरक व्यक्तित्व

आचार्य बलदेव नैष्ठिक बाल ब्रह्मचारी व अग्रणी आर्य नेता हैं। आप वेद, उपनिषद्, दर्शन, व्याकरण और अन्य आर्ष ग्रन्थों के विद्वान हैं। सात्विक, धार्मिक व पवित्र आत्मा, आचार्य बलदेव अनेक वैदिक विद्वानों के निर्माता हैं तथा वैदिक विचारों के प्रचार व प्रसार में समर्पण एवं सक्रियता से लगे हुए हैं।



पुरुषार्थ भाग्य से अधिक बलवान होता है, क्योंकि पुरुषार्थ भाग्य को बदल देता है। श्री मित्रसेन आर्य ने स्वामी दयानन्दजी महाराज के इस अमूल्य वचन को केवल कथनी से ही नहीं, अपितु प्रत्यक्ष सिद्ध करके लोगों को सफल जीवन जीने की प्रेरणा दी। धार्मिकता, सरलता, संघर्ष शक्ति, स्पष्टवादिता, राष्ट्रभक्ति, विधर्मियों में भी वैदिक धर्म का प्रचार, शुद्धि आंदोलन आदि गुण आपको पैतृक रूप में प्राप्त हुए। आपके मन, बुद्धि व शरीर को निम्न वाक्य कुछ करने के लिए सदैव प्रेरित करते रहते थे-

खुदी को कर बुलन्द इतना
कि हर तदबीर से पहले,
खुदा बंदे से यह पूछे,
बता तेरी रज़ा क्या है
उठ बांध कमर क्यों डरता है?
फिर देख प्रभु क्या करता है?
जो मरने से न डरे, जी चाहे सो करे।
कैसे सुख-शांति मिले?
तदबीर नहीं करते कैसे
तकदीर बने।
सुनो भोले नर-नारी।

इन सभी गुणों के फलस्वरूप आप गोपाल से हरियाणा के सुप्रसिद्ध उद्योगपति बने। आपसे प्रेरणा लेकर अनेक व्यक्ति जीरो से हीरो रूप में परिवर्तित हुए। महात्माओं के प्रति आपमें विशेष भक्ति और श्रद्धा है। स्वामी ओमानन्द जी महाराज को सदैव देववत् सत्कृत करते रहे। उनके प्रत्येक वचन व आदेश का पूर्णतया पालन कर हिन्दी रक्षा, गोरक्षा आदि आंदोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। अन्तिम समय में भी स्वामी जी महाराज की अनुकरणीय सेवा की। इस समय आपका अधिकतर समय सामाजिक कार्यों में लग रहा है। एक ही धुन है कि आर्य समाज का प्रचार भारत में कैसे हो? स्वस्थ तथा आपके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

आचार्य बलदेव
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा,
रोहतक (हरियाणा)

12. राष्ट्र के प्रति समर्पित - चौ. मित्रसेन

श्री स्वामी व्रतानन्द जी वैदिक संस्कृति के अनन्य कर्मठ, त्यागी, श्रद्धालु, प्रसिद्ध चिकित्सक तथा उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। आप गुरुकुल आश्रम आमसेना के पहले सत्र के छात्र थे और आपने पाँच विषयों में एम.ए. तथा पीएच.डी भी की हैं।

सन् 1988 में फरवरी में आर्य समाज भुवनेश्वर में वेद भवन के शिलान्यास समारोह में मुझे व्यायाम प्रदर्शन हेतु बुलाया गया। मैं चार ब्रह्मचारियों के साथ वहाँ पहुँचा। स्वामी सत्यप्रकाश एवं आर्य पुरुष श्री मित्रसेन आर्य भी उपस्थित थे। इन्होंने मेरे प्रदर्शन को देखा और बहुत प्रभावित हुए। जब से पिताश्री का दर्शन हुआ, पिता-पुत्र का स्नेह गहरा होता गया। मैं जब भी रोहतक पहुँचा, मुझे अपार स्नेह और प्यार मिला। जीवन में सात्विकता बढ़ी, गुरुकुल के प्रति अपनापन बढ़ा और राष्ट्र के प्रति सेवा की भावना मिली। पूज्य पिता जी जीवन के जो अनुभव मुझे सुनाते, वैसा बड़े-बड़े विद्वान्, सन्त और साधु नहीं बताते। कभी वेदों के गूढ़ रहस्यों को बताते तो कभी वीर गाथा सुनाते। मैं सोचता ही रह जाता। कितना स्वाध्याय एवं मनन विचार है, इनके अन्दर जो प्रकाश में स्वयं आ जाता है। धन और विद्या एक साथ नहीं रहते, इस बात को इन्होंने झूठा साबित कर दिखाया।



इतना सब होने पर भी इनके अन्दर मैंने कभी भी घमंड और अभिमान नहीं देखा। सादा जीवन और उच्च विचार इनकी दिनचर्या में झलकता है। इन्हीं के आशीर्वाद से आज उड़ीसा में गुरुकुल आमसेना, गुरुकुल कुन्दली, कन्या गुरुकुल, आमसेना, परमेश्वरी देवी कन्या गुरुकुल, सूनाबेढा, शान्ति आश्रम, लोहरदगा अनेक संस्थाएं सुचारु रूप से चल रही हैं। आर्य जगत में आपका विशेष स्थान है।

आज ऐसे महामनस्वी, आर्यश्रेष्ठी का अभिनन्दन किया जा रहा है, यह जानकर मेरा हृदय गद्गद हो रहा है। मैं उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान होने के नाते तथा उड़ीसा बीड़ी-मजदूर श्रमिक संगठन श्रम मंत्रालय, भुवनेश्वर का अध्यक्ष होने के नाते हार्दिक अभिनन्दन ज्ञापित करता हूं। आपको मेरा शत-शत अभिनन्दन।

स्वामी व्रतानन्द
प्रधान, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा,
उड़ीसा

13. बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

आचार्य शिवमुनि वानप्रस्थी ने सर्वस्व त्याग कर महाराष्ट्र में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया है। परममित्र न्यास की ओर से 'वैदिक धर्म सेवक' के रूप में सम्मानित आचार्य जी इस समय महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री एवं गुरुकुल, परली बैजनाथ के आचार्य हैं।

माननीय चौधरी मित्रसेन आज अपने जीवन में ऊंचे शिखर पर हैं। सरल, मृदुस्वभाव, मितभाषी तथा प्रसन्नवदन आर्य मित्रसेन देखने वालों पर तुरंत अपनी अमिट छाप डालते हैं। इन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऊंची उड़ान भरी है। इनका गृहस्थ जीवन आदर्श एवं सफल है। माता परमेश्वरी देवी जी का भी इस में पूर्ण सहयोग है।

इन्होंने अपनी कमाई का अधिकांश हिस्सा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में लगा दिया है। ये अपनी आय का शतांश से भी अधिक भाग धार्मिक कार्यों में दान देकर भगवतउऋण हो चुके हैं। हर पुण्यकार्य में मुक्त हस्त से दान देते ही रहते हैं। ये कई संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। गुरुकुल आमसेना के तो प्राण ही हैं। तन-मन-धन से ये उन्हीं में घुल मिल गए हैं। इनके परिवार पर सरस्वती, लक्ष्मी तथा दुर्गादेवी का गुण विद्यमान है। उद्योग-कारोबार के बारे में हम अनभिज्ञ हैं, किन्तु यह अवश्य समझते हैं कि ये उद्योग के क्षेत्र में भी ऊंचे शिखर पर हैं।

आप एक अत्यन्त श्रद्धालु, आर्य समाज पर निष्ठा रखने वाले एवं एक परम ऋषिभक्त हैं। प्रतिवर्ष आप अपने परम मित्र **मानव निर्माण संस्थान (रोहतक)** के द्वारा संन्यासी, वानप्रस्थी तथा गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों का यथोचित धनराशि देकर सत्कार करते हैं।

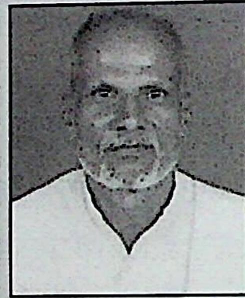
आपकी हर क्षेत्र में दिन दुगुनी-रात चौगुनी प्रगति होती रहे तथा आप और आपके परिवार के सभी सदस्यों को दीर्घायु तथा आरोग्य प्राप्त हो, यही परमात्मा से प्रार्थना है।

शिवमुनि
प्रधानाचार्य, स्वामी श्रद्धानंद
गुरुकुल परली, बैजनाथ (महाराष्ट्र)

''जो अन्त:करण में सुख का अनुभव करता है, जो कर्मठ है और अन्तकरण में ही रमण करता है तथा जिसका लक्ष्य अन्तर्मुखी होता है, वह सचमुच पूर्ण योगी है।''

14. सभी के मित्र - श्री मित्रसेन आर्य

डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ महाराष्ट्र के आर्य समाज की गतिविधियों के आधार हैं। परली बैजनाथ में आर्य गुरुकुल की स्थापना इनकी महान् उपलब्धि है।



संसार में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज एवं राष्ट्र के लिए जीते हैं। अपने व्यक्तिगत आदर्शों व कर्मशीलता से सामान्यजनों को प्रेरणा देकर उनको परोपकार के लिए प्रोत्साहित करना भी उन्हीं का धर्म होता है, ऐसे ही समाज हितैषी और निस्वार्थ दानियों की शृंखला को अलंकृत करने वाले श्री मित्रसेन आर्य अग्रणी रहे हैं। आपका समग्र जीवन महर्षि दयानंद प्रणीत वैदिक विचारों से ओत-प्रोत है। न जाने कितनी ही संस्थाओं के आप आश्रयदाता हैं।

ऐसे सेवाभावी, दानशील और वेदानुगामी श्री मित्रसेन जी आर्य का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन किया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में उनका अभिनन्दन ग्रन्थ भी छप रहा है, यह जानकार अत्यधिक प्रसन्नता हुई।

धार्मिक परिवार में उत्पन्न श्री मित्रसेन को बाल्यावस्था से ही सुसंस्कार मिलते रहे। माता-पिता धार्मिक एवं त्यागशील थे। ऐसे आदर्श माता-पिता ने मित्रसेन जैसी धार्मिक व परोपकार वृत्तिवाली सन्तान राष्ट्र को दी, जिससे सारा वंश गौरवान्वित हुआ। इनकी संतानें भी धार्मिकता से परिपूर्ण हैं। जहाँ पुण्यकर्म, अच्छी नियत, पवित्र अत:करण, उदारता सर्वहितकारी भावना, दया, प्रेम, क्षमाशीलता आदि भाव होते हैं, वहाँ परमात्मा का कृपाभाव सदा-सदा बना रहता है।

इनका गृहस्थाश्रम आदर्श रहा है, उसका एक कारण उनकी सहधर्मिणी श्रीमती परमेश्वरी देवी हैं। सदैव पतिदेव को धैर्य के साथ समर्थन देने वाली वन्दनीय माताजी में आदर्श गृहिणी के सभी गुण विद्यमान हैं। परमेश्वरी जैसी पत्नी मिल गई, यह उनके लिए गौरव का विषय है, क्योंकि इन्होंने गृहस्थ जीवन में नींव का काम किया है।

आदरणीय मित्रसेन जी के जीवन पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि वे विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। अल्प आयु में छोटा-सा कारोबार शुरू करना, उदयपुर में लगी नौकरी छोड़कर अपने प्रान्त हरियाणा में स्वतंत्र उद्योग प्रारंभ करना, साथ ही उड़ीसा, छत्तीसगढ़, बिहार आदि राज्यों में जाकर उद्योग-व्यवसायों को उद्घटित करना आदि कठिन कार्य उन्होंने कर दिखलाए। आपने हर कठिनाई को

सहजता से हल किया। इतना ही नहीं, इंजीनियरिंग वर्क्स, माइनिंग, ट्रांसपोर्ट, ठेकेदारी, थर्मल, कृषि आदि क्षेत्रों में आपने अपना कौशल दिखाया। ये सभी व्यवसाय आपकी विलक्षण बुद्धिमता व दूरदृष्टि का परिचय कराने वाले हैं। आप हर कार्य में सदा अग्रसर रहे, क्योंकि आत्मविश्वास, प्रखर निष्ठा, धीरवृत्ति, प्रयत्नशील स्वभाव आदि बातें आप में नित्य निवास करती हैं। सभी महान तत्व उन्हीं को प्राप्त होते हैं, जिनका ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास व समर्पण भाव हो। इस दृष्टि से मित्रसेन जी परमात्मा के प्रामाणिक भक्त बने हैं। राष्ट्र को संस्कार युक्त व होनहार सन्तान प्रदान करना, यह गृहस्थाश्रम का उद्देश्य होता है। आपने भी इसे बढ़िया ढंग से निभाया है।

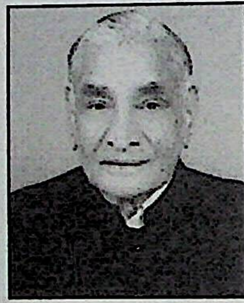
श्री मित्रसेन जी व्यक्तित्व विकास पर अधिक बल देते हैं। जब तक प्रत्येक व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, आत्मिक व बौद्धिक विकास नहीं होता व उसमें समाज और राष्ट्र के प्रति कृतज्ञ भाव उत्पन्न नहीं होता, तब तक आदर्श समाज स्थापित नहीं हो सकता। यह आपने भली-भांति समझ लिया था, इसी कारण आपने राष्ट्र के भावी कर्णधार विद्यार्थियों के निर्माण के लिए प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को बढ़ावा देने हेतु प्रयत्न किए। आपका दृढ़ विश्वास है कि इस शिक्षा प्रणाली द्वारा मानव का पूर्ण निर्माण होता है। आपने गुरुकुल आमसेना समेत अनेक गुरुकुलों, विद्यालयों व महाविद्यालयों, गौशालाओं, अनाथालयों, आर्य समाजों, धर्मशालाओं तथा छात्रावासों की स्थापना कर मानव निर्माण में बड़ा योगदान दिया है। शैक्षणिक कार्यों के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी आप आगे रहे। हिन्दी भाषा के प्रचार व प्रसार में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। हिन्दी आर्य सत्याग्रह में आपको जेल तक जाना पड़ा। अनेक नैसर्गिक आपदाओं भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल आदि में आप सभी के मित्र बने। निर्धन व अनाथों के लिए आप सदैव आश्रयस्थान बने रहे। ब्रह्मचारियों, अध्यापकों, विद्वानों तथा संन्यासियों को आर्थिक सहयोग देकर उन्हें अधिकाधिक प्रोत्साहित करने वाले उदारमना मित्रसेन जी विक्रमादित्य, भोजादि राजाओं के समान आश्रयदाता हैं। वैदिक साहित्य के प्रकाशन में भी श्री मित्रसेन जी ने अनूठा कार्य किया है। गुरुकुल, आमसेना का प्रकाशन विभाग आपके कारण ही प्रगति पथ पर अग्रसर है।

आज समस्त संसार भोग-विलासों में लिप्त है। परंतु श्री मित्रसेन जी जैसा सर्वहितकारी सत्पुरुष अहर्निश राष्ट्र कार्य में संलग्न हैं। शायद इसीलिए परमात्मा ने उन्हें दीर्घायु प्रदान की है। एक व्यक्ति इतना बड़ा काम कर सकता है, जो आज एक बड़ा समूह नहीं कर पाता। इसी कारण आपका इहलोक सफल है। परमात्मा आदरणीय मित्रसेन जी को सुस्वास्थ्य का वरदान देकर लंबी आयु प्रदान करे ताकि देश को नए पथ पर चलने के मार्ग खुला रहे।

डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ
महाराष्ट्र

15. पक्के आर्यसमाजी हैं मित्रसेन

चौ. सरुप सिंह हरियाणा विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष तथा प्रदेश सरकार में मंत्री रह चुके हैं। आप जन्म से आर्यसमाजी हैं। आप अत्यंत साफ छवि के स्वामी हैं और पाँच दशक से भी अधिक राजनीतिक जीवन में सिद्धांतों की राजनीति के लिए जाने जाते हैं।



प्रिय अनुज मित्रसेन जी के अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने की बात सुनी तो मन बड़ा प्रसन्न हुआ। श्री मित्रसेन ने अपना जीवन मानवता तथा परोपकार के लिए जिया है। गाँव खांडा खेड़ी से लेकर उड़ीसा आदि प्रांतों तक आपने धर्म, कर्म एवं रोजगार के जो कार्य किए हैं, उसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

मित्रसेन जी नियम के पक्के हैं। हमारे गाँव खांडा खेड़ी में आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। वार्षिक उत्सव के पूरे सम्मेलन की देखभाल स्वयं करते हैं। आप एक व्यक्ति न होकर संस्था का कार्य कर रहे हैं। शिक्षा के प्रति आपका योगदान उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त आपके सहयोग से अनेक शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं। अपने से बड़ों को इज्जत कैसे दी जाती है, यह तो मित्रसेन जी से ही सीखें।

मैं परम पिता परमात्मा से उनकी दीर्घायु एवं स्वास्थ्य की प्रार्थना करता हूं।

सरूप सिंह
पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा विधानसभा
हिसार (हरियाणा)

"दया की रूई, संतोष के धागे, संयम की गांठ और सत्य की लपेट से रस्सी बना ले। यह न तो टूट सकती है, न सड़ सकती है और न खो सकती है। जिसके गले में यह रस्सी है, वह सौभाग्यशाली है।"

16. महान पुरुषार्थी श्री मित्रसेन आर्य

आप वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार तथा सामाजिक कार्यों में विशेष भूमिका निभाते रहते हैं।

किसी महापुरुष ने जीवन को परिभाषित किया है– 'संघर्ष ही जीवन है। जो जितने बड़े संघर्ष में अडिग रहकर सफलता प्राप्त करता है, उसमें उतना ही बड़ा जीवन है अर्थात् वह उतना ही बड़ा पुरुषार्थी है।' श्री मित्रसेन जी के जीवन पर नजर डालते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी चहुंमुखी प्रगति का आधार पुरुषार्थ ही है।

वैदिक सुसंस्कारों से सुसंपन्न आर्य परिवार में जन्म लेने वाले मित्रसेन ने जहाँ अपने माता–पिता का नाम रोशन किया, वहीं अपनी संतानों को योग्य एवं शिक्षित बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आप संघर्षशील और प्रगतिशील उद्योगपति हैं। असफलताओं से कभी हार नहीं मानी तथा जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहे।आप कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता हैं। शिक्षा के क्षेत्र में आपने अनेक गुरुकुलों, स्कूलों और विद्यालयों के विकास में भरपूर योगदान किया है। आर्य समाज की विभिन्न संस्थाओं एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में आप सदैव तत्पर रहे हैं। साथ ही अकाल, बाढ़, भूकम्प आदि दैवीय विपदाओं के समय पीड़ितों और प्रभावितों का तन–मन–धन से सहयोग करना एक प्रशंसनीय व अनुकरणीय उदाहरण हैं। समस्त आर्य बंधुओं को आप जैसे समाज सेवी पर गर्व है। भारत सरकार ने आपको 'कृषि विशारद' की उपाधि से विभूषित किया है।

सादा जीवन और उच्च विचार की प्रतिमूर्ति श्री मित्रसेन अपने नाम के अनुरूप सबको मित्र की दृष्टि से देखने की भावना अपने हृदय में संजोए हुए हैं। ऐसे परम मित्र की दीर्घायु की कामना परम पिता परमात्मा से करता हूं।

वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य
सुजानगढ़ (राजस्थान)

"गुणों से बड़प्पन मिलता है, उच्चासन पर बैठने से नहीं।
भव्य भवन के कंगूरे पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं हो सकता।"

17. चलते- फिरते आर्य समाज - चौ. मित्रसेन

श्री महात्मा प्रेम प्रकाश पुरानी पीढी के वैदिक धर्म के प्रचारक हैं तथा ऋषि भक्ति इनकी नस - नस में भरी हुई है।



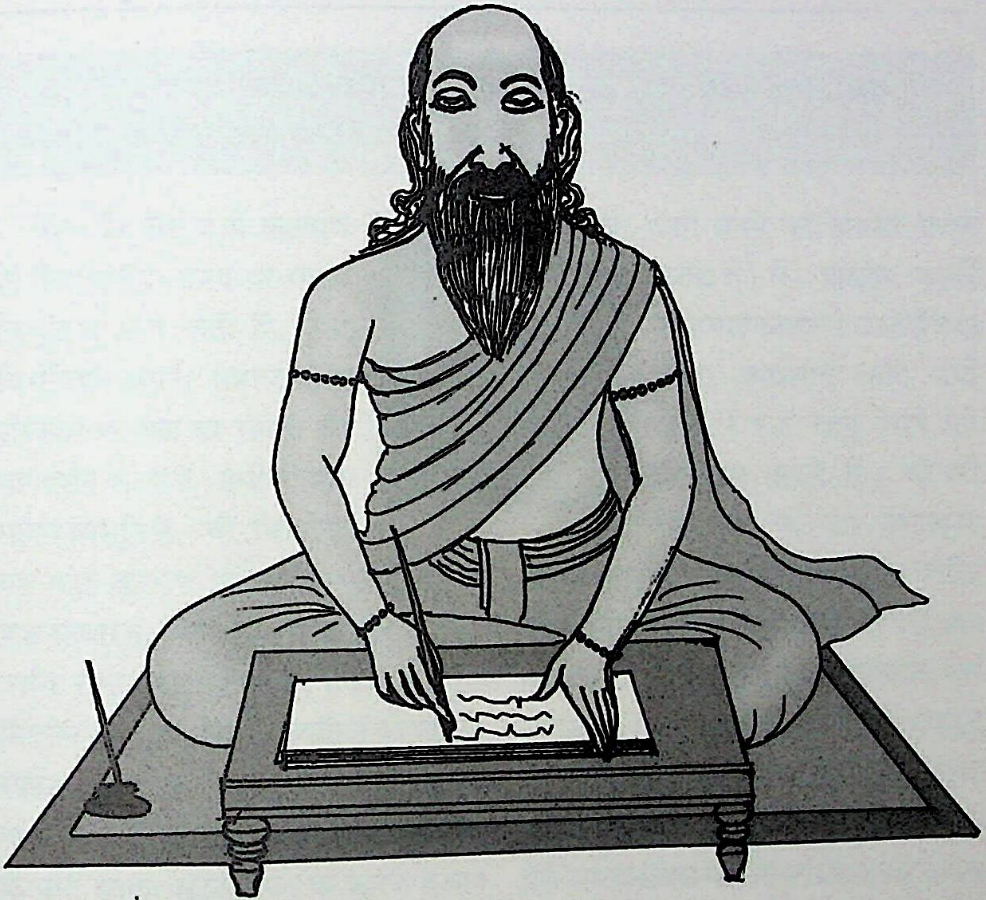
श्री मित्रसेन जी आर्य धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर व चलते-फिरते आर्य समाज हैं। आपके पिता जी की प्रेरणाओं और माता जी की धार्मिक मनोवृत्ति ने आपके जीवन को चार चांद लगाए हैं। आपका व्यक्तित्व ज्योति पुंज है,आप प्रेरणाओं के धनी हैं। आपकी कथनी और करनी की पवित्रता और एकता ने आपको महान बना दिया है।

विशाल व्यापार, उद्योग तथा अन्य कार्यों की व्यस्तता के बावजूद आप धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं को बहुत समय देते हैं और दान से भी संस्थाओं को सहयोग करते हैं। आपका हृदय पवित्र और समुद्र के समान विशाल है। विशेषकर आप गुरुकुल, आमसेना के पिता हैं।

किसी व्यक्ति की परीक्षा चार प्रकार से होती है, उसका पारिवारिक जीवन कैसा है? व्यापारिक जीवन कैसा है? धार्मिक जीवन कैसा है? और सामाजिक जीवन कैसा है? आप हर क्षेत्र में विजयी हैं। अत: आपने अपने नाम को सार्थक बनाने के लिये सबको मित्रता का संदेश दिया तथा सबके मित्र भी बन गए। आपको कोटि-कोटि बधाइयां। भगवान् आपको सुखी रखे और सफलताएं दे।

महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ
आर्य कुटिया, धूरी (पंजाब)

''धर्म मेरा है वही जो आदमी को,
आदमी के वास्ते जीना सिखा दें।
और पंडित, पादरी और मौलवी को,
एक घाट में अमृत पीना सिखा दें।''

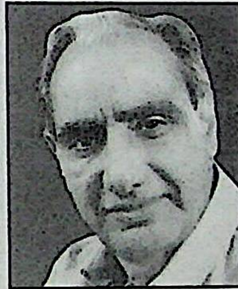


संस्मरण

1. कर्मशील चौधरी मित्रसेन

श्री विक्रम वर्मा राज्यसभा के सांसद तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री हैं। आप सिद्धांतों की राजनीति के लिए जाने जाते हैं।

देश और समाज में कल्याण के लिए समय-समय पर महान विभूतियां जन्म लेती हैं। ऐसी विभूतियां अपनी मेहनत तथा संस्कारों के बल पर समाज का मार्गदर्शन करती हैं। ऐसी ही एक महान विभूति हैं- चौ. मित्रसेन। यह कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि एक साधारण, परंतु संस्कारी परिवार में जन्मे व्यक्ति समाज का पुरोधा बन सकता है। चौ. मित्रसेन जी ने विपरीत परिस्थितियों का सामना साहस तथा ईश्वर में अगाध विश्वास से किया तथा बाधाओं को पार किया। यह सब काम के प्रति उनकी अटूट लगन के कारण हुआ। चौधरी मित्रसेन जी ने अति पिछड़े क्षेत्रों में जाकर लोगों की पीड़ा को समझा तथा उनके उत्थान के लिए शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। इनका उद्देश्य समाज के हर वर्ग को



आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करना है। ये भारतीय मूल्यों की हमेशा वकालत करते हैं तथा शिक्षा, व्यवसाय आदि सभी क्षेत्रों में इन्हें लागू करने की कोशिश करते हैं। चौधरी मित्रसेन जी का व्यवहार आत्मीयतापूर्ण है। इनसे मिलने वाला व्यक्ति सदैव इन्हें अपने समीप पाता है। निर्धनों तथा जरूरतमंदों की सहायता करना ये अपना धर्म समझते हैं। परोपकार के कार्यों के बावजूद ये कभी भी अपना प्रचार नहीं करते तथा हमेशा प्रशंसा से दूर रहने की चेष्टा करते हैं। ऐसे समाजसेवक का अभिनंदन करना समाज का सौभाग्य है। मैं इस अवसर पर ईश्वर से चौ. मित्रसेन की दीर्घायु की कामना करता हूं, ताकि समाज को इनका मार्गदर्शन निरंतर मिल सके।

विक्रम वर्मा
सांसद, राज्यसभा
नई दिल्ली

2. मित्रसेन जी पारस के समान हैं

श्री रंगनाथ मिश्र, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश हैं तथा अब राष्ट्रीय धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष का पदभार संभाले हुए हैं।



मित्रसेन जी उस पारस पत्थर के समान हैं जिसके स्पर्श मात्र से हर वस्तु सोना बन जाती है। कहने का अभिप्राय है कि श्री मित्रसेन जी जिस भी कार्य में हाथ डालते हैं, वह उनके पुरुषार्थ से सफलता के शिखर पर पहुँचने में देर नहीं लगाता।

आपने उड़ीसा व हरियाणा आदि प्रांतों में कारोबार करते हुए अनेक धर्मार्थ स्कूल, हस्पताल व गुरुकुलों की स्थापना की है। गुरुकुलों में छोटी आयु के बच्चों को प्रवेश दिया जाता है जहाँ उनकी शिक्षा-दीक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य की पूरी देखभाल की जाती है। इन जगहों पर भोजन आदि की व्यवस्था निःशुल्क रहती है। इन गुरुकुलों से बच्चे बड़े होकर विद्वान व विदुषी बनकर निकलते हैं। वास्तव में मित्रसेन जी सभी के लिए मित्र से भी बढ़कर हैं। आपके जीवन के अधिकतर पल सामाजिक संस्थाओं के निमित समर्पित होते हैं। गौ सेवा में आपकी विशेष रुचि है।

मैं कह सकता हूं कि परमात्मा ने मानव सेवा के लिए आपको धरती पर भेजा है।

जो भी व्यक्ति एक बार आपसे मिलता है वह वास्तविक जीवन आनंद से भर जाता है। मित्रसेन जी प्रत्येक चेहरे पर मुस्कराहट लाने में कामयाब हों, इसी आशा के साथ, मैं इनके दीर्घायु होने की कामना करता हूं

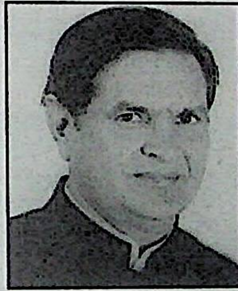
रंगनाथ मिश्र

कटक (उड़ीसा)

"सत्संग एक पारसमणि है जो लोहे जैसे कठोर एवं काले मन के व्यक्ति को भी चमकीला और गुणवान बना देती है।" - स्वामी दयानन्द

3. पुनः उत्थान के लिए संकल्पबद्ध

डा. योगानन्द शास्त्री दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण मंत्री हैं। गुरुकुल के स्नातक शास्त्री जी आर्य समाज के वरिष्ठ विद्वान भी हैं।



मुझे यह जानकर प्रति प्रसन्नता हुई है कि 'वैदिक पथ के पथिक श्री मित्रसेन आर्य अभिनन्दन समिति' मित्रसेन जी पर एक ग्रन्थ प्रकाशित कर रही है। आर्य जी पिछले पांच दशक से भी अधिक समय से वैदिक पथ पर चलते हुए समाज में व्याप्त विभिन्न सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जन मानस में चेतना जागृत कर समाज व देश के पुनः उत्थान के लिए संकल्पबद्ध हैं। यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। ऐसे समाज सेवी, बुद्धिजीवी श्री मित्रसेन आर्य का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का निर्णय प्रशंसनीय है।

अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

डा. योगानंद शास्त्री
स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण मंत्री,
दिल्ली सरकार

''ॐ है जीवन हमारा, ॐ प्राणाधार है।
ॐ है कर्ता विधाता, ॐ पालनहार है।
ॐ है दुःख का विनाशक, ॐ सर्वदानन्द है
ॐ है बल तेजधारी, ॐ करुणाकन्द है।''

५. लोकोपकार के आदर्श

डॉ. भवानीलाल 'भारतीय' महर्षि दयानंद के जीवन चरित्र, उनके साहित्य, आर्य समाज के इतिहास तथा वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। आप पंजाब विश्वविद्यालय की दयानंद वैदिक शोधपीठ के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष रहे हैं। आपकी लगभग 150 रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।



हरियाणा की पावन धरती ने एक से बढ़कर एक महापुरुषों को जन्म दिया है। धर्मप्रेम, देशभक्ति, लोकोपकार तथा दीनजनों की सेवा का आदर्श उपस्थित करने में इस महीयसी धरती की कोई उपमा नहीं है। एक ऐसे ही नर रत्न हैं – चौ. मित्रसेन। मेरा उनका परिचय और संबंध अधिक पुराना भी नहीं है। गत शती के आठवें दशक में मुझे राउरकेला वेद-व्यास जाने का अवसर मिला तो सोचा कि इस यात्रा का लाभ लेने के लिए पुरी, भुवनेश्वर तथा कोणार्क जैसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों की सैर क्यों न की जाए? एक सुयोग्य शिष्य ने भुवनेश्वर जाने और लौटने की व्यवस्था कर दी और मैं एक दिन प्रातःकाल प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा उड़ीसा में आर्य समाज की गतिविधियों के सूत्रधार श्री प्रियव्रतदास (भूतपूर्व मुख्य अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग) के निवास पर जा पहुँचा। मेरा वहाँ जाना सर्वथा अप्रत्याशित ही था। तथापि दासबाबू ने आत्मीयता से मेरा स्वागत किया और मेरे दौरे को सफल बनाने में चौधरी साहब से दूरभाष पर सम्पर्क किया। कुछ ही समय में दास दम्पति, चौधरी जी और मैं पुरी के लिए चल पड़े। मार्ग में कटक के ऐतिहासिक नगर में उड़िया के प्रसिद्ध पत्र 'समाज' के वयोवृद्ध सम्पादक श्री राधानाथ रथ से भेंट की। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जन्मगृह को देखा तथा पुरी पहुँचे। कोणार्क को देखना सचमुच विस्मयकारी तो था ही, उससे भारतीय वास्तुकला की महत्ता, उदात्तता तथा गौरव की एक झलक मिली।

भुवनेश्वर और पुरी के दर्शनीय स्थलों के दर्शन और भ्रमण से भी बड़ा लाभ मेरी दृष्टि में था – चौधरी मित्रसेन जी से भेंट तथा आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा को जानना तथा उनके साधुजनोचित चरित्र एवं व्यवहार से परिचित होना। उसके पश्चात् उनसे भेंट करने के अनेक अवसर आए। यों तो श्री आर्य जी परोपकार और संस्कृति रक्षण के सभी कार्यों में अपना आर्थिक सहयोग

देते रहते हैं, किन्तु आर्य साहित्य के प्रचार-प्रसार में इनकी अत्यधिक रुचि है। मेरे लेखन कार्य और ग्रन्थ प्रकाशन में इनकी सहायता सदा उपलब्ध होती रही है। एक बार तो उनका आग्रह था कि मैं स्वयं इनके रोहतक स्थित निवास, विशाल एवं भव्य सिन्धु भवन में आकर इनकी आर्योचित गृहस्थी तथा आदर्श दिनचर्या को प्रत्यक्ष देखूं। इस विचार को क्रियान्वित करने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई और मैं इंटरसिटी एक्सप्रेस (श्री गंगानगर-नई दिल्ली) में जब रोहतक पहुँचा तो हर्ष मिश्रित आश्चर्य हुआ कि स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ स्वयं आर्यजी स्टेशन पर मेरे स्वागत के लिए उपस्थित हैं। सिन्धु भवन की यह मेरी प्रथम यात्रा थी, किन्तु इस अल्प प्रवास ने यह स्पष्ट कर दिया कि लक्ष्मी और सरस्वती की संयुक्त उपासना करते हुए चौधरी जी ने धर्म और धन को एक साथ कैसे उपार्जित किया है।

सिन्धु भवन की मेरी दूसरी यात्रा तब हुई जब चौधरी जी की आज्ञापालन में मैं मई, 2002 में उस समय वहाँ उपस्थित हुआ, जब उनके अधिकांश परिजन, पुत्र-पुत्रियों का परिवार तथा अन्य परिजन ग्रीष्मावकाश में यहाँ आकर एक आदर्श परिवार की झांकी प्रस्तुत कर रहे थे। लगभग 4 दिन निरन्तर यज्ञशाला में यज्ञ, भजन एवं उपदेशों का कार्यक्रम चलता रहा। यज्ञ का पौरोहित्य करने के साथ-साथ मेरे तथा स्वामी इन्द्रवेश जी के उपदेशों का सिलसिला चला और श्री सहदेव बेधड़क के ओजस्वी भजनों ने श्रोताओं को आनन्दित किया। महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा ने जब से उन्हें इस सभा का सदस्य मनोनीत किया है, तब से अजमेर में इनसे भेंट करने का अवसर अनायास उपलब्ध हो जाता है। यदि सिन्धु भवन की यात्रा एक आदर्श आर्य परिवार को अन्तरंग दृष्टि से देखने का अवसर प्रदान करती है तो श्री मित्रसेन जी का वैदिक शिक्षा के उन्नयन में योगदान उस समय साकार हो जाता है, जब हम सुदूर उत्कल प्रान्त में आमसेना तथा अन्य गुरुकुलों को देखते हैं तथा विगत अनेक वर्षों में वहाँ विकसित नाना प्रवृत्तियों एवं गतिविधियों के प्रत्यक्ष द्रष्टा बनते हैं। यह अवसर मुझे सन् 2003 के फरवरी में तब मिला, जब मैं वैदिक गुरुकुल महाविद्यालय, आमसेना के वार्षिकोत्सव पर तीन दिन तक गुरुकुल में रहा। इस गुरुकुल की उन्नति और विकास में स्वामी धर्मानन्द जी जैसे त्यागी और तपस्वी का योगदान है।

वस्तुतः चौधरी साहब धन्य हैं, जिन्हें श्रीमती परमेश्वरी देवी के रूप में पतिपरायणा तथा निष्ठामयी सहधर्मिणी मिलीं। परमपिता श्री आर्य को दीर्घायु तथा उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करे ताकि वह देश, धर्म और समाज की सेवा में उत्तरोत्तर समर्पित होकर स्वजीवन को धन्य बनाए।

डॉ. भवानीलाल 'भारतीय'
जोधपुर (राजस्थान)

5. समाज की धरोहर : मित्रसेन जी

डॉ. राजेन्द्र सिंह वर्मा अमेरिका के ओहियो स्टेट के सिनसिनेटी की पर्यावरण सरंक्षण एजेंसी (ईपीए) में वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। आप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदूषण रहित 'हरित रसायन शास्त्र' के जनक माने जाते हैं। विदेश में शीर्ष स्थान पर आसीन रहकर आपका वैदिक जीवन शैली के प्रति समर्पण यथावत् हैं।



श्रेष्ठ पुरुष समाज व देश की धरोहर होते हैं। इसके उदाहरण पूरी दुनिया में देखे, सुने और पढ़े जा सकते हैं। यह श्रेष्ठता जन्म और फिर उसके एक अच्छे माहौल में बन कर उभरती है। देश में ऐसी विभूतियों को आगे लाकर समाज का मार्गदर्शन किया जा सकता है। न जाने ऐसी कितनी ही प्रतिभाएं हैं जो सामने नहीं आ पाने से समाज के लिए अनुकरणीय नहीं बन पाती। यदि रामानुजम जो एक महान गणितज्ञ थे, यदि कागज के टुकड़ों पर जटिल हल लिखने की उनकी असाधारण आदत पर कोई ध्यान नहीं देता तो आज वे श्रेष्ठ व्यक्तियों की श्रेणी में शामिल नहीं होते। चौ. मित्रसेन धन्य हैं जिन्होंने वैदिक मूल्यों से परिपूर्ण ऐसे परिवार में जन्म लिया जिन्होंने आजादी एवं उसके पश्चात संस्कारित मूल्यों की रक्षा करते हुए समाज का मार्गदर्शन किया। चौथे दशक के शुरू में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष और पारिवारिक परिस्थितियों ने उनको स्कूली शिक्षा प्राप्त करने से वंचित कर दिया। यद्यपि उन्होंने अपने पुरुषार्थ से अपनी मंजिल को साकार किया, जिसमें कठिन परिश्रम, दृढ़ता और विशेष तौर पर विपरीत परिस्थितियों में विश्वास न खोने का दृढ़निश्चय शामिल थे। लेथ मशीन पर कार्य करना उनके कैरियर का प्रारंभिक दौर था। अनुशासनात्मक कारीगरी एक चुनौती तो होती ही है, लेकिन कभी-कभी असाधारण अवसर भी प्रदान करती है जिसका लाभ केवल पुरुषार्थी ही उठा सकता है। निर्भयता और जोखिम उठाने का दृष्टिकोण उन्हें सुदूर अविकसित प्रदेशों उड़ीसा, बिहार और मध्यप्रदेश के वनवासी क्षेत्रों में ले गया।

इसमें उनके जीवन का संघर्ष व तप स्पष्ट दिखाई देता है। मैं उनके स्वस्थ व दीर्घायु जीवन की कामना करता हूँ ताकि वे भविष्य में भी मानवता की सेवा करते रहें।

डॉ. राजेन्द्र सिंह वर्मा
सिनसिनेटी (अमेरिका)

6. आस्तिकता, परिश्रम व मानवतावाद की त्रिवेणी

डॉ. कुलबीर छिक्कारा अनेक भाषाओं व साहित्यों के विद्वान हैं। एक दशक तक विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापन के बाद आप हरिभूमि समाचार पत्र के 'समूह संपादक' के पद पर आसीन हैं। चौ. साहब के जीवन दर्शन के विशेष रूप से प्रभावित आप उनके सामाजिक प्रकल्पों में सहयोग करते हैं।



आज ऐसे व्यक्तित्व विरले ही मिलेंगे जो जीवन के आधारभूत मूल्यों की महत्ता को आत्मसात कर उन्हें इतनी गहराई से अपने जीवन में उतारते हैं कि तमाम विषमताओं के बावजूद उनके प्रति अपने लगाव को कम नहीं होने देते। ऐसे ही सुदृढ़ व्यक्तित्व हैं चौ. मित्रसेन आर्य। अत्यधिक सरल, विनम्र व साधारण दिखने वाला उनका व्यक्तित्व अपने अंदर मानव सभ्यता द्वारा युगों से संचित मानवीय मूल्यों का अथाह सागर समाये हुए है, इसका आभास उनसे मिलते ही होने लगता है।

इन आधारभूत मानवीय मूल्यों में से जो मूल्य चौ. मित्रसेन आर्य के जीवन का केन्द्रबिन्दु बनकर अब तक उनको अनवरत रूप से ऊर्जा प्रदान कर रहा है, वह है उनका आस्तिक होना। निराकार ईश्वरीय शक्ति, जो हर अवस्था में न्यायकारी ही होगी, में दृढ़ व अडिग विश्वास के बल पर ही चौ. साहब उड़ीसा, बिहार, बंगाल से लेकर मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली व हरियाणा तक हर कठिनाई में बिना किसी निराशा, भय व शंका के अपना कर्म करते रहे। ईश्वर में अटूट विश्वास के कारण ही चौ. साहब ने हर कार्य पूर्ण परिश्रम से करने की आदत बनाई। परिश्रम को आप मनुष्य द्वारा किया गये 'तप' की संज्ञा देते हैं। आलस्य को आप इस लिये 'शत्रु' की संज्ञा देते हैं। चौ. साहब में आस्तिकता का प्रस्फुटन मनुष्यमात्र के कल्याण की भावना में परि–लक्षित होता है।

चौ. साहब का सानिध्य किन पुण्यों के बदले हमें मिल रहा है, मुझे नहीं पता। मैं ईश से अंत:करण की गहराइयों से प्रार्थना करता हूँ कि चौ. साहब को अपने श्रेष्ठतम प्रतिनिधि के रूप में हमारे मार्गदर्शन के लिए लम्बे समय तक विराजमान रखें ताकि आस्तिकता का भाव पूरी धरा पर आच्छादित हो जाये। चौ. साहब शतायु हों, मेरी यही प्रार्थना है।

डॉ. कुलबीर छिक्कारा
समूह संपादक, हरिभूमि
रोहतक (हरियाणा)

7. वैदिक पथ के अनुचर चौधरी मित्रसेन

श्री सुदर्शन देव आचार्य हरियाणा संस्कृत साहित्य अकादमी द्वारा 'महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार' से सम्मानित, आर्य जगत् के मनीषी तथा वैदिक साहित्य के विद्वान् हैं।

धन्य नर-नारी

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः
सत्यव्रता रहित मान मलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये
धन्या नराः विहित कर्म परोपकाराः॥
(महर्षि दयानन्द)



अर्थ- *जिन पुरुषों का मन विद्या-विलास में तत्पर रहता है, जो सुन्दर शील स्वभाव तथा शिक्षा से युक्त हैं, सत्य भाषण आदि नियमों के पालक हैं, अभिमान तथा अपवित्रता से रहित हैं, अन्यों की मलिनता के नाशक हैं, सत्योपदेश तथा विद्या दान से सब लोगों के दुःखों को दूर करने वाले हैं और वेदोक्त कर्मों के द्वारा परोपकार करने में लगे रहते हैं, वे नर-नारी धन्य हैं।*

मानव के माता-पिता और आचार्य - ये तीन उत्तम शिक्षक होते हैं, तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह संतान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता और पिता धार्मिक और विद्वान हों।

वैदिक पथिक चौधरी मित्रसेन आर्य को धार्मिक माता जीवनी देवी तथा धार्मिक विद्वान पिता चौधरी शीशराम आर्य खांडा खेड़ी (हिसार) प्राप्त हुए। आपके पूज्य पिता आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर के वैदिक धर्म के अवैतनिक प्रचारक थे। कुल की सम्पन्नता से धर्म प्रचार में वेतन की आवश्यकता नहीं थी। वे ग्राम तथा नगर-नगर में जाकर वैदिक धर्म का नाद बजाते थे। भगवान ने कंठ बहुत मधुर दिया था। आपको किसी विद्यालय में बैठकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर तो प्राप्त नहीं हुआ, किन्तु आपके बाल्यकाल में वैदिक धर्म एवं आर्य समाज का प्रचार पूरे जोरों पर समस्त भारत में चल रहा था। आपको भी उस वैदिक धर्म की वर्षा में स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

लघु उद्योग - जीविका प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम आपने झज्जर रोड, रोहतक में एक लघु उद्योग की स्थापना की, जिसमें ट्रकों के विशेष पुर्जे बनते थे। मिस्त्री धनसिंह (लुहार) सुनारियां (रोहतक) आपके इस व्यापार में सहयोगी रहे। कर्मशीलता से आप की बुद्धि में इतनी सूक्ष्मता आ गई थी कि किसी पुर्जे में तनिक भी फर्क होता तो आप बतला देते थे कि इसमें अभी इतना फर्क है। धीरे-धीरे यह उद्योग विकास को प्राप्त हुआ।

क्षेत्र में आपके उद्योग की ख्याति-सुगन्धि फैल गई।

आर्य समाज के सदस्य - रोहतक में रहते हुए आप सर्वप्रथम झज्जर रोड आर्य समाज के सदस्य बन गए। प्रति सप्ताह सपरिवार सत्संग में जाया करते। वार्षिक उत्सवों में भी सोल्लास भाग लेते। श्री महाशय भरत सिंह जी (कबूलपुर) तथा महाशय बनवारी लाल (डहरीपाना रोहतक) आदि महानुभाव आपके परम मित्र थे जो वैदिक धर्म के कट्टर अनुयायी थे।

आचार्य की प्राप्ति - उन दिनों आचार्य भगवान् देव गुरुकुल झज्जर (रोहतक) का नाम गगन में गूंज रहा था। वे आर्य समाज के दीवाने होकर ग्राम-ग्राम में वैदिक धर्म का नाद बजा रहे थे। यदा-कदा आर्य समाज झज्जर रोड में भी आते रहते थे। आपको ये महान् आचार्य भी प्राप्त हो गए। इन आचार्य प्रवर के सान्निध्य से सदाचार, स्वाध्याय, वेद-प्रचार, ईश्वर-भक्ति, देशभक्ति, गुरुकुल शिक्षा पद्धति आदि अनेक गुणों ने आपके हृदय मंदिर को अपना आश्रय बना लिया। उन दिनों आचार्य भगवान् देव जी ने गुरुकुल से **'सुधारक'** नामक पत्रिका प्रकाशित की, आप उसके आज तक ग्राहक हैं।

हिन्दी रक्षा आंदोलन - पंजाब के मुख्यमंत्री श्री प्रताप सिंह कैरों ने समस्त पंजाब में गुरुमुखी (पंजाबी) भाषा की शिक्षा अनिवार्य कर दी और हिन्दी भाषा को ऐच्छिक विषय रखा। अतः आचार्य भगवान् देव के नेतृत्व में आर्य नेताओं ने हिन्दी रक्षा आंदोलन का बिगुल बजा दिया। प्रो. शेर सिंह तथा पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती पूज्य आचार्य जी के दायें-बायें हाथ बनकर आंदोलन चलाते रहे। चौ. मित्रसेन जी भी इस युद्ध में कूद पड़े। उस समय आपकी आयु लगभग 27 वर्ष की थी। आर्य जगत् ने संयुक्त पंजाब के सब कारागार सत्याग्रहियों से भर दिए। जेलों ने एक गुरुकुल का रूप धारण कर लिया। सन्ध्या, यज्ञ, स्वाध्याय, वेदोपदेश चलता रहता था। आपको वहाँ पं. बुद्धदेव विद्यालंकार आदि वैदिक विद्वानों का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिससे आपका वैदिक पथ और प्रशस्त हो गया।

गोरक्षानंद अभिनन्दन - आप गुरुकुल आमसेना के वार्षिक महोत्सव पर प्रतिवर्ष आर्यजगत् के संन्यासी तथा भक्तजनों का भव्य अभिनन्दन करते रहते हैं। आपने 2002 ई. के उत्सव पर बाबा फूलू साध गोशाला, उचाना खुर्द (जींद)के संचालक तपोधन स्वामी गोरक्षानंद सरस्वती का भव्य अभिनन्दन कराया और उन्हें तथा उनके साथियों के लिए उड़ीसा के प्रमुख स्थलों के पर्यटन की सुखद वाहन से उत्तम व्यवस्था की। वह गौरवपूर्ण नागरिक अभिनन्दन सदा स्मरण रहेगा।

सुदर्शन देव आचार्य
अध्यक्ष, संस्कृत सेवा संस्थान,
रोहतक (हरियाणा)

8. वीरों का वंशज - चौ. मित्रसेन

मुसलिम साहित्य के मर्मज्ञ, उर्दू एवं अरबी भाषा के विद्वान व ओजस्वी वक्ता श्री राजेंद्र ने आर्यसमाज के इतिहास एवं महापुरुषों पर कई पुस्तकें लिखी हैं। आर्य साहित्य के सृजन और विश्लेषण में आप अग्रणी हस्ताक्षर के रूप में जाने जाते हैं।



बड़े हर्ष का विषय है कि आर्यों ने अपने एक अहंकार शून्य नेता को सम्मानित करने का विचार बनाया है। मैं जानता हूं कि अधिकांश आर्य लोग चौ. मित्रसेन जी की दानशीलता, गुरुकुल प्रेम और परोपकार के अन्य कार्यों में उनकी विशेष रुचि की ही चर्चा करेंगे। मुझे समझ नहीं आता कि मैं कहाँ से आरम्भ करूं? क्या-क्या लिखूं? क्या-क्या छोड़ूं?

यह सन् 1985 की बात है कि मुझे एक महत्त्वपूर्ण पुराना लेख मिला। मैं शोध कार्य में डूबा था। उस लेख में हिसार जिला के एक दृढ़ ऋषि-भक्त, देशभक्त आर्य जैलदार चौ. राजमल जी की विशेष चर्चा थी। गाँव का नाम अशुद्ध छपा था। मैं हिसार रहा हूं। बहुत घूमा हूं। मुझे पता था कि हिसार में 'खाना' नाम का कोई ग्राम नहीं है। मैं इस जैलदार और उसके ग्राम का ठीक-ठाक अता-पता लगाने के लिए कई स्थानों पर गया।

सब ओर से निराशा ही पल्ले पड़ती, फिर भी पं. लेखराम जी का नाम लेकर नए प्रयास आरम्भ कर देता। मेरे मित्र आचार्य सत्यप्रिय जी ने मुझे फोन पर एक ब्राह्मण कुलोत्पन्न पुराने आर्य समाजी से मिला दिया। मैंने उन्हें अपनी समस्या बताई तो वे चौ. राजमल जी का नाम सुनकर फड़क पड़े। मैं भी फोन पर बात करते-करते फड़क उठा।

सज्जनो! तब भी मैं चौ. मित्रसेन जी को जानता था, परन्तु तब मुझे यह पता नहीं था कि आप उसी दिलजले आर्य सेनानी राजमल के वंशज हैं। मुझे उस वृद्ध पुरुष ने बताया कि यह खांडा खेड़ी के थे। मेरे ग्रन्थ में प्रकाशक के प्रमाद से मेरे लिखने पर भी खांडा खेड़ी की बजाय तब 'खाना' नाम ही छप गया।

आज चौ. मित्रसेन जी का आर्य लोग गुणगान करते हैं। जिन पूर्वजों के वह वंशज हैं, उनकी वीरता, देश भक्ति और ऋषि-भक्ति का यथार्थ उल्लेख मैंने तो न किसी से सुना है और न ही पढ़ा है। क्या यह कोई साधारण-सी घटना है कि आर्य जाति का हृदय सम्राट् और राष्ट्र का बेजोड़ नर नाहर

स्वामी श्रद्धानन्द इस कुल की शूरता, देश-प्रेम और ऋषि-भक्ति से खिंचकर हरियाणा के ग्रामों की यात्रा पर निकल पड़ा। उसकी हुंकार और ललकार, तब लंदन के संसद भवन में भी सुनाई दे रही थी। चौ. मित्रसेन कहीं जाते हैं तो समाज-सेवियों को मिलने, उनका अभिनन्दन करने और उनसे देश-धर्म की चर्चा करने के लिए उत्सुक होते हैं।

स्वाध्याय और यज्ञ से आपको बहुत प्रेम है। बहुश्रुत तो हैं ही, स्मृति भी बहुत अच्छी है। आप उनसे किसी भी पुरानी घटना या किसी महापुरुष (जिनके संपर्क में आप रहे) की चर्चा छेड़ दो, आपकी स्मृतियों का अटूट स्रोत प्रस्फुटित हो जाता है। मैंने इस संबंध में उनकी एक विशेषता यह देखी है कि कई बार कई लोग नाम या प्रसिद्धि के लोभ में मेरे जैसे इतिहास लेखकों को भ्रामक या झूठी जानकारी दे देते हैं। चौधरी जी से जब कभी कुछ पूछा जाता है तो जिस बात का आपको ज्ञान नहीं होता, स्पष्ट कह देते हैं- इस विषय में मैं कुछ नहीं जानता।

इस प्रसंग में एक उदाहरण यहाँ देता हूं। देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी कभी एक मिशन पर लम्बे समय के लिए हरियाणा के नारनौंद कस्बे में रहे। मेरे लेखों और मेरे द्वारा लिखित भाई जी की जीवनी पढ़कर कुछ लोगों में नारनौंद में भाईजी का स्मारक बनाने का विचार आया। कुछ लोगों ने मुझे कहा, उस मकान या कमरे का कुछ अता-पता दें जहाँ भाईजी तब नारनौंद में रहे। मैंने चौ. मित्रसेन से सम्पर्क करके यही प्रश्न पूछा। मुझे पता था कि आपके पूर्वजों और आपके परिवार का भाईजी से निकट का संबंध था। आपके परिवार ने ही यह व्यवस्था की थी।

चौधरी जी ने अत्यन्त सरलता से कहा, मैंने अपने घर में बड़ों से ही यह सुना है कि भाईजी के नारनौंद प्रवास और मिशन को गुप्त रखा गया। इसका ज्ञान पंडित लखपतराय जी, जैलदार राजमल जी, लाला लाजपतराय या स्वामी श्रद्धानन्दजी आदि शीर्षस्थ नेताओं को ही था। नारनौंद में भी यह जानकारी देने वाला कोई वृद्ध अब नहीं रहा।

आपकी एक और विशेषता यह है कि बड़े-छोटे सब समाजसेवियों की बड़ी श्रद्धा और आदर से चर्चा किया करते हैं। चौ. मित्रसेन जी आज इतनी प्रतिष्ठा पाकर जब हिन्दी सत्याग्रह की चर्चा करते हैं तो अपने जत्थे के आर्यवीर मामचन्द (मठ के-हाली रहे) का नामोल्लेख बड़े प्रेम से करते हैं। मामचन्द जी का चित्र दिखाकर प्रसन्नता अनुभव करते हैं। जिस गौरव से आप महाराज स्वामी स्वतंत्रानंद जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी और महात्मा आनन्द स्वामी जी की चर्चा करते हैं, वैसा ही इस आदरणीय प्रो. उत्तमचन्द जी शरर और मामचन्द जी की सेवाओं का उल्लेख करते हैं। इस अहंकार शून्य व्यक्ति को शत-शत नमन।

राजेन्द्र जिज्ञासु
प्राध्यापक, वेद सदन,
अबोहर (पंजाब)

9. मित्रसेन बाबू के साथ कुछ क्षण

डॉ. प्रियव्रत दास वैदिक साहित्य के लेखक एवं वक्ता हैं। आपको आर्य समाज, सान्ताक्रूज मुम्बई से 'मेघनी भाई पुरस्कार', नासिक से 'राष्ट्रीय वेद-वेदांग पुरस्कार', उड़ीसा सरकार से 'सर्वश्रेष्ठ लेखक पुरस्कार' सहित कई पुरस्कार मिले हैं।

उड़ीसा और बंगाल राज्यों में गुरुजनों को 'बाबू' नाम से पुकारना प्राचीन परंपरा है। उड़ीसा के दिवंगत लोकप्रिय नेता पं. गोपबन्धु दास तथा वरिष्ठ मधुसूदन दास क्रमशः गोपबन्धु और मधुबाबू नाम से अब भी सुपरिचित हैं। इसी प्रकार बंगाल में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुभाषचन्द्र बोस यथाक्रम रवीन्द्रनाथ बाबू और सुभाष बाबू नाम से जाने जाते हैं। यही कारण है कि चौधरी मित्रसेन जी जिनका यौवन तथा प्रौढ़काल उड़ीसा की धरती में अतिवाहित हुआ, परिचित व्यक्ति उनको मित्रसेन बाबू कहते थे। एक मजेदार बात यह है कि यहाँ के साधारण लोग हिन्दी भाषी सभी लोगों को 'मारवाड़ी' कहते हैं, क्योंकि मारवाड़ के लोग यहाँ व्यवसाय में हर जगह मौजूद हैं। तीस साल पूर्व जब मैंने मित्रसेन जी का संधान किया, कुछ लोग उनको मित्रसेन मारवाड़ी नाम से पुकारते थे।



श्री मित्रसेन जी साधारण यांत्रिक मिस्त्री के रूप में उड़ीसा-बिहार के सीमावर्ती वनवासी क्षेत्र बड़बिल शहर में कार्यरत रहे, परन्तु जीवनभर अपनी साधुता, नम्रता, दानशीलता के कारण परोपकारी, दानवीर तथा समाजसेवा के लिए सुप्रसिद्ध हुए।

पैंतीस वर्ष पूर्व की घटना है। मैं एक सरकारी कार्यक्रम में दिल्ली गया था । उस अवसर पर समय निकाल कर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली कार्यालय के पुस्तक विक्रय केंद्र में पुस्तक खरीद रहा था। जब पुस्तकों का मूल्य देकर लौटा, तो पास खड़े हुए एक सज्जन ने कहा-साहब, आपका पुस्तकों का पैकेट छूट गया है। मैंने लज्जित होकर कहा, 'मीटिंग का समय हो गया है। जल्दबाजी में पुस्तक लेना भूल गया। आपका बहुत धन्यवाद। कृपया अपना परिचय बताइए।' पता चला कि हम दोनों का नाम प्रियव्रत है। वे थे हरियाणा के प्रसिद्ध ठेकेदार चौधरी प्रियव्रत और मैं उड़ीसा का प्रियव्रत दास। उन्होंने कहा-आप चौधरी मित्रसेन जी को जानते हैं। उड़ीसा का बड़बिल में उनका कारोबार है। मैंने मना कर दिया। सरकारी मीटिंग में चला गया, परन्तु मित्रसेन जी से

मिलने की आतुरता बनी रही। एक महीने के अंदर सरकारी कार्य से बड़बिल पहुँचा। उधर पता चला कि चौ. मित्रसेन बाबू बड़बिल, जोड़ा आदि खनिज क्षेत्र में कई लेथ मशीनों की वर्कशाप चला रहे हैं। बड़बिल सरकारी अतिथिशाला में रात्रि यापन करके अगले दिन प्रातः भ्रमण पर जाते समय मित्रसेन बाबू का संधान किया। जब उनके वर्कशाप पर पहुंचा तब पता चला कि वे अपने कैंप के लिए रवाना हो चुके थे। दिन भर सरकारी कार्य के बाद फिर उनके निवास पर गया। प्रातः दो घंटे उनके साथ बातचीत हुई। उनकी शिष्टवाणी तथा उदार विचारधारा से मुझे बड़ा अच्छा लगा कि मैं जीवन में एक सच्चे आर्य इंसान को देख रहा हूं। इससे पूर्व कई संतों, उपदेशकों का सत्संग मिला था, परन्तु संस्कृत-अंग्रेजी अनभिज्ञ अथवा एक जीवन्त प्रतिमा का दर्शन उस दिन पाया।

शास्त्रों में आर्य की शीलता और प्रवृत्ति जैसी बताई गई है, सारे लक्षण उनके व्यक्तित्व में देखे। वे कहने लगे- बड़बिल में एक आर्य समाज की स्थापना हेतु प्रयत्न किया, परन्तु सहयोगी मिले नहीं। राउरकेला के पास वेदव्यास गुरुकुल के प्रतिष्ठित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती को यथाशक्ति मासिक सहयोग भेजता हूं। व्यवसाय वृद्धि के साथ आजकल 'उड़ीसा माइनिंग कार्पोरेशन' में कुछ ठेका लिया है। इसी कारण राजधानी भुवनेश्वर जाना पड़ता है। अगली बार आपको अवश्य मिलूंगा।'' अपने वचन के अनुसार वे मेरे सरकारी आवास भवन में पहुँचे, तब से मित्रता बढ़ी। वे प्रायः हर महीने भुवनेश्वर आया करते थे। कटक-पुरी रोड़ स्थित पुष्पक होटल में ठहरते थे। उनके लिए एक निर्दिष्ट कमरा था। शायद करीब पच्चीस वर्ष तक उन्होंने उस कमरे को अपनाया। अपने साथ आए हुए ड्राइवर तथा अनुचरों को खिलाने के बाद स्वयं भोजन करते थे। उनका भोजन बड़ा सरल और सात्विक होता था। कम बोलते थे और जो बोलते थे साहस और सूक्ष्म बुद्धि के साथ। सुबह सरकारी दफ्तर चले जाते थे और शाम को लौटकर विश्राम लेते थे। कभी-कभी मेरे पास आ जाते थे। मैं भी कई बार होटल जाकर उनसे मिलता था। उस समय राजधानी भुवनेश्वर में आर्य समाज नहीं था। हमारा ही एकमात्र आर्य परिवार था, जब आर्य संत, उपदेशक या नेता भुवनेश्वर पधारते थे, तो संधान लेकर हमारे घर पर पहुँचते थे।

मैं उनके निमंत्रण पर कई बार रोहतक स्थित उनके पुराने मकान में ठहरा हूं। एक बार मेरी धर्मपत्नी शन्नोदेवी ने मित्रसेन जी से पूछा 'आप बड़बिल (उड़ीसा) में व्यावसायिक कार्य से रहते हैं। इतने विशाल परिवार की सारी व्यवस्था कैसे होती है।' उन्होंने कहा कि मैंने अपने बच्चों को कभी उपदेश नहीं दिया। मेरी जीवन-प्रणाली ही उनके लिए पर्याप्त हैं। बच्चों को कह रखा है कि कभी किसी का बुरा मत करो। परिश्रमी बनो। मुझे आर्य समाज से सदाचार की शिक्षा मिली। अपनी धर्मपत्नी को कह रखा है- 'कोई

उपदेशक घर पर पहुँचे तो उनका सत्कार करो और यथाशक्ति दान दो।' खनिज क्षेत्र में कई मजदूर संघ हुआ करते थे, परन्तु संघ के मुखिया मित्रसेन जी का सम्मान करते थे। वे मजदूर तथा उनके परिवार के परम हितैषी और पृष्ठपोषक रहे। ठेकेदारों में कई प्रतिस्पर्धी होते हैं, परन्तु मित्रसेन जी निर्विकार रहते थे। दूसरे ठेकेदारों के प्रति उनका लेशमात्र द्वेष नहीं था।

वर्ष 1976 में बड़े परिश्रम के बाद राजधानी भुवनेश्वर में विशाल भवन निर्माण और बहुमुखी कार्य के साथ आर्य समाज की स्थापना हुई। इसके तीन साल बाद मित्रसेन जी को प्रधान पद स्वीकार करने की प्रार्थना की। वे सन् 1983 से 1990 तक प्रधान रहे। उनके प्रयास से आर्य समाज परिसर में विशाल श्रद्धानंद भवन निर्मित हुआ। वे उत्सवों के भार संभालते थे। मुझे स्मरण है कि एक बार पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी की प्रवचन सभा में एक पौराणिक सेठ ने कुछ अनुचरों के साथ सभा स्थल पर आकर वितंड किया। उस समय मित्रसेन जी ने साहस के साथ परिस्थिति को संभाला। प्रवचन तथा भजन के समय पुरस्कार देना आज भी इनका सहज स्वभाव है। उनके व्यक्तित्व में आर्यत्व पूर्ण प्रतिफलित होता है।

साधुता इनके जीवन का भूषण है। कारोबार में प्रतिकूल परिस्थिति में भी इन्होंने किसी को रिश्वत नहीं दी। सौ बार कार्यालय जाते थे, परन्तु रिश्वत देकर कार्य-संपन्न करवाने की कभी नहीं सोची, कर्मचारियों के व्यवहार के कारण वे अस्वस्थ हुए। रक्तचाप बढ़ा, होटल में लेटे रहे, परन्तु नीरव रहते थे। कभी-कभी कहते थे- "मंत्री तो बुलाए, परन्तु पैसे के बारे में कुछ नहीं कहा। मैं समझता हूं कि मंत्री, अफसर पैसे लेकर फाइल पास करा देते हैं, परन्तु जब तक कोई नहीं मांगे, मैं कैसे दूंगा?"

आमसेना, गुरुकुल के संस्थापक श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने मित्रसेन बाबू से मिलाने के लिए एक बार मुझे कहा। प्रसंगवश दोनों भुवनेश्वर आर्य समाज उत्सव में उपस्थित हुए। तब से दोनों का संबंध बढ़ा। आजकल आमसेना, गुरुकुल और उसके आसपास इलाके में जो जागृति दिखाई देती है, उसके पीछे चौ. मित्रसेन जी का प्रच्छन्न सहयोग है। आर्य संस्थाओं में इनके दान का काफी प्रचार भी हुआ। मेरे जैसे साहित्यिक तथा भावुक व्यक्ति के लिए मित्रसेन बाबू का प्रारंभिक जीवन मुख्य रहा है। यह प्रसंग मेरे मानस पटल पर महाभारत के उस नेवला उपाख्यान प्रतिबिंबित होता है, जो सब पाठक सुन चुके होंगे, मनसा, वाचना तथा कर्मणा एकाकार मित्रसेनजी शतायु बनें। प्रभु से यही प्रार्थना है।

डॉ. प्रियव्रत दास
शहीदनगर, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

10. अद्वितीय व्यक्तित्व

श्री राममेहर रोहतक के प्रसिद्ध वकील तथा आर्यसमाज के प्रमुख नेता हैं। आप विभिन्न गुरुकुलों तथा आर्यसमाज के शीर्ष संगठनों से जुड़े हैं।



इस लेख का क्या शीर्षक दूँ? इस पर विचार करने पर कई शीर्षक मेरे सामने आए; जैसे अद्वितीय व्यक्तित्व, विलक्षण व्यक्तित्व, अजातशत्रु, वक्ता, व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी, परोपकार की प्रतिमा, अनाथों के नाथ, कर्मठता के धनी, कर्मयोद्धा तथा सर्वगुणसंपन्न आदि अनेक शीर्षक उनके लिए उचित लगे, किन्तु सारे तो लिखे नहीं जा सकते थे, अंत में मैने पहला ही चुना। आर्य जगत में मंच पर उनसे कम बोलने वाला कोई नहीं मिलेगा और कार्यक्षेत्र में उनसे ज्यादा काम करने वाला भी कोई नहीं मिलेगा। मुझे आर्यसमाज के इतिहास और सिद्धांतों की इतनी जानकारी नहीं, किन्तु मेरा सौभाग्य है कि आर्य समाज के उत्सवों में जब कहीं चौधरी साहब के साथ जाने का मौका मिलता है तो गाड़ी में जो वह बातें बताते है, उन्हीं को आगे-पीछे करके में बोल देता हूँ।

बात उन दिनों की है जब मैं गुरुकुल सिंहपुरा का प्रधान था और स्वामी सत्यपति जी गुरुकुल में ही रहते थे। उन दिनों गुरुकुल के उत्सव पर अनेक रोचक कार्यक्रम आयोजित होते थे; जैसे गायन प्रतियोगिता, खेल प्रतियोगिता एवं शास्त्रार्थ आदि। एक बार विचार आया कि किसी ऐसे आर्य को सम्मानित किया जाए जिसकी चार पीढ़ियां आर्य हों और दूसरी कठिनाई यह भी कि उनका पूरा परिवार आदर्श हो। चार की तो बात ही अलग थी, तीन पीढ़ियां ही तलाश करने में कठिनाई आ रही थी, किंतु सौभाग्य था गुरुकुल सिंहपुरा का कि इन दोनों कसौटियों पर खरा उतरने वाले चौधरी मित्रसेन सिंधु का आदर्श परिवार के मुखिया के तौर पर स्वागत किया गया और इसी आदर्श परिवार को देखते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री ने नारियल उनके घर भेज दिया था। आर्यजगत के मूर्धन्य संन्यासी, त्यागी, तपस्वी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती अंतिम दिनों में मेरे व अपने प्रिय शिष्य अजय कुमार शास्त्री पर बहुत विश्वास रखते थे और हमारे सामने अपने दिल की बात कहते थे। एक दिन गुरुकुल झज्जर के मुख्य द्वार के ऊपर वाले कमरे में जिसमें वे रहते थे, मुझे दुखी होकर कहा कि राममेहर

जी ऋषि दयानन्द के ऋण से उऋण होने के लिए बहुत कुछ करना चाहता था, किन्तु सारे अरमान अधूरे लिए इस संसार से जाने वाला हूँ। मेरी नजर भारतवर्ष में एक ही व्यक्ति पर है जो मेरे अधूरे अरमानों को पूरा कर सकते हैं और वे हैं चौधरी मित्रसैन जी जो मेरी कसौटी पर खरे उतरे हैं। मैं जीते जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का सारा कार्यभार उनके कंधों पर डालना चाहता था, किंतु मैं जानता हूं कि पूर्ण सर्वसम्मति के बिना यह भार उठाने के लिए उन्हें सहमत नहीं किया जा सकता, जीते जी पूरे प्रयत्न के बाद भी यह इच्छा पूरी नहीं कर सका। परमात्मा करे मेरे स्वर्गवास होने के बाद मेरी यह इच्छा पूर्ण हो। कोई अनुमान नहीं लगा सकता कि जिस व्यक्ति ने पांच रूपये ट्यूशन के देकर हिन्दी सीखी हो, वह आज अनगिनत लड़के-लड़कियों को विद्या दान दे रहा है जिसमें आर्ष पाठ विधि के अनेक गुरुकुल भी सम्मिलित हैं।

सुना जाता है कि रहीम जब दान देते थे तो आंखे नीची कर लेते थे, इसलिए गाया जाता है कि सीखे कोई रहीम से ऐसी दान देन, ज्यों-ज्यों कर उपर करे त्यों-त्यों नीचे नैन, जब रहीम से इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा-

देने वाला और है देता दिन-रैन
लोग नाम मेरा लेंवे इस विध नीचे नैन।

सन 1957 से चौधरी मित्रसेन जी से मेरा संपर्क रहा है, किन्तु रहीम के बाद ये गुण चौधरी मित्रसैन जी में देखने को मिला है। बड़े-बड़े दानियों के पास दान देने का हिसाब रहा है, किंतु मित्रसेन जी को स्वयं भी नहीं पता कि आंखे नीची करके और हाथ ऊपर करके कितना दे चुके। कई बार मैंने भी प्रयत्न किया कि सारी उम्र का ना सही, एक महीने का ही हिसाब लगा लूं, किंतु असफल रहा।

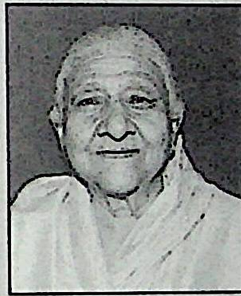
हमने पारस पत्थर के बारे में सुना है, यदि लोहा उसे छू जाए तो सोना बन जाता है। चौधरी मित्रसेन जी के संपर्क में आए अनेक लोगों को देखा है जो लोहे से सोना बने हैं। किसी सोने ने कान को भी काटा होगा, किन्तु मन में द्वेष उनके लिए भी नहीं। लोहे को छूने से सोना बनने की बात तो अलग, किंतु चौधरी मित्रसेन जी मिट्टी को भी छूते है तो वह भी सोना बन जाती है। इसका प्रमाण माड़ौदी की थली ''रेतीले टीले'' दे रहे हैं जहां सदियों से कुछ भी पैदा नहीं हुआ और आज वहाँ जाकर देख लो।

धन्य है सिंधु गौत्र जिसने शहीदे-आजम सरदार भगत सिंह जैसे देशभक्तों को जन्म दिया और उसी सिंधु गौत्र में चौधरी मित्रसेन जी का जन्म हुआ। चौधरी मित्रसेन जी और शहीदे आजम सरदार भगत सिंह के परिवार के भी गहरे संबंध रहे हैं।

राममेहर एडवोकेट
रोहतक (हरियाणा)

11. निष्काम कर्मयोगी : श्री मित्रसेन जी

श्रीमती प्रेमलता अखिल भारतीय दयानंद सेवा संघ की महामंत्री हैं। आप प्रतिवर्ष वनवासी युवाओं को लेकर वैदिक चेतना शिविरों का आयोजन भी करती हैं।



कुछ वर्ष पूर्व स्वामी धर्मानन्द जी के निमन्त्रण पर गुरुकुल आश्रम, आमसेना के उत्सव पर गई थी। उत्सव के पश्चात् जब लौटने लगी तो स्वामी जी महाराज ने कहा कि श्री जगन्नाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दमऊधारा को देखती हुई जाओ। मैं जब विद्यालय पहुंची तो विद्यालय को देखकर अति प्रसन्नता हुई, क्योंकि चार ईंटें लगाना भी आज के दिन में बड़ा कठिन है, वहीं स्वामी धर्मानन्द जी को इतना विशाल विद्यालय बना-बनाया मिला है। इसे देखकर प्रसन्नता हुई, साथ ही यह विचार उभरा कि इसका रख-रखाव और संचालन बिना धन के नहीं हो सकता। मैंने वहाँ के अधिकारियों से पूरी जानकारी ली तो पता चला कि विद्यालय के संचालन एवं रखरखाव का सम्पूर्ण भार श्री मित्रसेन जी ने अपने ऊपर लिया है। तभी मैंने ऐसे दानवीर के दर्शन करने का निश्चय किया।

प्रभुकृपा से दूसरे वर्ष भी स्वामी धर्मानन्द जी ने मुझे अपने गुरुकुल के उत्सव पर बुलाया। तब श्री मित्रसेन जी कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे, उस समय उनके नजदीक से दर्शन का अवसर मिला। बाद में स्वामी धर्मानन्द जी के साथ मैं उनसे मिलने गई थी। मैंने तब प्रार्थना की कि मध्यप्रदेश के थान्दला स्थित आश्रम में एक उत्सव कर रहे हैं, उसके लिए कुछ सहायता... उन्होंने झट से कहा, 'आप कभी रोहतक आना।'

कुछ दिनों के बाद जैसे ही मैं श्री मित्रसेन जी के विशाल और आश्रम सदृश निवास पर पहुँची, उनके आतिथ्य से गद्गद हो गई। जाते ही उन्होंने पूछा, कहाँ ठहरी हो? सीधे यहीं क्यों नहीं आई? मेरे यह कहने पर कि पारिवारिक संबंध न होने के कारण मैं अन्यत्र कहीं ठहरी हूं, सुनकर आपने कहा कि **आर्यों का आर्यों से अधिक अच्छा संबंध और क्या हो सकता है?** आपने तुरन्त अपने हाथों से मुझे ग्यारह हजार रुपये निकालकर थान्दला आश्रम के उत्सव के लिए दे दिए। उन्होंने बाहर देखा तो मुझे लेकर गए दो नौजवान बालकों को भी झट अन्दर बुला लिया और एक घंटा तक वेद के आधार पर उन बालकों को ज्ञान देकर संस्कारित करते रहे और लड्डू भी खिलाते रहे। उन दोनों बालकों पर इसका

इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि रात को घर आकर पूरे परिवार को बैठाकर मुझसे यज्ञ करवाया और 1100 रुपये की दक्षिणा दी। मुझे स्मरण है कि अगली बार फिर थान्दला के कन्या विद्यालय के दान की अपील करने गए श्री दयासागर और श्री वसन्त को श्री मित्रसेन जी ने तुरन्त पचास हजार रुपये दान देकर अपने हृदय की विशालता का परिचय दिया। भरपूर अतिथि-सत्कार करने के पश्चात् मित्रसेन जी ने अपनी पूरी कोठी का भ्रमण कराया, जिसमें आर्य जगत् के संपूर्ण विद्वानों के दर्शन हो गए। साथ ही, अति सुन्दर यज्ञशाला का भी दर्शन कराया। आपके द्वारा जितने भी स्कूल, गुरुकुल, कन्या विद्यालय, विश्वविद्यालय आदि शिक्षण संस्थाएं संचालित हैं, इसका पता जब मुझे स्वामी धर्मानन्द जी से चला तो मैं आपके लिए उपाधि की खोज करने लगी। सोचा कि संसार में दानवीर तो बहुत हुए, जैसे कर्ण, हरिश्चंद्र आदि, किन्तु अंततोगत्वा मैंने यही पाया कि आपके लिए 'निष्काम कर्मयोगी' उपाधि ही उत्तम है। कई बार धनी लोगों को दिन-रात लंगर लगाते देखती हूं तो ऐसा लगता है कि ये लंगर द्वारा लोगों को लंगड़ा कर रहे हैं, किन्तु मेरे मित्रसेन जी विद्यादान द्वारा लोगों को सशक्त बना रहे हैं। धन्य हैं श्री मित्रसेन जी और वे माता-पिता जिन्होंने आपको जाया है।

श्री मित्रसेन जी का परिचय पढ़ने से पूर्व मैं अपने आपको दयानंद की अनन्य भक्तिनी समझा करती थी, किन्तु परिचय पाने के बाद मैंने अपने को एक तरफ कर दिया और मित्रसेन जी में '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' के दर्शन पाने लगी। आपने चारों वेदों के उपदेशों को अपने जीवन में पूर्ण रूप से ओत-प्रोत कर परिवार को भी वेद-ज्ञान से सिक्त कर दिया।

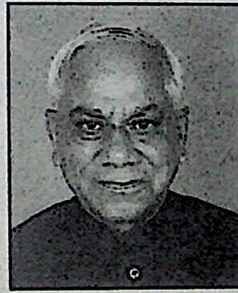
अपने नाम को सार्थक करने वाले मित्रसेन जी के चरणों में बार-बार नमन। प्रभु से प्रार्थना करती हूं कि आपकी सौ वर्ष से भी अधिक सुस्वास्थ्यमय आयु हो। जब दूसरा जन्म मिले तो भी '**सुक्षेत्रे**' किसी पवित्र माता की कोख से जन्म हो।

प्रेमलता शास्त्री
डब्लूएच-1198, रानी बाग, दिल्ली

"नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना निःसंदेह बुरा है,
लेकिन सामने हंस कर बोलना और पीठ पीछे चुगली करना उससे भी बुरा है।
चुगलखोर अंत में घृणा का पात्र बनता है।"

12. एक अपरिचित वैदिक मित्र

ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त प्रसिद्ध रेडियो उद्घोषक, आर्य सिद्धान्तों के ओजस्वी वक्ता एवं लेखक हैं।



मित्रसेन जी से मेरा निकट का नाता है। वे और उनके पिता तथा पितामह तीनों पीढ़ियां आर्य समाजी हैं। मेरे साथ भी बिलकुल ऐसा ही है। पहली बड़ी लड़ाई में मेरे पितामह के छोटे भाई स्वयं फ्रांस में जर्मन सेना से लड़े थे। साथ के साथी सैनिकों से मिला लाहौर में छपा सत्यार्थ प्रकाश। मित्रसेन के पिता तो स्वयं लाहौर में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में जाने वाले अवैतनिक भजनोपदेशक थे। लाहौर जाने की ललक और वहाँ वेद प्रचार करने की अभिलाषा हम दोनों के बीच मैत्री भाव का बीज बोती है। हम दोनों ही किसान परिवार के हैं, बीज बोने के बाद फसल को खेत से खलिहान लाने का सपना देखने लगते हैं।

श्री मित्रसेन आर्य के आर्यत्व ने मुझे उस समय अत्यंत प्रभावित किया, जब उन्होंने स्वामी धर्मानन्द सरस्वती को मृत्यु के मुख से बचा लिया। डॉक्टर भी हार मान चुके थे। संन्यासी के स्वजन, यानी हम आर्यजन मन ही मन मान चुके थे कि ईसाइयों को आर्य बनाने वाले संन्यासी को मोक्ष मिलने वाला है। यदि किसी ने तन, मन और धन से स्वामी धर्मानन्द को सजीव करने की ठान ली थी तो वे हैं दृढ़ निश्चयी मित्रसेन जी। उन्होंने स्वामी जी के असाध्य रोग से दो-दो हाथ किए और उनके प्राणों की रक्षा में अपनी प्राण-प्रतिष्ठा दांव पर लगा दी। जुझारू व्यक्तित्व के मित्रसेन जी ने पराजय का मुंह देखना नहीं जाना। विजयश्री ने हर बार की तरह इस बार भी आपका वरण किया। अंततः स्वामी धर्मानन्द सरस्वती पुनः सक्रिय हुए। बधाई हो दोनों को। मित्रसेन जी सभी के मित्र हैं। यथा नाम तथा गुण। आपके व्यक्तित्व में मैत्रीभाव न भरा होता तो क्या आप अहिन्दी भाषी उड़ीसा प्रान्त में एक सफल उद्योगपति बन पाते? यह सबसे मिलकर चलने वाले मजदूर से लेकर महाप्रबंधक तक का सहयोग प्राप्त करने की क्षमता है कि आपने जिस भी काम में हाथ डाला, वहीं सफलता ने आपको गले लगाया।

आप छोटे-बड़े आदमी से एक भाव से मिलते हैं, बोलते हैं और वेदों का ज्ञान बांटते हैं। पूर्वजों का अनुसरण करते हुए आप कर्तव्य

पथ पर मान-सम्मान के साथ डटे रहते हैं। अविभाजित पंजाब में हिन्दी की अवमानना सहन न कर और सन् 1957 में सत्याग्रह करते हुए जेल गए। बधाई हो। एक पिता-परिवार पालक है। परिवार के लोग धर्म मार्ग पर चलें, शिक्षा प्राप्त करें, व्यवहार-कुशल हों और रोटी, कपड़ा, मकान का प्रबंध करने में सक्षम हों। समाज में सफल परिवार-पालक पिता की सफलता या असफलता इन्हीं बातों से आंकी और मापी जाती है। आइए, हम देखें कि क्या मित्रसेन जी इस कसौटी पर खरे उतरते हैं? वे स्वयं आर्य हैं, क्या उनके बेटे-बेटियां अपने पिता, पितामह और पर-पितामह समान वैदिक पथ के पथिक हैं? आर्य समाज रोहतक हो या गुरुकुल झज्जर, दयानंद मठ, गोहाना रोड हो या गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा) आर्यजन संस्तुति करते हैं मित्रसेन परिवार की नई पीढ़ी के आर्य आदर्शों की। फिर पूरा परिवार एकजुट होकर कारोबार और उद्योग में लगा हुआ है, यह मित्रसेन जी के पारिवारिक नेतृत्व का परिचायक है।

मैं स्वयं तीन दशकों से अधिक समय तक एक सैन्य अधिकारी रहा हूं। इसलिए भी मैं मित्रसेन जी का प्रशंसक हूं। उन्होंने अपने तीन बेटों को सैन्य सेवा की प्रेरणा दी। कैप्टन रुद्रसेन, कैप्टन अभिमन्यु और मेजर सत्यपाल आर्य ने देश की सीमाओं की रक्षा की और अब उद्योग के क्षेत्र में अपने पिता और अन्य भाइयों वीरसेन, व्रतपाल और देवसुमन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अग्रसर हैं। संगठन सूक्त के वेदमंत्र यहाँ भी चरितार्थ हैं। मित्रसेन जी के नेतृत्व में पूरा परिवार ही वैदिक पथ का पथिक है।

दानवीर कर्ण आज भी हम सभी को प्रेरणा देते हैं, किन्तु कितने हैं जो प्रेरणा पाकर दान देते हैं। श्री मित्रसेन आर्य उन विभूतियों में से हैं जो सौ हाथों से कमाते हैं और हजार हाथों से दान देते हैं। सबसे बड़ा दान है – विद्यादान। गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, विद्यालय, पब्लिक स्कूल और यहां तक कि विश्वविद्यालय तक आप के दान के दायरे में आते हैं। सुशिक्षित नवयुवक और नवयुवतियां ही तो देश का भविष्य हैं। मित्रसेन जी भारतवर्ष के स्वर्णिम भविष्य में निवेश कर रहे हैं।

मित्रसेन जी की यश-कीर्ति चहुं ओर है। मैं उनसे मुखामुख नहीं मिला हूं, किन्तु उनके वैदिक व्यक्तित्व को अनुभव किया है।

ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त
वीएसएम

''पुण्यकर्म का फल शुभ होता है और सात्विक कहलाता है
लेकिन रजोगुण में सम्पन्न कर्म का फल दुःख होता है
और तमोगुण में किए गए कर्म मूर्खता में प्रतिफलित होते है।''

13. भारतीय संस्कृति के उपासक सिन्धु जी

डॉ. नरेश मिश्र ने हिन्दी भाषा पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं और वे वैदिक संस्कृति के पक्षधर हैं। इन्होंने आर्य समाज का प्रचार अपने शिक्षण काल में भी किया है।



विधाता की सृष्टि में सरिता के उद्‌गम से लेकर संगम तक भगवान भास्कर के उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक, पीयूषीवर्षी एका के प्रतिपदा से लेकर पूर्णमासी तक की सतत् गतिशीलता में संकुचन, वैयक्तिकता, स्वार्थ नहीं वरन् परिवेश अनुरंजक, प्राणि-रंजक, मानव उद्‌बोधक और समष्टि-अनुप्रेरक भाव समन्वित रूप होता है। सच है, प्रतिपल हंसती प्रकृति-सुन्दरी का प्रेरक रूप-रंग प्राणियों को जीवंतता और गतिशीलता प्रदान करने का अप्रतिम उपादान है। यह भी निर्विवाद तथ्य है कि महापुरुष अपने लिए नहीं, समाज के लिए जीवन जीते हैं। उनका प्रत्येक पल समाज के लिए समर्पित होता है। जिस प्रकार किसान अपनी खेती को लहलहाता देखकर आनंदित होता है, उसी प्रकार महापुरुष, समाज के सुसंस्कृत परिवेश और मानव को विकास पथ पर गतिशील देखकर आनंद विभोर हो उठता है। शस्य-श्यामला भारत भूमि की गौरव-गरिमा का श्रेय ऋषि-मुनियों और महापुरुषों को है।

महावृक्ष पीपल तले बैठकर देखिए तो इससे आंगन की तुलसी की गुणवत्ता, वन प्रांत के चंदन की शीतलता के साथ बोधिसत्व के साक्षात हाथ हिला-हिला कर लक्ष्य की ओर गतिशील रहने का सहज निर्देश मिलेगा। उदारमना श्री मित्रसेन आर्य के महाबोध की ऐसी छाया और सानिध्य का आनंदोल्लास कितना अनुप्रेरक और तरल है। मुझे प्रथम मिलन में ही अपनेपन की अनुभूति हुई है।

सिन्धु जी ने मुझे देखा और खड़े हो गए। मैंने आश्चर्यचकित मुद्रा में हाथ जोड़कर अभिवादन किया। मेरा आश्चर्य उस समय तरल हुआ जब ध्यान आया कि उन्होंने मुझसे मिलने का समय निर्धारित किया था। समय की पाबंदी परिचय की सूत्रधार बनी। सामने बैठे दिल्ली के चर्चित व्यक्तित्व श्री साहिब सिंह वर्मा और कैप्टन अभिमन्यु जी से अभिवादन हुआ। कुछ पल संस्कार की चर्चा चलती रही। अपने को सियासी बातों में बाधक समझते हुए मैंने कहा, 'अच्छा मैं चलूं, फिर आऊंगा।'

"नहीं, नहीं, बैठिए-बैठिए"! सिन्धु जी ने परम आत्मीय भाव से कहा। थोड़ी देर चर्चा के बाद वर्मा जी और कैप्टन अभिमन्यु जी उठे और बात करते हुए लॉन में टहलने लगे। मैंने सिन्धु जी से प्रश्न किया, "वर्तमान समय की आपा-धापी, भाग-दौड़" में अजीबोगरीब विषमताएं उभर रही हैं। हर आदमी भीड़ में अकेला हो रहा है। हर आंगन में दीवार खड़ी हो रही है। मानवता में दानवता ठहाके मारने लगी है, भाई-भाई के खून का प्यासा है। ऐसे में आपका मन कहाँ रमता है? बस फिर क्या था! सिन्धु जी की मुखाकृति पर पैतृक विरासत रूप में प्राप्त भारतीय आदर्श और संस्कारों की आभा उभर आई। उनमें वैदिक धर्म के उपासक पिता श्री शीशराम आर्य और भारतीय संस्कृति की प्रतिमूर्ति माताश्री जीवनी देवी की समन्वित भाव भंगिमा देखने योग्य थी। उनके उत्साह और आत्मविश्वास में क्रान्तिकारी सरदार भगत सिंह, लाला लाजपत राय आदि के साथ सिन्धु परिवार के बुजुर्ग जैलदार चौ. राजमल जी का देश-प्रेम उमड़ रहा था। हम दोनों साथ-साथ लॉन में एक किनारे की ओर बढ़ रहे थे।

ऐतिहासिक चित्रों के माध्यम से विभिन्न राजे-महाराजों से संबंधित घटनाएं मानस पटल पर उभर आईं। गुरु को देख सम आराध्य मानकर नमन करने वाले सिन्धु जी उस समय गर्व से बोल उठे। भारत की गुरु-शिष्य परम्परा जग प्रसिद्ध है। हम दोनों धीरे-धीरे चलते हुए काल परिवर्तन की आहट साधकों की साधना में और शब्दों में अनुभव कर रहे थे। सिन्धु जी ने साहित्य की अनुप्रेरक देहरी पर खड़े होकर स्वतंत्रता आंदोलन और देश के शासन का इन्द्रधनुषी रंग दिखाते हुए दृढ़ विश्वास और आशा के साथ कहा था -

'जेहि कर जेहि पर सत्य स्नेहू
सो तेहि मिलै न कछु संदेहू'।

सच है जिस मानस-मन्दिर में साहित्यिकता और राष्ट्रीयता के परिवेश में जाति-धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र और प्रांत से मुक्त चिन्तन होता है, वहीं शांति का साम्राज्य होता है। सिन्धु जी को अनुप्रेरक संस्कार पैतृक धरोहर के रूप में मिले हैं, जिसमें इन्होंने विनम्रता, सहजता, उदारता और सहानुभूति के भाव पुष्पों की वाटिका विकसित की है। इनका बाह्य व्यक्तित्व जितना आकर्षण है, आंतरिक व्यक्तित्व उससे कहीं अधिक मनमोहक है। इनके विस्तृत लॉन की दीवारों पर मुस्कराते हुए प्रेरक चित्र इनकी अंतस्वतेली के ही भाव बिम्ब हैं। कहा भी गया है कि टंगी हुई तस्वीर टांगने वाले के मन की तस्वीर होती है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि बोध वृक्ष समाज को जीवनदायिनी शक्ति देकर लक्ष्य की ओर गतिशील रहने की प्रेरणा देता रहेगा। ऐसे उदारमना के शतायु होने की कामना है।

डॉ. नरेश मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक
(हरियाणा)

14. मित्रसेन जी के साथ कुछ यादें

आर्य समाज को पूर्णरूपेण समर्पित श्री पूर्ण सिंह स्वच्छ मन, स्पष्ट चिंतन और बहादुरी के लिए जाने जाते हैं। आप हिन्दी सत्याग्रह में चौ. मित्रसेन के साथ जेल में रहे।



कहा जाता है कि जन्म-जन्मांतरों के संस्कार के परिणाम- स्वरूप जीवन में मिलन और बिच्छोह होता है। ठीक इसी उक्ति के अनुरूप सुसंस्कारों के कारण मेरा परिचय श्री मित्रसेन सिंधु से आर्य समाज, झज्जर रोड, रोहतक के माध्यम से हुआ। मैं आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुरूप जीवनयापन करता हूं और इनके पिता भी आर्य समाजी होने के कारण मेरी और मित्रसेन जी की अच्छी मित्रता है। मेरा मुख्य व्यवसाय खेतीबाड़ी है जबकि उन दिनों मित्रसेन जी का व्यवसाय खराद कार्य था। मेहनतकश वर्ग से जुड़े होने के कारण हम एक ही श्रेणी के विद्यार्थी रहे हैं। सहयोग, धार्मिकता, प्रचार, निष्पक्षता एवं पाखंड खंडन में अग्रणी भूमिका - हम दोनों ने मिलकर निभाई।

जब हिन्दी आन्दोलन का समय आया तो श्री सिंधु जी ने अपनी वर्कशॉप का कार्य छोड़ा तो मैंने अपनी खेतीबाड़ी, परन्तु इस लाभ-हानि में न पड़कर आर्य समाज की सत्प्रेरणा से सिंधु जी और मैं एक ही जत्थे में सत्याग्रह आन्दोलन के कारण जेल-यात्रा में इकट्ठे बोस्टर जेल में रहे। जेल यात्रा के दौरान इकट्ठे हवन करना, व्यायाम करना, खाना इत्यादि सब मित्रवत् परिवार के सदस्य की भांति रहा है और अब भी हमारी विचारधारा की साम्यता में कोई अंतर नहीं आया, वही निष्पक्षता, सत्याचरण एवं धार्मिकता हमारे मध्य में एकता का सूत्र है।

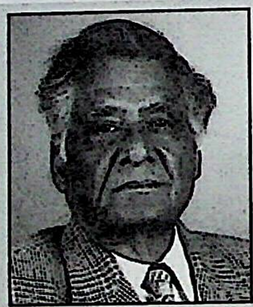
सिंधु जी की परिचित विशेषता एवं दानशीलता आदि गुणों से आज भी हम एक-दूसरे के इतने ही समीप हैं, जितने कि एक परिवार के आपसी सदस्य। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि श्री सिंधु की चरित्र की ऊंचाइयां हमेशा बनी रहें। सद्भावना, निष्पक्षता एवं दानशीलता परमात्मा उनमें और बढ़ाए तथा कामना करता हूं कि श्री सिंधु सपरिवार सदैव उत्तरोत्तर प्रगति कर यशस्वी बने।

पूर्ण सिंह आर्य
सैनीपुरा, रोहतक (हरियाणा)

15. परिश्रम एवं सत्य से सफलता प्राप्त की

आर्य समाजी परिवार में पैदा हुए श्री बलदेव तायल हरियाणा के पूर्व आबकारी व कराधान मंत्री है। आप स्वतंत्रता सेनानी लाला हरिलाल तायल के पुत्र तथा सेठ चन्दू लाल तायल के भतीजे हैं। आर्यसमाज, नागोरी गेट, हिसार (हरियाणा) आपके पिता द्वारा दान की गई भूमि पर ही स्थापित है।

पुरुषार्थ का जीवित उदाहरण भारत में आज भी है और सबसे उत्तम इस पुरुषार्थ में यह है कि पुरुषार्थ सत्य पर निर्भर है और सफलता इस व्यक्ति के चरण छू रही है, इनका नाम है – चौ. मित्रसेन आर्य।



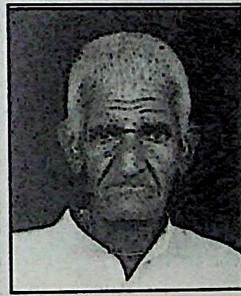
इनके पिता स्वर्गीय श्री शीशराम आर्य हिन्दू समाज को अंधविश्वास एवं कुरीतियों से उबारने वाले, हरियाणा में देशभक्ति एवं धर्म को जागृत करने का प्रयास करने वाले थे। स्वामी दयानंद जी, जिन्होंने सत्य और स्वराज्य की आवाज उठाई थी, उनके अनन्य भक्त उन्हीं संस्कारों से ओत-प्रोत युवा मित्रसेन न जाने किन परिस्थितियों में रोहतक पहुंचा और फिर वहीं का होकर रह गया। कोई अहम नहीं, केवल सेवा एवं धर्म प्रचार का लक्ष्य। सफलता शायद औरों ने भी प्राप्त की है, परन्तु केवल सत्य, परिश्रम एवं धर्म से सफलता यह एक अद्वितीय उदाहरण है। मेरा इनसे परिचय भी इनके प्रयास का फल है। हिसार आए थे और लाला चंदूलाल एवं लाला हरिलाल के वंशज का पता किया तो मेरा पता लग गया। लगभग दोपहर के दो बजे एक सुंदर-सी कार से एक भव्य पुरुष उतरा और आकर बड़े सद्भाव से मिला। मेरे पुत्र राहुल ने मिलवाया और बातों का सिलसिला चल निकला और अतीत सामने आने लगा। जीवन की शाम में मुझे ऐसे देव पुरुष के दर्शन हुए मेरा सौभाग्य। मित्रसेन आर्य जी ने ऐसे स्थानों में वेदप्रचार किया जहाँ पर आर्य समाज को जानने वाला भी नहीं था। कई स्थानों पर गुरुकुलों की स्थापना की और वे आज भी सुचारू रूप से चल रहे हैं। जंगल में अपने प्राणों को जोखिम में डालकर यह काम करना साहसिक एवं सराहनीय है।

भगवान उन्हें स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करे, यही कामना है। हां, एक बात और, मैं उनके पुत्र श्री अभिमन्यु को अपने पुत्र के रूप जानूंगा न कि बीजेपी के नेता के रूप में।

बलदेव तायल, हिसार (हरियाणा)

16. मित्रसेन आर्य और मैं

श्री मामचन्द आर्य हिन्दी सत्याग्रह में श्री मित्रसेन के साथ जेल में गए थे। अब अपना सारा समय वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा रहे हैं। स्वभाव से सरल व चिंतन में उन्नत श्री मामचन्द एक कृषक के रूप में जीवनयापन करते हुए भी 'सत्यार्थ प्रकाश' के छह दशकों से भी अधिक समय से नियमित अध्येता हैं।



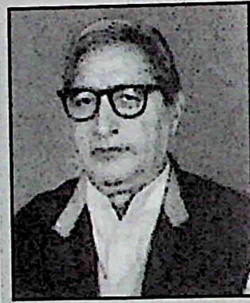
हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन पूर्ण जोश और उत्साह के साथ अपने चरम पर था। आर्य समाज और हिन्दी प्रेमियों में उत्साह देखते ही बनता था। 'जेल भरो आंदोलन' का यह हाल था कि मानो संपूर्ण रोहतकवासियों में जेल जाने की होड़ लगी हुई थी। ठीक इन्हीं दिनों हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में मेरी मुलाकात श्री मित्रसेन जी से हुई। विचारों की एकता की जंजीर ने दोनों को समीप ला दिया। दयानंद मठ, रोहतक में हिन्दी आन्दोलन हेतु जत्था तैयार था। मैं और सिंधु जी एक ही जत्थे में शामिल थे। रोहतक में गिरफ्तारी हुई तथा सरकार ने हमें अलग-अलग जेलों में भेज दिया। श्री सिंधु जी को बोस्टर जेल हिसार तथा मुझे संगरूर जेल में भेज दिया। जेल में जाने के पश्चात हम दोनों यद्यपि अलग-अलग रहे, परन्तु आर्य समाज के सिद्धान्तों की चर्चा ने हमें एक ही डोर में बांधे रखा। सिंधु जी में यह विशेषता रही कि जहाँ वे चरित्र के धनी हैं, वहीं उनका जुझारूपन कम नहीं हुआ। संघर्ष तो मानो उनकी रग-रग में भरा हुआ है। दानशीलता उनके हृदय में कूट-कूट कर भरी हुई है। उनका निवास स्थान मानो आर्य समाज की छावनी की भांति है। निवास स्थल में ही यज्ञशाला, प्रतिदिन हवन की व्यवस्था तथा आर्य विद्वानों का प्रचार यह प्रमाणित करता है कि सिंधु जी और मैं एक ही किश्ती में बैठे एक ही राह के यात्री हैं। सन् 1957 के सत्याग्रह आन्दोलन से मेरे और सिंधु जी में जो मित्रता की भावना थी, वह आज भी उसी तरह से बिना परिवर्तन, के जारी है। हमारे मध्य में लोभ और पक्षपात का लेशमात्र भी आवरण नहीं।

श्री सिंधु जी के उन्नत स्वभाव, उच्च भावना, श्रेष्ठ धार्मिकता एवं निष्पक्षता की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। प्रभु उन्हें पूर्ववत् उत्साही एवं दानशील बनाए रखे। जीवन में सदैव प्रगति पथ पर बढ़ते रहें।

मामचंद आर्य
दयानंद मठ, रोहतक (हरियाणा)

17. दानी कर्ण के सदृश

श्री ओम प्रकाश की गिनती आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के आर्य विद्वानों व भजनोपदेशकों में होती है। इन्हें आर्य समाज सान्ताक्रूंज, मुम्बई से 'आर्य भजनोपदेशक पुरस्कार' भी मिला है।



स्वामी धर्मानन्द जी का लिखा पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि आदरणीय मित्रसेन जी आर्य को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। मुझे स्वामी जी की आज्ञा हुई कि मैं भी कुछ लिखूं। सो लिखने बैठ गया हूं। श्री मित्रसेन जी से जो सम्पर्क हुआ, उस के आधार कुछ प्रसंग लिख रहा हूं।

एक समय मैं गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में दान की अपील कर रहा था। लगभग 24 वर्ष पूर्व सन् 1981 से ही मैं गुरुकुल जाता था। इसलिए गुरुकुल के श्री आचार्य ने अपील का पुण्य कार्य मेरे सुपुर्द किया हुआ था। एक दिन आदरणीय श्री मित्रसेन जी गुरुकुल आए और गुरुकुल के लिए मुझे 51 सौ रुपये दे गए। मैंने आचार्य जी को बता दिया तो आचार्य जी कहने लगे कि उनसे तो अधिक राशि लेनी थी। मैंने कहा मुझे पता नहीं था कि आप क्या आशा रखते थे। गुरुकुल का भवन निर्माण कार्य चल रहा था, उन्हीं दिनों आदरणीय सिन्धु जी ने सीमेंट का एक ट्रक गुरुकुल भिजवाया था, जिसकी कीमत 37 हजार रुपये थी। यह कार्य कराना मेरा काम है। एक दिन अपील के समय श्री सिन्धु जी गुरुकुल आए। मैंने अच्छा अवसर देखकर उनसे ट्रक के दाम को दान में देने को कहा। श्री सिन्धु जी ने समझने में देर न करके तुरन्त कुछ और राशि दी और कहा कि मेरी ओर से 51000 हजार बोल दें। आए लोगों ने करतल ध्वनि से भूरी-भूरी प्रशंसा की।

एक बार रोहतक के पास लाढ़ौत गुरुकुल में मुझे आमंत्रित किया गया। दैवयोग से आदरणीय सिन्धु जी के दर्शन हुए। नमस्ते हुई, राजी-खुशी पूछते हुए मुझे कहने लगे कि आर्य समाज के प्रचारकों की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी नहीं है। आप किसी ऐसे उपदेशक की सहायता करना चाहें तो यह सेवा का अवसर मुझे बताएं। मैंने कहा कि अलीगढ़ जिले के चन्डोली ग्राम के महेश चन्द्र संगीत रत्न आर्थिक स्थिति से दुखी हैं। इनके पिताजी और चाचा भट्टपाल जी और हरपाल जी ये सब आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश में कार्यरत रहे। इसलिए इनकी सहायता

करें। सुनते ही सिन्धु जी ने एक अच्छी राशि देकर कहा कि उनको भिजवा दीजिए।

इनके पिता शीशराम जी आर्य भजनोपदेशक, जो प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, लाहौर में कार्यरत रहे, उनके ऊपर भी आर्य विद्वानों की सत्प्रेरणा थी। श्री पंडित जी, शर्मा बस्तीराम जी एवं पंडित मुरारीलाल जी शास्त्री इन सबके आशीर्वाद से यह सिन्धु परिवार आर्य विचारों से कूट-कूट कर भरा हुआ है। श्री सिन्धु जी की धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी जी अपने पति के कार्यों में पूरा साथ देती हैं और अच्छे कार्यों के लिए उत्साहित भी करती हैं। एक बार आप के छोटे पुत्र का विवाह था। उसी समय घर पर यज्ञ था। यज्ञ के ब्रह्म श्री स्वामी दीक्षानन्द जी, श्री अग्निवेश जी तथा दिल्ली से आचार्य श्री हरिदेव जी आए। साथ में गुरुकुल के ब्रह्मचारी भी आए। यज्ञ की पूर्णाहुति पर अनेक संस्थाओं को खूब दान दिया। वहाँ उपस्थित सभी विद्वानों को दक्षिणा, वस्त्र आदि से सम्मानित किया। एक बात रह गयी, जिसका उल्लेख करना मैं आवश्यक समझता हूं, वह है ,आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार ने अपना बहुत सुन्दर, भव्य-भवन बनाया है। गत डेढ़ वर्ष पूर्व दिसम्बर मास में मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार, ओमप्रकाश चौटाला जी से उनका उद्घाटन कराया। साथ ही आर्य समाज का उत्सव भी किया था। उसमें मान्यवर श्री मित्रसेन जी को आमंत्रित किया। प्रधान चौधरी हरी सिंह जी ने आपसे कुछ दान लेने के लिए प्रार्थना की। तुरन्त ही आपने जेब में हाथ डाला, जहाँ तक मुझे स्मरण है वह राशि एक लाख रुपये थी। श्री मित्रसेन जी जानते हैं, स्वामी दयानंद जी के कथानुसार - किसको देना किस को न देना। पात्रों-कुपात्रों को देखकर ही देना यह आर्यत्त्व का परिचय है। यह सब खूबियां श्री मित्रसेन जी के अंदर हैं। मैं क्या-क्या अपने शब्दों में व्यक्त करूं, मैं तो भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि

'भूयश्च शरदः शतात्'।

ओमप्रकाश वर्मा
यमुनानगर (हरियाणा)

''जितेन्द्रिय उसको कहते है जो स्तुति सुनकर, हर्ष और निंदा सुनकर शोक, अच्छा स्पर्श करके सुख और दुष्ट स्पर्श से सुख, सुन्दर रूप देखकर प्रसन्न और दुष्ट रूप देखकर कर अप्रसन्न, उत्तम भोजन करके आनन्दित और निकृष्ट भोजन करके दु:खित, सुगंध में रूचि और दुर्गन्ध में अरूचि नहीं करता।''

18. आधुनिक भामाशाह उद्योगपति

दिव्येश्वर जी महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से व्याकरण में स्वर्ण पदकधारी हैं तथा गुरुकुल आश्रम, आमसेना में शिक्षक पद पर कार्यरत आर्यवीर दल के माध्यम से समाज सेवा भी कर रहे हैं।

मुझे इतिहास की उस घटना की याद आ रही है जब मातृभूमि की रक्षा हेतु समस्त धनबल और सैन्यबल को मुगलों के साथ युद्ध करते-करते हारकर और हताश-निराश होकर वन, पर्वतों और पहाड़ों का सहारा लेने वाले महाराणा प्रताप को भामाशाह नामक दानवीर का सहयोग मिला था। ठीक उसी प्रकार भयंकर भूखमरी, सूखापन, जंगली, गरीब अनपढ़ क्षेत्र को सुशिक्षित और दीक्षित करने में लगे हुए, महान त्यागी, वीतराग संन्यासी स्वामी ओमानंद जी सरस्वती के परमशिष्य, मेरे पूज्य गुरुदेव स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती को आधुनिक भामाशाह दानवीर चौ. मित्रसेन जी का जब सहयोग प्राप्त हुआ, तो डूबते को तिनके का सहारा वाली उक्ति चरितार्थ हुई और अब यह छोटी-सी संस्था विकसित और पल्लवित होती चली गई।



मैंने पूज्य माता-पिता दोनों के मुख से कभी दो दिशाओं वाले अलगाववादी विचार नहीं सुने। आप दोनों गृहस्थाश्रमरूपी गाड़ी के दो समान पहिए हैं। आप दोनों का आदर्श गृहस्थ जीवन समस्त गृहस्थों के लिए अनुकरणीय है और भविष्य में भी होगा। यज्ञ, सत्संग, स्वाध्याय में आप दोनों की बड़ी श्रद्धाभक्ति है। आपके परिवार में विधिवत् पंचमहायज्ञों का अनुष्ठान होता आ रहा है। आपने अपने घर के माहौल को ऐसा बना रखा है कि व्यक्ति स्वतः ही वैदिक आर्य संस्कृति से जुड़कर धार्मिक बन सकता है। आप का परिवार यज्ञ दानादि का अनुष्ठान करते हुए, अन्यों को प्रेरणा देने के लिए एक जीता-जागता प्रमाण है। आपके स्वर्गीय पूज्य पिता श्री शीशराम आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक और धुरन्धर प्रचारक थे। उन दिनों सम्पूर्ण भारतवर्ष में आर्य समाज की खूब चर्चा थी, कोई भी शिक्षित आर्य समाज के आंदोलन से अनभिज्ञ नहीं था। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार और 'सत्यार्थ प्रकाश' के पठन-पाठन के विचारों से तो सर्वत्र क्रांति मची हुई थी। पिताजी के उत्तम संस्कार आपको प्राप्त हुए, साथ ही सत्यार्थप्रकाश नामक अमूल्य ग्रन्थ को आपने भी पढ़ा, जिससे आपकी विचारधारा ही बदल

गई। ऋषिकृत आर्षग्रंथों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा-भक्ति है। फलस्वरूप आर्षग्रंथों के प्रकाशनार्थ एवं आर्षशिक्षा पद्धति के प्रचार-प्रसार हेतु आप अतुल धनराशि निःस्वार्थ भावना से सर्वत्र सभी संस्थाओं में दान कर रहे हैं। किसी ने बहुत सुन्दर कहा है कि -

सब शरीर मिट जाते हैं, धन धरणी अरु धाम।
पर मिटते नहीं अतुल यश, नर की कीर्ति कलाम।।

परमपूज्य, दानवीर चौ. मित्रसेन जी को हमने निरंतर अनेक संस्थाओं को लाखों रुपये का दान करते हुए देखा, परन्तु कभी उनके मुख से या उनके परिवार वालों के मुख से 'हमने इतना रुपया दान दिया है' ऐसा कहते हुए नहीं सुना है।

धनेश! आर्य दानवीर चौ. मित्रसेन जी जैसे स्वच्छ छवि के व्यक्ति आर्य समाज में हैं, जिससे आर्य समाज का मुखमंडल उज्ज्वल हो रहा है। दानीश्रेष्ठ! चौ. मित्रसेन जी की तरह गुरुकुलों, कन्या महाविद्यालयों, पाठशालाओं, अनाथाश्रमों तथा आर्य समाज के विभिन्न क्षेत्रों को सच्चे दानी और आर्य सेवक मिलते रहें तो इसमें सन्देह नहीं कि जैसे शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ता जाएगा, वैसे ही सम्प्रति धर्म के नाम पर जो लूट मची हुई है, वह नहीं होगी। गाँव-गाँव में वैदिक सन्देश और सत् साहित्य पहुँचेगा, जिससे सच्चे धर्म की स्थापना होगी।

चौ. मित्रसेन जी उन व्यक्तियों में हैं जो कठिनाइयों में भी संघर्ष करते रहे और कभी सत्य, न्यायपथ से विचलित नहीं हुए। इस विषय में नीतिकार भर्तृहरि इस प्रकार लिखते हैं :-

नीति में निपुण लोग, चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें, इच्छानुसार धन-ऐश्वर्य अपने पास आए अथवा चला जाए, आज ही मृत्यु हो जाए या दीर्घकाल तक जीवित रहें, जो धीर पुरुष होते हैं, वे न्यायसंगत मार्ग से एक पग भी विचलित नहीं होते हैं।

वंश परम्परानुसार चौ. मित्रसेन सिंधु एक कर्मठ आर्य समाजी हैं। इनके जीवन में आर्य समाज की शिक्षा-दीक्षा ने कर्तव्य रूप धारण कर लिया है। इसलिए हम देखते हैं कि पूज्य पिताजी स्वोपार्जित संपत्ति को अपने सुयोग्य पुत्रों में देकर एक 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली सुखपूर्वक जिंदगी जी रहे हैं। आप प्राचीन आचार्यों के गौरवमय पुण्यादर्श को पुनर्जीवित कर रहे हैं। सम्प्रति भारतवर्ष की इस दीन-हीन दशा में, जबकि चारों तरफ रूढ़ियों का बोलबाला है, फिर भी नारियों को सुशिक्षित और दीक्षित करने के लिए स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती को सहयोग और प्रेरित करते रहते हैं। हे सौम्यमूर्ते! हमें पूर्ण आशा और विश्वास है कि आप भविष्य में भी अपने जीवन में आदर्श भावनाओं को स्थान देकर मनसा, वाचा और कर्मणा पुण्यकार्य हेतु समाज में सदैव अग्रणी रहेंगे।

दिव्येश्वर शास्त्री
गुरुकुल आश्रम, आमसेना
नवापारा (उड़ीसा)

19. चौधरी साहब का स्पृहणीय जीवन

आचार्य कर्मवीर वैदिक साहित्य के ओजस्वी वक्ता एवं लेखक हैं।



आदरणीय चौधरी साहब एक व्यक्ति भी हैं और संस्था भी हैं। जिस प्रकार कुन्दन अपने स्पर्श से दूसरे को चमका देता है, उसी प्रकार चौधरी साहब ने जिस संस्था का स्पर्श किया, जिसका भविष्य अपने हाथ में लिया, वह निखर उठी और दमक उठी। उदाहरण के लिए उड़ीसा प्रान्त का शापग्रस्त क्षेत्र कालाहांडी (नवापारा), जहाँ हर रोज जनता के सम्मुख दुर्भिक्ष अपना विकराल रूप धारण कर विद्यमान रहता है, वहाँ जनता की सेवा और सहयोग के लिए प्रातः स्मरणीय कर्मयोगी गुरुवर्य स्वामी धर्मानंद द्वारा स्थापित संस्था गुरुकुल आश्रम, आमसेना को जब से चौधरी जी का वरदहस्त प्राप्त हुआ है, तब से यह संस्था वामन रूप से प्रारम्भ होकर आज विराट रूप को प्राप्त हो चुकी है। सम्पूर्ण आर्य जगत में ही नहीं, अपितु राष्ट्रीय स्तर पर इस संस्था ने चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो अथवा सेवा के क्षेत्र में, सर्वत्र अपना परचम लहराया है। भोले-भाले वनवासी लोगों को पेट्रोडालर के बल पर विदेशी धर्मान्धों द्वारा धर्मान्तरण का जघन्य खेल सर्वविदित है, उन्हें पुनर्मिलन समारोहों द्वारा स्वामी जी पिछले तीन दशकों से घर वापसी का धुआंधार अभियान चलाकर राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने का निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। इस कार्य के लिए चौधरी जी ने तन-मन-धन से साथ दिया है। इस संस्था को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का श्रेय चौ. मित्रसेन जी को ही जाता है। चौधरी साहब के संपर्क में जो व्यक्ति आया तथा जिसने उनके गुणों की मानवीय जीवन की गरिमा और विशेषताओं का अनुसरण किया, वह भी प्रखर हो उठा। दृढ़ता से सत्य के कर्तव्य का आचरण, उस पर अनुगमन ही उनके जीवन का ध्येय हो गया है।

सन् 1995 में आई बाढ़ ने हरियाणा में भयंकर तबाही मचाई थी। हजारों एकड़ भूमि जलमग्न हो गई। उस समय बाढ़ की वजह से जहाँ गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी का आलम चारों ओर था, वहाँ जगह-जगह पानी जमा होने से फैली बीमारी ने भी हजारों लोगों को अपनी चपेट में ले लिया था। ऐसी भयंकर दशा में चौधरी जी जैसा परदुखकातर व्यक्तित्व घर की चारदीवारी में कैद रहे,

यह कैसे संभव था। उन्होंने अपने सम्पूर्ण दल-बल को इसमें शरीक कर लिया, जो शक्य था सर्वतोमना किया। पूज्य स्वामी जी के आदेश पर छह पेटी दवा लेकर गुरुकुल से लेखक ने भी रोहतक पहुँच चौधरी जी की निःस्वार्थ भागीरथी में हस्त प्रक्षालन का महत्पुण्य प्राप्त किया। चौधरी जी की अनुकरणीय सेवा का वह दृश्य आज भी मेरी नजरों में स्मरण मात्र से साकार हो उठता है। एक घटना का जिक्र करना प्रासंगिक होगा। बात सन् 1995 की है। साहित्याचार्य परीक्षा के परिणाम के सिलसिले में मुझे महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक जाना पड़ा। परिस्थिति ऐसी बनी कि 3-4 दिन लग गए। पूज्य स्वामी जी का निर्देश था कि चौधरी जी के यहाँ चले जाना। मैंने वैसा ही किया। जो आत्मीय व्यवहार मुझे इस परिवार से मिला, वह कदाचित अन्यत्र सर्वथा असंभव था। स्वयं माता जी द्वारा स्नेह से भोजन बनाकर खिलाना तो मानो अपनेपन का अनुपम निदर्शन था। प्रतिदिन भोजनोपरान्त चौधरी जी मेरे कक्ष पर चले आया करते थे और फिर शुरू होता था दार्शनिक चर्चाओं का सिलसिला। उन दिनों आर्य जगत् में सुख-दुख किस के गुण हैं, वाला विषय पत्रों में मुख्य शीर्षक होता था। चर्चा के समय ऐसा आभास होता था कि यह मात्र एक यशस्वी लक्ष्मी पुत्र मात्र नहीं, प्रत्युत शास्त्रीय साधना का भी एक सच्चा साधक है। अल्पकालीन प्रवासोपरान्त गुरुकुल, झज्जर जाने को जब मैं तैयार हुआ, उस समय चौधरी जी ने कहा – विश्वविद्यालय वाली समस्या का समाधान गुरुकुल झज्जर में न हो सके तो यहीं आ जाइएगा। ऐसा बिल्कुल मत सोचिएगा कि अभी-अभी तो इनके घर रहा था। यह सुन मैं चौधरी जी के विशाल हृदय पर अभिभूत हो उठा। घटना को आठ, नौ साल हो गए, किन्तु जब भी कुलभूमि पत्रिका मिलती है, चौधरी जी का नाम देखकर उनका स्पृहणीय निर्मल चरित्र बरबस स्मरण हो आता है।

आचार्य कर्मवीर

बिलासपुर (उड़ीसा)

बुद्धिमान व्यक्ति को उपाय तो जरूर सोचना चाहिए
लेकिन उसके साथ जुड़ी हानि को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए।
इसलिए कोई भी उपाय सोचने से पहले यह परख लेना जरूरी होता है कि उसके
द्वारा सोचे गये उपाय के गर्भ में किसी प्रकार की कोई हानि तो नहीं छिपी हुई है।

20. इतिहास बोध से ओतप्रोत चौ. मित्रसेन

लेखन क्षेत्र में उभरते हस्ताक्षर डॉ. विपिन गुप्त कई समाजसेवी और शिक्षण संस्थाओं से जुड़े है।



संसार में ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं जो धर्म, इतिहास और व्यापार में ज्ञानी हों। कुछ महान व्यक्ति ही समय पर समाज का मार्गदर्शन करते रहते हैं। ऐसे ही एक महापुरुष आज समाज को प्रेरित कर रहे हैं और उनका नाम है – चौ. मित्रसेन आर्य। मेरा उनसे परिचय बहुत पुराना नहीं है। हरियाणा के ऐतिहासिक पुरुषों के विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त करने के लिए मैं श्री मित्रसेन जी से मिलने गया। बातचीत करने से मुझे महसूस हुआ कि चौधरी साहब स्वयं ही इतिहास हैं। उनके परिवार का संबंध भारत के महान क्रांतिकारियों से रहा है।

चौ. साहब का इतिहास बोध बहुत गहन है। आप कहते हैं कि आज समाज ने स्वतंत्रता सेनानियों को क्षेत्र के अनुसार बांट दिया है। सुभाषचंद्र बोस उड़ीसा के थे, परंतु बंगाली उन्हें अपने प्रदेश का मानते हैं। हरियाणा के गुमनाम शहीदों के बारे में चौधरी मित्रसेन जी के मन में पीड़ा है। आप चाहते हैं कि ऐसे वीरों की जीवनी को प्रकाशित करके समाज के सामने उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए ताकि नई पीढ़ी प्रेरणा पा सके। चौधरी साहब स्वयं इस दिशा में कार्य कर रहे हैं।

बातचीत से एक नई बात का पता चला कि चौ. साहब हरियाणा के इतिहास के ज्ञान को हृदय में छिपाए हुए हैं। आपके मन में इस बात की कसक है कि अन्य राज्यों की तरह यहाँ के इतिहास पर शोधकार्य नहीं हुआ हैं। आपका मानना है कि इतिहास ही किसी सभ्यता की नींव होता हैं। आपने हरियाणा के इतिहास के संबध में कई पुस्तकें मुझे पढ़ने के लिए दी। इस छोटी-सी भेंट में चौ. साहब का विराट व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है। आपने शिक्षा, उद्योग और समाज सेवा में भारतीयता को कहीं भी छिपने नहीं दिया। आप भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक हैं। चौ. साहब मूल्यों की रक्षा हेतु तत्पर रहे हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व को मेरा शत-शत प्रणाम।

डॉ. विपिन गुप्त
रोहतक (हरियाणा)

21. दूरदर्शिता और कड़ी मेहनत से पाई मंजिल

श्री सत्यपाल मल्हान ने पत्रकारिता को व्यवसाय नहीं, अपितु जीवन दृष्टि बनाया है। आप चौधरी साहब के सामाजिक कार्यों में सहयोगी हैं।



'आज तक' न्यूज चैनल की एक खबर ने उन्हें विचलित कर दिया। सनसनीखेज प्रसारण में उड़ीसा प्रांत के नवापारा जिले की एक घटना का विवरण देते हुए कहा गया कि पिता ने गरीबी के चलते अपनी चार माह की बेटी को मात्र 1000 रुपये में बेच दिया। स्थानीय समाचार पत्रों के कार्यालयों में खबर की पुष्टि करनी चाही, लेकिन संतुष्ट नहीं हुए। फिर गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा) के कार्यालय की घंटी घनघनाई। आदेश हुआ कि इस खबर की सचाई जानी जाए। गुरुकुल के कार्यकर्ताओं और अध्यापकों के एक दल ने घटनास्थल का दौरा कर तहकीकात की, लेकिन खबर असत्य निकली।

वास्तव में लड़की को बेचा नहीं वरन् गोद दिया गया था। तभी जाकर इन्हें अर्थात श्री मित्रसेन जी को सुकून मिला, क्योंकि श्री मित्रसेन जी ने 30 वर्षों तक उड़ीसा के बड़बिल, राउरकेला, सुन्दरगढ़, ब्रजराजनगर, भुवनेश्वर, कटक और नावापारा आदि जिलों में निर्विघ्न रूप से व्यापार किया। आप आश्वस्त थे कि वनवासी इलाकों में गरीबी, निरक्षरता, बेकारी आदि अनेक समस्याएं अवश्य हैं, लेकिन वे आत्म सम्मान के धनी हैं। जब तक श्री मित्रसेन जी समाचार की तह तक नहीं गए, उन्हें चैन नहीं मिला। ऐसी शख्सियत का सिर्फ नाम उद्धृत कर मैं गौरवपूर्ण क्षणों को धूमिल नहीं करना चाहता। श्री मित्रसेन से साक्षात में हर व्यक्ति उनमें अपने आदर्श व्यक्तित्व की छवि पाता है। उनके विचारों में शुद्धता और कार्य में निष्ठा, जीवन में उमंग, प्रत्येक आयु तथा हर वर्ग के व्यक्ति को प्रभावित करती है।

आजादी से पूर्व सबका साझा सपना था देश की आजादी। आजादी के बाद विश्वास बना कि शीघ्र ही भारतवासी आर्थिक और सामाजिक आजादी हासिल करने में सफल होंगे। श्वेत क्रांति एवं हरित क्रांति को हमने सफलतापूर्वक अमलीजामा दिया, लेकिन आर्थिक क्रांति के ढीलेपन ने भारत को सबसे गरीब देशों की श्रेणी में बनाए रखा। डॉ. मनमोहन सिंह ने एक पहल की और देखते-देखते भारत की अर्थव्यवस्था चीन के बाद

दुनिया में तेजी से बढ़ने लगी। आशंकाएं व्यक्त की गई कि उदारीकरण से खड़ा अर्थव्यवस्था का महल कभी भी अर्जेन्टीना या मैक्सिको की तरह ढेर हो सकता है, लेकिन भारत के उद्यमियों और कारोबारियों की जीवट तथा हर मुश्किल में से निकलने की कुशल रणनीति और दक्षता ने उन्हें निराधार साबित किया। ऐसे क्रांतिकारी पुरोधाओं में श्री मित्रसेन सिन्धु का नाम अग्रणी उद्यमियों में सम्मिलित है। मित्रसेन जी की जिंदगी का एक दिलचस्प पहलू भी सामने आता है। अपने उद्योगों की देख-रेख के लिए उन्हें हमेशा एक जगह से दूसरी जगह तथा एक राज्य से दूसरे राज्य में जाना पड़ता था। उस समय रेलगाड़ियों में कोयले के इंजन ही चलते थे। बाल्यकाल से ही तीव्र बुद्धि के श्री मित्रसेन जी ने इंजन की गतिविधियों को बारीकी से देखा और समझा। उन्होंने पाया कि पानी 100 डिग्री सेंटीग्रेड पर भाप बन जाता है, लेकिन इंजन को आगे बढ़ने के लिए 212 डिग्री ताप वाली भाप की जरूरत पड़ती है। इसलिए उन्होंने अपने पल्लू में गांठ बांध ली कि यदि सफलता के शिखर पर चढ़ना है तो पूरी ताकत और जोश के साथ कार्य करना होगा। इंजन के दूसरे पहलू को भी इन्होंने अपने जीवन का आदर्श बनाया। उन्होंने देखा कि किस तरह भाप (ऊर्जा) का आधा हिस्सा ही प्रयोग होता है बाकी तो व्यर्थ चला जाता है। इसलिए उन्होंने पाया कि जरूरी नहीं कि किसी उद्देश्य के लिए खर्च की गई ऊर्जा का पूर्ण इस्तेमाल हो। श्री मित्रसेन जी की जिंदगी में यूं तो कई उतार-चढ़ाव आए, लेकिन उनके बीच उनकी जिंदगी का लक्ष्य और सपना कभी नहीं डगमगाया। उनका विचार है कि सफलता की उंचाइयों को छूने के लिए कड़ी मेहनत और कर्मठता का कोई पूरक नहीं होता और सिर्फ इसी रास्ते से मंजिल को पाया जा सकता है।

ऐसा भी नहीं कि सफलताएं श्री मित्रसेन जी के मार्ग में पांवड़े बिछाए बैठी थीं। स्वभाव से उद्यम विरोधी और उद्यमियों का अपने हितों के लिए उपयोग करने वाली अफसर-शाही का सहयोग मिलना भी उनके कुशल प्रबंधन का ही परिचायक माना जाता है। अपने हजारों कर्मचारियों को आप एक परिवार की संज्ञा देते हैं। आपका कहना है कि 'मेरा ध्यान कर्मचारियों पर रहता है। मेरा मानना है कि एक कर्मचारी से दूसरे में कोई अन्तर नहीं होता। कर्मचारियों को अपने कार्यालय में बुलाने की बजाय मैं उनके कार्यस्थलों पर जाता हूं। इस तरह मुझे ज्यादा जानने को मिलता है।'

अपने उद्योग के साथ-साथ उनका भरसक प्रयास है कि शिक्षा के क्षेत्र में सिन्धु ग्रुप एक अग्रणी नाम हो। आप का सपना है कि आपकी शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत नौनिहालों में से कोई दूसरा भी मित्रसेन बन सकता है।

सत्यपाल मल्हान
रोहतक (हरियाणा)

22. जनसेवा के लिए समर्पित - चौ. मित्रसेन

श्री बद्रीप्रसाद आर्य वैदिक धर्म के प्रचारक तथा लेखक हैं।



गेहुंआ रंग, मध्यम कद, चेहरे पर ओज, दूरदर्शी, धर्म-संस्कृति के प्रबल समर्थक, प्रचारक-प्रसारक, धीर, वीर, गंभीर, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी चौ. मित्रसेन आर्य के परिवार का अपना एक गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। पूर्वजों द्वारा साधु, संन्यासियों, परिव्राजकों, और अतिथियों के लिए 24 घंटे सदाव्रत भंडारा चलाया जाता था। आज से 200 वर्ष पूर्व सिन्धु परिवार की जीवन शैली वैभवशाली ही नहीं, अपितु सुसंस्कृत भी रही। उस समय में खांडा खेड़ी हिसार (हरियाणा) की हवेली के निर्माण में 15 वर्ष का समय लगा। हवेली की भव्यता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब मुख्य द्वार से हाथी सवार सहित विशिष्ट अतिथि भवन के प्रांगण में आकर खड़ा होता था तब हर्ष ध्वनि के साथ उसका स्वागत किया जाता था। धर्म-कर्म के क्षेत्र में भी सिन्धु परिवार सदैव अग्रणी रहा। देश की आजादी में भी सिन्धु परिवार ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास इस बात का गवाह है कि जो भी परिवार, समाज ब्रिटिश हुकूमत के विरोध में उठा, अंग्रेजों की आंख की किरकिरी बना, उसका परिणाम सारा आर्यवर्त जानता है। वैदिक संस्कृति और मातृभूमि का दीवाना सिन्धु परिवार भी समय चक्र के साथ चलता हुआ आर्थिक रूप से कमजोर होता गया, फिर भी आर्थिक समस्याओं का सामना करते हुए देश और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व निर्वाह करने में पूरी तरह सजग रहा।

आपकी कार्य-शैली से प्रभावित होकर उड़ीसा सरकार ने आपसे पूछा कि वह कौन-सी राज की बात है कि इतने लम्बे कार्यकाल में कभी भी आपके कर्मचारियों ने हड़ताल का सहारा न लिया। तब आपने कहा, मैं इस बारे में कुछ भी नहीं कहूंगा, जाइए और मेरे कर्मचारियों से बात कीजिए। राज की बात वही बताएंगे। वास्तविकता यह है कि आपने अपने कर्मचारियों को सदैव अपने परिवार का एक अंग समझा। प्रत्येक कर्मचारी को सहभागीदार बनाकर व्यवसाय प्रबंधन की एक नई मिसाल पेश की। इस प्रकार से जब आपने कर्मचारियों के हितों का भरपूर ध्यान रखा, तब कर्मचारी भी पूरी तल्लीनता से कन्धे से कन्धा मिलाकर आपकी व्यावसायिक

उपलब्धियों का दायरा बढ़ाते रहे।

विचार वटवृक्ष की भांति बढ़ते हैं। चौ. मित्रसेन जी के जीवन संघर्ष के प्रारंभिक दिनों की घटना है। उन दिनों आप एक सामान्य गृहस्थी थे और रोहतक में लेथ मशीन में मैकेनिक के रूप में कार्यरत थे। एक सुबह आप अपने काम पर जा रहे थे कि रास्ते में एक निर्धन स्त्री अपनी बच्ची के साथ बीमार अवस्था में दिखाई दी तो वे अपने कार्य पर न जाकर उसे पास के एक चिकित्सक डॉ. ऋषिकेश सूरी की क्लीनिक पर ले गए और जब दवाइयों के पैसे देकर चुपचाप वहाँ से जाने लगे तो डॉ. साहब ने विचार किया कि यह इस व्यक्ति का परिवार तो नहीं लगता, तो यह व्यक्ति कौन है। डॉ. साहब ने अपने सहायक से उस अपरिचित व्यक्ति को वापस बुला भेजा तो चौधरी साहब ने कहा कि इससे मेरा कोई पारिवारिक संबंध नहीं, मैं तो महज इसकी सहायता करना चाहता था। इस पर डॉ. साहब ने कहा कि यदि फिर कभी कोई जरूरतमंद मिल जाए तो मुझे बता देना, लेकिन अपनी जेब से पैसे मत देना।

आत्मीयतापूर्ण व्यवहार : चौ. मित्रसेन जी इतने मिलनसार एवं स्नेही स्वभाव के है कि आपसे मिलने वाला हर व्यक्ति शांति अनुभव करता है। उसके भाव उस पथिक के भांति होते हैं जोकि चांद की शीतल चांदनी में चलते-चलते जब नजरें उठा कर देखता है तो उसे लगता है कि चांद भी उसके साथ-साथ चल रहा है और वह एक सुखद आनन्द की अनुभूति करता है। ऐसे ही चौ. साहब की घनिष्ठता का बोध होता है।

माता परमेश्वरी देवी जी (धर्मपत्नी चौ. मित्रसेन जी आर्य) के जीवन दर्शन के बिना भी यह अति संक्षिप्त जीवन परिचय अधूरा होगा। ऐसी धर्मपरायण महिला भारत माता के उदर से यदा-कदा ही जन्म लेती हैं। माता जी में अदम्य साहस और उत्साह है। अपने दाम्पत्य जीवन में पति अनुगामिनी का जो सुन्दर रूप दिखाया है वह स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। आप में मां की ममता एवं पिता की भांति वात्सलयपूर्ण कठोरता भी है। चौ. साहब के सुदूर उड़ीसा में कर्मशील होने के कारण बच्चों को पिता का साक्षात निर्देशन मिलना संभव न था। ऐसे में बच्चों को वैचारिक एवं मानसिक रूप से समृद्ध किया माता परमेश्वरी देवी और श्री मित्रसेन जी के पिता चौ. शीशराम जी ने जोकि स्वयं ही आत्मबल एवं ईश्वर विश्वास की एक जीती जागती मिसाल थे।

आप दूसरों के लिए बहुत कुछ कर रहे हैं। आपके परोपकार की भावना से ही अनेक संस्थाएं फल-फूल रही हैं। आप धन्य हैं। कहने पर आपने बड़े ही सहज भाव से कहा कि मैं किसी के लिए कुछ नहीं कर रहा इसमें मेरा अपना हित है। किए हुए कर्मों का फल इंसान को मिलता ही है। ये जो कुछ है भगवान का दिया हुआ है, इसमें मेरा क्या है। ये सब तो पूर्वजों के आशीर्वाद का फल है।

बद्रीप्रसाद आर्य, रोहतक
(हरियाणा)

शुभकामनाएं



1. भटकों को वैदिक राह पर ला रहे हैं

आर्य समाजी नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों में चौ. रणबीर सिंह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आपके पिता चौ. मातुराम क्षेत्र के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी व ताऊ डॉ. रामजी लाल अपने आप में एक संस्था थीं। आपने एक लम्बा व स्वच्छ राजनीतिक जीवन सच्चे कर्मयोगी के रूप में जिया है। आप मंत्री तथा सांसद भी रहे हैं तथा संविधान सभा के एकमात्र जीवित सदस्य हैं।



चौ. मित्रसेन से मेरा परिचय दशकों पुराना है। चौ. साहब ने जीवन में जो आध्यात्मिक और आर्थिक उन्नति की है, वह बहुत ही कम लोग कर पाते हैं। खांडा खेड़ी (हिसार) में वैदिक सम्पदा के संवाहक चौ. शीशराम जी आर्य के घर में जन्मे चौ. मित्रसेन वैदिक लोरियां सुनते-सुनते बड़े हुए। आर्य समाजी परिवार होने के कारण एक महान पिता के सद्गुण इनमें भी आए। वैदिक विचारधारा के अनुसार जीवनयापन करने वाले चौ. मित्रसेन का अभिनन्दन ग्रन्थ लिखना भावी पीढ़ी को नया रास्ता दिखाने वाला साबित होगा। पिछली तीन पीढ़ियों से हमारा और सिन्धु परिवार का बहुत घनिष्ठ संबंध है।

पीढ़ियों से आपका परिवार महर्षि दयानंद सरस्वती का अनुयायी है और ऋषि सिद्धांतों को आगे बढ़ाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जीवन यात्रा के आरंभिक दौर में नवयुवक मित्रसेन एक कर्मयोगी की भांति कर्मक्षेत्र में उतरे और भारतवर्ष के अति पिछड़े क्षेत्र उड़ीसा के गरीब आदिवासियों के बीच कार्य आरंभ किया।

नियमित, संयमित और अनुशासित जीवन पद्धति पर चलते हुए आपने जहाँ अनेक उद्योग विकसित किए, वहाँ मानवीय सेवाओं के प्रति भी उदार दृष्टिकोण अपनाते हुए आदिवासी इलाके में भी गुरुकुल आदि शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से मानव सेवा को मूर्त रूप दिया। एक अमानवीय योजना के अंतर्गत जब ईसाई मिशनरीज भोले-भाले आदिवासियों को लोभ और लालच देकर धर्म परिवर्तन करवा रहे थे, तब आपसे यह सब देखा न गया और आपने शुद्धि आंदोलन चला कर अब तक हजारों लोगों को वैदिक धर्म में शामिल करवाया।

समाज के उपेक्षित और असहायों की मदद करना आपका सहज स्वभाव है। गुजरात के भूकंप पीड़ितों और उड़ीसा की भयावह

त्रासदी में चौ. मित्रसेन ने पीड़ितों की सेवा ही नहीं की, बल्कि आर्थिक रूप से भी खुलकर उनकी मदद की। आपके परिवार ने सन् 1930 में खांडा खेड़ी गाँव में जब आर्य समाज की स्थापना की, तब उस मंदिर का शिलान्यास मेरे ताऊ डॉ. रामजीलाल हुड्डा, जो एक प्रखर आर्य समाजी और तत्कालीन सीएमओ हिसार थे, से करवाया था।

चौ. मित्रसेन की स्वदेशी भारतीय संस्कृति वैदिक धर्म के प्रति गहरी आस्था है। यह उनके मकान में वैदिककालीन ऋषि-मुनियों, संत-महात्माओं और स्वतंत्रता सेनानी महापुरुषों की चित्र श्रृंखला से स्वतः स्पष्ट हो जाता है। परंपरागत मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए आपने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की है। चौ. मित्रसेन ने अपने जन्म स्थान खांडा खेड़ी में भी कन्याओं के लिए एक महाविद्यालय की स्थापना की है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि ग्रामीण परिवेश में जन्म लेकर जब इंसान उन्नति के शिखर पर पहुँचता है तो अपने घर-बार को भूल जाता है, लेकिन चौ. मित्रसेन आज भी अपने जन्म-स्थान से सहृदयता से जुड़े हुए हैं। वनस्पति मानव जगत के प्राण हैं। आज बड़े-बड़े बाग-बगीचे साफ हो रहे है और कालोनियों में धुआं पर्यावरण को नष्ट कर रहा है। ऐसे समय में श्री मित्रसेन जी ने बागवानी के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किए। प्रकृति के नए रंग बिखेर कर हरित क्रांति को साकार किया। फलस्वरूप भारत सरकार ने आपको 'कृषि विषारद' उपाधि से सम्मानित किया।

योग भारतीय संस्कृति की सदियों पुरानी देन है। महर्षि पतंजलि के अनुसार योग और प्राणायाम अपना कर समस्त रोगों से मुक्त हुआ जा सकता है। आपने अपने परिवार की तरफ से जब स्वामी रामदेव योग शिविर का आयोजन करवाया, उस समय दीप प्रज्ज्वलन करने हेतु मुझे आमंत्रित किया। उस समय मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। नब्बे वर्ष की आयु में भी मैं प्रफुल्लित मन से प्रातः साढ़े तीन बजे शिविर पंडाल में पहुँचा और भरपूर आनन्द उठाया। मैंने अपने जीवनकाल में अनेक बसंत देखे, लेकिन जैसे उन दिनों ब्रह्ममूहर्त की सुन्दर और आत्मविभोर करने वाली प्रातः रश्मि किरणों को देखा, वह सब स्मृति पटल पर चिरस्थायी रूप से अंकित रहेगा। चौ. मित्रसेन के योग अनुरागी स्वभाव का ही सुखद परिणाम है कि समस्त रोहतक वासियों के लिए ऐसा सुनहरा अवसर उपलब्ध हुआ।

चौ. साहब ने अपने जीवन-दर्शन से दिखा दिया कि जीवन सफर में संतुष्ट और आस्तिक भावना के साथ चलते रहने से ही समग्र विकास संभव है। मैं चौ. मित्रसेन जी के इस अभिनन्दन अवसर पर अपनी शुभकामनाएं देता हूं और उनकी दीर्घायु तथा स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं।

चौ. रणबीर सिंह
स्वतंत्रता सेनानी व पूर्व सांसद
रोहतक (हरियाणा)

2. वैदिक जीवनशैली का मूलमंत्र है पुरुषार्थ

प्रो. शेरसिंह पूर्व केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री हैं। आपकी गिनती आर्यसमाज के अग्रणी नेताओं में की जाती है। आपने हिंदी सत्याग्रह आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी। स्वच्छ राजनैतिक जीवन जीने वाले प्रो. शेर सिंह हरियाणा राज्य के निर्माण में विशेष योगदान के लिए जाने जाते हैं।

वैदिक जीवनशैली का मूलमन्त्र है, पुरूषार्थ को परमार्थ से जोड़ना। आर्यबन्धु मित्रसेन जी इसकी जीवन्त मिसाल हैं। सच्चाई, ईमानदारी और निष्ठा के साथ संघर्षरत रहकर उन्होंने व्यापार के क्षेत्र में करिशमाई सफलता प्राप्त की । समाजसेवा में संलग्न संस्थाओं एवं समाज सेवी मित्रों का तन मन धन से सहयोग करने में मित्रसेन जी ने सदा तत्परता और उदारता दिखाई। उनकी सदा यह मान्यता रही ''देने वाला और है जो देता दिन रैन, दुनिया मेरा नाम ले या विध नीचे नैन''।



मित्रसेन जी को आर्यसमाज के संस्कार अपने पिता से विरासत में मिले। भारतीय समाज शास्त्र के अनुसार मित्रसेन जी उस अनिवार्य सामाजिक कर्तव्य का पालन कर रहे हैं जिसे देखकर समाज को यह प्रेरणाप्रद संदेश मिलता है कि सफल, समर्थ तथा प्रबुद्ध व्यक्ति का कर्तव्य क्षेत्र परिवार से आरम्भ अवश्य होना है परन्तु वहाँ समाप्त नहीं होता, अपितु सामर्थ्य के अनुरूप उसके दायित्व का क्षेत्र विस्तृत होता जाता है। मित्रसेन जी जैसे सामर्थ्यवान्, उदारमना तथा अनुकरणीय चरित्र के धनी व्यक्ति के अभिनंदन का आयोजन करने वाले सभी मित्रजन बधाई के पात्र हैं।

परमपिता से प्रार्थना है कि मित्रसेन जी सदा स्वस्थ रहें और दीर्घायु हों। उनके समस्त शुभ संकल्प पूर्ण हों। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

प्रो. शेर सिंह
एम-14, साकेत
नई दिल्ली

''संकट आने से पूर्व उपाय करने वाला व्यक्ति सुखी रहता है और आने वाले संकट की उपेक्षा करने वाला दुःख झेलता है। व्यक्ति को हमेशा सतर्क और सावधान रहना चाहिए।''

3. अनवरत आगे बढ़ रहे हैं - चौ. मित्रसेन

संयुक्त पंजाब के पूर्व विधायक श्री उदयसिंह मान जाट शिक्षण संस्था, रोहतक के कई वर्ष तक प्रधान रहे हैं। आप सच्चे कर्मयोगी हैं और आर्य समाज तथा चौ. छोटूराम के समर्पित कार्यकर्ता के रूप में पूरे क्षेत्र में जाने जाते हैं।



कृतज्ञ समाज जब अपने आदर्श पुरुषों का अभिनन्दन उनकी देह रहते करे तो यह एक अच्छी बात तो है ही, साथ ही एक अच्छा लक्षण भी है। क्योंकि जहाँ गुणियों की स्तुति होती है, वहाँ गुणी पैदा होते हैं। ऐसी पुण्यात्माओं की भव्य आत्मा और सुगन्धि से जहाँ समाज विराट और आभामय बनता है, वहीं यदि समाज में गुणियों की उपेक्षा अर्थात् दुर्गुणियों की पूजा-पूछ होती है तो इस का पूरा परिवेश दुर्गन्धमय, सड़ान्धभरा ही रहता है, जिस का उपचार प्रयासों के प्रारंभ होने के बावजूद सदियों का समय ले लेता है।

आज एक ऐसे ही महापुरुष के अभिनन्दन की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। मुझसे भी कहा गया है कि मैं चन्द पंक्तियां उनके विषय में लिखूं। वस्तुतः यह मेरा सौभाग्य ही है। चौधरी मित्रसेन सिन्धु ने अपनी जीवन यात्रा के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं और 'जीवेम शरदः शतम्' आदर्श के शिखर को छूने की ओर अग्रसर हैं। उनके जीवन में 'यो जागार तमृचः कामयन्ते', वेदोक्ति अपनी पूर्णता से चरितार्थ होती दिखाई देती है। इनका जीवन एक जागृत पुरुष का आदर्श है, अतएव अनुकरणीय जीवन है। एक छोटे से कार्मिक से प्रारम्भ होकर प्रसिद्ध उद्योगपति बनने तक की यह यात्रा आश्चर्यजनक मोड़ों-पड़ावों से अटी पड़ी है, जिस पर एक अकेला पथिक अनेकानेक बाधाओं-अवरोधों, दुखों-कष्टों की परवाह किए बिना आत्मविश्वास और परमात्मा के भरोसे को सम्बल बनाए कमल सरीखी सदाबहार मुस्कान अपने होंठों पर सजाए तथा परहित साधन के ऊंचे अरमान दिल में संजोए अनवरत आगे-ही-आगे बढ़ता दिखाई देता है। उन्होंने एक जागृत जीवन अपनाया और ऋचाओं ने उसे चाहा तथा झोलीभर वह सब दिया, जो इस लोक में किसी भी मानव के लिए प्राप्य है।

चौधरी मित्रसेन सिन्धु एक सुडौल, स्वस्थ शरीर तथा संस्कारित आत्मा के संयोग का नाम है, एक ऐसा अनूठा संयोग जो कहीं-कहीं और कभी-कभी ही देखने में आता

है! आप वैदिक संस्कारों की गठरी बांध कर अपने साथ लाएं थे और इनमें निरंतर वृद्धि करते रहे। सुपूत की सुकरणियों से माता-पिता धन्य हुए, पूरा परिवेश धन्य हुआ और धरा का हर वह टुकड़ा भी धन्य हुआ, जहाँ उनके कदम पड़े। श्री मित्रसेन जी ने धर्मपूर्ण कमाई करते हुए धर्म की वृद्धि में इसे लगाया। सैकड़ों हाथों से कमाते रहे और हजारों हाथों से परोपकार की राह पर बिखेरते रहे। यह परंपरा इनके परिवार में पुत्रों, पौत्रों द्वारा कार्यभार संभाल लेने पर भी जारी है। भविष्य में भी इनके चलते रहने की संभावनाएं पूरी हैं, क्योंकि श्री मित्रसेन के प्रबल संस्कारों का बल इसे गति देते रहने के लिए चिरकाल तक मौजूद रहेगा। सिन्धु साहब के लिए हयात (जिन्दगी) जौके - सफर (सहज यात्रा) के सिवा कुछ नहीं रही। यह मर्दे-कलन्दर दुनियां के समन्दर में आकंठ डूब कर भी अनभीगा ही रहा।

राष्ट्र के मुक्ति-आन्दोलन से लेकर विकास -क्रान्ति तक में इनकी भूमिका सराहनीय रही है। दम और तप की प्रयोगशाला में स्वयं को निखारता हुआ यह महामानव आज 'शम्' के शिखर पर है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की उदात्त भावना का मानी होकर दान और दया की दुर्लभ वृत्तियों का धनी बन गया है। यह एक ऐसी उपलब्धि है, जिसे सब मायनों में अनूठी कहा जा सकता है। बिना मांगे देना और दिखावे से एकदम दूर रहना, चौधरी मित्रसेन जी की दानशीलता की विशेषता रही है। दीनबन्धु सर छोटूराम धर्मशाला, बहादुरगढ़ के लिए एक लाख तथा कन्या गुरुकुल, लोवाकलां के लिए पचास हजार रुपये के दान का उल्लेख उदाहरण रूप में किया जा सकता है। ऐसा वंदनीय चरित्र अभिनन्दनीय है ही, हमारे जैसे लोग इस का इज़हार न करें तो भी कोई फर्क पड़ने वाला नहीं। इनके जीवन में रही औपचारिक शिक्षा की कमी को इनके व्यावहारिक ज्ञान की श्रेष्ठता ने पूरा कर दिया। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में इनका योगदान श्लाघनीय है। बीसियों शिक्षण संस्थाएं इनके सहयोग से चल रही हैं। इनकी शानदार जिंदगी का राज़ इक़बाल के इस शेर में खोजा जा सकता है-

यकीं मोहकम अमल पैहम मोहब्बत पातहेआलम।
जेहादे जिन्दगानी में ये हैं मर्दों की शमशीरें।।

भावार्थ : विश्वास अटल के बल से मेलित कर्म निरंतर, सब के प्रति प्रेम से पूरित सुन्दर अंतर, नरवर के ये ही होते हैं अस्त्र-शस्त्र, जीवनरूप रणांगण में स्त्राहित वस्त्र।

ऋषि दयानंद और रहबरे-आजम सर छोटूराम के नक्शे-कदम पर निरंतर चलते हुए मित्रसेन सिन्धु शतायु हों, सिन्धु की भान्ति लहराते हुए समाज को सुख पहुँचाते रहे, ऐसी मेरी कामना है।

चौ. उदयसिंह मान
पूर्व एम.एल.सी., संयुक्त पंजाब
संरक्षक, दीनबन्धु सर छोटूराम
धर्मशाला, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

4. सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक

चौ. प्रियव्रत आर्य प्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाज सेवी हैं। लम्बे समय तक आर्यसमाज को नेतृत्व देने वाले चौ. प्रियव्रत ने कंझावला व जनकपुरी (दिल्ली) में भव्य शिक्षण संस्थान खड़ा करने में विशेष भूमिका निभाई।



मेरा संपर्क दीर्घकाल तक चौ. मित्रसेन जी के साथ रहा। आपसे पहली मुलाकात बड़ी ही आत्मीयता से हुई। धीरे-धीरे घनिष्ठता बढ़ती गई। चौ. साहब प्रत्येक कर्म क्षेत्र में अपने समकालीन युवाओं को प्रतिस्पर्धा में पीछे छोड़ते हुए आगे निकल गए। पूरा आर्य जगत आपके सुयश से वाकिफ है। आपके दादा जी, पिता जी तथा चाचा जी आर्य समाज का कार्य करते रहे हैं। आर्य परिवार में जन्म होने के कारण वैदिक धर्मानुरागी होना स्वाभाविक था। अत: आपने युवावस्था से ही अनेक सद्गुणों को आत्मसात कर लिया, जो आपकी कामयाबी का आधार बने। परिश्रम से आपको सफलता मिलती रही।

विख्यात समाजसेवी : जैसे-जैसे आप संपन्नता की सीढ़ियां चढ़ते गए, वैसे-वैसे समाजसेवा में आपकी सहभागिता भी बढ़ती गई। आज आपके सभी सुपुत्र और सुपुत्रियां आपके आचरण के अनुसार व्यापारिक क्षेत्र में अग्रणी हैं, तो समाज हितकारी कार्यों में भी खुले मन से सहयोग करते हैं। यह सब देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती है। आपने अनेक आर्य समाजों के मंदिरों का निर्माण करवाने में उदारतापूर्वक योगदान दिया है।

सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक : आप वैदिक प्रेमी हैं और जिस प्रकार से वैदिक ऋषिकाल का साक्षात दर्शन आपने अपने भवन में चित्रकारी के माध्यम से किया है, मैं उसे सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक की नजर से देखता हूं। मेरा मानना है कि ऐसा पुनीत कार्य आर्य बंधुओं को करना चाहिए, जिसे देखकर हमारी आने वाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों पर गर्व करें। मैं चौ. मित्रसेन जी के अभिनन्दन के शुभ अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामना और आशीर्वाद प्रेषित करता हूं और आशा करता हूं कि हमारे नवयुवक पूर्वजों की अमूल्य धरोहर वेदादि सद्ग्रंथों के प्रचार-प्रसार में अपनी सार्थक भूमिका निभाएंगे। चौधरी साहब के सुस्वास्थ्य की कामना के साथ।

चौ. प्रियव्रत आर्य
रोहतक (हरियाणा)

5. आदर्श व्यक्तित्व के धनी : चौ. मित्रसेन

आर्य जगत के गौरव,वैदिक साहित्य के प्रकांड विद्वान् तथा लेखक, ओजस्वी वक्ता डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुंबई) से सारा आर्य जगत परिचित है। आप परोपकारिणी सभा अजमेर के सदस्य हैं।



वीरभूमि हरियाणा का वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान रहा है। अनेक विद्वान, तपस्वी, संन्यासी, उपदेशक, दानवीर, शूरवीर, कार्यकर्ता इसी प्रान्त से आर्य समाज को प्राप्त हुए हैं। इसी प्रान्त के हिसार जिले के खांडा खेड़ी ग्राम में प्रसिद्व आर्य नेता एवं दानवीर चौ. मित्रसेन ने परिवार के निर्वाह का उत्तरदायित्व सम्भाला। कृषिकार्य, तत्पश्चात् लेथ मशीन के मेकैनिकल और तकनीकी कार्य को ज्ञात करके अहर्निश परिश्रम किया। सन् 1961 में उड़ीसा प्रान्त में इंजीनियरिंग वर्क्स नाम से कारखाना प्रारम्भ किया। उस क्षेत्र में भाषा की समस्या भी आपके लिए एक चुनौती थी, किन्तु ईश्वर विश्वास, निश्छल व्यवहार, अहर्निश क्रियाशीलता, मृदुभाषिता एवं कर्मचारियों के साथ सुमधुर व्यवहार, पारिवारिक संबंध संरक्षण आदि गुणों के कारण आपने दिन-दोगुनी और रात-चौगुनी उन्नति की।

आर्य समाज, सान्ताक्रूज, मुम्बई द्वारा प्रारम्भ की गयी विद्वत् सेवा निधि योजना में आपने मेरे निवेदन पर लाखों रुपये का सहयोग देकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिसके परिणामस्वरूप इस समय इस योजना में लगभग तीस लाख रुपये एकत्र हो गए हैं, जिससे 18 विद्वानों को प्रतिमास 800 रुपये सम्मान राशि भेजी जा रही है। आप महर्षि दयानंद की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा, अजमेर के वरिष्ठ उपप्रधान हैं। सभा को भी आपका सहयोग प्राप्त होता रहता है। गुरुकुल, आमसेना, कन्या गुरुकुल, आमसेना के आप प्रधान पद को सुशोभित कर रहे हैं।

आपने परममित्र मानव निर्माण सेवा ट्रस्ट के नाम से अपना एक ट्रस्ट बनाया, जिसके द्वारा गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति दी जाती है। चौ. मित्रसेन जी का निश्च्छल व्यवहार, सरलता और नम्रता, कुशल उद्योगपति और आर्य दानवीर के रूप में समस्त आर्य जगत् के लिए अनुकरणीय है।

डॉ. सोमदेव शास्त्री
मुम्बई (महाराष्ट्र)

6. प्रेरणा के स्रोत चौ. मित्रसेन

श्री बृजमोहन मुंजाल देश के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाज सेवक हैं। आप देश के अग्रणी उद्योग 'हीरो होंडा' समूह को मुखिया के रूप में मार्गदर्शन दे रहे हैं।



वैदिक धर्म के अनुयायी चौधरी मित्रसेन सच्चे समाज सेवी और धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति है। मैं उन्हें व उनके कार्यों से भली-भाँति परिचित हूँ। चौ. मित्रसेन ने व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी मेहनत और बुद्धि से सफलता की जिन ऊंचाइयों को छुआ हैं वह आम लोगों के प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी मेधा से सफलता प्राप्त की हैं और भारत के प्रमुख व्यवसायियों में अपना नाम अंकित करवाया है।

अपने व्यापार विस्तार करने के उपरान्त, व्यापार की जिम्मेदारी पुत्रों को सौंपकर, उन्होंने अपना ध्यान सामाजिक सेवाओं व कार्यों में लगा दिया। दृढ़ संकल्प एवं सात्विक संस्कारों के कारण शीघ्र ही उनके द्वारा किये गए कार्य उज्ज्वल नक्षत्र की भाँति चमकने लगे।

चौ. मित्रसेन आज शिक्षा और समाज सेवा में अपनी समय लगा रहे हैं। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा पद्धति को जीवित रखने के लिए देशभर में अनेक गुरुकुलों की स्थापना की तथा अनेक संस्थाओं को विभिन्न प्रकार से सहायता प्रदान की। उनके संचालन में इण्डस पब्लिक स्कूल, सिन्धु अस्पताल, कृषि फार्म आदि अनेक सामाजिक संस्थाएं सुचारू रूप से कार्य कर रही है। उनके मार्गदर्शन में 'परममित्र निर्माण ट्रस्ट' की स्थापना हुई है। इस ट्रस्ट के माध्यम से वे समाज के दीन-दुखियों की सहायता करते हैं तथा देश की उन प्रतिभाओं को विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं जो अर्थाभाव के कारण समय से पहले ही दम तोड़ देती हैं। आज भारत के लगभग सभी गुरुकुलों में इन्होंने अपना योगदान दिया है।

सरल एवं प्रसन्नचित्त व्यक्तित्व के धनी चौधरी मित्रसेन के जीवन का मूलमंत्र 'सादा जीवन और उच्च विचार' रहा है।

मैं उनके द्वारा किये गए कार्यों की सहृदय प्रशंसा करता हूँ और उनकी दीर्घायु की कामना करता हूँ।

बृजमोहन लाल मुंजाल
हीरो होण्डा मोटर्स लि., नई दिल्ली

7. सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षक

श्री सुभाष मेहरिया राजस्थान के सीकर जिले से भाजपा सांसद व पूर्व केन्द्रीय मंत्री हैं। समाज के हर वर्ग के दुख-दर्द में सम्मिलित होने के लिए हमेशा आगे रहते हैं। आप सरल, धार्मिक, कर्मठ और विद्वान व्यक्ति हैं।



चौ. मित्रसेन के अभिनंदन ग्रंथ के प्रकाशन के बारे में जैसे ही मुझे पता चला तो मैं अपनी भावनाओं को रोक नहीं पाया। वस्तुतः चौ. मित्रसेन भारतीय संस्कृति के संरक्षक के रूप में दिखाई देते हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के उच्च मूल्यों को न केवल अपने जीवन में उतारा, अपितु अपनी संतानों को भी ये संस्कार दिये।

चौ. मित्रसेन का पूरा जीवन भारतीय परम्पराओं से युक्त दिखाई देता है। चौ. साहब ने भारतीय शिक्षा पद्धति को भी बचाए रखने के लिए देश के विभिन्न भागों में गुरुकुलों की स्थापना की। ये अनेक ऐसी संस्थाओं को दान देते हैं जो सांस्कृतिक मूल्यों को बचाए रखने की कोशिश कर रही हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने बच्चों को नये जमाने की शिक्षा देने के लिए भी आधुनिक शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की है।

चौ. मित्रसेन समाज की विभिन्न रूपों में सेवा करते हैं। सेवा करने के पीछे उनका उद्देश्य अपना नाम कमाना नहीं है, अपितु वे इसे अपना ही कर्म मानते हैं। उनका मानना है कि किसी की सहायता करने से व्यक्ति बड़ा नहीं हो जाता, वह अपनी सहायता भी करता है। जैसा कि भारतीय परंपरा में भी दान को बहुत बड़ा माना गया है। उसी के संदेश को लेकर चौ. साहब भी बिना किसी प्रचार के समाज के विभिन्न वर्गों की सेवा करते रहते हैं। इस उम्र में भी वे किसी प्रकार की शिथिलता नहीं दिखाते, उनकी इस प्रवृति का असर उनके पूरे परिवार पर है। अतिथियों को ईश्वर के समान मानना इनके परिवार के हर सदस्य की रग-रग में बसा हुआ है।

इस तरह की महान आत्मा के अभिनंदन ग्रंथ के प्रकाशन पर मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि चौ. मित्रसेन जैसे व्यक्तित्व दीर्घायु हो।

सुभाष मेहरिया
सांसद, पूर्व केन्द्रीय मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली

8. मानवीयता से युक्त - चौ. मित्रसेन

कुमारी शैलजा आर्ष गुरुकुल परंपरा की समर्थक हैं तथा केन्द्रीय मंत्री के पद पर सुशोभित हैं। आप पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौ. दलबीर सिंह की सुपुत्री तथा अपने परिवार की गौरवशाली सामाजिक व राजनैतिक विरासत की उत्तराधिकारी हैं।



चौ. मित्रसेन जी के साथ हमारे परिवार के आत्मीयपूर्ण संबंध है। उनके पास जाने पर हमें कभी भी परायेपन का अहसास नहीं होता है। ऐसा लगता है कि परिवार के किसी बुजुर्ग का हाथ हमारे सिर पर है।

चौ. मित्रसेन एक ऐसी शख्सियत है जिनके बारे में जो बताया जाये, वह थोड़ा ही है। जीवन के संघर्षपूर्ण दौर से निकलकर एक विशाल साम्राज्य स्थापित करना आसान काम नहीं है। इस काम के अतिरिक्त उनके अंदर मानवीय भावना का जो उद्रेक मिलता है, वह अन्यत्र दिखाई नहीं देता। वे मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत है। वे किसी के कष्ट को नहीं देख सकते। समाज में असहायों, महिलाओं और पीड़ित वर्ग के लिए वे खुले हाथ से दान देते हैं। कन्याओं के शिक्षा के लिए उन्होंने गुरुकुलों की जो विशाल श्रृंखला चलाई है, वह अपने आप में एक मिसाल है। उन्होंने आदिवासी क्षेत्रों में जाकर भी लोगों की सेवा की हैं। इस आयु में आकर भी समाज सेवा के कार्यों में कभी पीछे नहीं हटते।

चौ. मित्रसेन जी ने भारतीय परंपरा को पूर्णतया अपनाया है। इसका आभास उनके विशाल भवन में प्रवेश करते ही मिल जाता है। उन्होंने यही संस्कार अपने बच्चों को भी दिए हैं। इनकी खास बात यह है कि ये अपने किए गये कार्यों को कभी भी प्रचार का माध्यम नहीं बनाते। इनके अभिनंदन ग्रंथ के प्रकाशन से ऐसे अनेक लोगों को प्रेरणा और उत्साह मिलेगा जो संघर्ष के दौर से गुजर रहे हैं। मैं चौ. मित्रसेन जी की दीर्घायु की कामना करती हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वे इनमें इतनी शक्ति दे कि समाज सेवा के कार्य निर्बाध चलाते रहें।

कुमारी शैलजा
केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली

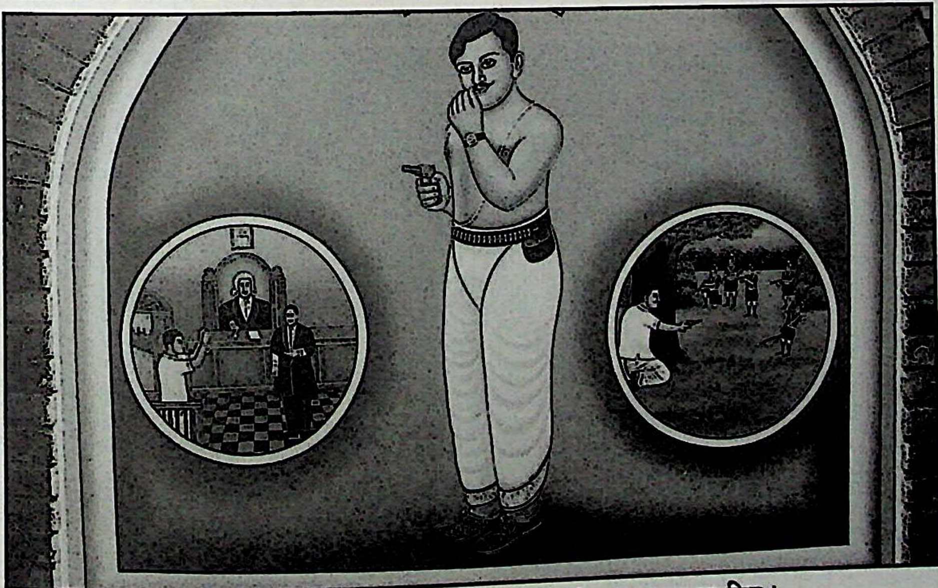
9. वैदिक विचारधारा के आधार

श्री रामनाथ सहगल से सारा आर्य जगत परिचित है। महर्षि दयानंद उपदेशक विद्यालय, टंकारा के विकास में आपका विशेष योगदान हैं। डी.ए.वी. संस्थाओं के प्रबंधन में शीर्ष पदों पर रहे श्री सहगल शिक्षा में वैदिक मूल्यों व संस्कारों के पक्षधर रहे हैं।



श्री मित्रसेन आर्य जो कि पिछले छह दशक से भी अधिक समय से वैदिक विचारधारा के आधार, राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में सतत् प्रयासरत हैं, इनका अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करना बहुत अच्छा कार्य किया है। मेरा श्री मित्रसेन से पिछले पच्चीस-तीस वर्षों से पारिवारिक संबंध है। मैं उनकी कार्यशैली को देखकर बहुत प्रभावित होता हूं। उन्होंने भारत के आर्य समाजों एवं इससे जुड़ी संस्थाओं और विशेषकर भारतभर के समस्त गुरुकुलों की तन-मन-धन से जो सेवा की है, उसकी समस्त आर्य परिवारों में भूरि-भूरि प्रशंसा होती है। शुभकामनाओं सहित।

रामनाथ सहगल, नई दिल्ली



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में वीर चंद्रशेखर आजाद का चित्र।

10. सभा के सहयोगी श्री मित्रसेन आर्य

श्री गजानंद आर्य अजमेर में परोपकारिणी सभा के प्रधान हैं और आर्य समाज के प्रचारक हैं। आप सुविख्यात उद्योगपति हैं तथा आपका पूरा परिवार वैदिक आदर्शों की प्रतिमूर्ति रहा हैं।



श्री मित्रसेन आर्य प्रसिद्ध व्यवसायी एवं समाजसेवी हैं। आपका स्वभाव सौम्य एवं व्यवहार उदार है, जब से आर्य जी सभा के सदस्य बने हैं, तब से सभा के कार्यों में उनका भरपूर अधिकाधिक सहयोग प्राप्त रहा है। आप ऋषि दयानंद के प्रति अनन्य निष्ठा रखते हैं। अपने जीवन में आर्य सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन करते हैं। आपकी भांति आपका परिवार भी आर्य संस्कारों से ओत-प्रोत है।

आपको ईश्वर दीर्घायु प्रदान करे, आप सदा स्वस्थ रहते हुए निरंतर आर्य समाज और सभा की सेवा एवं मार्गदर्शन करते रहें ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

गजानंद आर्य
प्रधान, परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर (राजस्थान)



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में घोड़े पर सवार महाराज विक्रमादित्य का चित्र।

11. एक निष्ठावान व्यक्तित्व : मित्रसेन जी

श्री धर्मवीर अजमेर में परोपकारिणी सभा के आदर्शों का समाज में प्रचार-प्रसार कर रहे हैं तथा सभा के मंत्री हैं। परोपकारिणी सभा, अजमेर के मुख-पत्र 'परोपकारी' के अवैतनिक सम्पादक, आर्य विद्वान, ओजस्वी वक्ता व समसामयिक विषयों पर बेबाक राय रखने वाले श्री धर्मवीर आर्य समाज को महती सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।



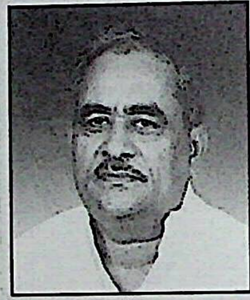
आर्य जी से मेरा परिचय बहुत पुराना नहीं है। आपकी सज्जनता और दानशीलता की चर्चा सुनता रहता था। आपके विषय में विशेष जानकारी स्व. पं. वेदपाल जी सुनीथ से तब मिली थी जब आप परोपकारिणी सभा के सदस्य मनोनीत हुए तब से आपके संपर्क में आने का अवसर मिला। आपको आर्यसमाज के कार्यों से विशेष लगाव है।

यह प्रसन्नता की बात है कि संसार में धनी होना महत्व रखता है परंतु विचारों का धन भी उसके पास हो ऐसे पुरुष विरले ही होते हैं। स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज की प्रेरणा से गुरुकुलों का सहयोग करना आपने अपना प्रमुख कार्य बनाया है। उड़ीसा और छत्तीसगढ़ में चलने वाले सभी गुरुकुलों पर आपका बरद हस्त है। आर्य साहित्य के प्रकाशन में भी आपकी गहरी रूचि है, भूले-बिसरे आर्य उपदेशकों के साहित्य का प्रकाशन कर आपने पुन: उन्हें समाज में स्मरणीय बनाया है। गत दिनों हरियाणा के सुविख्यात भजनो पदेशक पं. बस्तीराम की समग्र रचनाओं को एक जिल्द में प्रकाशित करने का स्तुत्य प्रयास किया है। स्वामी धर्मानंद जी की बीमारी के समय आपने कहा था शरीर को अकारण कष्ट देने को हमारे उपदेशक साधु-संन्यासी धर्म समझते हैं, इसके लिए वे पं. लेखराम को अपना आदर्श समझते हैं, परंतु यह आदर्श उचित नहीं, अभाव में मनुष्य कष्ट उठाए यह तो मजबूरी है, परंतु साधन सुविधा के रहते शरीर को अनावश्यक कष्ट देना यह शरीर और समाज के साथ अन्याय करना है। मनुष्य सुविधाओं से कार्य क्षमता बढ़ा सकता है। आपका यह विचार चिंतन के योग्य हैं। जब से आप परोपकारिणी सभा के सदस्य बने हैं तब से पूर्ववत आप बड़े ही उदार भाव से सभा का सहयोग जारी है। हम आपके दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हैं।

धर्मवीर, मंत्री, परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर (राजस्थान)

12. सादा जीवन उच्च विचार

डॉ. रामप्रकाश जी आर्य समाज के अग्रणी नेताओं में हैं तथा हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। पूर्व में राज्य में मंत्री रहे डॉ. रामप्रकाश ने स्वामी दयानंद और आर्यसमाज के सिद्धांतों पर उच्च स्तरीय लेखन किया है।



यह जानकर हर्ष हुआ कि मान्यवर मित्रसेन जी के जीवन पर एक पुस्तक लिखी जा रही है। चौधरी साहब सात्विक, सादा, कर्मठ और दृढ़ आर्य समाजी विचारों के यज्ञ प्रेमी सज्जन हैं। आपने अपनी मेहनत से उद्योग जगत में बड़ा नाम अर्जित किया है। उड़ीसा, छत्तीसगढ़ आदि क्षेत्रों में आपने गुरुकुल आदि खोलकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अनुकरणीय योगदान दिया है। आर्य समाजों, गुरुकुलों, गोशालाओं, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं परोपकारिणी सभा, अजमेर आदि की आप सदैव सहायता करते रहते हैं। साहित्य प्रकाशन में आपकी विशेष रुचि है।

मैं परमात्मा से आपकी दीर्घायु एवं अच्छी सेहत के लिए प्रार्थी हूं ताकि आप लंबे समय तक आर्य समाज की सेवा करते रहें।

डॉ. रामप्रकाश, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में ऐतिहासिक मंदिरों के चित्र।

13. आर्यत्व के धनी श्री मित्रसेन आर्य

मधुरभाषी, नीति-निष्ठावान श्री विमल वधावन आर्य जगत की नई पीढ़ी में उदीयमान कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आर्यसमाज की विभिन्न संस्थाओं में आप महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभालते आये हैं।



हिसार के किसान चौ. शीश राम के परिवार में 15 दिसंबर, 1931 को उत्पन्न पुत्र एक दिन वैदिक सिद्धान्तों का अग्रणी दूत बनेगा, यह किसी ने सोचा भी नहीं होगा, किन्तु पिता श्री शीशराम आर्य एवं माता श्रीमती जीवनी देवी से वैदिक विचार, कर्तव्य निष्ठा, धर्मनिष्ठा एवं देशभक्ति जैसे गुण संस्कारों के माध्यम से उन्हें जन्म से ही प्राप्त हो गए थे। साथ ही साथ बाल्यकाल से यज्ञमय माहौल में पले-बढ़े श्री मित्रसेन पर वैदिक सिद्धांतों का गहरा प्रभाव पड़ा। दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत के धनी श्री मित्रसेन जी ने मात्र 17 वर्ष की आयु में ही व्यवसाय प्रारंभ कर निरंतर उन्नति की ओर कदम बढ़ाए। धीरे-धीरे हरियाणा के साथ-साथ बिहार, छत्तीगढ़ और उड़ीसा में भी अपने व्यवसाय का विस्तार किया। आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में **दैनिक हरिभूमि** समाचार पत्र का प्रकाशन कर दिल्ली, छत्तीसगढ़ एवं हरियाणा की जनता को एक नई दिशा प्रदान की। शिक्षा के क्षेत्र में आपके कार्यों का उल्लेख शब्दों द्वारा नहीं किया जा सकता। उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के सुदूर वनवासी क्षेत्रों में आपने अनेक गुरुकुलों को सहयोग कर मानव मात्र की सेवा का अनुकरणीय कार्य किया। शिक्षा के प्रसार हेतु आपने दिल्ली डिफेंस स्कूल, दिल्ली पब्लिक स्कूल, इंडस पब्लिक स्कूल जींद एवं रोहतक, दिल्ली पब्लिक स्कूल दुर्ग और बिलासपुर तथा परम मित्र आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय खांडा खेड़ी की स्थापना कर समाज का पथ-प्रदर्शन किया।

वास्तव में आपका जीवन एक सत्यवादी, उदारवादी, दानवीर एवं धर्मप्रिय सखा के रूप में देखने के योग्य है। आपने अपने पूर्वजों से प्राप्त शुभ वैदिक विचारधारा को आने वाले कर्णधारों को एक विशाल रूप में देकर एक प्रशंसनीय एवं प्रेरणास्पद कार्य किया है। ईश्वर आप जैसा पुत्र, आप जैसा सखा, आप जैसा पिता, आप जैसा मार्गदर्शक सभी को दे। यही हमारी ईश्वर से प्रार्थना है। आपके शतायु होने की कामना के साथ।

विमल वधावन, नई दिल्ली

14. अनुकरणीय व्यक्तित्व : चौ. मित्रसेन आर्य

श्री वेदव्रत शास्त्री 'सर्वहितकारी' हिन्दी साप्ताहिक पत्र के संस्थापक और सम्पादक हैं। आप गुरुकुल झज्जर में आचार्य भी रहे हैं और सामाजिक साहित्य का प्रकाशन भी करते हैं।



पुरुषार्थी मनुष्य का सहायक ईश्वर होता है, आलसी का नहीं तथा स्वर्शवान् वायु भी पुरुषार्थी से कार्यसिद्ध का निमित्त होता है।

ईश्वर विश्वासी और आशावादी चौ. मित्रसेन आर्य ने उद्योग अर्थात् पुरुषार्थ पर अत्यधिक ध्यान दिया तथा उद्योग-व्यापार की निरन्तर वृद्धि की। जन्मभूमि हरियाणा से सुदूर प्रान्त उड़ीसा के घने जंगलों में जाकर आपने उद्योग स्थापित किए। ईश्वर ने भी आपके पुरुषार्थ को सफल बनाने में सहायता की और मित्रसेन जी स्वस्थ तन-मन के साथ-साथ धनसम्पन्न भी हो गए। कहा भी है - **उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः** - उद्योगी, श्रेष्ठ पुरुष के पास लक्ष्मी स्वयं आ जाती है। इसके उदाहरण, चौ.मित्रसेन जी के जीवन पर कुछ पंक्तियां लिख रहा हूं, जिन्होंने विगत 45 वर्षों में इतनी उन्नति की है, जो किसी भी नए उद्योगी के लिए एक उदाहरण और आदर्श कही जा सकती है।

कुछ समय पहले मैं गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा) के उत्सव पर गया था। समारोह के पश्चात् चौ. मित्रसेन जी ने अपने औद्यौगिक प्लांटों को दिखलाया। दो दिन तक मैंने इनके कार्य-विस्तार को देखा। प्रबंध व्यवस्था का सूक्ष्म निरीक्षण किया। लेखनी और वाणी उसका सम्पूर्ण चित्रण नहीं कर सकती। जैसे परमात्मा के लिए कहा गया है "स्वयं तदन्तः करणेन गृह्णाते" उसी प्रकार इनके पुरुषार्थ और तपस्या एवं उसके प्रतिफल को स्वयं इनके औद्यौगिक स्थलों पर जाकर ही भली-भांति प्रत्यक्ष किया जा सकता है। आजकल स्थान-स्थान पर इंजीनियरिंग कालेज खुले हैं। चौ. मित्रसेन जी भी खोल रहे हैं,किन्तु चौधरी साहब ने तो उर्दू के माध्यम से केवल प्राथमिक शिक्षा ही स्कूल में ग्रहण की थी। आगे जो कुछ सीखा-पढ़ा वह स्वयं के माध्यम और पुरुषार्थ पर ही आधारित है। चौ. मित्रसेन जी का जीवन अनुकरणीय है और इनका संगठित और अनुशासित आर्य परिवार भी वर्तमान समय का उत्तम परिवार कहा जा सकता है।

वेदव्रत शास्त्री
प्रधान गुरुकुल, झज्जर (हरियाणा)

15. आर्य संस्कृति के मूर्तिमान्

मूलरुप से बीघोपुर (नारनौल), हरियाणा के राव हरिश्चन्द्र ने साधारण अवस्था से जीवन यात्रा प्रारंभ की और शिखर तक पहुंचे। आप औषध निर्माण संस्थान - वैद्यनाथ भवन के महाप्रबंधक हैं। प्रतिवर्ष 'आर्यरत्न' नाम से एक लाख का पुरस्कार देने की परंपरा आपने आरंभ की है।

वेद के सच्चे अनुयायी, निःस्वार्थ, समाजसेवा, दान-शीलता, आसक्ति, अहंकार से रहित और आदर्श जीवन के धनी चौ. मित्रसेन आर्य एक ऐसा व्यक्तित्व है जो मिलने वाले हर मानव को अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर लेता है। तन-मन से स्वस्थ, धन से सम्पन्न, दूसरों के प्रति सम्मान, दया, सहयोग के भाव, समाज के लिए समर्पित गुणों से फलीभूत जीवन के धनी चौ. मित्रसेन जैसे कम ही धर्मात्मा मिला करते हैं।

आप पचहत्तर वर्ष की आयु में भी सक्रिय जीवन जी रहे हैं। आप अनेक शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों, आर्य समाज और धार्मिक आश्रमों के पदाधिकारी हैं एवं अनेक संस्थाओं के संस्थापक और संचालक हैं। आपके जीवन में वैदिक सिद्धान्त बचपन से ही कूट-कूट कर भरे हैं। उच्च विचार, सादा जीवन आपके दिन-प्रतिदिन के मूलभूत आधार हैं। आपका परिवार सम्पन्न और आर्य मर्यादाओं और संस्कारों से पालित-पोषित उदार परिवार है।

कुछ मानव ही ऐसे होते हैं जो दीपक बनकर रोशनी बिखेरते रहते हैं। वास्तव में आपका जीवन सही आर्य जीवन है। जिसने हरियाणा से लेकर मध्य-प्रदेश, उड़ीसा, बिहार और छत्तीसगढ़ तक अपने यश और कार्य क्षेत्र का विस्तार किया है। आप आर्य समाज के देदीप्यमान रत्न हैं। अपने जीवन काल में आर्य समाज द्वारा चलाए गए सभी सत्याग्रहों और आंदोलनों में आपने बढ़-चढ़कर भाग लिया और जेल भी गए।

औद्योगिक कार्यों के साथ-साथ आपके नेतृत्व में एक दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन भी होता है। अभिनन्दन के शुभ अवसर पर मेरी और मेरे परिवार की ओर से हार्दिक शुभ कामनाएं। आप सौ वर्ष से अधिक आयु को प्राप्त करते हुए, अदीन होकर यश और कीर्ति को फैलाते रहें, यही प्रभु से प्रार्थना और मंगल कामना है।

राव हरिश्चंद्र आर्य
मैनेजिंग ट्रस्टी, वैद्यनाथ भवन
नागपुर (महाराष्ट्र)

16. उज्ज्वल व्यक्तित्व श्री मित्रसेन

दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के स्नातक डॉ. सत्यव्रत राजेश वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ, गंभीर वक्ता और लेखक हैं।



आर्य समाज ने जिन अनेक विभूतियों को जन्म दिया है, उनमें मित्रसेन जी आर्य भी एक हैं।

इस परिवर्तनशील संसार में कौन मरता अथवा उत्पन्न नहीं होता, किन्तु जन्म लेना उन्हीं का सफल है जिनसे कुल उन्नत होता है। मित्रसेन जी ऐसा ही एक व्यक्तित्व हैं जो वेद के '*उत्क्रामात*' - जिस अवस्था में हैं, उससे ऊपर उठो, का जीता जागता उदाहरण हैं।

आपका विद्वानों, योगियों तथा संन्यासियों से सम्पर्क रहा है। आप वैदिक धर्मी, उदार, दानी, परदुखकातर, शांत, विनम्र तथा सेवाभाव से पूर्ण व्यक्तित्व रखते हैं। सदा प्रसन्न रहना तथा विषम परिस्थितियों में संतुलन न खोकर उचित समाधान खोजना आपके चरित्र की पहचान है। आप एक ऐसे कल्पवृक्ष सदृश हैं, जिसकी छाया में अनेक लोग लाभान्वित हो चुके हैं। आपका परिवार भी आदर्श है। जहाँ आपकी पत्नी एक आदर्श महिला हैं, वहीं आपके पुत्र- पुत्र वधुएं तथा पौत्र-पौत्रियां भी वैदिक पताका वहन करके तथा आदर्श जीवन जीने के लिए प्रशंसा के पात्र हैं। इतने पर भी आप में अभिमान का लेश भी नहीं है। आपके इस अभिनन्दन में हम भी सम्मिलित हैं, प्रफुल्लित हैं तथा परमात्मा से आपके सफल, स्वस्थ मंगलमय तथा दीर्घजीवन की कामना करते हैं। प्रभु! '*जीवेम शरदः शतम्*' आपके जीवन में चरितार्थ करें।

डॉ. सत्यव्रत राजेश
हरिद्वार (उत्तरांचल)

''यदि कोई व्यक्ति ऐसा सृजन करता है जो मूल्यवान हो तो वह स्वयं के लिए अथवा अपने साथियों के लिए इसका निरपेक्ष रूप से लाभ प्राप्त करने का दावा नहीं कर सकता है, बल्कि ऐसे मूल्यवान सृजन पर सभी व्यक्तियों का जन्मजात अधिकार होगा''

- रवीन्द्रनाथ टैगोर

17. आर्यत्व से परिपूर्ण : चौ. मित्रसेन

प्रो. कैलाशनाथ सिंह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पद को अनेक वर्षों से सुशोभित कर रहे हैं तथा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता हैं।



श्री मित्रसेन आर्य एक समर्पित, निष्ठावान, उद्यमी, स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त हैं। इनमें लक्ष्मी के साथ सरस्वती का मेल मणिकांचन योग ही कहा जाएगा।

आधी शताब्दी तक जनमानस से जुड़कर निःस्वार्थ समाज सेवा, ऋषि-ऋण से उऋण होने की अदम्य कामना वाले व्यक्ति विरले ही होते हैं। आपकी संतान आर्यत्व से परिपूर्ण है, यह जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा की भूमिका में श्री आर्य देश और समाज की सेवा से लोगों पर एक अलग छाप छोड़ते हैं। वैदिक हवन 'ओ३म्' के वाहक, धर्मानुरागी श्री मित्रसेन आर्य बरबस ही लोगों को अपनी ओर खींचकर सादा जीवन, उच्च विचार हेतु प्रेरित करते हैं। आर्य गुरुकुलों एवं अन्य शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से बच्चों में नैतिक मूल्यों की स्थापना और चरित्र निर्माण ही आपका लक्ष्य है। दैवी आपदाओं, सूखा, बाढ़, भूकम्प में सहायता, विद्वानों का सम्मान, कृषि क्षेत्र में 'विशारद' उपाधि से सम्मानित होना, पुस्तकों के प्रकाशन संबंधी कार्य, उदारभाव के मृदुभाषी, मिलनसार श्री आर्य का बहुआयामी व्यक्तित्व आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मील का पत्थर बनेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। परमात्मा श्री मित्रसेन जी को शतायु करें। श्री मित्रसेन आर्य अभिनन्दन के सफल प्रकाशन के लिये मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

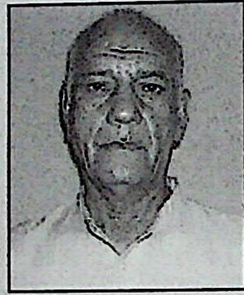
प्रो. कैलाशनाथ सिंह
प्रधान, आर्य सभा,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

''कर्म की बारीकियों को समझना अत्यंत कठिन है, अतः मनुष्य को चाहिए कि वह यह ठीक से जाने की कर्म क्या है, विकर्म क्या है और अकर्म क्या है।''

18. बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न : चौ. मित्रसेन

गुरुकुल, झज्जर के स्नातक सत्यवीर जी शास्त्री कर्मठ और विद्वान हैं और आर्य समाज के प्रसार-प्रचार में लगे हुए हैं।

परिवर्तनशील संसार में, ऐसा मानव कौन है ? जो जन्म से लेकर मृत्यु को प्राप्त नहीं होता, परन्तु जन्म लेना उसी व्यक्ति का सार्थक है, जिसके जन्म लेने से उसके कर्मों द्वारा उसके राष्ट्र, समाज, घर, परिवार तथा प्राणिमात्र का हित हो ।



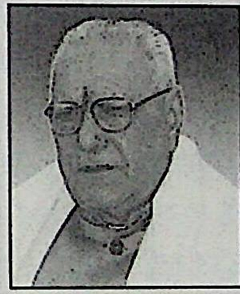
हमारे नायक चौ. मित्रसेन सिन्धु का जीवन चरित्र उपरोक्त उक्ति के अनुसार पूर्णरूपेण सार्थक है। इनके उज्ज्वल चरित्र को देखकर स्वत: इनके वंश का परिचय हो जाता है। इनके दादा, परदादा तथा स्वयं इनके पूज्य पिता चौ. शीशराम आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के सिद्धांतों के मर्मज्ञ थे। आपके पूर्वज जैलदार चौ. राजमल जी प्रधान, सातरोल खाप, प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सरदार भगत सिंह, भाई परमानन्द, शेरे पंजाब लाला लाजपत राय, पं. लखपत राय आदि देशभक्त आर्य नेताओं के मित्र थे। गत वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के प्रधान आचार्य बलदेव के नेतृत्व में गो-रक्षा हेतु हजारों गो-भक्तों ने लोकसभा के सामने प्रदर्शन किया। प्रदर्शन से पूर्व मैंने चौ. साहब से कहा कि हम आपकी तरफ से प्रदर्शनकारियों को फलाहार करवाना चाहते हैं। इन्होंने फलाहार हेतु मुझे 21 हजार रुपये देकर कहा कि इससे अधिक रुपया खर्च हो जाता है तो मुझसे आकर और ले जाना, परन्तु प्रदर्शन वाले दिन प्रात: से सायं तक भारी वर्षा होती रही, जिसके कारण कम लोग आए और केवल छह हजार रुपये ही खर्च हुए। जब मैं बाकी की रकम वापस करने गया तो चौ. साहब ने कहा - दिया हुआ दान वापस लेना धर्म नहीं होता और कहा इन पैसों को वेद-प्रचार के कार्य में लगा देना। दानवीर मित्रसेन दान के इस सिद्धांत से अच्छी तरह से परिचित हैं और वे दानवीर कर्ण की तरह दान देने के प्रति कभी संकोच नहीं करते। उनकी मुट्ठी कभी बंद नहीं होती।

परममित्र मानव निर्माण संस्था की स्थापना भी जन सेवा हितार्थ आपने की है। आप जैसे गुण संपन्न पुरुष की प्रत्येक जन ईश्वर से शतायु की कामना करते हैं।

सत्यवीर शास्त्री, मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा,
रोहतक (हरियाणा)

19. सादर अभिनन्दन

श्री हरवंशलाल कपूर ने डीएसपी पद से त्यागपत्र देकर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को मिशन बनाया। हिसार व दिल्ली में शिक्षा और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में आप विशेष रूप से समय लगा रहे हैं।



चौ. मित्रसेन आर्य के पिता श्री शीशराम जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के विद्वान् भजनोपदेशक थे। जब इस सभा का नाम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब-सिंध-ब्लोचिस्तान, लाहौर (पंजाब) था। आपने एक सत्यनिष्ठ आर्य पिता के सुयोग्य पुत्र होने का वरदान प्राप्त किया और अपने सत्यनिष्ठ पुरुषार्थ से शिल्पकला को अपनी जीविका का साधन बनाया। भारतवर्ष की स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय से पूर्व गाँव खांडा खेड़ी, जो श्री मित्रसेन आर्य का पैतृक स्थान है, में आर्य समाज की स्थापना की, जिसका संबंध आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब-सिन्ध-ब्लोचिस्तान, लाहौर से था।

आप देश के उन महापुरुषों में सम्मानित होते हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व, पुरुषार्थ और ईश्वर इच्छा से धन, ऐश्वर्य के अपार, अक्षय भंडार अर्जित किए और फिर उसे यज्ञमय जीवन में पात्रों के परोपकार के पश्चात् अपने व्यक्तित्व प्रयोग में और पारिवारिक उत्थान में व्यय किया।

आपने शिल्प-विद्या में कड़ी मेहनत करके रोहतक (हरियाणा) में सन 1957 में लेथ मशीन की कार्यशाला आरम्भ की। रोहतक में आर्य समाज के तत्कालीन कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर आपने आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ किया। प्रो. उत्तम चन्द शरर आपके समकालीन आर्य कार्यकर्ता थे। आपने सन् 1955-56 में उदयपुर राजस्थान में एक कारखाने में नौकरी की और अनुभव प्राप्त करके अपनी लेथ मशीन का कारखाना पुनः रोहतक में ही आरम्भ किया। आपने हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन में आर्य कार्यकर्ता के रूप में सत्यनिष्ठा से भाग लिया। सत्याग्रह में बन्दी के तौर पर जेल में रहे। आर्य भाषा हिन्दी के लिए सत्याग्रही के रूप में जेल जाना आपके सत्यनिष्ठ, समर्पित, आर्यत्व का मुखर प्रमाण है।

आपने सन् 1961 में बिहार प्रान्त की सीमा से लगे उड़ीसा के बड़बिल में *रोहतक इंजीनियरिंग वर्क्स* के नाम से लेथ मशीन का कारखाना लगाया और सन् 1964 में नवा

मंडी जिला सिंहभूम (बिहार) में ***हरियाणा इंजीनियरिंग वर्क्स*** के नाम से कारखाना आरम्भ किया।

पूर्व में सूर्य उदय के समय जैसा अलौकिक प्रकाश मनुष्य के आत्मिक उत्थान का कारण बनता है, उसी प्रकाश से हमारे चरित्र नायक चौ. मित्रसेन आर्य के सत्यनिष्ठ पुरुषार्थ पर परमात्मा ने सफलता की वर्षा की और आपका कार्य दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति करता गया। आपने *उड़ीसा माइनिंग कारपोरेशन लिमिटेड* और *टाटा आयरन ऐंड स्टील कंपनी* में ठेकेदारी का कार्य भी आरम्भ किया। आपकी सन्तान और धर्मपत्नी रोहतक में ही रहे और यहीं उनकी शिक्षा हुई।

आपने उन लोगों का अनुसरण नहीं किया जो बाहर जाकर धन अर्जित कर शहरों के वासी होकर अपने गाँव को भूल जाते हैं। आपने अपने पारिवारिक दायित्व की भूमिका को निभाते हुए दिल्ली, रोहतक और अन्य स्थानों पर निवास और कार्यालय बनाए। इसके साथ ही अपने गाँव में स्कूल और कालेज स्थापित किया। कोणार्क के सूर्य मंदिर का अनुकरण करते हुए सूर्य के साथ सप्त अश्व स्वरूप का भी अपने घर में निर्माण कराकर वैदिक संस्कृति के महान् परिचय का दर्शन कराया। यह सब विस्तृत निर्माण सिन्धु निवास में देखने के पश्चात् मनुष्य श्री मित्रसेन जी की सरलता, सादगी और उच्च विचारों को नमन करने के लिए विवश हो जाएगा। आपने स्थान-स्थान पर इंडस स्कूल के नाम से विद्यालय स्थापित किए हैं। हरियाणा में जींद और रोहतक में **'इंडस पब्लिक स्कूल'** दर्शनीय हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में **'दैनिक हरिभूमि'** समाचार पत्र का हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में प्रकाशन करके एक नई दिशा प्रदान की है।

देश का कोई ऐसा वैदिक विद्वान नहीं है जो उनके सम्पर्क में आया हो और उन्होंने उसका यथोचित सत्कार न किया हो। आर्य समाज, नागौरी गेट, हिसार से आपका पैतृक संबंध है, वहाँ भी आपने मुक्त हस्त दान दिया। सिन्धु गौत्र को सुशोभित करते हैं। आप सिन्धु सभ्यता के वंशज हैं। इसी सिन्धु सभ्यता को इसलाम मत वालों ने हिन्दू कहा और ईसाई मत वालों ने इंडस सभ्यता कहकर इस देश का नाम 'हिन्दुस्तान' और 'इंडिया' रखा। आपने इस गौरवमयी आर्य सभ्यता के सहस्त्रों शताब्दी पुराने इतिहास को जीवित रखा है। विचारवान् व्यक्ति 'इंडस' और 'सिन्धु' के शब्द को पढ़कर ही इनकी वैदिक संस्थाओं में समर्पित भावना का प्रत्यक्ष अनुमान लगा लेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं श्री मित्रसेन जी के अभिनन्दन समारोह में भव्य शोभा के दर्शन के लिये ईश्वर की इच्छा से जीवित रहूंगा। आपके जीवन से कौन-कितनी प्रेरणा ले सकता है, यह समारोह में आने वाले का अपना स्वभाव है। ओ३म् शान्ति।

हरवंशलाल कपूर

सहमंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

20. सफल उद्यमी

श्री शिवनाथ सिंह आर्य लगनशील और श्रद्धालु आर्य हैं। इस समय आप छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं।

चौ. मित्रसेन जी का जन्म सन् 1931 में ग्राम खांडा खेड़ी, जिला हिसार (हरियाणा) में हुआ। छः वर्ष के उपरांत सन् 1937 में प्रारंभिक शिक्षा हेतु इन्हें गाँव के स्कूल में दाखिल कराया गया, परन्तु विडम्बना रही कि तीसरी कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्हें सन् 1940 में विद्यालय छोड़ना पड़ा। धार्मिक रुचि, संयम, व्यायाम, प्राणायाम आदि के कारण इनकी बुद्धि तीव्र थी और पढ़ने में रुचि थी, अतः स्वाध्याय करते रहे।

चौ. मित्रसेन एक सफल उद्यमी होने के साथ-साथ पूर्वजों की तरह सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। रोहतक में व्यापार शुरू करने के साथ ही आपने सन् 1949 में झज्जर रोड के आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण कर ली। गुरुकुल, झज्जर के आचार्य भगवान् देव (स्व. स्वामी ओमानंद सरस्वती) का समाज में अत्यधिक आना-जाना था। अतः गुरुकुल, झज्जर के साथ संबंध हो गया। उदयपुर में नौकरी करते समय आपने नवलखा महल आर्य समाज की सदस्यता ले ली। कुछ वर्ष पश्चात् भुवनेश्वर में शहीद नगर, आर्य समाज के लगातार 9 वर्ष तक आप प्रधान रहे। भुवनेश्वर आर्य समाज में डीएवी स्कूल खोलने में आपने महत्त्वपूर्ण आर्थिक सहायता दी। आपका परिवार पैतृक गाँव खांडा खेड़ी में विगत वर्षों से कन्याओं का एक स्कूल चला रहा है, जिसमें पहली से 12वीं कक्षा तक की छात्राएं अध्ययन कर रही हैं। ऋषभ तीर्थ दमऊधारा जिला जांजगीर चांपा (छत्तीसगढ़) में 6वीं से 12वीं तक गुरुकुल आपके सुपुत्रों के संचालन में एवं स्वामी धर्मानंद जी की देख-रेख में चल रहा है। आपके परिवार द्वारा संचालित **'परम मित्र मानव निर्माण संस्थान'** विभिन्न गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करता है। आप सर्वथा निर्व्यसनी और परिश्रमी हैं। आपका जीवन अत्यंत सादा है, आपसे मिलने वाला अपरिचित व्यक्ति यह नहीं जान सकता कि आप इतने बड़े उद्योगपति और व्यवसायी हैं।

चौ. मित्रसेन जी की धर्मपत्नी माता परमेश्वरी देवी जी अत्यंत श्रद्धालु एवं धार्मिक प्रवृत्ति की महिला हैं। कदम-कदम पर आपने चौ. साहब का उत्साह बढ़ाया है। आप छाया की तरह चौधरी मित्रसेन जी के कार्यों में साथ देती रही हैं।

शिवनाथ सिंह आर्य, छत्तीसगढ़

21. हमें गर्व है अपने पिता श्री पर

श्री व्रतपाल आर्य छत्तीसगढ़ व उड़ीसा में व्यवसाय संभाले हुए हैं तथा चौ. मित्रसेन जी के सुपुत्र हैं।



जब यह अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है, तब मुझे भी पिता श्री के संबंध में लिखने को कहा गया। अभिनन्दन ग्रन्थ समिति के अध्यक्ष पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती और प्रतापसिंह शास्त्री के आग्रह पर लिखने लगा हूं कि हमें अपने पिता श्री पर गर्व है कि हम एक देशभक्त, निष्काम, कर्मयोगी, वैदिक पथ के पथिक, समाजसेवी पिता की सन्तान हैं। हमारे पिताश्री ने हमें सुशिक्षित किया और वैदिक पथ पर चलने की प्रेरणा दी है। अहिंसा के पुजारी, आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचारक, स्नेह की साक्षात् प्रतिमा, मित्रों के सम्मुख अत्यन्त विनम्र, किन्तु धुन के धनी और प्रखर स्वाभिमानी, दबना या झुकना तो जैसे उन्होंने सीखा ही नहीं है।

देश और समाज की सेवा, गरीबों के उत्थान, शिक्षा संस्था-प्रकाश के प्रसार, गुरुकुलों, गोशालाओं की स्थापना और साधु-सन्तों, महात्माओं की सेवा में गत 50-60 वर्षों से लगे हुए हैं। जब पिता श्री उड़ीसा प्रान्त के अन्तिम छोर पर और बिहार, छत्तीसगढ़ के क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयां स्थापित कर रहे थे। तब हम बहुत छोटे थे। इस दौरान हमारे दादा जी हमें वैदिक विचारधारा की शिक्षा से ओत-प्रोत करते थे। पूज्या माता जी हमारा पालन-पोषण करके मातृस्नेह की वर्षा करती थीं। पिताश्री कई-कई महीनों में घर (खांडा खेड़ी) आते थे। जब हमें पत्र द्वारा यह सूचना मिलती कि पिताजी शीघ्र आ रहे हैं तो हम अपनी जीवनचर्या की और रहन-सहन, सफाई की धुन में तल्लीन हो जाते थे। पिताजी ने हमको ऊंची शिक्षा दिलाकर सुशिक्षित कर जब कार्य क्षेत्र के लिए तैयार किया, तब तक पिताश्री आर्थिक दृष्टिकोण से शिखर पर पहुँच हो चुके थे। पिता जी के आदर्शों पर चलकर अनुज देवसुमन कामनवैल्थ यूथ कॉक्स के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। हमें इस पर गर्व है कि पिताश्री की शिक्षा और प्रेरणा से एक युवक ऐसे पद पर पहुँचा है जहाँ आज तक कोई भी एशियाई नहीं पहुँच सका है।

व्रतपाल आर्य
गेवरा (छत्तीसगढ़)

22. एक सही अभिनन्दनीय व्यक्तित्व

श्री खुशहाल चंद्र आर्य, बड़ा बाजार आर्य समाज, कोलकाता के प्रमुख कार्यकर्ता, आर्य सिद्धान्तों के प्रचारक एवं सार्वदेशिक सभा के सदस्य हैं। आप उच्च कोटि के कवि, लेखक व वैदिक सिद्धांतों के मर्मज्ञ हैं।



पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती का पत्र आया, जिसमें समाचार यह था कि आर्य समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित महादानी, सेवाभावी, आदर्श आर्य परिवार में उत्पन्न आदरणीय श्री मित्रसेन आर्य का अभिनन्दन किया जा रहा है। साथ ही उनके कर्मशील, कर्तव्यनिष्ठ, यशस्वी और पुरुषार्थी जीवन पर एक ग्रन्थ का भी प्रकाशन हो रहा है, यह पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। इस सुसंवाद को पढ़कर मुझे किसी नीतिकार का यह श्लोक तुरन्त ध्यान में आया–

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानां च व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते, दुर्भिक्षं, मरणं भयम्॥

अर्थात् जहाँ पर अपूज्यों की पूजा होती है और पूज्यों की अवहेलना होती है वहाँ अकाल, मृत्यु तथा भय का होना निश्चित है।

यह बात किसी राष्ट्र के लिए ही नहीं, समाज संस्था और परिवार पर भी लागू होती है। आजकल आर्य समाज समेत सभी संस्थाओं में योग्य, सेवाभावी निःस्वार्थी, चरित्रवान, त्यागी, तपस्वी व्यक्ति की बजाय किसी संस्था के प्रधान और मंत्री का सम्मान करने के लिए सभी लोग आतुर रहते हैं, चाहे उसने नैतिक-अनैतिक हथकंडों से उस पद को प्राप्त किया हो। मित्रसेन आर्य दानी, निःस्वार्थी, उदार हृदय और कर्तव्यपरायण व्यक्ति हैं, इसलिए अभिनन्दनीय व्यक्ति हैं। स्वामी धर्मानंद जी ने आर्य जी का अभिनन्दन करने का निर्णय, इनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित होकर बहुत ही सोच-समझकर किया है। इसके लिए स्वामी जी भी धन्यवाद के पात्र हैं।

आर्य जी जैसे योग्य व्यक्तियों का सम्मान होने से समाज और राष्ट्र का भी बड़ा उपकार होता है। इस कारण योग्य, निःस्वार्थ, सेवाभावी, त्यागी, तपस्वी व्यक्ति जो अपने-अपने स्थानों पर बैठकर सच्चाई, ईमानदारी, लगन और परिश्रम से आर्य समाज और राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं, जैसे आचार्य बलदेव (कालवा), आचार्य वेदव्रत मीमांसक (बैड़लूर), आचार्य विजयपाल (बहालगढ़), स्वामी ज्ञानेश्वर जी (रोजड़), ब्रह्मचारी

धर्मबन्धु (गुजरात) आदि का उत्साहवर्द्धन होता है और इससे प्रेरणा पाकर नए-नए अच्छे आर्य समाजी नवयुवक भी वेद प्रचार के कार्य क्षेत्र में उतरते हैं।

श्री मित्रसेन आर्य के नाम से तो मैं पहले से ही सुपरिचित था, परन्तु देखने का सौभाग्य मुझे तब मिला जब आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने अमर शहीद प. लेखराम का बलिदान दिवस गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में एक उत्सव के रूप में मनाया था। वहीं वार्तालाप भी हुआ। उसके बाद दो वर्ष पहले मैं गुरुकुल, आमसेना के वार्षिक उत्सव में स्वामी धर्मानंद जी के विशेष प्रेमानुग्रह पर गया था, वहाँ पूज्य माताजी के साथ आर्य जी के भी दोबारा दर्शन करने का लाभ उठा सका।

आर्य जी की उदारता से कितने ही गुरुकुल, शिक्षा संस्थान, गौशालाएं, अनाथालय आदि दिन-रात समाज और राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। उनका यदि मैं वर्णन करने लगूं तो यह लेख एक लघु पुस्तिका बन जाएगी। मैं इन सब सेवा कार्यों से इनके द्वारा किए गए स्वामी धर्मानंद जी को काल के मुख से निकालने वाले काम को ही अधिक बढ़ कर मानता हूं। कारण स्वामी जी ने अपने संपूर्ण जीवन काल में गुरुकुल शिक्षा पद्धति से वेद प्रचार, देशसेवा, शुद्धि कार्य और आर्य समाज की उन्नति के लिए निःस्वार्थ भाव से पूरी योग्यता और ईमानदारी के साथ काम करने में कोई कसर नहीं रखी। ऐसे महान् त्यागी, तपस्वी, सेवाभावी व्यक्ति को आर्य जी ने ईश्वर की अपार कृपा से मृत्यु शय्या से उठाकर पुनः समाज और राष्ट्र की सेवा करने के लिए नवजीवन प्रदान करवाया। इससे बढ़कर आर्य समाज और राष्ट्र की और क्या सेवा हो सकती है।

मैं ऐसे समाज और राष्ट्रभक्त व्यक्ति के अभिनन्दन का हृदय से स्वागत करता हूं और परम पिता परमात्मा से इनको पूर्ण स्वस्थ रखते हुए सौ वर्षों से भी अधिक आयु प्रदान करने की प्रार्थना करता हूं जिससे इनके सहयोग से चल रही सभी संस्थाएं और राष्ट्र, आर्य जी की सेवाओं से और अधिक लाभान्वित हो सकें।

खुशहाल चन्द्र आर्य
180, महात्मा गांधी रोड़,
कोलकाता (पश्चिमी बंगाल)

''सांस का हर सुमन है वतन के लिए।
जिन्दगी ही हवन है वतन के लिए॥
कह गई फांसियों में फंसी गर्दनें।
यह हमारा नमन है वतन के लिए॥''

- रामप्रसाद बिस्मिल

23. गुरुकुलों के सहयोगी श्री मित्रसेन

श्री दयाराम पोद्दार बिहार की पुरानी आर्य पीढ़ी के सक्रिय कार्यकर्ता और झारखंड आर्य प्रतिनिधि सभा के संस्थापक एवं प्रेरणास्रोत हैं।



श्री मित्रसेन आर्य को सर्वप्रथम मैंने दो-तीन वर्ष पूर्व गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा) के उत्सव में देखा था, इससे पूर्व मेरी जानकारी उनके बारे में शून्य थी। श्री मित्रसेन जी दिखने में सीधे-सादे हरियाणवी प्रतीत होते थे और सभी से सामान्य रूप से मिल-जुल रहे थे, अतः मुझे उनमें कोई असाधारण बात प्रतीत नहीं हुई। बाद में मुझे पता चला कि गुरुकुल आमसेना के उन्नयन में उनका अप्रतिम योगदान है तो मेरी दृष्टि में वे असाधारण हो गए।

स्वामी धर्मानन्द जी (संस्थापक, गुरुकुल, आमसेना) जब अस्वस्थ होकर काफी दिनों तक कॉमा में चले गए और उनके बचने की आशा दिन-प्रतिदिन कम होने लगी, तब भी मित्रसेन जी अपने परिचितों और सहयोगियों के साथ उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रयत्नशील रहे। जिस प्रकार सावित्री ने अपने पति सत्यवान को यमराज के क्रूर पंजे से अपने सतीत्व के बल पर वापस लाने का प्रयत्न किया और सफल हुई, उसी प्रकार से पूज्य स्वामी धर्मानंद के पुनः स्वास्थ्य लाभ के लिए संपूर्ण आर्य जगत् श्री मित्रसेन जी के प्रयत्नों के लिए उनका आभारी रहेगा।

वर्तमान में गुरुकुलों में दी जा रही परम्परागत शिक्षा के प्रति समाज में नकारात्मक दृष्टिकोण व्याप्त है। कई लोगों की दृष्टि में यह समय और धन का अपव्यय है, क्योंकि इसके स्नातक आजीविकोपार्जन में सक्षम नहीं होते हैं और न ही व्यावहारिक दृष्टि से इन्हें जीवन का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होता है। अंग्रेजी शिक्षा से अनभिज्ञ इन स्नातकों के संबंध में तरह-तरह की बातें पीठ पीछे कही और सुनी जाती हैं, पर इस आलोचना की पृष्ठभूमि में भी गुरुकुलों का एक सकारात्मक पक्ष भी है। वह यह है आर्य समाज भी एक धर्म प्रसारक आंदोलन है। अतः गुरुकुलों के आर्थिक उन्नयन एवं उनको स्वावलम्बी बनाने के लिए श्री मित्रसेन जी के कार्य का बहुत महत्त्व है। परमात्मा श्री मित्रसेन को अच्छे स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु दें, यही मेरी कामना है।

दयाराम पोद्दार
रांची (झारखंड)

24. श्री मित्रसेन - एक अनोखा व्यक्तित्व

श्री केशवदेव वर्मा राजस्थान आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आप वेद विज्ञान विषय पर अनुसंधान कर रहे हैं। आप आर्य समाज संविधान के विशेषज्ञ भी हैं।



75 वर्ष की आयु में भी युवाओं जैसी कर्मठता एवं आत्मविश्वास से लबरेज व्यक्तित्व को देखना हो तो श्री मित्रसेन आर्य से मिलिए। उनका व्यक्तित्व अनेक सफल व्यक्तियों को आत्मसात् किए है। मैं श्री मित्रसेन आर्य से प्रथम बार तब मिला, जब सार्वदेशिक सभा में हैदराबाद निर्वाचन के पश्चात् विवाद चल रहा था। उड़ीसा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं गुरुकुल, आमसेना के आचार्य स्वामी धर्मानंद जी सरस्वती के साथ दिल्ली में श्री आर्य के आवास पर जाना हुआ। उनकी बोलचाल, शिष्ट एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार, विनम्रता के साथ सादगी और स्पष्टवादिता सामने वाले को प्रभावित करती है।

बाद में स्वामी धर्मानंद जी ने विस्तार से मुझे श्री मित्रसेन के जीवन, उपलब्धियां, माता-पिता तथा उनके स्वयं के परिवार अर्थात् सन्तानों आदि के साथ दिनचर्या तक के विषय में बताया। स्वामी धर्मानन्द जी के विशेष आग्रह पर एक बार जब मैं गुरुकुल आमसेना गया और वहाँ कुछ दिन रहकर गुरुकुल के वार्षिकोत्सव का भी दर्शक बना तो श्री मित्रसेन जी की व्यापारिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा को निकट से देखने-जानने का अवसर मिला।

श्री मित्रसेन जी व्यक्ति नहीं, एक संस्था हैं और इस रूप में उन्होंने अपना नाम सार्थक किया है। मित्रसेन का अर्थ है **'मित्र है सेना जिसकी'** वह व्यक्ति और उन्होंने सर्वत्र अपने मित्रों, हितैषियों तथा समर्थकों की एक सेना खड़ी कर ली। वैदिक जीवन आदर्श एवं महर्षि दयानंद सरस्वती में गहरी आस्था रखने वाले और अपने परिवार के हर सदस्य के हृदय में रहने वाले, समस्त जगत् को मित्रवत् देखने वाले ऐसे आर्यपुरुष का मैं हृदय से वन्दन एवं अभिनन्दन करता हूँ और परमपिता परमात्मा से प्रार्थी हूँ कि वे शतोत्तर शरद अपने जीवन की सुगन्ध से महकते रहें।

श्री केशवदेव वर्मा
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

25. कर्मयोगी : श्री मित्रसेन आर्य जी

श्री भगवान देव चैतन्य हिमाचल प्रदेश के प्रमुख विद्वान तथा श्रेष्ठ लेखक है। लेखन क्षेत्र में इनका कई संस्थाओं ने सम्मान किया है।



जिस समय महर्षि दयानंद सरस्वती जी इस धरा पर अवतरित हुए, उस समय चारों ओर आडम्बर फैला हुआ था। लोग धर्म के स्वरूप को भूल चुके थे। वे अपकार करने वालों को सदा क्षमा ही करते रहे। वे सच्चे समाज-सुधारक थे। उनकी ही प्रेरणा से महिलाओं के लिए शिक्षा के दरवाजे खुले।

कर्मयोगी श्री मित्रसेन आर्य जी महर्षि दयानंद के भक्त हैं। इनका जीवन संघर्षों से भरा हुआ रहा, मगर परिश्रम से इन्होंने वह सब कर दिखाया जो एक कर्मयोगी कर दिखाता है। वे अपने जीवन के स्वयं निर्माता हैं। इन्होंने जो छोटा-सा व्यवसाय आरंभ किया, उसे अपने परिश्रम से बुलंदियों पर पहुंचाया। आमतौर पर देखा गया है कि जब व्यक्ति सम्पन्न हो जाता है तो वह धर्म-कर्म से उपराम हो जाता है, मगर श्री आर्य जी का व्यक्तित्व ऐसा नहीं। वे ज्यों-ज्यों सम्पन्न होते गए, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के प्रति त्यों-त्यों ही अधिक उत्साह के साथ कार्य-क्षेत्र में उतरते गए। आपने सामाजिक क्षेत्र में बहुत सराहनीय कार्य किया। आपके दिए हुए दान से कितनी ही सामाजिक तथा शैक्षणिक संस्थाएं आज वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में ही कार्य नहीं किया, बल्कि आपने पुस्तकों का सृजन भी किया। आपको अनेक आर्य महापुरुषों तथा संत महात्माओं का सानिध्य प्राप्त हुआ। सरलता, सहजता तथा दानशीलता के अतिरिक्त आप बहुत ही दयालु तथा उदारवादी स्वभाव के हैं।

आपके सामाजिक तथा सर्वहितकारी कार्यों के कारण आपको बहुत से सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। ऐसे कर्मयोगी तथा महर्षि के अनन्य भक्त आज के युग में बहुत कम दिखाई देते हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि श्री आर्य जी को उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त हो ताकि वे निरंतर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करते रहें। ऐसे कर्मयोगी ही महर्षि जी के सपनों को साकार करने की दिशा में सार्थक भूमिका निभा सकते हैं।

भगवान देव चैतन्य
81/एस-4, सुन्दरनगर,
हिमाचल प्रदेश

26. करणं परोपकरणं येषां, केषां न ते वन्द्याः !

आचार्या मेधा देवी विदुषी और वैदिक साहित्य की ओजस्वी वक्ता हैं तथा पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी का संचालन कर रही हैं।



समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो दीपक बनकर प्रकाश स्तम्भ का कार्य करते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों में श्रेष्ठिवर्य उदारमना श्री मित्रसेन जी आर्य का जीवन है। आपने भौतिक उन्नति तथा सामाजिक प्रोन्नति की प्रक्रिया में सामंजस्य स्थापित करते हुए भौतिक साधनों को मात्र अपने जीवन का सहयोगी माना है। आपने जहाँ औद्योगिक सफलताओं से आर्थिक उपलब्धि प्राप्त की एवं अपने सुपुत्रों को भी औद्योगिक कार्य क्षेत्रों में उतारा है, वहीं शैक्षणिक क्षेत्र में भी गुरुकुल आश्रम, आमसेना उड़ीसा, गुरुकुल वेदव्यास, राऊरकेला आदि गुरुकुलों के विकास में भरपूर आर्थिक सहयोग देकर अर्थ का सदुपयोग किया है।

श्री मित्रसेन आर्य की कीर्ति का परिचय प्रायः पत्र-पत्रिकाओं तथा जनसंवादों से प्राप्त होता रहा, पर इस यशस्वी का साक्षात् दर्शन 10 फरवरी, 2002 को गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा) के वार्षिकोत्सव के दीक्षान्त समारोह में हुआ। आपकी निश्छल मुस्कान एवं युवकों को भी पराभूत करने वाला उत्साह, मृदुल, सहृदय, वात्सल्यपूर्ण व्यवहार, पलभर में दूसरों को अपना बना लेने में सक्षम है। 18 वर्ष की अवस्था से आर्य समाज से जुड़कर वैदिक धर्म की महनीय सेवा की है। आपके औदार्यपूर्ण सहयोग के लिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि गुरुकुल, आमसेना का अस्तित्व तथा पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी का पुनर्जीवन आप जैसे उदार, सहृदय महाशय द्वारा ही संभव हो सका है।

ईश्वर भक्त, दयानंद के सेनानी, हम सबके गौरव आदरणीय मित्रसेन जी आर्य ने हिन्दी सत्याग्रह आदि में भाग लेकर राष्ट्रभाषा हिन्दी के संरक्षण में सहयोग दिया एवं संस्कृत भाषा के संरक्षण के लिए ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों, प्रचारक-प्रचारिकाओं को अर्थ से अभिसिंचित कर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया है। बुद्धिजीवी, समाजसेवी, पथप्रदर्शक, संरक्षक जीवन को परमात्मा 'भूयश्च शरदः शतात्' प्रार्थनाओं से अभिनन्दित करें।

आचार्या मेधा देवी
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

27. आदर्श दानवीर

महाविद्यालय गुरुकुल, झज्जर (हरियाणा) में श्री आचार्य विजयपाल योगार्थी त्यागी, कर्मठ, विद्वान व नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। गुरुवर्य स्वामी ओमानन्द जी के स्वर्गवास के बाद अब आप गुरुकुल, झज्जर के आचार्य का कार्यभार संभाले हुए हैं।



इस परिवर्तनशील युग में सभी पैदा होते हैं और मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु उनका जन्म सफल होता है जो अपने जीवन काल में अपने वंश-परिवार और समाज की उन्नति करते हैं।

चौ. मित्रसेन का जीवन सफल है। आपने अपने जीवन में ही बहुमुखी उन्नति की है। एक किसान परिवार में जन्म होने के बाद वैभव प्राप्ति के चरमोत्कर्ष पर पहुँचना ऐश्वर्याभिलाषियों के लिए प्रेरणादायक उदाहरण है। आपका परिवार समुन्नत है तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर है।

आपने धन, वैभव एवं प्रतिष्ठा अपने पुरुषार्थ से अर्जित की है। आपके पिता चौ. शीशराम आर्य एक किसान थे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में अवैतनिक भजनोपदेशक थे। इस प्रकार आय का स्त्रोत खेती ही थी। आप सामान्य प्राथमिक शिक्षा के बाद ही कार्य क्षेत्र में उतरे तथा 17 वर्ष की अवस्था में ही रोहतक आकर तकनीकी कार्य सीखने लगे। काम सीखने के बाद सन 1950 में जब छोटे से स्तर से अपना लेथ मशीन का काम प्रारम्भ किया तो उसके बाद आपने मुड़कर नहीं देखा।

यद्यपि आपने अपने सीमित साधनों तथा अल्प पूंजी से कार्य प्रारंभ किया तथापि सफलता ने सदैव आपका साथ दिया। पुरुषार्थ आपके जीवन का मूलमंत्र है। आपने अथक परिश्रम किया है। इसी का परिणाम है कि आज देश के गिने-चुने व्यवसायियों में आपका स्थान है।

उद्योगिनं पुरुष सिंह मुपैति लक्ष्मी।
दैवं हि दैवमिति का पुरुषा वदन्ति॥

परिश्रमी सिंह के समान पुरुषों को लक्ष्मी प्राप्त होती है अर्थात् परिश्रमी व्यक्ति ही सफलता को प्राप्त होते हैं। भाग्य का राग अलापने वाले तो कायर पुरुष होते हैं।

जिस परिवार में आपका जन्म हुआ, वह एक वैदिक धर्मनिष्ठ परिवार था। यह आपके पुण्यों का ही प्रताप है कि आपका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ, जहाँ वेद की ऋचाएं व वैदिक गीत गुन्जायमान होते रहते थे। विरासत में मिले वैदिक संस्कारों से आपने अपने पूरे परिवार को वैदिक धर्म में रंग दिया है।

परमात्मा की कृपा तथा पुरुषार्थ से जो धन आपको प्राप्त हुआ है, उसका सदुपयोग आप सत्कार्यों में मुक्तहस्त से दान देकर करते हैं। आप भारतवर्ष के अधिकांश गुरुकुलों को आर्थिक सहयोग देते हैं। उड़ीसा जैसे आर्थिक विपन्नता वाले प्रांत में गुरुकुल, आमसेना को आप कभी धन का अभाव नहीं होने देते। आपने निर्धन छात्रों की समुचित शिक्षा के दृष्टिगत उड़ीसा, छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश में अनेक गुरुकुलों, छात्रावासों तथा पब्लिक स्कूलों की स्थापना की है। समाज कल्याण की भावना से किए गए इस कार्य से जहाँ गरीब छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है, वहीं शिक्षित बेरोजगारों को रोजगार भी मिलता है।

आप जैसे उदार दानी लाखों में एक होते हैं ; जैसे –

शतेषु जायते शूरः सहस्त्रेषु च पंडितः ॥
वक्ता दश सहस्त्रेषु, दाता भवति वा न वा ॥

अर्थात् सैकड़ों मनुष्यों में कोई एक शूरवीर होता है, हजारों में कोई एक पंडित होता है, योग्य वक्ता दस हजार में एक मिलता है तथा इतने लोगों में कोई एक दानी मिल जाए, यह आवश्यक नहीं।

अपार सम्पदा के मालिक होने पर भी आप नितान्त निरभिमानता से दान देते हैं। अभिमान आपसे कोसों दूर है। आप साधु-संन्यासियों, विद्वानों व अतिथियों की सच्चे हृदय से सेवा तथा सम्मान करते हैं। आपका स्वभाव इतना सरल है कि सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी आपसे निर्भीक होकर मिलता है। आप अपने कर्मचारियों की सभी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हैं। इसी कारण आपके उद्योगों के कर्मचारी आपको पितृवत् सम्मान देते हैं।

कृषि में भी आपने बहुत विकास किया है। आपकी प्रेरणा से बंजर भूमि में भी बाग लहलहा रहे हैं। भारत सरकार ने भी आपको 'कृषि विशारद' की उपाधि से विभूषित किया है।

मैं ऐसे आदर्श दानवीर का गुरुकुल, झज्जर की तरफ से अभिनन्दन करता हूं तथा परमात्मा से कामना करता हूं कि आदरणीय चौधरी साहब शतायु होवें ताकि उनके निर्देशन में उनके सुपुत्र भी सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते रहें और यह भी कामना करता हूं कि उनका भरा-पूरा परिवार और अधिक उन्नति करे, क्योंकि ऐसे धर्मनिष्ठ व्यक्तियों की उन्नति पूरे समाज की उन्नति से होती है।

आचार्य विजयपाल योगार्थी
गुरुकुल झज्जर (हरियाणा)

28. अखिलं मधुरम्

आचार्य कुंजदेव महाविद्यालय गुरुकुल, आमसेना में प्राध्यापक और आप गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा (उड़ीसा) के आचार्य हैं। आप उत्कल आर्यवीर दल के संचालक हैं।



भारत माता धन्य है, जिसने अपनी कोख से ऐसे लाल उत्पन्न किए हैं जिनके क्रियाकलापों से न केवल गाँव और शहर ही, अपितु पूरा देश (भारत) गौरवान्वित है, ऐसे ही नर रत्नों में वैदिक पथ के पथिक श्री मित्रसेन आर्य का नाम सर्वोपरि है।

आपका जन्म आर्य परिवार चौ. शीशराम जी आर्य के घर में हुआ। आर्य समाज के प्रति आपका लगाव परम्परागत है। सौभाग्य से आपको किसान परिवार में जन्मी संस्कारित सुपुत्री परमेश्वरी देवी सहधर्मिणी के रूप में प्राप्त हुई। आपका दाम्पत्य जीवन बड़ा आदर्शपूर्ण एवं सुखद है। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार एवं समर्पण का भाव जैसा इस दम्पति में देखा गया है, वैसा अन्यत्र मिलना असम्भव नहीं, तो दुर्लभ अवश्य है।

आप मधुरभाषी, मन, वचन और कर्म से सत्यवादी, अहिंसावादी, धर्मात्मा और मिलनसार हैं। आपका जीवन सादा और सरल है। आप लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष और क्रोध से रहित हैं। आप संयमी, नम्र, संतोषी, सहनशील, दृढ़ परिश्रमी, तन-मन से शुद्ध-पवित्र, ईश्वर विश्वासी, श्रद्धालु तथा प्रभु भक्त हैं। सबका भला चाहने वाले परोपकारी हैं। आपका जीवन यज्ञमय है। श्रद्धा से महायज्ञों का अनुष्ठान करते हैं। आपको छः पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई है।

आप कई संस्थाओं के भी पिता हैं। आप हिन्दी सत्याग्रही भी हैं। आप अच्छे उद्योगपति भी हैं, तो एक अच्छे उपदेशक की-सी योग्यता रखते हैं। फालतू बोलना पसंद नहीं करते। विद्वानों की बातें सुनना पसंद करते हैं। आप जनचेतना को अधिक महत्त्व देते हैं।

आशा है आपका स्नेह इसी प्रकार-हमारे प्रति, समाज व देश के प्रति बना रहेगा, जिससे हम सब आगे बढ़ेंगे। मैं आपकी दीर्घायु की कामना करता हूं।

आचार्य कुंजदेव मनीषी
महाविद्यालय गुरुकुल, आमसेना
खरियार रोड़, नवापारा (उड़ीसा)

29. मानवता के परम मित्र

'जीजा माता' सम्मान से सम्मानित तथा आधुनिक झांसी की रानी के रूप में पुष्पा जी प्रसिद्ध हैं। आप महिलाओं को शारीरिक, सामाजिक व वैचारिक दृष्टि से सशक्त बनाने में जुटी हैं।



समाजसेवा, मानव कल्याण, अथाह परिश्रम, संस्कृति रक्षा के प्रति संकल्प-बद्धता, विद्वत्ता, सरल-सहज-नम्र वादिता, दानशीलता जैसे गुण किसी एक नाम में आकर समा जाते हैं, तो उनका नाम चौ. मित्रसेन सिन्धु हो जाता है। एक ख्यातनाम क्रान्तिकारी समाज- सुधारक, परिश्रमी, नेक पिता की सन्तान के रूप में संसार में आकर भ्राताजी ने सदा दीन- दुखी, शोषित, वेदना पूरित मानवता के उद्धार का काम किया है, मैंने सर्वदा उन्हें सार्वजनिक मंचों पर प्रतिष्ठापूर्ण परिस्थिति में निष्काम भावना में निरभिमानता से योगी की भांति मुस्कराते पाया है। इनका जीवन निश्चित रूप से श्रम, सदाचार, संयम तथा सामाजिक यज्ञ का संगम है। कर्ण जैसी दानवीरता गुरुकुलों, विद्यालयों, गौशालाओं तथा संस्कृति रक्षा-यज्ञों में अत्यधिक अर्थाहुति लगाने के बाद भी सदैव निरभिमानता का आभूषण धारण किए रहना जो कि सामान्य व्यक्ति के वश की बात नहीं है।

पिछले वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के सच्चे उत्तराधिकारी स्वामी धर्मानन्द का तप-साधना-यज्ञ निकट से उड़ीसा जाकर अनेक संस्थाओं के माध्यम से देखने को मिला, जो वास्तव में भ्राता जी की महानता का परिचायक है। कन्या गुरुकुल, आमसेना में आधुनिक भारत के निर्माणार्थ गार्गी, दुर्गा, मदालसा जैसी वीरत्व, विद्वत्तापूर्ण, ब्रह्मचर्य और तपयुक्त जीवन जैसे गुणों से युक्त कन्याएं राष्ट्र उत्थान हेतु तैयार हो रही हैं। माता परमेश्वरी देवी कन्या छात्रावास, सोनाबेड़ा सुदूर जंगल में स्थित था, जहाँ भुखमरी, अभावग्रस्त जीवन को खुशियों से भरने का कार्य हो रहा है। स्वामी दयानंद जैसी दयालुता, श्रद्धानन्द जैसी कर्मठता, लेखराम जैसी संस्कृति रक्षा तथा पंडित गुरुदत्त तथा स्वामी दर्शनानंद जैसे भ्राता स्वस्थ और दीर्घायु हों, यह प्रभुकृपा चाहती हूँ।

श्रीमती पुष्पा शास्त्री
आर्य महोपदेशिका,
रेवाड़ी (हरियाणा)

30. मित्रसेन जी आर्य : चारित्रिक विशेषताएं

बहन सुमित्रा वर्मा सिन्धु परिवार से अनेक वर्षों से जुड़ी हुई हैं। ये अच्छी गीतकार एवं गाने में प्रवीण हैं।



समाज को प्रेरित करने वाले उन महापुरुषों में अथाह और गंभीर सागर के समान हृदय वाले धैर्यवान्, तेजस्वी, निष्ठावान्, कर्मशील, सहनशील, सदाचार से ओत-प्रोत करुणा दिखाने वाले, श्रीराम के आदर्शों को अपनाने वाले, वैदिक पथिक, महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के अनुयायी, वेद के आधार पर सभी गुणों के ग्राही, दूसरों के लिए आदर्श समाज की सेवा करने वाले तथा विद्वानों का आदर करने वाले मित्रसेन जी आर्य हैं। इनका चरित्र श्री राम के चरित्र के सम्मान अनुसरणीय है, सबके लिए आदर्श है जो इस प्रकार है :-

1. विद्वानों के सामीप्य से विद्या-शिक्षा प्राप्त करके प्रशंसा और सत्कार को प्राप्तकर प्रतिदिन उत्तम बुद्धि से समस्त राम के गुण-कर्म और स्वभाव को धारण करने वाले, उच्च्व कोटि का स्वाध्याय करने वाले मित्रसेन जी आर्य हैं।

2. सत्य को धारण करने वाले, असत्य का त्याग करने वाले मित्र भाव से सबको समान दृष्टि से निहारने वाले, सम्मान पाने योग्य, वाणी में सच्चाई, परमार्थ और धैर्यवान्, सबका भला चाहने वाले मित्रसेन आर्य हैं।

3. दुराचारियों को ताड़ना, धर्माचारियों का सहयोग, इनकी उन्नति में अपनी उन्नति चाहने वाले, आलस्य का तिरस्कार, सेवकों के प्रति सहानुभूति, ऐश्वर्यवान् अन्य भ्राता, मित्र, पुत्र जन को अपनों के समान समझने वाले मित्रसेन जी हैं।

4. शरीर में पुष्टि, जिह्वा में रस, यज्ञ के प्रिय, विद्वानों का सत्कार करने वाले, उत्तम ज्ञान की प्राप्ति करने वाले, धर्म के कार्यों में प्रवृत्त और अधर्म के कार्यों से निवृत, सभी गुणों से भरपूर, शिल्प क्रिया, बिजली आदि कार्यों में रुचि रखने वाले, ऐश्वर्य को प्राप्त, धर्म-धन का संचय करने वाले, उस धन से अन्य जनों की मदद करने वाले, दूसरों के दुख से दुखी तथा सुख से सुखी होने वाले मित्रसेन जी हैं।

5. जिस प्रकार अग्नि, बिजली और सूर्य समान रूप से सब व्यवहारों को पूर्ण करता है, उसी प्रकार विद्या, धर्म और सुन्दरशील की प्राप्ति करके दूसरों का भला चाहने वाले, विद्वानों को उच्च आसन देने वाले और सब जगह

सत्कार को प्राप्त होने वाले मित्रसेन जी हैं।

6. ब्रह्मचर्य से विद्या और शिक्षा को प्राप्त, सुन्दरता से युक्त, विद्वानों के संग में रहने वाले धर्मात्मा, कर्तव्यपरायण, कर्मनिष्ठ, सत्य कर्मों को करने वाले जैसे वनस्पति और अग्नि अपने कर्मों से समस्त प्राणियों का उपकार करती है, वैसे ही मित्र भाव से सबको सुख देने वाले मित्रसेन जी हैं।

7. वेद विहित कर्मों का आचरण करने वाले, दूसरों की भलाई में अपनी भलाई समझने वाले, राग-द्वेष रहित, गुणग्राही औरों को अपने सदृश करके दाता और लक्ष्मीवान्, विद्वानों का सम्मान करने वाले और उत्तम बुद्धि वाले मित्रसेन जी हैं।

8. जैसे जल की धारा प्राप्त हुए स्थान को छोड़कर दूसरे स्थानों को जाती हैं, वैसे ही शत्रु भाव को छोड़कर मित्र भाव से मिलने वाले हैं। जैसे शिल्प के कामों में प्रेरणा प्राप्त की हुई अग्नि उत्तम कामों को सिद्ध करती है, वैसे ही शिक्षा पाकर बहुत-सी उन्नति पाने वाले बुद्धिमान् मित्रसेन जी हैं।

9. अन्याय से बिना आज्ञा परपदार्थ के ग्रहण की इच्छा कभी नहीं करते, धर्मयुक्त व्यवहार से यथाशक्ति धन-संचय करने वाले, उपयुक्त आहार-विहार करने वाले, सभी ऋतुओं में सुख को प्राप्त होने वाले, उत्तम प्रकार से शिक्षित और अनुरक्त कृषि आदि में भी चतुर और ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाले हैं। बीजों को खेतों में डालकर उत्तम प्रकार से जोत कर उनमें उत्तम अन्न उत्पन्न करने वाले हैं। खेती की विद्या ग्रहण करके यथायोग्य खेती करके धन और धान्य से भरपूर, सुन्दर अन्न उत्पन्न करके सबको आनन्द देने वाले हैं, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्त करके, उत्तम संतान उत्पन्न करके ऐश्वर्यवर्धक मित्रसेन जी आर्य हैं।

10. सूर्य के समान विद्या रूपी प्रकाश से अविद्या रूपी अन्धकार को निकालकर, कारण को लेकर, कार्य-जगत को यथावत जानते हैं। उन्हें विद्वानों की संज्ञा दी जाती है जो मित्रसेन जी पर चरितार्थ होती है। परमेश्वर की आज्ञा, विद्वानों के संग का और अपनी आत्मा की पवित्रता का आचरण करते हैं। धार्मिक होकर निरन्तर सुख की प्राप्ति करने वाले जो देने योग्य पदार्थ हैं, दे देना, जो जाने योग्य स्थान है पहुंच जाना, जो पा लेने योग्य पदार्थ है, पा लेना, सत्य को ग्रहण करने वाले, ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, सुन्दर और संयमी शरीर वाले मित्रसेन जी आर्य हैं।

परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि राजा जनक, राजा दशरथ तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के चरित्र का अनुकरण मित्रसेन जी की आने वाली पीढ़ियों में होता रहे, जो सबके लिए एक आदर्श हैं।

सुमित्रा वर्मा, भजनोपदेशिका
प्राचार्या, महर्षि दयानन्द वरिष्ठ
माध्यमिक विद्यालय, रोहतक
(हरियाणा)

31. सुख-दुःख को सहज लेते हैं मित्रसेन

डॉ. बलबीर आचार्य महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में प्राध्यापक हैं तथा आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रचार में संलग्न हैं। गुरुकुल झज्जर के स्नातक बलबीर जी वैदिक जीवन शैली के समर्थक हैं। आपने विदेशों में भी आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार किया हैं।



चौधरी मित्रसेन आर्य जी से मेरा संबंध गत तैंतीस वर्षों से है। मैं स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी के साथ मई, सन् 1972 में सर्वप्रथम आपसे मिला था। तब मेरे बाल मन पर आर्य जी की व्यक्तित्व की छाप सात्विक, सत्यनिष्ठ एवं कर्मयोगी इन्सान के रूप में पड़ी । इसके बाद अनेक बार आपके सानिध्य का अवसर प्राप्त हुआ और हर बार आपके व्यक्तित्व एवं विचारों ने प्रभावित किया। एक बार चर्चा में आर्य जी ने कहा कि कभी सुख देकर और कभी दुख देकर ईश्वर मनुष्य को परीक्षा की घड़ियों से गुजारता है।

आर्य जी के इन वचनों ने मेरे जीवन में सम्बल का कार्य किया। महर्षि दयानंद जी ने सत्य और न्याय के आचरण को ही धर्म बताया है। इस धर्म के मर्म को चौधरी साहब ने अपने जीवन के अनुभव से समझकर न केवल स्वयं अपनाया, अपितु सबको इस मार्ग पर चलने की सत्प्रेरणा देते हैं।

एक बार चर्चा करते हुए आपने कहा, "दुख का कारण है – अज्ञान, अज्ञान से अहंकार और अहंकार से अन्याय उत्पन्न होता है। अज्ञान,अहंकार और अन्याय से अभाव (गरीबी) पनपता है। अतः समाज से अज्ञान को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाना चाहिए, यही सबसे बड़ा पुण्य है।" चौधरी साहब के ये विचार शास्त्र सम्मत हैं। "ऋते ज्ञानान् न मुक्तिः" बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं मिलती। यह शात्रीय सिद्धांत है। "दुख जन्म प्रवृत्ति दोष मिथ्या ज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापा यादपवर्ग" न्याय दर्शन के इस सूत्र में दुख का कारण अज्ञान ही बताया गया है। आपने निर्धनों को शिक्षित करने के लिए अनेक शिक्षण संस्थाओं को सात्विक दान देकर अनुप्राणित किया है। उड़ीसा जैसे सुदूर-वर्ती,अभावग्रस्त प्रान्त में अनेक गुरुकुल अपने दान से चला रहे हैं।

डॉ. बलबीर आचार्य
संस्कृत विभाग, म.द. वि. रोहतक
(हरियाणा)

32. आर्य रत्न : चौ. साहब

श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक के प्रधान हैं तथा आर्य समाज के प्रचार में इनका विशेष योगदान रहा है।



कई वर्ष पूर्व की बात है कि एक बार गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में भव्य यज्ञ समारोह मनाया जा रहा था। मंचस्थ विद्वान और अन्य विशिष्ट अतिथिजन मंच की शोभा बढ़ा रहे थे, लेकिन उन सबके बीच एक ऐसा व्यक्तित्व जिसकी आभा मुझे बड़ी आत्मीयता से अपनी ओर आकर्षित कर रही थी तब मैने स्वामी प्रणवानंद जी सरस्वती (पूर्व नाम आचार्य हरिदेव जी) से जिज्ञासावश आपके बारे में पूछा और चौ. मित्रसेन जी आर्य का जो परिचय प्राप्त हुआ उससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

प्रभु कृपा से ऐसा भी शुभ अवसर आया कि जब हमारे वैदिक भक्ति साधन आश्रम के वार्षिकोत्सव में आप एक विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे और अपेक्षा से अधिक सहयोग देकर आश्रम परिवार का गौरव बढ़ाया। प्रज्ज्वलित 51 हवन कुंड अपनी छटा बिखेर रहे थे और हम सब यज्ञाहुति प्रदान करने में मग्न थे कि अकस्मात आदरणीय श्री बृजमोहन मुंजाल चेयरमैन हीरो होंडा का शुभ आगमन हुआ। हमें भी सूचना मिली और यह देखकर हमारी प्रसन्नता दोगुनी हो गई कि आर्य संसार के भामाशाह महान उद्योगपति चौ. मित्रसेन जी आर्य आप स्वयं देश के एक सुप्रसिद्ध उद्योगपति का स्वागत कर रहे थे अतिथि सेवा का ऐसा सुन्दर दृश्य और ऐसा विनम्र स्वभाव यदाकदा ही दिखाई देता है, अहंकार शून्य, धर्मज्ञ आर्यरत्न चौ. साहब के लिए शब्द संजोना मेरे वश की बात नहीं।

आपसे मिलने वाला आपका हो जाता है और आप हृदय में बस जाते हैं। आज के युग में ऐसे धर्मात्मा का प्रादुर्भाव होना जगपिता की अनुकंपा ही मानी जाएगी। घर ऐसा कि स्वर्ग लोक का आभास दिलाता है। मैं अपने इस आदर्श वैदिक परिवार के मुखिया के अभिनंदन हेतु हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करता हूं एवं जगदीश्वर प्रभु से आपके सुस्वास्थ्य एवं पारिवारिक सुखद समृद्धि की मंगल कामना अभिव्यक्त करता हूं।

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
प्रधान,वैदिक भक्ति साधन आश्रम
आर्य नगर, रोहतक (हरियाणा)

33. एक महान आत्मा का यज्ञमय जीवन

बहन दया एक विदुषी महिला हैं। आप समाज सेवा को समर्पित हरियाणवी भाषा में वैदिक धर्म के गीतों की प्रसिद्ध आशु कवयित्री हैं।



मित्रसेन जी गंभीर, मितभाषी, स्वाध्याय-शील आदि शीलगुणों से आज तक अच्छी व्यवस्था के प्रतिष्ठापक हैं।

ऐसी महान विभूति का घर-घर हो सम्मान।
माता-पिता, जग धन्य हैं या ऐसी सन्तान॥

आपकी धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी उत्तम संस्कारों से युक्त हैं। सुन्दर गृहस्थ की कसौटी में उनका आपके साथ सहयोग रहा है। आप दोनों सहृदयी, व्रती, उदार, दयालु आदि सुन्दर गृहस्थ सूत्रों से ओत-प्रोत हैं। परमात्मा के प्रति अटूट विश्वास, दृढ़ इच्छा का सम्बल लेकर आपने श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन की नींव रखी।

जन-जन की भूख मिटाकर ऊंचा पाया कीर्तिमान्।
सुन्दर है गृहस्थ आपका करते जिसका सब सम्मान।

'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' ही आपके गृहस्थ जीवन का लक्ष्य है। आप कमजोर, विद्या प्राप्ति के जिज्ञासु, पीड़ित, शोषित व्यक्तियों को दान देकर हर्षित होते हैं। आप आर्य समाज के अनुपम व्यक्तित्व के धनी हैं। सामाजिक जीवन में आपका जीवन इस संस्था के उत्तम निर्माण में लगा हुआ है। आपकी निःस्पृह सेवा भावना आर्य समाज के लिए जीवनदायिनी है। स्त्री शिक्षा के लिए आपने जो कार्य किया है, वह महर्षि दयानंद के सच्चे अनुयायी होने का उत्तम प्रमाण है। आपने अपने गाँव में उच्च शिक्षा के लिए महाविद्यालय की स्थापना की। स्त्री शिक्षा के लिए आप समय-समय पर आर्य समाज के माध्यम से स्त्री समाज की विदुषी प्राध्यापिकाओं और उपदेशकों से प्रचार करवाते हैं। ग्रामीण समाज की सदियों से रूढ़िवादी विचारधारा की बेड़ियों को काटने के लिए जो कार्य स्त्री शिक्षा के माध्यम से आप कर रहे हैं, वास्तव में वह श्लाघनीय प्रयास है। अच्छे साहित्य की रचनाओं का प्रकाशन करवाकर आप उस उत्तम साहित्य को नारी के उत्थान के लिए बंटवाते हैं।

मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि ऐसे महान् दयालु, कृपालु, शरणागतदेव को स्वस्थ और दीर्घायु करें। मेरी यही मंगल कामना है।

दया आर्या, प्राध्यापिका,
रोहतक (हरियाणा)

34. पूज्य पिताजी का वात्सल्य एवं ममता

नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लिये हुए सुश्री वीणा वेद वादिनी और सुश्री आरती आर्या अपना जीवन वैदिक साहित्य एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लगा रही हैं।





लोग समझते हैं कि जन्मदाता को ही पिता कहते हैं। यास्क ऋषि ने पिता को **'पाता पालयिता वा'**, जनयिता अर्थात् रक्षा करने वाला, पालन करने वाला एवं जन्म देने वाला कहा है। चाणक्य महामुनि ने पांच प्रकार के पिता कहे हैं – जन्म देने वाला, संस्कार करने वाला, विद्या देने वाला, अन्न देने वाला और भय से बचाने वाला। वैसे तो सभी वृद्धजनों को हम साधारण सम्यक् रूप से **'पिता'** शब्द से सम्बोधित करते हैं, किन्तु मित्रसेन जी इस श्लोक के आदर्श रूप हैं। माता-पिता सन्तान को विद्या पठनार्थ गुरुकुल में भेज देते हैं और उसके बाद उन पर कोई विशेष ध्यान नहीं देते। वे एक तरह से निश्ंचित से हो जाते हैं, विशेष रूप से पुत्रियों की ओर से, किन्तु हमारे इस महान् पिता का यह विशेष गुण है कि पुत्र एवं पुत्रियों के प्रति स्नेह रखते हुए भी पुत्रियों को पुत्रों से बढ़कर मानते हैं।

हमें ईशानुकम्पा से एक ऐसे गुरु-पिता पूजनीय स्वामी धर्मानन्द जी महाराज एवं पिताश्री मित्रसेन की छत्रछाया में रहने का अवसर मिला। आप जब भी गुरुकुल के वार्षिक महोत्सव पर माताश्री के साथ पधारते हैं, हमारे पास अवश्य आते हैं। सत्प्रेरणा द्वारा हमें उत्साहित करके जाते हैं। पूछकर जाते हैं। इस प्रकार हमारे ऊपर इनकी अपार कृपा एवं दयादृष्टि है। आप इतने दयालु हैं कि हमारे लिए हर प्रकार से चिन्ता रखते हैं। हमारे भविष्य की उन्नति के लिए स्थिर निधि हमारे नाम से कर दी हैं। हमसे पूछते रहते हैं, क्या आवश्यकता है? बताओ बेटे। इस तरह हमारे ऊपर गुरु, माता और पिता-तीनों का अपार आशीर्वाद है। ऐसे पिताश्री को आज पूज्यपाद स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने जा रहे हैं। इस शुभ घड़ी में मैं भी अपने पिताश्री का इन्हीं शब्दों के साथ अभिनन्दन करती हूं।

वीणा वेदवादिनी, आरती आर्या
आदर्श कन्या गुरुकुल, आमसेना,
उड़ीसा

35. प्रकाश मार्गों के रक्षक

श्री यशपाल उत्तरांचल आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री तथा लेखक हैं।



किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए दो प्रकार के व्यक्तियों का होना नितान्त आवश्यक है। एक वे जो समाज के लिये प्रकाश मार्गों का निर्माण करें। दूसरे, वे जो प्रकाश के उन मार्गों की रक्षा करें तथा समाज को उन मार्गों पर चलने की सद्प्रेरणा दें। यह दोनों कार्य समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी तथा आवश्यक हैं। प्रकाश मार्गों का निर्माण तो महर्षि दयानंद सरीखे और युगों के बाद जन्म लेने वाले कुछ विरले महापुरुष ही किया करते हैं। वे मार्गों का निर्माण करके चले जाते हैं, पर उन मार्गों की रक्षा के लिए कर्मठ व्यक्तियों की आवश्यकता हुआ करती है। श्री मित्रसेन जी आर्य ऐसे ही कर्मठ व्यक्तियों में से एक हैं।

महर्षि दयानंद ने समाज का पथ-प्रदर्शन करने वाले दो प्रकाश स्तम्भों की स्थापना की थी। एक का नाम है - आर्य समाज और दूसरे का नाम है - परोपकारिणी सभा। यह सौभाग्य की बात है कि श्री मित्रसेन आर्य इन दोनों ही प्रकाश स्तम्भों की रक्षा करने के लिए जी-जान से जुटे हैं। आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है। श्री मित्रसेन आर्य विगत 28 वर्षों से इसके अन्तरंग सभा के सदस्य के रूप में सक्रिय सेवा कर रहे हैं। परोपकारिणी सभा के भी आप ट्रस्टी और उपप्रधान के रूप में सक्रिय सेवा कर रहे हैं। श्री मित्रसेन जी आर्य एक दर्जन से अधिक शिक्षण संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के संरक्षक पद को भी आप सुशोभित कर रहे हैं। अन्य अनेक आर्य संस्थाओं के आप सहयोगी हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री मित्रसेन जी आर्य वेद के आदेश **''ज्योतिष्मतः पथो रक्ष''** (ऋग्वेद 10/53/6) का सही अर्थों में अनुपालन कर रहे हैं।

श्री मित्रसेन जी स्वयं सच्चे आर्य हैं और ''मनुर्भव जनया दैव्यं जनम''(उपर्युक्त मंत्र) का अनुपालन करते हुए सन्तान को देवतुल्य बनाया है। इसके लिए वे आर्य जगत् की बधाई के पात्र हैं। ऐसे अभिनन्दनीय व्यक्तित्व को हमारा बार-बार नमन। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

यशपाल, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

36. निरभिमान दानवीर

श्री विरजानन्द दैवकरणि पुरातत्व विद्या एवं प्राचीन भारतीय लिपियों के विशेषज्ञ हैं। प्राचीन शिलालेखों के अध्ययन के लिए पुरातत्व विभाग आपकी सेवाएं लेता है।



आर्य जगत से संबद्ध कौन-सी संस्था है जो चौधरी मित्रसेन जी आर्य के नाम से सुपरिचित न हो। एक सामान्य कृषक परिवार में जन्म लेकर अपने अथक प्रयास और दृढ़ ईश्वर भक्ति के आधार पर उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच कर भी निरभिमान रहना चौधरी जी के जीवन की बहुत बड़ी विशेषता है। अपार संपत्ति प्राप्त करके व्यक्ति प्रायः दुर्गुणों के वशीभूत हो जाया करते हैं, परन्तु चौ. मित्रसेन जी सभी प्रकार के दुर्व्यसनों से सर्वथा अछूते हैं। इसका मुख्य कारण है – आर्य समाज की शिक्षा, जो मित्रसेन जी के रक्त के कण-कण में समाई हुई है। आप जानते हैं कि **'अभिमानः श्रियं हन्ति'** अर्थात् अभिमान करने से सब शोभा और लक्ष्मी नष्ट हो जाती है। श्री आर्य जी परिश्रम और बुद्धिपूर्वक संग्रहीत वैभव का सदुपयोग धार्मिक संस्थानों, गुरुकुलों, आर्य समाजों, स्कूल-कालेजों और औषधालय आदि की सहायता के जरिए से कर रहे हैं।

जिसके पास धन है, वही व्यक्ति कुलीन, पंडित, बहुश्रुत, गुणी, वक्ता और दर्शनीय कहलाता है, इसलिए सभी गुण धन में निवास करते हैं। चौधरी मित्रसेन जी धार्मिक और सद्बुद्धि वाले हैं, इसीलिए अपने धन का सदुपयोग सुपात्रों को दान देने में करते हैं। जैसे समुद्र में जल संचित रहता है, वह उतनी प्रशंसा नहीं पाता, जितना जल का दान करने के कारण बादल प्रशंसनीय होते हैं। दान भी उचित स्थान पर आवश्यकतानुसार ही दिया जाता है।

निर्धन को ही धन दिया जाता है, धनिकों को नहीं, जैसे औषध और पथ्य की आवश्यकता रोगी को ही होती है, स्वस्थ व्यक्ति को नहीं।

कष्ट से उपार्जित धन का स्वयं त्याग और दान ही वस्तुतः धन की रक्षा कहलाती है। दान, भोग और नाश – धन की ये तीन ही गतियां होती हैं, जो व्यक्ति सदुपयोग के लिए दान नहीं करता और कंजूस रहकर स्वयं भी धन का उपभोग नहीं करता, उसके धन की नाश नामक तीसरी गति अवश्य होती है, इसीलिए संस्कृत साहित्य में कहा गया है-

जो व्यक्ति सार्वजनिक हित के लिए दिए गए स्वर्ण, गाय और भूमि का निजस्वार्थ हेतु

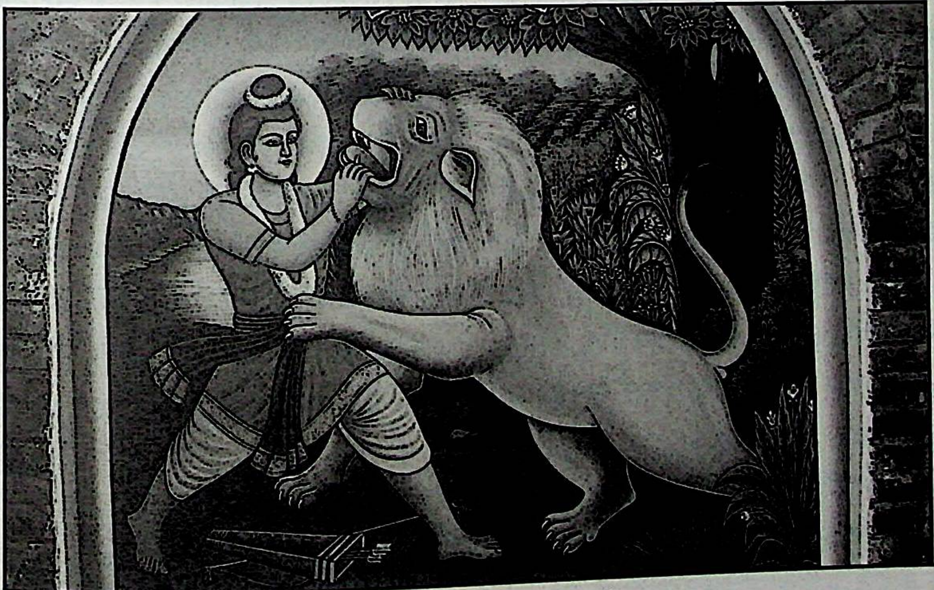
प्रयोग करता है, वह प्रलयकाल तक नरक में रहता है। ऐसा व्यक्ति विष्ठा में कृमि बनकर रहता है अथवा जलरहित वनों में सूखे पेड़ के खोखले तने में निवास करने वाला सांप बनता है। इसलिए ऐसे धन का प्रयोग स्वयं न करके सर्वभूतहित में ही करना चाहिए, क्योंकि इस भूमि पर धन की वही स्थिति है जो पानी पर बने हुए बुलबुले की होती है, वह बनकर तुरन्त मिट जाता है। अतः परम फल प्राप्त कराने वाला दान अवश्य करना चाहिए। ऋग्वेद में कहा गया है-

न स सखा यो न ददाति सख्ये।

'वह मित्र वास्तविक मित्र नहीं है जो आवश्यकता पड़ने पर अपने मित्र की दान आदि से सहायता नहीं करता।'

इस सारे विवेचन का सार यह है कि धन के सदुपयोग के जितने लाभ और गुण बताए गए हैं, उन गुणों और लाभों से चौ. मित्रसेन जी विभूषित हैं और धन के दुरुपयोग के जितने दुर्गुण हैं, उनमें चौधरी जी लेशमात्र भी लिप्त नहीं हैं। ऐसे गुणी और वैभवशाली पुरुष का हार्दिक अभिनन्दन करके आर्यजगत् ने विलम्ब से ही सही, अपने कर्तव्य का पालन करके भावी पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि चौ. जी स्वस्थ रहते हुए शतायु होंगे।

विरजानन्द दैवकरणि
पुरातत्व संग्रहालय, गुरुकुल, झज्जर
(हरियाणा)



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में शकुन्तला-दुष्यन्त पुत्र भरत का चित्र।

37. सौम्यता एवं उदारता के प्रतिरूप

श्री ओमकुमार किसान कालेज, जीन्द में प्राध्यापक तथा आर्य समाज के ओजस्वी वक्ता, लेखक और वेद प्रचारक हैं।



हरियाणा की धरती ने जहाँ धीर-वीर, रणबांकुरे तथा शक्ति रुपा वीरांगनाएं पैदा की हैं, वहीं इस रत्न-प्रसूता धरती ने महान् विद्वान, विदुषी नारियां, सन्त, महात्मा तथा कर्ण और भामाशाह की उज्ज्वल परंपरा को आगे बढ़ाने वाले महान् दानवीर भी पैदा किए हैं। चौ. मित्रसेन सिन्धु दानवीरों की परम्परा के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। आपकी दानशीलता का प्रचुर लाभ उपदेशकों, वक्ताओं, विद्वानों, साधु -महात्माओं तथा संस्थाओं को मिला है और अब भी सतत् मिल रहा है। अनेक दुर्लभ गुणाभूषणों से सम्यक् सुसज्जित एवम् चमकता - दमकता चौधरी साहब का व्यक्तित्व हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत है। ग्रामीण पृष्ठभूमि का मालिक एक दिन गगनस्पर्शी ऊंचाइयों पर आसीन होगा, इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। स्कूली पढ़ाई महज तीसरी क्लास तक, साधनों का सर्वथा अभाव, विपन्नता आदि अनेक बाधाओं के बावजूद आपने सफलता,विकास एवं उन्नति के बेजोड़ कीर्तिमान स्थापित किए तथा यह उक्ति चरितार्थ करके दिखाई कि **'बाधाएं कब रोक सकी हैं आगे बढ़ने वालों को '** और यह भी कि **'लाल गुदड़ी में भी हो सकते हैं, '** कि आलीशान भवनों वाले लाल गुदड़ी के लालों के सामने एक दम फीके और बेरौनक लगते हैं। जींद के गाँव जुलानी की सरल हृदया परमेश्वरी देवी को आपकी जीवन-संगिनी बनने का सौभाग्य मिला।

चौधरी साहब ने श्रमजीवी की तरह रोहतक से अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ की। नेकनीयती और ईमानदारी जैसे सद्गुणों के बलबूते पर आप निरंतर आगे बढ़ते गए। आप पुरुषार्थी तो हैं ही, अनन्य ऋषि-भक्त भी हैं। नीतिकारों ने कहा है कि अन्य गुण तो अभ्यास से प्राप्त हो जाते हैं, किंतु दानशीलता, मधुरवाणी, धैर्य एवं शौर्य, विवेक - ये चार गुण - अभ्यास से प्राप्त नहीं किए जा सकते। लगता है मानो चौधरी मित्रसेन को ही दृष्टि में रखते हुए यह कथन कहा गया हो। आपने जीवन में कितने उतार-चढ़ाव देखे, खट्टे- मीठे अनुभवों से पाला पड़ा, सहयोग मिला, विरोध का भी सामना किया, लेकिन सद्गुणों को अपने हाथ से नहीं जाने दिया, ईश्वर में अविचल आस्था

बनाए रखी, आगे बढ़ते रहे, कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा ।

मेरा सौभाग्य है कि पिछले लगभग 12-13 साल से मैं चौधरी साहब के निकट संपर्क में रहा हूं। मैंने देखा कि यह असाधारण इन्सान आत्म प्रशंसा, विज्ञापनबाजी, दिखावे और आडम्बर से कोसों दूर है। मैं इनके लिए निष्काम दानयोग शब्द का प्रयोग करना चाहता हूं। नीतिकारों ने तो कहा है कि धन पाकर किसे गर्व नहीं होता है ? अर्थात् धन-दौलत आदमी को घमंडी बना देती हैं, किन्तु चौ. मित्रसेन जी इसके अपवाद कहे जा सकते हैं। दान देते समय (समय और राशि दोनों तरह से) सबसे आगे, अपने नाम की घोषणा सुनने की कोई लालसा नहीं। यहाँ तक कि कितनी राशि दे रहे हैं, यह घोषणा करने या मंच पर बैठने में भी संकोच करते हैं और नीचे फर्श पर ही बैठ जाते हैं। कभी भी अपेक्षा नहीं करते कि आयोजक उनके आगे पीछे घूमें, उनकी तारीफों के पुल बांधें। इतने सहज और सात्विक भाव वाले दानवीर विरले होते हैं। चेहरे पर सहज मुस्कान, सौम्यता एवं लीनता यदि कहीं देखनी हो तो चौ. मित्रसेन के व्यक्तित्व में देखें। **'सौजन्यं यदि किं गुणैः'** का मूर्तिमान् रूप चौ. मित्रसेन हैं।

आप बात के धनी हैं, कह दिया सो कह दिया। राम के चरित्र के उपासक चौ. मित्रसेन **'रामो द्विर्नाभिभाषते'** (राम दो तरह की बात नहीं करता) आदर्श के सच्चे अनुयायी हैं। चौधरी साहब की एक और विशेषता, है जो अन्यत्र दुर्लभ है और वह यह कि आप चाहे 11 हजार दें, चाहे 11 लाख, चाहे और कम-ज्यादा जो भी देते हैं, वहीं उसी वक्त दे देते हैं। दान में इतनी तत्परता, इतना उत्साह भला कहीं मिल सकता है। मुझे एक बार फिर आचार्य चाणक्य की भगवान राम के प्रति कही गई यह उक्ति स्मरण हो आती है कि **'दाने समुत्साहता'** इसी की झलक चौ.मित्रसेन में भी मिलती है।

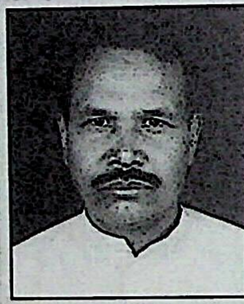
रोहतक के सेक्टर-14 में विशाल भूखंड पर बना भव्य **'सिन्धु भवन'** भी आदरणीय चौधरी साहब के उदात्त गुणों, उनके जीवन-दर्शन, उनकी आस्था, धार्मिकता, स्व-संस्कृति प्रेम को अपने में समेटे हुए है।

ओमकुमार
चौ. छोटूराम किसान कालेज,
जीन्द (हरियाणा)

''सत्य बोलना शुभकर्म है। सत्य से बढ़कर कोई दूसरा कार्य नहीं है।
सब को सत्य ने ही धारण कर रखा है।
सत्य ही ब्रह्म है, सत्य ही तप है, सत्य से ही मनुष्य स्वर्ग पाता है।''

38. हमारे आदर्श चौ. मित्रसेन जी

श्री योगेन्द्र कुमार उपाध्याय वैदिक धर्म के अनुयायी तथा विद्वान हैं।



महाजन की संगति किस की उन्नति नहीं करती? कमल के पत्ते पर स्थित जल मोती की शोभा पा लेता है।

महामना चाणक्य की यह उक्ति चौ. मित्रसेन जी पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। जो कोई भी व्यक्ति आपके संपर्क में आता है वह मोती की तरह चमकता अवश्य है।

बात सन् 1987 की है। आर्य समाज के आदर्श शिक्षा केन्द्र डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, भुवनेश्वर में अध्यापक नियुक्त होने के बाद सायंकाल पं. कृष्णवेदी शास्त्री के साथ आर्य समाज शहीद नगर पहुंचा। वहां समाज के मन्त्री तथा वेदों के स्वाध्यायी विद्वान श्री प्रियव्रत दास जी तथा उनकी धर्मपत्नी शन्नोदेवी जी से जाकर मिला। गुरुकुल, आमसेना में अध्ययन के समय से ही आपसे परिचय था, अत: आप के स्नेहवश मैं आर्य समाज में रहने लगा। आपने मेरे लिए अनेक सुविधाएं भी दीं। एक दिन आपसे दास बाबू ने कहा, 'इस बार श्रावणी उपाकर्म में '**पुरुष सूक्त**' पर चिन्तन चल रहा है, मैं तो बोलता हूं कि आप को भी बोलना है।' बोलने का अभ्यास न होते हुए भी विद्वानों का अनुसरण करते हुए बोला, बात आर्यजनों को पसन्द आई, जो उनके गुण ग्रहण का ही परिणाम था।

प्रात: कालीन यज्ञ और सत्संग में अन्य लोगों की तरह एक भव्य, विनयशील,आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, सौम्यप्रकृति, श्वेत वस्त्रधारी सज्जन भी बैठते थे। रविवार के सत्संग के बाद जब प्रियव्रत दास जी ने परिचय कराया तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, क्योंकि वे थे आर्यकुल भूषण समाज के तत्कालीन प्रधान चौ. मित्रसेन आर्य।

मैंने भुवनेश्वर में देखा कि पुरी के तत्कालीन शंकराचार्य श्री निरञ्जन देव तीर्थ ने बबराला सती कांड का समर्थन किया और उसका विरोध आर्यजगत् ने किया। तब भुवनेश्ववर आर्य समाज के प्रधान की हैसियत से उन्होंने दो-टूक शब्दों में कह दिया - '**शंकराचार्य**' को शास्त्रार्थ के लिए ललकारें।

श्री योगेन्द्र कुमार उपाध्याय
केन्द्रीय विद्यालय, सम्बलपुर, उड़ीसा

39. चौ. मित्रसेन आर्य - एक सघन सम्पर्क

श्री वसन्त पांडा वैदिक संस्कृति के अनन्य श्रद्धालु उपासक हैं। गुरुकुल, आमसेना के प्रति भी आपका विशेष सहयोग है।



अत्यन्त सौभाग्य और खुशी का विषय है कि गुरुकुल आश्रम, आमसेना के पुण्य तीर्थ में तपस्वी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के तप प्रभाव से सदा ही पुण्यात्माओं का आगमन, आवसन और सङ्गमन होता रहा है। आज से दस वर्ष पूर्व पुण्य प्रभाव से अपूर्व दानशील, अपर भामाशाह, पुण्य केसरी, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी चतुर्वर्ग में अपने मन को धारण किये हुए चौ. मित्रसेन आर्य, जो गुरुकुल के कुलपति और कुलपिता – दोनों क्षमताओं से युक्त हैं, उनका दर्शन हुआ, संवदन हुआ और संज्ञान हो गया। तब से चौधरी जी के गौरवमय जीवन से स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हुए मेरे हृदय में यह उद्‌गार जागा कि **'दाता भवति वा न वा'**। बहुत कम इस लोक में हैं जो लक्ष्मी का सरस्वती के साथ गणेशपूर्वक संयोग बिठाते हैं। दानवीर मित्रसेन आर्य जी प्रत्येक शुभ कार्य के लिए अनिवार्य रूप से सहकार्य करते हैं। यह गुण सबके लिए शिरोधार्य होना चाहिए।

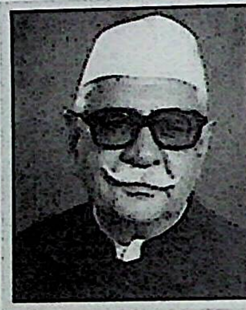
वन्दे मातरम्
तेरा वैभव अमर रहे माँ,
हम दिन चार रहें न रहें।
चिरायुष्कामये

वसन्त पांडा
पूर्व विधायक, नवापारा (उड़ीसा)

"अधिक वर्षों के बीतने, श्वेत बाल के होने, अधिक धन से और बड़े कुटुंब से वृद्ध नहीं होता, किन्तु ऋषि-मुनियों का यही निश्चय है कि जो हमारे बीच में विद्या और विज्ञान में अधिक है वही वृद्ध पुरुष कहलाता है।"

40. धर्मपरायण चौ. मित्रसेन

सेवानिवृत्त डीएसपी श्री गणपति वर्मा आर्य संस्थाओं से सबंधित हैं।



जीवन तो परमात्मा का दिया हुआ है, किन्तु उसे सुधारने का कार्य व्यक्ति का स्वयं का ही होता है। श्री मित्रसेन जी आर्य का व्यक्तित्व और कृतित्व – दोनों ही अनुपम हैं। ऐसा धर्मपरायण और सेवा-भावी व्यक्ति तो इस युग में मिलना दुर्लभ है।

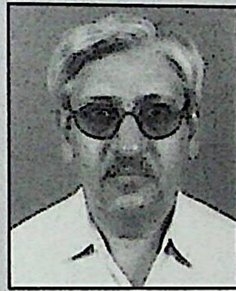
आपको वैदिक संस्कार तो विरासत में धर्मनिष्ठ पूज्य पिताजी चौ. शीशराम जी आर्य से मिले। उन्हें संवारा और कार्यान्वित किया श्री मित्रसेन जी आर्य ने। आर्य समाज रोहतक शहर के सदस्य तो आप 18 वर्ष की आयु में बन गए। गुरुकुल, झज्जर के भी आजीवन सदस्य बने। सन् 1957 में सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली के नेतृत्व में हिन्दी आर्य सत्याग्रह हुआ, जिसमें सत्याग्रहियों के साथ आप जेल गए। सन् 1988 में गुरुकुल आश्रम, आमसेना के वार्षिक उत्सव में प्रबंधकर्त्ता सभा के प्रधान बने, तब से आज तक उसी पद पर सुशोभित हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी मित्रसेन आर्य स्वतंत्रता सेनानी हैं। इन्होंने अनेक विद्यालय, गुरुकुल, छात्रावास, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय की स्थापना की, जिसमें मानवता के निर्माण में महान् कार्य हुआ है। श्री मित्रसेन जी आर्य में राष्ट्रीयता और अध्यात्मिकता का अपूर्व संगम है। आपने स्वयं के परिश्रम से कारोबार को धीरे-धीरे आगे बढ़ाया और उद्योगपति की श्रेणी में आ गए, जिसमें आपके सुपुत्रों ने अद्वितीय/श्लाघनीय सहयोग दिया।

श्री मित्रसेन आर्य ने स्वयं के परिश्रम से अर्जित की सम्पत्ति को भी ईश्वर की कृपा का प्रतिफल माना और निरभिमान और निःस्वार्थ रहकर अनेक आर्य संस्थाओं, दैवी विपत्ति के समय, बाढ़ और भूकम्प पीड़ितों को, कारगिल युद्ध के शहीद परिवारों को उदारतापूर्वक अपना कर्तव्य समझकर आर्थिक सहायता दी, जो मानवता के इतिहास में सर्व पूज्य है। अभिमान तो आपको छू तक नहीं सका। तपोनिष्ठ पूज्य स्वामी धर्मानंद जी के आशीर्वाद और ईशकृपा से श्री आर्य की प्रतिष्ठा, सम्मान और सद्वृत्ति में वृद्धि हुई है। इसी भावना ने श्री मित्रसेन जी आर्य को सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ और सच्चा आर्य बना दिया।

गणपति वर्मा
प्रधान, आर्य समाज सल्हारगंज,
इन्दौर (मध्यप्रदेश)

41. 'दिवा दांडी' श्री मित्रसेन आर्य

श्री रतनशी वेलाणी गुजरात के श्रद्धालु, कर्मठ और उदारमना आर्य सज्जन हैं। दर्शन महाविद्यालय, रोजड़ एवं प्रांतीय सभा के आप विशेष सहयोगी हैं।



आपके जीवन विकास पथ का अवलोकन करते हुए ऐसा महसूस हुआ जैसे महासागर में भटके हुए को दिवा दांडी का दर्शन होना। आज के भौतिकवाद में फंसे हुए प्राय: सभी जन को अहसास होता है कि वैदिक पथ पर चलकर भौतिक विकास असंभव-सा है। आप इन सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

आपने अपने जीवन काल में बहुआयामी तदर्थ पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं कृषि क्षेत्र में असाधारण प्रगति के कारण अनेक संस्थाएं एवं संस्कार से सम्मानित होने योग्य अवसर प्राप्त किया। आपको प्रगतिशील कृषक के रूप में **'कृषि विशारद'** की उपाधि से सम्मानित करना मानो अधूरा-सा लगता है।

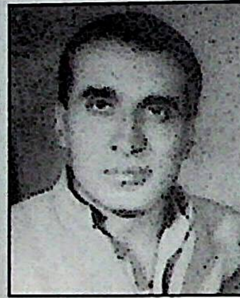
आपने न केवल पिता एवं पितामह द्वारा लगाए गए वैदिक जीवन रूपी पौधे का सिंचन किया, बल्कि अपने विचार एवं व्यवहार में वैदिक सिद्धांतों का अनुशीलन करते हुए पारिवारिक वटवृक्ष के निर्माण के अंतर्गत पुत्रों, पुत्रियों रूपी फल पाकर समाज एवं राष्ट्र को प्रदान करके आज के गृहस्थों के सामने एक व्यापक कृषक एवं प्रेरणास्त्रोत के रूप में दृष्टिगोचर होते हुए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। आपसे प्रेरणा पाते हुए मैं अपने जीवन पथ का उसी भांति निर्माण करने का प्रयास करने में सफलता चाहते हुए एवं आपकी स्वस्थ लंबी आयु के लिए ईश प्रार्थना करते हुए आप 'श्री मित्रसेन आर्य' को शत-शत प्रणाम, नमस्ते।

रतनशी वेलाणी 'आर्य निडम'
16, सुजाता पार्क सोसायटी,
बड़ोदरा (गुजरात)

''माता-पिता, आचार्य और अतिथि की सेवा करना देवपूजा कहलाती है और जिस-जिस कर्म से जगत का उपकार हो वह-वह करना और हानिकारक छोड़ना ही मनुष्य का मुख्य कर्म है।''

42. वीरभूमि के उज्ज्वल रत्न चौ. मित्रसेन

गुरुकुल, भैंसवाल के स्नातक श्री सुखदेव शास्त्री कुशल वक्ता व लेखक हैं। इन्होंने मॉरीशस, पोर्टलुई, हिन्द महासागर क्षेत्र आदि में वैदिक धर्म का प्रचार किया है।



पिता श्री शीशराम आर्य तथा माता जीवनी देवी के सद्गुणों को धारण करने से ही श्री मित्रसेन जी और उनका परिवार आज सर्वोच्च मानवीय गुणों से सुशोभित हो रहा है, गुण ही पूजा-सत्कार का कारण होते हैं।

परम सम्माननीय मित्रसेन जी आर्य का परिवार अपने पूर्वजों द्वारा संचालित वैदिक धर्म के पथ पर अग्रसर रहा है। आपके परदादा जैलदार चौ. राजमल जी सातरोल खाप के प्रधान थे। तब आपके घर शहीदें-ए-आजम भगत सिंह तथा हिसार के उस समय के आर्य समाजी पं. लखपतराय, चंदूलाल तायल, चूड़ामणि, डॉ. धनीराम जी आदि का बराबर आना-जाना था। भाई परमानन्द तो खांडा खेड़ी के आर्य समाज मंदिर में बहुत दिनों तक रहे थे। आपके परिवार, अपने पिता जी, दादा जी और परदादा के क्रांतिकारियों के साथ संबंध रहने से मित्रसेन जी के अंदर भी स्वतंत्रता की भावनाएं जागृत होती रही। यथा नाम तथा गुण के अनुसार आपका नाम मित्रसेन है। इसी नाम को सार्थक करने के लिए आप इस वेद के आदेश का पूर्णरूप से पान कर रहे हैं। इसी प्रकार मित्रसेन जी सात्विक आर्य पुरुष हैं, उनके साथ उनकी सहधर्मिणी श्रीमती परमेश्वरी देवी का भी सहयोग रहा है।

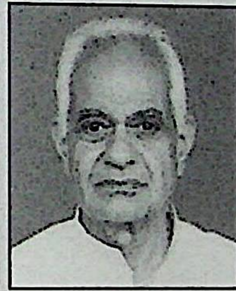
यज्ञ की धूम सर्वत्र पवित्रता का विस्तार करती है। यज्ञ की अग्नि देवपूजा, संगतीकरण, दान की भावना भरती है। इसी भावना से भावित होकर मित्रसेन जी दान की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं।

इस प्रकार ऐसे परोपकारी, दयालु, आदरणीय श्री मित्रसेन आर्य तथा उनके आर्य परिवार के लिए ईश्वर से प्रार्थना है कि यह परिवार सर्वदा फले-फूले, दीर्घ जीवन प्राप्त करे। व्यापार व्यवहार में सर्वदा सफलता प्राप्त होती रहे।

सुखदेव शास्त्री
आर्य-महोपदेशक

५३. भारत माता के सच्चे सपूत

भारत सरकार में भूतपूर्व रिसर्च केमिकल इंजीनियर डॉ. भीमदेव सिंह ने अलीगढ़ में प्रदूषण फैलाने वाले कारखाने के विरुद्ध आंदोलन चलाया। सरकार की ओर से आपको विशेष पुरस्कार मिला।



श्री मित्रसेन आर्य के पूर्व जन्मों के शुभकर्मों के कारण प्रारब्ध रूप में ऐसे परिवार में जन्म मिला, जिस पर ईश्वर कृपा पहले से ही हो रही थी। अपने पूर्वजों के यश को जो और आगे बढ़ावे, वह सौभाग्यशाली है।

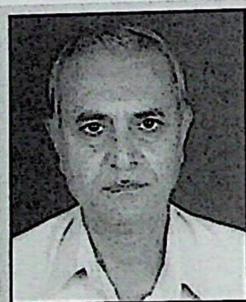
यह मेरा दुर्भाग्य ही रहा कि जब श्री मित्रसेन जी के सुपुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी बोकारो थर्मल प्लांट तथा चन्द्रपुरा थर्मल प्लांट निर्माण करवा रहे थे, मैं उन दिनों में बोकारो स्टील प्लांट में कार्यरत था, लेकिन उस समय उनसे परिचय न हो सका, जबकि मैं बोकारो स्टील सिटी में आर्य समाज की स्थापना, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आदि के निर्माण से भी जुड़ा था। अवकाश प्राप्त करके मैं भिलाई नगर चला गया। फिर गुरुकुल, होशंगाबाद का प्रबंध संचालक रहा। गुरुकुल आमसेना भी आना-जाना रहा। शुद्धि समारोहों में तथा स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से वानप्रस्थ की प्रेरणा ली। श्री मित्रसेन जी से वहां भी संपर्क न हो पाया। करीब से तो मैंने मित्रसेन जी को तब देखा जब स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी को सम्मानित तथा पुरस्कृत किया जा रहा था। आपको जितने सम्मान तथा पुरस्कार मिले, वह इस बात के द्योतक हैं कि आपने प्रत्येक क्षेत्र में समाज के समक्ष ऐसे आदर्श प्रस्तुत किए, जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। दीन-दुखियों, निर्धनों के प्रति आपके हृदय में अगाध पीड़ा है। ऐसे व्यस्ततम जीवन जीने वाले महान् कर्मयोगी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करना परमावश्यक कर्तव्य है, जिससे भावी पीढ़ी प्रेरणा लेकर अपना जीवन सुधार सकती है। आज के युग में जब मानवीय गुणों का तेजी से ह्रास हो रहा हो, ऐसे में महापुरुषों के आदर्श सदा प्रकाश-स्तम्भ बनकर सदैव प्रेरणा के स्रोत सिद्ध होंगे।

मैं ऐसे समाजसेवी सर्वगुण सम्पन्न श्री मित्रसेन आर्य के अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करता हूं।

भीमदेव सिंह 'वानप्रस्थी'
पर्यावरणविद्, 59, मित्रनगर,
गूलर रोड, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)

44. कर्मयोगी आर्य

श्री परमार जी आर्य सिद्धान्तों के उत्साही प्रचारक हैं तथा ऋषि दयानंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मुख्य सहयोगी हैं।



वेद का आदेश है "**कुर्वन्नैव हि कर्माणि जिजीविषेत्....**" कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जिएं अर्थात् जीवन सदकर्मों में रत रहे। प्रत्येक वैदिक धर्मी को इस आदेश का पालन करना है, यही धर्मपरायणता है। चौधरी मित्रसेन आर्य ने इसका पूर्णतया पालन किया है।

चौधरी ने दर्जनों आर्य संस्थाओं और शिक्षालयों को अपनी पवित्र कमाई से परिपुष्ट कर 'शत हस्त समाहर, सहस्त्र हस्त संकिर' को चरितार्थ किया है। गुरुकुल आश्रम, आमसेना के तो आप प्राण हैं।

श्रीमान मित्रसेन जी के जीवन और कार्यों से संबंधित जानकारी पत्रिकाओं के माध्यम से समय-समय पर मिलती रहती है, इससे परोक्ष रूप से उनसे परिचय बना है। मन प्रसन्नता से भर जाता है कि आर्य समाज के पास जहाँ दिग्गज विद्वान् संन्यासी हैं, वहां भामाशाह स्वरूप आर्य श्रेष्ठी भी हैं। आर्य समाज दोनों महत्त्वपूर्ण पहलुओं से 'सनाथ' है।

श्री चौधरी के सभी सुपुत्रों ने अपने पूज्य पिताजी का आशीर्वाद ग्रहण कर उनके पद चिह्नों का अनुसरण किया है। यही तो आदर्श परिवार का परिचायक है।

वैदिक धर्म की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने के लिए चौधरी जी अपनी आर्थिक आहुति डालते रहें। परमात्मा आपको शतायु प्रदान करे, यही मंगल कामना है।

हंसमुख परमार
मंत्री, आर्य समाज टंकारा
(गुजरात)

"कर्मेन्द्रियां जड़ पदार्थों की अपेक्षा श्रेष्ठ है, मन इन्द्रियों से बढ़कर है, बुद्धि मन से भी उच्च है और आत्मा बुद्धि से भी बढ़कर है।"

45. कर्मठता के प्रतीक चौ. मित्रसेन सिन्धु

आचार्य सत्यप्रिय सामश्रवा व्याकरणाचार्य तथा दर्शन में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से स्वर्ण पदकधारी हैं। गुरुकुल आमसेना के अध्यापक, ओजस्वी वक्ता तथा सोनाबेड़ा माता परमेश्वरी कन्या छात्रावास के प्रबंधक हैं।



चौ. मित्रसेन जी हरियाणा के प्रसिद्ध उद्योगपति हैं। आपके दादाजी एवं पिताजी भी कट्टर आर्य समाजी थे। पिता चौधरी शीशराम जी आर्य महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त थे। आज के इस पतनकारी युग में भी इस परिवार में जाते ही आभास होने लगता है कि संसार में अभी भी धर्म है और ऋषियों के काल के वैदिक परिवार का अस्तित्व संसार में बचा है। चौ. मित्रसेन जी ने अपने जीवन में कर्म को ही विशेष प्रधानता दी है। निरन्तर कर्म करते रहना ही उनके हंसमुख भाव का परिचायक है। प्रमाद और आलस्य उन्हें छू भी नहीं सकता। उनका कहना है कि गति और कर्मशीलता ही जीवन है। मार्ग में पड़ाव डालने का नाम जीवन नहीं है। अकर्मण्य पुरुष पापी हो जाता है। यही कारण है कि उनके चेहरे पर प्रसन्नता रहती है।

जो व्यक्ति जागकर शुभ कार्यों में लगता है, देवता उसी को चाहते हैं, सोए पड़े रहने वाले से वे प्रीति नहीं करते। प्रमादी की सहायता कोई नहीं करता।

आप कर्मठता के साथ-साथ उदार हृदय, धर्मशील, सदाचारी, मधुर, अग्निहोत्र परायण, कर्मठ आर्य कार्यकर्ता हैं। विपुल धन पाकर भी अहंकार आपको छू नहीं पाया है। आप विनम्रता की प्रतिमूर्ति हैं।

आपकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आर्य संस्थाओं के दर्जनों उत्तरदायित्व आपके सबल कंधों पर है। सन् 1988 से आप महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम, आमसेना के प्रधान पद को सुशोभित करते आ रहे हैं।

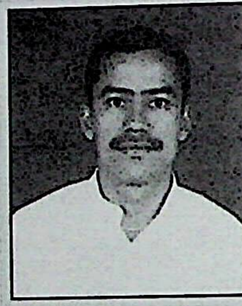
आर्य समाज एवं गुरुकुलों के प्रति आपके हृदय में विशेष तड़प है। आर्य जगत् में विशेष ख्याति प्राप्त आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में समर्पित गुरुकुल आश्रम, आमसेना पर भी वर्षों से आपका वरदहस्त है।

'स्वस्ति ते पन्थानः सन्तु।' आप लोगों का जीवन-मार्ग कल्याणमय हो।

आचार्य सत्यप्रिय सामश्रवा
गुरुकुल आश्रम, आमसेना
(उड़ीसा)

46. चौ. मित्रसेन का व्यक्तित्व मेरी नजर में

आचार्य अभय आर्य वैदिक साहित्य के अच्छे लेखक एवं वक्ता हैं।



जो जैसा है, वैसा मानना, कहना और लिखना सत्य है। चौ. मित्रसेन अभिनन्दन ग्रन्थ के निर्माण की जानकारी प्रायः इस विषय की प्रक्रिया के आरम्भ में ही थीं,लेकिन उस समय उनके व्यक्तित्व के ऊपर मेरी लेखनी नहीं चली, क्योंकि मैं स्वयं उनसे कभी नहीं मिला था। केवल दो वर्ष पहले रोहतक में आने के बाद और गुरुकुल सिंहपुरा में अपने सेवाकाल के दौरान श्रवण रूप में उनका परिचय प्राप्त था। उस समय मैंने यही निष्कर्ष निकाला था कि आर्य समाज की संस्थाओं की आप दान-रूपी रीढ़ के समान हैं।

आपके बाह्य वैभव का परिचय मुझे तब मिला जब एक ब्रह्मचारी आपके पास एक नई संस्था खोलने के उद्देश्य से सहायता लेने गए। वे आपके पुत्र श्री रुद्रसेन जी आर्य से मिले तथा अपने विचार रखे। उस समय श्री रुद्रसेन जी ने उनको बताया कि किसी भी महत्त्वपूर्ण विषय पर हमारे परिवार का कोई भी सदस्य अकेले निर्णय नहीं ले सकता। हमारा परिवार सुबह यज्ञ पर एकत्रित होता है तथा रात्रि के भोजन के बाद हम कुछ देर के लिए मिलकर बैठते हैं। उस समय हम किसी विषय का निर्णय करते हैं। जब उस ब्रह्मचारी ने आपके परिवार के विषय में यह जानकारी दी तब प्रथम अवसर था, जब मुझे आपके आन्तरिक वैभव का पता चला।

मेरी लेखनी आपका अभिनन्दन करने के लिए उस समय बाधित हुई, जब मैं व्यक्तिगत रूप से आपसे मिला। किस विशेषता ने मुझे बाधित किया? प्रथम तो आपका परिवार, जो इस परिवेश में भी एकता में रहता हैं। आप परिवार के मुखिया हैं। जब मैं आपसे मिला तो सिंहपुरा गुरुकुल के प्रधान चौ. रघुवीर सिंह मेरे साथ थे। आप अत्यन्त आत्मीयता से मिले। आपके इन सर्वश्रेष्ठ गुणों के कारण मेरी लेखनी आपका अभिनन्दन करती है। मैं हृदय से प्रार्थना करता हूं कि वह सत्य, सब वस्तुओं का देवेहारा ईश्वर आपके धन-वैभव को बढ़ाता रहे, ईश्वर आपके और आपके परिवार के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल को बढ़ाता रहे।

आचार्य अभय आर्य
आचार्य, गुरुकुल सिंहपुरा,
रोहतक (हरियाणा)

47. आदर्शपुरुष चौ. मित्रसेन जी आर्य

आप उड़िया और हिन्दी भाषा के वक्ता तथा लेखक हैं। गुरुकुल आश्रम, आमसेना के मुख्याध्यापक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा के वरिष्ठ उपमंत्री हैं।



ऐसा कौन आर्य होगा जो चौ. मित्रसेन आर्य के नाम से सुपरिचित नहीं। यद्यपि श्री आर्य का कार्यक्षेत्र चार-पांच प्रान्तों में है, परन्तु उनके रचनात्मक कार्यों से संपूर्ण आर्य जनता उनको जानती है। संसार में ऐसे विरले ही होते हैं, जिनको पूर्व जन्म के सुकृत कर्म और परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से जीवन में समस्त सुख एक साथ प्राप्त होते हैं, परन्तु इन सुखों को प्राप्त कर वे निम्नोक्त कथन को चरितार्थ कर देते हैं, जिससे उनके जीवन में अशान्ति का बोल बाला बना रहता है।

जरा-सा व्यापार मिला, अहंकार हो गया,
जरा-सा धन मिला, बेकाबू हो गया,
जरा-सा ज्ञान मिला, उपदेश की भाषा सीख ली,
जरा-सा सम्मान मिला, पागल हो गया,
जरा-सा अधिकार मिला, दुनिया को तबाह कर दिया,
जरा-सा यश मिला, दुनियां पर हंसने लगा,
जरा-सा रूप मिला, दर्पण ही तोड़ दिया।
इस प्रकार तमाम उम्र छलनी में पानी भरते रहे,
अपनी समझ में बहुत बड़ा काम करते रहे॥

इन सब चीजों से विपरीत, बिल्कुल अलग हैं श्री आर्य जी, जो महामना भर्तृहरि जी के इस सुन्दर कथन को चरितार्थ कर रहे हैं-

इस परिवर्तनशील संसार में कौन ऐसा मनुष्य है, जो जन्म लेकर मरा न हो अथवा मरकर पैदा न हुआ हो, परन्तु उसी मनुष्य का जन्म सफल तथा धन्य होता है, जिसके कारण वंश और देश उन्नति को प्राप्त होते हैं।

"परोपकाराय सतां विभूतयः" अर्थात् आदर्श पुरुषों का जन्म परोपकार के लिए होता है, ठीक इसी प्रकार श्री आर्य जी सपरिवार परोपकार के कार्य में संलग्न हैं, आदर्श शिक्षण स्थलियों, आदर्श गुरुकुलों तथा आदर्श चिकित्सालयों आदि की उन्नति में तन-मन-धन से सहयोग कर रहे हैं। उनमें गुरुकुल आमसेना का तो परम सौभाग्य है कि जब से पूज्य गुरुवर्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती का आपसे प्रत्यक्ष संबंध हुआ, तब से अब तक निरन्तर आपकी इस गुरुकुल पर कृपा-दृष्टि बढ़ती ही जा रही है। आप इस गुरुकुल की उन्नति में परिवार की उन्नति मानकर अहर्निश लगे हुए हैं। आपका सेवा क्षेत्र यहीं तक सीमित नहीं है जब-जब भी भारत के

किसी क्षेत्र में अकाल पड़ा या भूकम्पादि से जान-माल की हानि हुई वहां आपने बढ़-चढ़कर सहयोग किया, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण गुजरात का भूकम्प है, जहाँ आपने अपने सहयोगियों के बलबूते, उजड़े हुए गाँवों को पुनः प्रतिष्ठित कर दिया।

'उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम्' के आप सफल पालक हैं तथा **वित्तस्य पात्रे व्ययः** के आप प्रबल समर्थक हैं, अतः दान खूब देते हैं, परन्तु पात्र-अपात्र को परखने में आपका जवाब नहीं। बात बनाने वाले चापलूसों एवं तथाकथित अधिकारियों के लिए आपका दान नहीं होता, बल्कि स्वयं निरीक्षणोपरान्त देशोन्नति, वेदोन्नति, युवकोन्नति आदि में कितना भी क्यों न देना पड़े, प्रसन्नता से देते हैं। आप अपनी पवित्र कमाई को कुछ निःशुल्क विद्यालय एवं चिकित्सालय संचालित कर व्यय करते हैं तथा गुरुकुल, आमसेना तथा आदर्श कन्या गुरुकुल, आमसेना के स्नातक ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों में जो आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा से दीक्षित हो, समाज के लिए समर्पित हुए हैं, उनके लिए आप सर्वविध साधनों सहित (धनादि देकर) समर्पित हैं। इसलिए हम सब नैष्ठिक ब्रह्मचारी इधर-उधर की चिन्ताओं से मुक्त हो कार्य क्षेत्र में लगे हुए हैं।

आयु के सात दशक पार करके भी आपमें अदम्य उत्साह और स्फूर्ति है, जो अन्यजनों के लिए अनुकरणीय है। आपके प्रत्येक कर्म में महर्षि दयानंद के स्वप्न **''आओ वेदों की ओर''** को साकार करने की तड़प देखने को मिलती है, यह हम सब आर्यों के लिए अत्यन्त लाभजनक है। सम्प्रति आप अपने सुयोग्य पुत्रों को समस्त कार्यभार देकर घर को ही तपोवन बना, सुखी जीवन काट रहे हैं। किसी कवि की उक्ति आपके ऊपर अक्षरशः घट रही है:-

वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणां,
गृहेऽपि पंचेन्द्रिय निग्रहस्तपः।
अकुत्सिते कर्मणि यः प्रवर्त्तते
निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम्॥

अर्थात् रागियों में वन में रहते हुए भी दोष उत्पन्न हो जाते हैं, किन्तु राग रहित तथा निन्दित काम न करने वाले गृहस्थों का घर भी तपोवन बन जाता है।

सुदर्शन देवार्यव्रती
गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा)

''जैसे मूल कट जाने से वृक्ष नष्ट होता है,
वैसे पाप को छोड़ने से दुःख नष्ट होता है।''

48. श्री मित्रसेन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

श्री सचिन कुमार योगार्थी एक कर्मठ, तपस्वी तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। ये अब आर्ष ज्योतिष गुरुकुल, कोसारंगी के आचार्य हैं।

वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जावें,
परसेवा पर उपकार में हम निज जीवन सफल बना जावें॥
हम दीन, दुखी, निर्बलों, विकलों के सेवक बन संताप हरें,
जो हैं अटके, भूले-भटके उनको तारें खुद तर जावें।

जीवन को सफल बनाने की यह प्रार्थना हम वर्षों से करते और सुनते आए हैं, परन्तु प्रार्थना के अनुरूप कार्य क्षेत्र में उतरने वाले विरले ही होते हैं। हमारे श्रद्धेय मित्रसेन जी आर्य इस कर्तव्यनिष्ठा के यशस्वी उदाहरण हैं। सेवा और परोपकार के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले श्री आर्य जी का पूर्ण परिचय दे पाना मुश्किल है, परन्तु जनकल्याणार्थ संक्षिप्त परिचय देने में मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

शूर, विद्वान और सेवा धर्म को जानने वाले - ये तीन प्रकार के मनुष्य पृथ्वी से सुवर्ण और धन-धान्य से परिपूर्ण भूमि का उपयोग करते हैं। ऐसे कर्तव्यनिष्ठ और सुवर्ण पुष्पों का संचय करने वाले श्री मित्रसेन जी आर्य का जन्म सन् 1931 में आर्य क्षत्रिय सिन्धु वंश में गाँव खांडा खेड़ी में महर्षि दयानंद भक्त चौ. शीशराम आर्य उपदेशक के घर में हुआ। आपका व्यक्तित्व तथा कृतित्व अपने आप में आदर्श एवं अनूठा है। आपकी कथनी



और करनी को देखकर उत्तम और मानव-कल्याण-कारी कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। आप वास्तव में जीवन में पूर्ण सफल हुए हैं।

आप अनेक संस्थाओं के संरक्षक एवं प्रेरक सदस्य हैं। गत पच्चीस वर्ष से उड़ीसा प्रतिनिधि सभा की ओर से आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य बनते आ रहे हैं तथा हरियाणा सभा के आप संरक्षक भी हैं। शुद्धि के कार्य में भी आप पीछे नहीं रहे। हजारों ईसाई परिवारों को आप वापस आर्य धर्म में लाए हैं।

जो परमेश्वर के प्यारे होते हैं, उन पर परमेश्वर की दया सदैव बनी रहती है। वे जीते हैं तो ईश्वर की इच्छा में और प्रयाण भी करते हैं तो ईश्वर इच्छाओं को पूर्ण करके।

सचिन कुमार 'योगार्थी'
आचार्य, आर्षज्योतिगुरुकुल आश्रम
कोसरंगी (छत्तीसगढ़)

49. मरुभूमि का मेघ

जगदीश मित्र हरियाणा में आर्य वीर दल के लगनशील कार्यकर्ता हैं।



अक्षताआर्याकाश में दिव्या-लोक विकीर्ण कर, सत्य दिशाओं का दर्शन कराने वाले, युग पुरुषों की पंक्ति में अग्रणी श्री मित्रसेन आर्य का संपूर्ण जीवन मानव-सेवा के पथ पर समर्पित है। महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्य समाज की चौथी पीढ़ी के अनुयायी श्री मित्रसेन के आचरण में जिन वैदिक मूल्यों की अजस्र धाराएं प्रवहमान हैं, उन धाराओं से व्यक्ति और समाज का कल्याण हो रहा है।

एक सफल उद्यमी और समाज-सुधारक के रूप में इनकी प्रतिभा का जो प्रकाश फैल रहा है, उससे समाज का हर व्यक्ति लाभान्वित होता हुआ दिखाई पड़ रहा है। इस कारण भी आर्याकाश के आलोक पुंज बने हुए हैं- महामना मित्रसेन आर्य। सन् 1964 में जनवरी से मार्च तक आपने ट्रकों को खरीदा और माइनिंग ट्रांसपोर्टिंग के व्यवसाय में अपने को तल्लीन किया। इसके साथ ही 'मित्रसेन ऐंड कंपनी' के माध्यम से आपने संवेदक के सोपान पर भी छलांग लगाई और देखते ही देखते उच्च संवेदकों में अग्रणी हो गये।

बिहार और उड़ीसा में भी आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी और इसकी देवनागरी लिपि के उत्थान की मशाल बुझने नहीं दी। 18 वर्ष की आयु में ही आपने रोहतक शहर के झज्जर रोड़ आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण की थी। इस कारण आप जहाँ भी गए, आर्य समाज का आलोक वहां भी फैलाते रहे। आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती से प्रेरित होकर सन् 1988 से आप गुरुकुल आश्रम, आमसेना में प्रबंधकर्त्री सभा के प्रधान बनकर आर्यालोक विकीर्ण कर रहे हैं।

सच्चे जन-सेवक के रूप में आपका आलोक चतुर्दिशा में विकीर्ण हो रहा है। कृषि के क्षेत्र में 'कृषि विशारद' का सम्मान भी भारत-सरकार से आपको प्राप्त हो चुका है।

बह रहे हैं आप दरिया की तरह चतुराश।
इसलिए भी बुझ रही है आपसे ही प्यास॥
आपसे ही प्यास बुझेगी हर मानव की।
दूर होगी दानवता भी हर दानव की॥

जगदीश मित्र आर्य
उपसंचालक, आर्य वीर दल
(हरियाणा)

50. आर्य जगत् की दानवीर विभूति मित्रसेन

आप व्याकरण शास्त्र में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ता, ओजस्वी वक्ता एवं लेखक हैं।



चौ. मित्रसेन आर्य का नाम आर्य एवं उद्योग जगत् में प्रसिद्ध है। आपको प्रसिद्ध उद्योगपति तथा आर्य जनता दानवीर के नाम से जानती है। हमारे चरित नायक चौ. मित्रसेन आर्य सद्गुणों की खान हैं, कौन-सा ऐसा मानवीय गुण है जो उनके अन्दर न समाहित हुआ हो।

गीता के उपदेश अक्षरशः पालन करते हुए **''मा गृध कस्य स्विद्धनम्''** वेद की सूक्ति को भी मन में रखकर खूब कर्म (परिश्रम) करते हैं। यही कारण है कि आप जिस कार्य में हाथ बढ़ाते हैं, उस कार्य में सफलता आपके चरण चूमती है। आप परिश्रम को जीवन में धारण करके **'आलस छोड़ो बनो परिश्रमी'** के संदेश वाहक हैं।

आर्य जगत् में आपकी ख्याति रहीम के नाम से या दानवीर के नाम से है। आप अपने धन को धर्म एवं परोपकार कार्य में व्यय करके गौरव महसूस करते हैं। आप इस भावना से दान नहीं देते कि मेरी प्रतिष्ठा या सम्मान बढ़े,आपकी यह भावना रहती है कि **''देने हारा और है जो देता दिन रैन॥''** 'वित्तेन रक्ष्यते धर्मः' अर्थात् सज्जन पुरुष धन से धर्म की रक्षा करते हैं। आप भी धर्म की वृद्धि हेतु सामाजिक संस्थाओं में लाखों रुपये देते हैं।

चौ. मित्रसेन जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि धनवान और बड़ा उद्योगपति होने के बावजूद आपमें लेशमात्र अभिमान, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट आदि नहीं है। जैसे आप गुण सम्पन्न हैं, वैसे आपका परिवार भी **''बाप चढ़े घोड़ा तो बेटा भी थोड़ा-थोड़ा''** के अनुरूप ही है। आप मधुर ढंग से बातचीत करते हुए, स्वजन हो चाहे परजन सभी के साथ आत्मीय जनवत एवं पुत्रवत् व्यवहार करते हैं। इसी वजह से आपको आपके कार्यकर्ता भी ''पिताजी'' के सम्बोधन से पुकारते हैं।

अतः मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि आपका स्वास्थ्य ठीक रहे और आपकी आयु सौ वर्षों से भी अधिक हो, जिससे आपके द्वारा प्रदत्त धन से सामाजिक संस्थाएं धर्म का प्रचार कर सकें।

दिलीप कुमार 'आर्य'
गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा)

51. आर्य संस्कृति के प्रति समर्पित

श्री उमेश चन्द्र गुप्त श्रद्धालु, उत्साही और सक्रिय आर्य कार्यकर्ता हैं।



स्वनामधन्य श्रद्धेय श्री मित्रसेन आर्य के जीवन की समीक्षात्मक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए मैं महर्षि दयानंद के वैदिक उद्घोष 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ' के अनुरूप 'कृण्वन्तो विश्वमित्रम्' की संज्ञा इस मनीषी के प्रति प्रेषित करते हुए स्वयं को कृतकृत्य अनुभव कर रहा हूं। यथा नाम तथा गुण का आपके जीवन में सर्वदा समावेश रहा है। आपके पिताजी आर्य जगत् के गणमान्य व्यक्तित्व एवं आर्य संस्कृति के प्रति अक्षरश: समर्पित रहे थे, उन्हीं के सानिध्य में श्री मित्रसेन जी ने जीवन को प्रतिक्षण आर्य संस्कृति के उत्थान में जीने का प्रयास किया। श्रद्धेय मित्रसेन आर्य बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। आपने अपने व्यक्तित्व को केवल अलंकृत, पुष्पित एवं पल्लवित ही नहीं किया, अपितु जनमानस को नई दिशा प्रदान कर लक्ष्य की ओर निरन्तर कदम बढ़ाते गए। आपका विनम्र स्वभाव, व्यवहार -कौशल, उदारवादिता आपकी विशिष्ट पहचान रही है। हमारी भावी पीढ़ी इस प्रकार के महानुभावों से बहुत कुछ सीख सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

जीवन के विभिन्न आयामों में आपका कार्य क्षेत्र सदा सराहनीय रहा है, औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में पदार्पण की आपकी युवावस्था से ही रुचि थी, फलस्वरूप रोहतक में आपने लेथ मशीन का वर्कशॉप स्थापित किया। कालान्तर में इस प्रकार बृहद रूप धारण कर उड़ीसा के विभिन्न स्थानों पर कई बड़े उद्योग स्थापित किए। मित्रसेन जी आर्य जैसे महापुरुषों का जीवन एक ज्योति-स्तम्भ का कार्य करता है और हमें प्रेरणा देता है कि हम भी अपने जीवन का उद्धार कर इसे आदर्श बना सकते हैं। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि Longfellow के शब्दों में:-

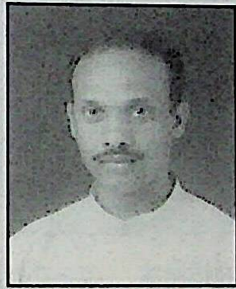
जैसे रेत पर चलते समय मनुष्य के पग चिह्न उभर आते हैं, उसी प्रकार महापुरुषों के महाप्रयाण के पश्चात् भी उनके आदर्श लम्बे समय तक अमिट रहते हैं

स्वयं आपका सम्मान करके आर्य जगत् अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। मेरा शत शत नमन एवं ढेर सारी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

उमेश चन्द्र गुप्त, एम.एम.सी.
आगरा (उत्तरप्रदेश)

52. अभिनन्दन

आचार्य सुभाष चन्द्र श्रद्धालु, आस्तिक, कर्मठ नवयुवक हैं। आप गुरुकुल आमसेना के स्नातक हैं तथा इस समय चौ. मित्रसेन जी द्वारा संचालित श्री जगन्नाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य हैं।



श्रद्धालु, उत्साही, कर्मठ, दानशील, वैदिक पथ के पथिक चौधरी मित्रसेन का दमऊधारा विद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हूं, जिनके आशीर्वाद एवं सहयोग से इस पिछड़े क्षेत्र में वनवासी छात्र और छात्राएं विद्यालय रूपी वृक्ष में पल्लवित हो रही हैं।

पिछले पांच दशक से भी अधिक समय से वैदिक विचारधारा पर कई प्रकार से राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में प्रयासरत हैं। यहाँ के नवयुवक, विद्यार्थियों में आप सन् 1996 से प्रतिवर्ष **'आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर'** का आयोजन कर उनमें राष्ट्र, समाज एवं संस्कृति के प्रति भाव भरते आ रहे हैं।

वैदिक मूल्यों का आपके आचरण में समावेश हैं। हर वर्ष आप 23 दिसंबर को स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर सात दिवसीय महायज्ञ का आयोजन लोगों में शान्ति, सद्भावना, प्रेम, संगठन एवं वातावरण को शुद्ध रखने तथा स्वामी श्रद्धानंद को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिए करते हैं। यहाँ के ग्रामीण श्रद्धारूपी आहुति यज्ञ में समर्पित करते हैं।

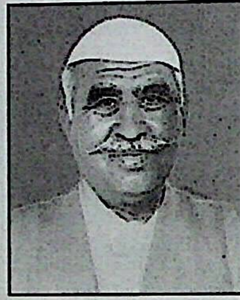
आपने कभी भी पराजय का मुख नहीं देखा। हंसते हुए पहाड़ जैसी मुसीबतों को रेत के ढेले के समान रौंदते हुए निकल गए। आपने स्वयं तो चहुंमुखी उन्नति की ही है, अपने पुत्र-पुत्रियों को भी सुसंस्कारित कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त कराया और आज भी प्रत्येक युवा को उन्नति की राहों पर ले जाने के लिए हर संभव प्रयत्न करते रहते हैं। आपका वरदहस्त निर्धनों, ब्रह्मचारियों, संन्यासियों, शहीदों के परिवारों, असहाय, कन्याओं, भूकम्पग्रस्तों के पुनर्वास हेतु निरन्तर दान भाव से आद्र रहता है।

समस्त विद्यालय परिवार आपके जीवन-लक्ष्य वैदिक सिद्धान्तों, कृषि सिद्धान्तों को मन, वचन और कर्म से स्वीकार कर अपने पथ पर निरन्तर बढ़ता रहे, इस उद्देश्य से सदा आपके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करते हुए प्रार्थना करते हैं।

सुभाष चन्द्र शास्त्री, प्राचार्य
जांजगीर चांपा, (छत्तीसगढ़)

53. महान समाजसेवी श्री मित्रसेन

वैद्य राजाराम प्रसिद्ध चिकित्सक, ऋषि दयानंद एवं वेद के अनन्य भक्त हैं।



स्वनामधन्य बहु-प्रतिभा के धनी श्री मित्रसेन आर्य का जीवन बड़ा ही धार्मिक एवं वैदिक मान्यताओं से परिपूर्ण रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती के सिद्धान्तों को स्थापित करके उनका जीवन में समावेश करने का कार्य भी मित्रसेन आर्य ने किया। वैदिक और आर्य संस्कार उन्हें अपने पिता श्री चौ. शीशराम आर्य से विरासत में मिले थे। वैदिक पताका फहराने वाले तथा महर्षि के मिशन को पूरा करने के लिए आर्य जी ने अपने छह पुत्रों और तीन पुत्रियों को अपने पिता के समान वैदिक संस्कारों में पुष्पित पल्लवित किया।

आपने परिश्रम एवं त्यागपूर्वक अपना व्यवसाय बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा आदि प्रांतों में फैलाया। यह आपके बड़े सुपुत्र कैप्टन रुद्रसेन की विद्वत्ता एवं सहिष्णुता का फल है। अनेक गुरुकुलों, पब्लिक स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को स्थापित करके उन्हें सुचारु रूप से संचालित करने का संपूर्ण श्रेय आपको ही है। सामाजिक क्षेत्र में आपका योगदान बड़ा ही अनुकरणीय है। अनेक सामाजिक संस्थाओं, गुरुकुलों एवं सभाओं के परम हितैषी बनकर श्री मित्रसेन आर्य सेवा कर रहे हैं। गुरुकुल आश्रम, आमसेना के सन् 1978 से आज तक प्रधान पद पर रहते हुए उसे आत्मनिर्भर बनाने का श्रेय आपको ही जाता है।

प्राकृतिक आपदाओं में अपनी पुण्य कमाई में से मुक्तहस्त से दान कर सेवा करने में सबसे आगे रहते हैं। वैदिक साहित्य में आपकी विशेष रुचि है। आपने लगभग एक दर्जन से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कराया है। सादा जीवन -उच्च विचार को आपने अपने तथा परिवार के अन्य सभी सदस्यों में चरितार्थ किया है। पुरुषार्थ चतुष्टय के वैदिक सिद्धान्त के अनुरूप आपने अपना जीवन जीने का उद्देश्य बनाया है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप शतायु से अधिक स्वस्थ जीवन जिएं और समाज को प्रेरित कर ऋषि मिशन को आगे बढ़ाते रहें।

वैद्य राजाराम शास्त्री
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

54. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी

कर्नल भरपूर सिंह सेवानिवृत्ति के बाद अपना अधिकतर समय समाज सुधार और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा रहे हैं।



सिंह के समान पराक्रमी और परिश्रमी मनुष्य के पास ही लक्ष्मी आती है। यह उक्ति चौ. मित्रसेन के जीवन पर पूरी तरह लागू होती है। साधारण परिवार में रहते हुए इन्होंने कठोर, परिश्रम और लगन से जिस तरह सम्पत्ति अर्जित की है, उसका अन्य उदाहरण प्राप्त होना कठिन है। उड़ीसा जैसे पिछड़े राज्य के जंगलों के भीलों, जिन्हें सभ्य समाज वनवासियों के नाम से पुकारता है, जिनकी भाषा समझना भी अत्यन्त कठिन है, उन लोगों से मेल-मिलाप करके अपना कारोबार चलाना कोई साधारण कार्य नहीं है।

अनेक कार्यों में अति व्यस्त जीवनयापन करने के उपरान्त इन्होंने अपने जीवन को ही नहीं, अपितु अपने समस्त परिवार को वैदिक धर्म, आर्य समाज के सिद्धान्तों का ज्ञान भली-भांति करवाया है।

बड़े-बड़े समाज सुधारकों स्वामी सत्यपति, स्वामी रामदेव, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती आदि अनेक महात्मा देश के भिन्न-भिन्न भागों में इनके आर्थिक सहयोग से धर्म-प्रचार और समाज सुधार के कार्यों में निरंतर प्रयासरत हैं। राजनीति से अपराधीकरण को दूर करने के लिए भी आप सदा प्रयासरत हैं।

सात्विक वृत्ति ने आपके व्यक्तित्व को और भी गरिमामय बना दिया है। आपको आधुनिक युग का भामाशाह अथवा सेठ छाजू राम कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। वास्तव में चौ. साहब की सफलता का रहस्य उनकी ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा, विश्वास एवं ईश्वर भक्ति है।

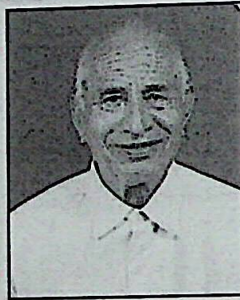
'इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृकय त्वामवस्युराचके'

हे प्रभो, तू मेरी पुकार सुन और आज ही मुझे कृतार्थ कर। तू दुखियों के दुख का हर्ता है। यह यश मैंने महान आत्माओं से सुना है। ऐसी प्रार्थना करने पर वह प्रभु चौ. साहब जैसे धर्मात्माओं पर वैसे ही कृपा करता है। चौ. मित्रसेन उस सर्वव्यापक, सर्वेश्वर प्रभु से इसी प्रकार प्रार्थना करते हैं, जिसके कारण उस परम पिता परमेश्वर ने उन्हें सभी ओर से कृतकृत्य कर दिया है।

कर्नल भरपूर सिंह
रोहतक (हरियाणा)

55. प्राचीन भारत की संस्कृति का साक्षात रूप

आर्य संस्कृति के अनन्य भक्त पं. घनश्याम दास अपनी सामर्थ्य से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगे रहते हैं।



जब से मैं आदरणीय चौ. मित्रसेन आर्य के सम्पर्क में आया हूं, इनके गुण, कर्म, स्वभाव तथा व्यवहार को देखा है तब से हृदय अत्यंत प्रफुल्लित हुआ है। इनके व्यक्तित्व को देखकर इनके विषय में क्या लिखूं? यह नीले मुख वाली लेखनी इनके धवल यशगान को कैसे लिख सकती है? इनका जीवन एक खुली किताब है, जिसे कोई भी देख या पढ़ सकता है। इनके यशोगान की सुगन्धि चारों तरफ फैल रही है। इन्होंने अपने निज नाम को अपने गुण, कर्म और स्वभाव से सार्थक कर दिया है। जब इनके गुण, कर्म, क्रिया-कलापों को देखते हैं तथा सुनते हैं तो विस्मित हो जाते हैं। मन में इनके यश का गान करने लगते हैं, परन्तु वाणी अवाक हो जाती है। इतना होने के बावजूद मैं हृदय के भावों को लिखने का कुछ साहस कर रहा हूं।

1. दानशीलता : संसार में सबसे बड़ा दानी बादल को कहा गया है, जिसकी वर्षा से प्यासी धरती शस्यश्यामला हो जाती है और देश धन-धान्य से पूरित हो जाता है, परन्तु कुछ विद्वानों ने मनुष्य के दान को बादल के दान से बड़ा माना है। रोहतक नगर में कोई आर्य समाज या संस्था नहीं है जो इनके दान से वंचित रहती हो।

2. अतिथि सत्कार : इनका निवास स्थान यज्ञ की सुगन्धि तथा वेद मंत्रों के सात्विक परमाणुओं से ओत-प्रोत रहता है, जिससे आने वाले व्यक्ति का हृदय उल्लास से भर जाता है। अतिथि की सेवा में सदा सात्विक पदार्थों से सत्कार कर सतयुग का उदाहरण पेश करते हैं।

भारत के अनेक भागों में जैसे उड़ीसा, बिहार, मध्यप्रदेश आदि स्थानों पर वनवासियों को ज्ञान दिलाने के लिए गुरुकुल खोलकर तथा उनको ज्ञान देकर स्वावलंबी बनाया। प्रभु की वेदवाणी के प्रचार के निमित्त जीवन दानियों के भविष्य की सुरक्षा के लिए आर्थिक व्यवस्था की। ईश्वर आपको दीर्घायु तथा नीरोगता प्रदान करें तथा आपका परिवार आपके पदचिह्नों पर चलकर फले-फूले।

पं. घनश्याम दास
प्रधान, प्रधाना मोहल्ला आर्य समाज,
रोहतक (हरियाणा)

56. सरल जीवन एवं उच्च विचार की प्रतिमूर्ति

जितेन्द्र आर्य एक सद्गृहस्थ हैं। अपने सामर्थ्य के अनुसार जन-जन तक महर्षि दयानंद का संदेश पहुंचाने का यत्न करते हैं।

सरल जीवन और उच्च विचार की प्रतिमूर्ति श्री मित्रसेन सिन्धु हमारे सम्पर्क में सन् 1954 में आए। आदरणीय सिन्धु जी के पिता चौ. शीशराम भी आर्य समाज में कर्मठ कार्यकर्ता थे। सम्पूर्ण दिवस कार्य करने के पश्चात सायंकाल के समय भावनाएं दिल में हिलोरें मारने लगती और चौ. शीशराम स्वर के धनी, अपनी मनोहारी कविताओं एवं जोशीले आख्यानों से आर्य समाज को परिचित कराते थे।

श्री मित्रसेन जी सदैव कर्म में विश्वास रखते हैं। व्यापार के प्रारंभिक काल में इनका निवास स्थान सैनीपुरा रोहतक रहा है। उन्होंने धनसिंह मिस्त्री जी, जो सुनारियां निवासी थे, से खराद का कार्य सीखा। श्री सिन्धु बचपन से ही आर्य समाज विचारधारा और संस्कारों में पले-बड़े हुए। आर्य समाज की छाप उस समय और भी गहरी हो गई जब इन्होंने आर्य समाज झज्जर रोड, रोहतक की सदस्यता ग्रहण की। आर्य समाज एक समग्र क्रांतिकारी संस्था है। क्रांतिकारी विचारों की ज्वाला इनके हृदय में कूट-कूट कर भरी हुई है। जब हिन्दी भाषा आन्दोलन की लहर चली तब दयानंद एवं हिन्दी भाषा के दीवाने उस आन्दोलन में कूद पड़े मानो आर्य समाज की सारी शक्ति उस हिन्दी भाषा आंदोलन में तिरोहित हो गई। इसी के चलते श्री सिन्धु ने इस आंदोलन में हिस्सा लिया और 9 अगस्त, 1957 को आर्य समाज सैनिक स्थली दयानंद मठ, रोहतक से चलकर गिरफ्तारी दी। गिरफ्तारी के समय जत्थे में इनके विशेष एवं अभिन्न मित्र पूर्ण सिंह, श्रीमामचंद, सुखीराम, भरत सिंह परवार सैनीपुरा, डालूराम, धारा सिंह और मांगेराम, प्रेम सिंह इनके साथ थे। संघर्ष की इसी कड़ी में इन्हें बोस्टल जेल हिसार में रखा गया। स्वाभाविक तौर पर श्री सिन्धु जी सदैव सरल हृदय से मित्रों के मित्र रहे हैं। जेल से छूटने के बाद भी श्री सिन्धु हमेशा मित्रता निभाते रहे हैं। जहाँ तक व्यवसाय का संबंध है, जेल यात्रा के पश्चात व्यापार हेतु घर की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए उड़ीसा चले गए। व्यापार में कर्मठता रंग लाई। परमात्मा ऐसे तपस्वी श्री सिन्धु जी अधिक से अधिक आयु लेकर सदैव यशस्वी भावनाओं के शिखर पर बने रहें।

जितेन्द्र आर्य, मन्त्री
आर्य समाज, सैनीपुरा,
रोहतक (हरियाणा)

57. धीर-वीर-गंभीर

श्री बजरंग आर्य प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रेमी भक्त एवं दानी सज्जन हैं।

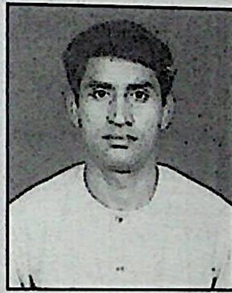
संभवतः सन् 1996 की बात होगी। अपने मामा श्री बलराम के साथ मैं गुरुकुल, आमसेना के वार्षिकोत्सव पर गया था। पहली बार चौधरी जी को देखा। मामा जी ने उनसे कुछ बातें कीं। मैं सुन रहा था। उन्होंने बताया कि सन् 1961 में बड़बिल उड़ीसा में मैंने रोहतक इंजीनियरिंग वर्क्स (लेथ मशीन का कार्य) खोला था जो आज भी अच्छा चल रहा है। उनको आज की स्थिति में देखकर और बातों को सुनकर लगा कि कभी श्रमजीवी थे, ''सैद्धांतिक भी थे'' उन्नति करते गए, आज भी दान करते हैं। इन्ही तीनों गुण वाला व्यक्ति उन्नति कर सकता है। मैंने उनसे न बातें की, न परिचय किया, परन्तु बाद में कई बार वार्षिकोत्सव अवसर पर उक्त संस्था में उनके सहयोग एवं दान को देखा।

उसी वर्ष गेवरा में उनके पुत्र श्री वीरसेन जी ने मामा जी को किसी विद्यालय (गेवरा के पास के ग्राम में) के शुभारंभ पर आमंत्रित किया था। मामा जी मुझे भी ले गए। वहां पहली बार उनको देखा। मामा जी ने मेरा परिचय एक मोटर मैकेनिक के रूप में कराया और काम देने का आग्रह किया था। उन्होंने कितनी गंभीरता और सच्चाई से इस बात को उत्सव कार्य के मध्य स्वीकार किया था, उसको मैं आजीवन भूल नहीं सकता। तब से आज तक मुझे उनकी संस्था से यदा-कदा सेवा का मौका मिलता है। मेरी छोटी-सी बात को उन्होंने कितनी गंभीरता और स्वागत से लिया था, वह उनके चेहरे पर दीखता था। उतना सच्चा चेहरा मैंने उससे पहले और बाद में नहीं देखा था। वह किसी को कितनी आत्मीयता दे सकते हैं, उनके सानिध्य से ही जाना जा सकता है। मैंने अपने में उतनी आत्मीयता का गुण कभी नहीं पाया, अतः मैं उनके सामने जाने में संकोच का अनुभव करता हूं और पिछले 10 वर्षों में पुनः उनसे अकेला नहीं मिला। किसी के साथ बार-बार जाना पड़ा था, वह अलग बात है। उनकी आत्मीयता किसी को इतना तृप्त करती है कि मन में कोई विकार हो, वह निकल जाता है।

बजरंग
मारुति गली,
कोरबा (छत्तीसगढ़)

58. प्रसिद्ध समाजसेवी

श्री जगबीर सिंह जगन्नाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दमऊधारा के प्रबंधक एवं व्यायाम शिक्षक हैं।



चौधरी मित्रसेन आर्य प्रसिद्ध समाज सेवी, उदारमना, श्रद्धालु, कर्मठ, दानवीर आर्य सज्जन हैं। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु गुरुकुल आश्रम, आमसेना में लाखों रुपये दान करते हैं।

विगत गुरुकुल वार्षिकोत्सव कार्यक्रम पर चौधरी मित्रसेन जी ने अपने पिता स्वर्गीय शीशराम जी की स्मृति में श्रेष्ठ संन्यासी एवं ब्रह्मचारियों को 15-15 हजार रुपये के नकद पुरस्कार प्रदान किए। यह कार्यक्रम आप हर वर्ष आयोजित करते हैं। संन्यासियों और विद्वानों का आप बहुत ही आदर- सम्मान करते हैं। सेवाभाव और वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा आपको विरासत में प्राप्त होने के कारण अपने पूर्वजों की तरह से आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के अनुयायी स्वर्गीय स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी ब्रतानन्द जी, आचार्य बलदेव जी आदि विद्वानों, संन्यासियों तथा देश के सभी भागों में आर्य संस्थाओं, गुरुकुलों और सभाओं से भी आपका निकट का सम्पर्क बना हुआ है। एक बार आपका यहाँ दमऊधारा, जांजगीर, चम्पा, छत्तीसगढ़ में विद्यालय में माता परमेश्वरी जी के साथ पदार्पण हुआ। आपने सभी वनवासी एवं अन्य छात्र-छात्राओं को फल वितरित करवाए तथा विद्यालय में पढ़ रहे सभी छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क शिक्षा देने के लिए कहा। यहाँ पर आप पहली से 12वीं कक्षा तक विद्यालय चला रहे हैं।

चौधरी मित्रसेन आर्य जी एक सफल उद्योगपति के साथ-साथ एक आदर्श किसान भी हैं। मेरे गाँव गरनावठी के पास ही आपने बंजर जमीन में, जहाँ जंगल एवं कांटेदार झाड़ियां थीं, सूझबूझ से फलदार पेड़ लगाकर हरियाली ला दी है। आपके इस कार्य से प्रभावित होकर भारत सरकार ने आपको किसान दिवस पर 23 दिसम्बर, 2002 को "**कृषि विशारद**" की उपाधि से अलंकृत भी किया है।

भगवान् आप जैसे उदारमना, आदर्श विभूति को दीर्घायु और निरन्तर अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करें।

जगबीर सिंह आर्य (छत्तीसगढ़)

59. श्रमशील और धर्म रक्षक : चौ. मित्रसेन

श्री आर.एल.बतरा एलआईसी के रिटायर्ड मैनेजर हैं तथा उनकी आर्य समाज के प्रति गहन आस्था है।



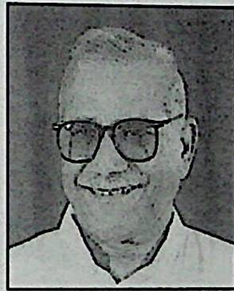
इस जगत में वास्तव में पूर्णतया सब ओर से वही मानव हो सकता है, जो आज दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले, जगत पिता परमेश्वर की साक्षी में उसकी प्रेरणा के अनुसार उसके उपदेश-आदेश और निर्देश के अनुसार जगत में सदा पवित्र वैदिक ज्ञान के प्रकाश से अपने जीवन को प्रकाशमय बनाता है। ज्ञानपूर्वक पवित्र यज्ञ आदि शुभ कार्यों को करता रहता है। इस प्रकार उसके पवित्र ज्ञान से उसका आहार, व्यवहार आदि पवित्र एवं उच्च होकर उसको परमार्थ सुखानंद का भागी बना देता है। सरलता- सादगी के प्रतीक चौधरी मित्रसेन का जीवन खुली किताब की भांति है। अत्यंत पुरुषार्थ तपस्या, त्याग से युक्त चौधरी साहब वनवासी क्षेत्रों में जहाँ साधनों का अभाव है, वहां पर निर्धन, निर्बल और भोले-भोले वनवासियों के बीच जाकर परोपकार करके अनेक प्रकार के साधन-सुविधाएं उनको प्रदान करते हैं। वहीं दूसरी ओर आपने कृषि क्षेत्र में भी कीर्तिमान स्थापित किए हैं। आप वैदिक साहित्य का प्रकाशन और वितरण तथा अन्य प्रचार कार्यों में रुचि रखते हैं। आपके जीवन का लक्ष्य वैदिक सिद्धांतों की पालना एवं ऋषि सिद्धांतों को मनसा, वाचा, कर्मणा सहित स्वीकार करना है। आपके जीवन का उद्देश्य है कि राष्ट्र सबल, समृद्ध हो और सब लोग परस्पर प्रेम से रहें। सर्वत्र श्रेष्ठ संस्कारों का प्रसार हो, ऐसी आपकी प्रबल इच्छा भी है तथा इसके लिए आप सदैव प्रयत्नशील भी हैं। यह आर्यावर्त देश श्रेष्ठ और सुसंस्कृत बने, यही आपके जीवन का एकमात्र उद्देश्य है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह आपके सत्कृत्य एवं सत्चरित्र और मानवीय गुणों की उदारता की कीर्ति दिग् और दिगांतर सुसज्जित करें। आर्य समाज, मॉडल टाउन, रोहतक आपके सहयोग के लिए हार्दिक आभारी है। आपके स्वास्थ्य और पारिवारिक सुख-शांति के लिए परिवार सहित प्रार्थना करता हूं।

आर.एल.बतरा
प्रधान, आर्य समाज,
मॉडल टाउन, रोहतक (हरियाणा)

60. एक विलक्षण व्यक्तित्व - मित्रसेन जी

श्री हरिसिंह सैनी हिसार आर्यसमाज, नागोरी गेट के प्रधान तथा समाजसेवी हैं। आप हरियाणा सरकार में मंत्री रह चुके हैं।



भारत आर्ष ऋषि-महर्षियों की पावन स्थली है। अनेक महापुरुषों ने इस पवित्र भूमि को अपने सात्विक आचरणों से सींचा है। इन विभूतियों की भान्ति हरियाणा के रोहतक मंडल में आर्य जगत की महान विभूति चौ. मित्रसेन जी आर्य एक विलक्षण वैदिक व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते हैं। आप का जन्म हिसार मंडल के खांडा खेड़ी ग्राम में चौ. शीशराम आर्य के यहाँ 15 दिसंबर, सन् 1931 में हुआ। आर्य समाज के परिप्रेक्ष्य में वैदिक विचारधारा आप की पैतृक धरोहर है। आप माता-पिता की प्रेरणा से सुसंस्कारों के धनी हैं। पारिवारिक परंपराओं के अनुरूप आपका जीवन वैदिक सिद्धांतों के अनुसार सन्ध्योपासना, वेदप्रचार, यज्ञप्रियता, वैदिक-साहित्य-वितरण, दान, आतिथ्य, कर्तव्यनिष्ठा, शिक्षा-प्रेम, औदार्य, स्नेह वत्सलता एवं गुणग्राह्यता आदि में संलग्न रहता है। आपके इन्हीं गुणों ने आपको सामाजिक क्षेत्र में **अजातशत्रु** पद से अलंकृत कर दिया है।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि आप का परिवार पीढ़ियों से आर्य समाज और ऋषि दयानंद के सिद्धान्तों में दीक्षित है। आपका सौभाग्य है कि आपके पूज्य पिताश्री आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर (पंजाब) के अवैतनिक धर्म-प्रचारक रहे हैं। आपका परिवार क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह, लाला लाजपतराय, पं. लखपतराय, सेठ चन्दूलाल, डॉ. रामजीलाल, बाबू चूड़ामणि आदि प्रतिष्ठित महापुरुषों का मित्र रहा है। आज समस्त भारत आपको कर्तव्यनिष्ठ वैदिकधर्मी के रूप में पाकर गौरवान्वित है।

अन्त में, मैं समझता हूं कि आप जैसे महाधान आर्य पुरुष की गुण-गरिमा इस लघु लेख में कैसे प्रस्तुत हो सकती है, तथापि मेरी अन्तर्यामी प्रभु से प्रार्थना है कि वह आप को दैवदुर्लभ उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें, जिससे आप इसी तरह आर्य जगत की सतत् सेवा करते रहें।

हरिसिंह सैनी
पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार
हिसार (हरियाणा)

61. पुरुषार्थ और दानशीलता के प्रतीक

श्री सत्यपाल पथिक आर्य समाज के विचारों के प्रचारक हैं। आप उच्चकोटि के कवि व लेखक हैं तथा आपकी वैदिक रचनाएं पूरा आर्य-जगत ससम्मान गाता है।



"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त संकिर", यह सूक्ति अथर्ववेद की है। इसमें परमात्मा ने मनुष्य मात्र के लिए सन्देश दिया है कि "हे मानव! तू सैकड़ों हाथों से कमा तथा हजारों हाथों से बांट।" इसको चरितार्थ करना किसी सामान्य व्यक्ति का कार्य नहीं, अपितु करोड़ों में से कोई विरला महापुरुष ही इस पर खरा उतरता है।

पहले तो अकेला व्यक्ति ईमानदारी से सैकड़ों के बराबर पुरुषार्थ करे अर्थात् दिन-रात अपना खून-पसीना एक करके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों, सर्दी, गर्मी, आंधी, तूफान के थपेड़ों को सहन करते हुए अदम्य साहस का परिचय देते हुए पुष्कल धन को प्राप्त करे। तत्पश्चात सूझ-बूझ तथा मेहनत से कमाए हुए धन को परमात्मा का दिया हुआ प्रसाद मान कर धर्म, देश तथा जाति के उत्थान के लिए, उत्तम शिक्षा तथा विद्या के प्रचार और प्रसार के लिए गरीबों तथा असहायों की सहायता के लिए, जीवनभर हजारों हाथों से बांटने का संकल्प लेकर उसे कार्यान्वित कर दे। ऐसे पुरुषार्थी तथा निष्काम दानी महापुरुषों की आजकल जब-जब चर्चा होती है, तब-तब एक उज्ज्वल व्यक्तित्व स्वतः ही उभर कर सामने आ जाता है और वह नाम है - 'चौधरी मित्रसेन जी आर्य'।

इस प्रकार चौधरी मित्रसेन जी आर्य सच्चे ईश्वर विश्वासी, महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयायी, आर्य समाज के अग्रणी नेता हैं। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सम्मानित अधिकारी हैं। पावन, शुभ और मानवतावादी कार्यों के कारण आपकी कीर्ति सर्वत्र फैल रही है। ऐसे महान व्यक्तित्व का सार्वजनिक अभिनन्दन करना सभी सामाजिक जनों का भी नैतिक कर्तव्य होना चाहिए ताकि अन्य को भी पुरुषार्थ तथा दानशीलता की प्रेरणा मिल सके। चौधरी मित्रसेन जी आर्य के अभिनन्दन के शुभ अवसर पर हृदय की गहराइयों से बहुत-बहुत बधाई देता हूं तथा परमात्मा से आपके स्वस्थ और दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

पं. सत्यपाल 'पथिक'
70-ए, गोकुल नगर,
मजीठा रोड, अमृतसर (पंजाब)

62. सफल उद्योगपति : चौ. मित्रसेन आर्य

आल इंडिया रेडियो, जालंधर के निदेशक पद पर कार्यरत श्री धर्मपाल मलिक भारतीय संस्कृति के प्रचार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।



दुनिया बनाने वाले ने संसार में आश्चर्यजनक अनेक कृतियां बनाई हैं। उन्हीं में एक उत्कृष्ट कृति है- इन्सान। और इन्सानों में भी अनेक रूप-रंग ऐसे दिखाई देते हैं जो श्रेय और प्रेम मार्ग पर अग्रसर हैं। श्रेयमार्गी माननीय चौधरी मित्रसेन आर्य से आज पूरा भारतवर्ष परिचित है। आपकी पहचान एक महान इन्सान के रूप में होती है। मैं जब भी आपके बारे में सुनता, तो मेरी उत्कृष्ठ इच्छा होती कि यथाशीघ्र आपके दर्शन करूं। सौभाग्य से एक बार जब आपके निवास स्थान सिन्धु भवन में मिला तब सिन्धु परिवार के भद्रजनों के संस्कृतनिष्ठ व्यवहार को देखकर अभिभूत हो गया। दर्जनों सेवकों की उपस्थिति में भी देश के अग्रणी उद्योगपति कैप्टन अभिमन्यु जी स्वयं जूठे बर्तन उठाकर आतिथ्य सत्कार की गरिमा को बढ़ा रहे थे। नन्हें-मुन्ने बच्चे जिस तरह से वैदिक ऋचाएं बोल रहे थे, वह सब मेरे जहन में एक अविस्मरणीय घटना बन गई। मैं मन ही मन विचारमग्न हो गया कि ऐसा आदर्श परिवार यदा-कदा ही दिखाई देता है। आमतौर पर धन वर्षा होते ही इन्सान अपनी धर्म संस्कृति लोक व्यवहार को भूल बैठता है, लेकिन यहाँ धन सम्पत्ति के मालिक होते हुए भी सिन्धु परिवार विनम्रता और सादगी का ज्वलंत उदाहरण है।

मैं श्रद्धेय चौ. मित्रसेन आर्य के अभिनन्दन शुभ अवसर पर ईश वन्दना करता हूं। आप शतायु से भी अधिक दीर्घजीवी एवं सुस्वास्थ्यवान हों, जिससे आधिकाधिक लोकोपकार सिद्ध हों।

धर्मपाल मलिक, निदेशक,
आकाशवाणी, जालंधर

"पैसा कमाने की विद्या कोई विद्या नहीं है, अध्यात्म विद्या ही सच्ची विद्या है।
सच्ची विद्या वहीं है जो आत्म बोध कराये और जीव को प्रभु के कदमों में ले जाकर मुक्ति दिलाये।"

63. अनुकरणीय व्यक्तित्व : चौ. मित्रसेन

श्री अशोक आर्य स्वामी तत्वबोध जी के स्वर्गवास के पश्चात सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के आधार हैं।



कुलभूमि से ज्ञात हुआ है कि गुरुकुल आश्रम, आमसेना अपने प्रधान माननीय चौधरी मित्रसेन जी का अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार करने जा रहा है। यह अत्यंत ही स्तुत्य प्रयास है। हमें निश्चयपूर्वक कहना चाहिए कि माननीय मित्रसेन जी की उदारता और सेवाकार्य का केंद्र मात्र गुरुकुल आश्रम, आमसेना ही नहीं, समस्त आर्य जगत है। माननीय मित्रसेन जी आर्य का व्यक्तित्व और कृतित्व महनीय है, अनुकरणीय है। स्वर्गीय तत्वबोध जी सरस्वती से श्री मित्रसेन जी आर्य के घनिष्ठ संबंध थे। श्री आर्य जी की न्यास पर सदैव कृपा रही है। 'सत्यार्थ प्रकाश' स्मारक के प्रांगण में जो संगीतमय फव्वारे लगे हुए हैं, जो कि ऋषि-मिशन के गीतों की धुनों पर थिरकते हुए, रंगीन आभा बिखरते हुए, दर्शनार्थियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए, उनका मन मोह लेते हैं, उनकी स्थापना में माननीय चौधरी मित्रसेन जी आर्य का उदार योगदान रहा है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि चौधरी साहब को नीरोग - दीर्घायु प्रदान करें ताकि आपकी सेवा आर्य जगत को लम्बे समय तक प्राप्त होती रहे।

अशोक आर्य
कार्यकारी अध्यक्ष,
श्रीमद् दयानंद सत्यार्थ प्रकाश न्यास,
उदयपुर (राजस्थान)

"जिस प्रकार तैरती नाव को प्रचण्ड हवा दूर बहा लेजाती है
उसी प्रकार विचरणशील इन्द्रियों में से कोई एक
जिसपर मन निरन्तर लगा रहता है, मनुष्य की बुद्धि को हर लेती है।"

64. आदर्श कर्मठ व्यक्तित्व

मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ अधिकारी श्री प्रकाश आर्य प्रसिद्ध वकील हैं। आपकी वैदिक संगीत पार्टी सारे देश में प्रसिद्ध है।



सम्माननीय श्री मित्रसेन जी आर्य के अभिनन्दन का समाचार पढ़कर मन को अत्यंत प्रसन्नता हुई। कर्म से कर्मठ, स्वभाव से त्यागी, व्यवहार से स्नेहिल, संकल्पी, परोपकारी गुणों से युक्त व्यक्तित्व का संयोग दुर्लभ है तथा कहीं-कहीं देखने को मिलता है।

परमात्मा की महती कृपा से हमें ऐसे ही मिशनरी, ऋषि-भक्त के रूप में श्री मित्रसेन जी आर्य प्राप्त हुए हैं। यह समस्त समाज के सौभाग्य और गौरव की बात है। योग्य व्यक्ति का सम्मान होना ही चाहिए ताकि अन्यों को भी उनका अनुसरण करने की प्रेरणा मिले। मनु ने स्पष्ट कहा-

अपूज्यायत्र पूज्यन्ते पूज्यानां तु व्यक्तिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥

जहाँ न पूजने योग्य लोगों की पूजा होती है और पूजने योग्य लोगों की अपेक्षा की जाती है, वहां दुर्भिक्ष, मृत्यु और भय व्याप्त होते हैं।

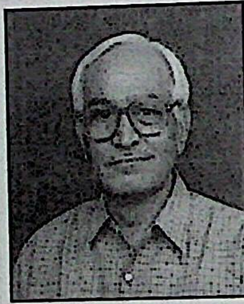
अतः ऐसे उदारमना, समर्पित श्री मित्रसेन जी आर्य का सम्मान करना हमारा नैतिक दायित्व है। इसे संपन्न कर अभिनन्दन समारोह समिति स्वयं गौरवान्वित हो रही है, ऐसा मेरा मन्तव्य है। ऐसे सच्चे ऋषि-भक्त अपने जीवन के अनेक बसंत देखें, दीर्घायु हों और जीवन की सार्थकता हेतु निरंतर अग्रेषित होते रहें। प्रभु से मेरी यही विनम्र प्रार्थना है।

प्रकाश आर्य
2602, श्याम विलास चौराहा,
स्टेशन रोड, महू (मध्यप्रदेश)

''जो त्यागी नहीं है, उसके लिए इच्छित, अनिच्छित तथा मिश्रित
- ये तीन प्रकार के कर्मफल मृत्यु के बाद मिलते हैं।
लेकिन जो संन्यासी है उन्हें ऐसे फल का सुख-दुख नहीं भोगना पड़ता।''

65. चौ. मित्रसेन का सौम्य स्वभाव

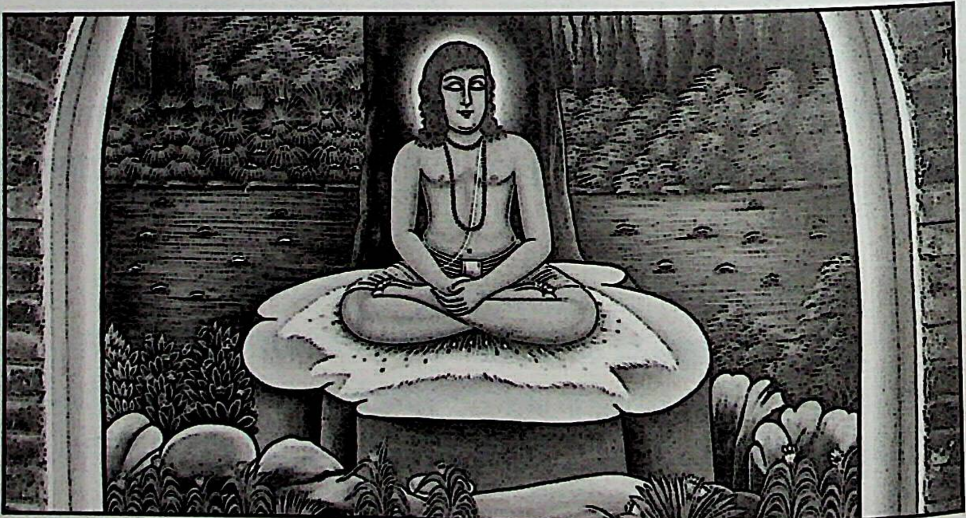
विख्यात शिक्षा शास्त्री और प्रभावशाली वैदिक प्रवक्ता डॉ. सत्यवीर विद्यालंकार गुरुकुल भैंसवाल के स्नातक हैं।



चौ. मित्रसेन आर्य से 22 वर्ष पहले कन्या गुरुकुल खानपुर कलां (सोनीपत) के उत्सव पर मिलने का सुअवसर मिला। आचार्य सुभाषिणी, चौ. माडूसिंह मलिक तथा गुरुकुलों के स्नातक-स्नातिकाओं के साथ वार्तालाप के मध्य मुझे इनके सौम्य-स्वभाव ने प्रभावित किया। अच्छी धनराशि दान देकर कहा कि यह सब ईश्वर की परम अनुकंपा का फल है।

उसके बाद रोहतक आते-जाते इनके साथ विचार-विमर्श करने का मौका मिलता रहा। वार्तालाप में कभी कोई अभिमान की बात नहीं की, बल्कि आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में ही हमेशा बात की। वनवासी क्षेत्रों में विद्या का प्रसार करने तथा वैदिक धर्म का प्रचार करने की इनमें अनोखी लग्न है और इसके लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। चौ. साहब परम धार्मिक तथा सच्चे आर्य हैं, इसका नमूना उनके सिन्धु भवन में बनी यज्ञशाला है, जहाँ प्रतिदिन यज्ञ होता है।

डॉ. सत्यवीर विद्यालंकार
टी.ओ.आर.सी./आई.डी.सी. चण्डीगढ़



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में ईश्वर भक्त बालक ध्रुव का चित्र।

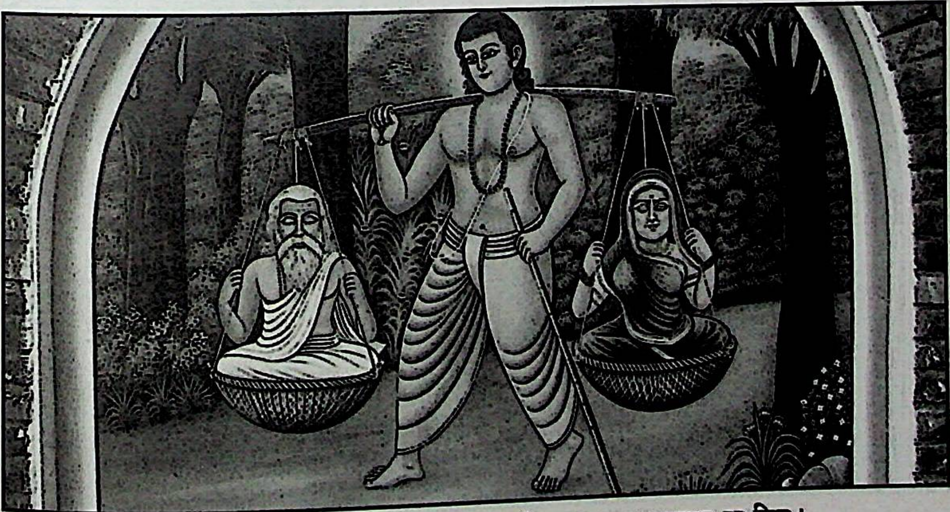
66. समाजसेवी चौधरी मित्रसेन जी

श्री पी. कार त्रिपाठी क्योंझर, उड़ीसा में कई समितियों से जुड़े हैं तथा पेशे से वकील हैं।



श्री मित्रसेन जी की गिनती भारत के प्रमुख समाजसेवियों में होती है। पूरे देश में इनकी गतिविधियों से लगता है कि परमपिता परमात्मा ने इन्हें समाजसेवा का यह कार्य सौंपा है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि ये अद्भुत व्यक्तित्व के धनी हैं और इनके कार्य तथा जीवनशैली उदाहरण स्वरूप हैं, जिनसे मेरे परिवार ने बहुत कुछ सीखा तथा लक्ष्यप्राप्ति में उनका अनुसरण किया। मुझे अनुभव होता है कि पूर्वजन्म के सद्कर्मों के कारण श्री मित्रसेन जी जैसे महान आदमियों से मेरा संबंध बना। मुझे अपनी यह इच्छा व्यक्त करने में कोई झिझक नहीं कि अगले जन्म में मेरा इनके परिवार के साथ संबंध हो। इनकी हीरक जयंती अवसर पर मैं सर्वोच्च शक्ति परमात्मा से प्रार्थना करूंगा कि वे इन्हें समाजसेवा कार्यों के लिए अधिक से अधिक अवसर दें ताकि ये जरूरतमंदों की सहायता करते रहें।

पी. कार त्रिपाठी, कटक (उड़ीसा)



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार का चित्र।

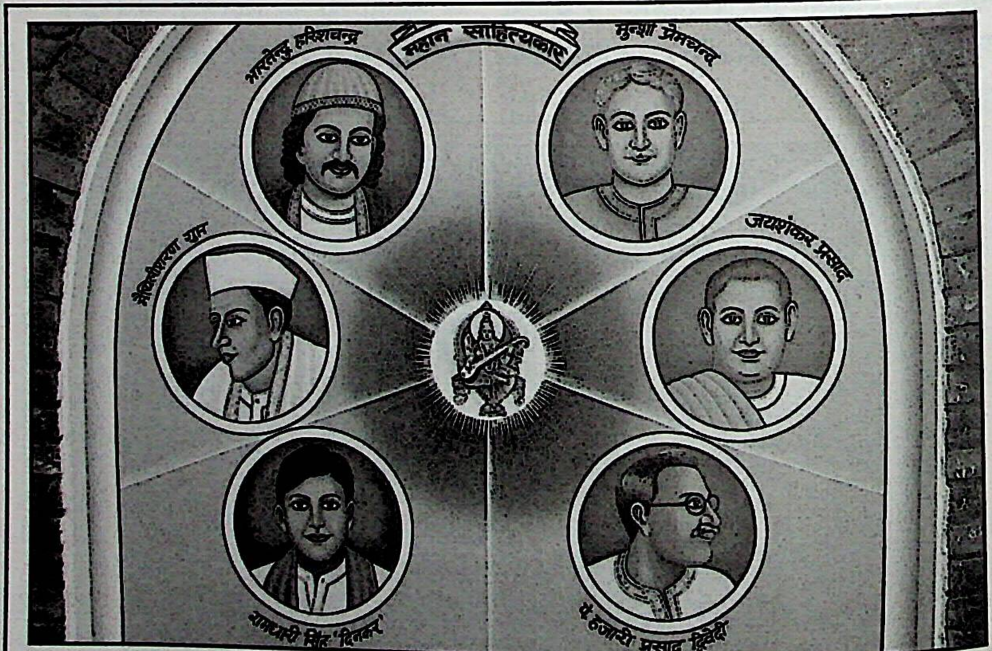
67. महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी

प्रसिद्ध पत्रकार श्री वेदप्रकाश वैदिक के पिताश्री जगदीश प्रसाद वैदिक आदर्श परंपराओं के संस्थापक हैं। आप संन्यास लेकर स्वामी वैदिकानंद नाम से समाजसेवा में लगे हुए हैं तथा अनेक संस्थाओं के संचालक एवं प्रेरक सदस्य हैं।

मित्रसेन जी वास्तव में बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। ये स्वामी दयानंदजी महाराज के सच्चे अनुयायी हैं। आपके पिताजी चौधरी शीशराम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब (लाहौर) में अवैतनिक भजनोपदेशक थे।

चौ. शीशराम जी जैसे सच्चे शिष्य को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित। ऐसे सच्चे, निष्ठावान और महर्षि दयानंद के समर्पित शिष्य के घर में मित्रसेन जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसने अपना जीवन एक श्रमिक के रूप में प्रारंभ कर व्यवसायी, उद्योगपति, ठेकेदार, पत्रकारिता, अनेक विद्यालयों की स्थापना, अनेक विद्यालयों तथा छात्रावासों को आर्थिक सहयोग, आर्य समाज की अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी, दैनिक पत्र चार प्रांतों से प्रकाशित करना, कृषि आदि कार्य सफलतापूर्वक किए हैं।

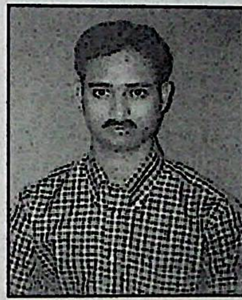
जगदीश प्रसाद वैदिक
इन्दौर (मध्य प्रदेश)



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में महान साहित्यकारों के चित्र।

68. उदारता की प्रतिमूर्ति - चौधरी मित्रसेन

श्री नीहार रंजन त्रिपाठी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में भूगर्भ विज्ञान में शोधरत हैं तथा उन्हें युवा वैज्ञानिक - 2005 पुरस्कार मिला है।



चौ. मित्रसेन जी ने मेरे जैसे अनेक छात्रों को पढ़ाई के लिए भरपूर योगदान दिया है। इन्हीं की बदौलत आज मैं युवा वैज्ञानिक कहलवाने का गौरव हासिल कर सका हूं।

इन द्वारा दी गई आर्थिक मदद के कारण ही मेरी पढ़ाई आज तक जारी है। जनवरी, 2005 के पहले सप्ताह में मुझे अहमदाबाद में भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 92वें अधिवेशन में शोध पत्र प्रस्तुत करने का मौका मिला। इसमें मुझे भूव्यवस्था विज्ञान के क्षेत्र में युवा वैज्ञानिक-2005 का पुरस्कार मिला। माता-पिता के साथ-साथ आपके आशीर्वाद और आर्थिक मदद के कारण ही मैं न केवल यह अवार्ड पा सका, अपितु इस अवार्ड को पाने वालों में सबसे कम आयु का हूं। मैंने इसे पहले ही प्रयास में प्राप्त किया। यदि आपका आशीर्वाद नहीं मिलता तो मैं ये अवार्ड प्राप्त नहीं कर पाता और मुझे आपकी वजह से ही मान्यता मिली। अब मुझे सीएसआईआर की तरफ से शोधवृत्ति मिल रही है और विज्ञान क्षेत्र में अपनी क्षमता सिद्ध करने का मौका मिला है। हाल ही में भारत के विज्ञान और तकनीक विभाग ने जापान में 15 दिन के एक सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधित्व के लिए मेरा चयन किया है। मैं एक बार फिर श्री मित्रसेन जी की उदारता पर आभार व्यक्त करता हूं तथा उनके शतायु होने की कामना करता हूं।

नीहार रंजन त्रिपाठी
कटक (उड़ीसा)

"जहाँ सच्चा ज्ञान है वहाँ सदैव आनन्द का अस्तित्व रहता है तथा दुःख नाम की किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं है। मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य सत्य की प्राप्ति करना है।"

- महात्मा गांधी

69. बहुआयामी प्रतिभा के धनी

श्री हजारी लाल यादव प्रमुख शिक्षाविद् व आर्य समाज के प्रमुख प्रचारक हैं।



सौम्यता की प्रतिमूर्ति एवं अद्भुत गुणों के संगम का नाम है–चौ. मित्रसेन आर्य। 74 वर्ष की आयु में भी जिनके चेहरे से ऐसा ओज एवं शालीनता टपकती है जो स्वाभाविक रूप से किसी दूसरे व्यक्ति को आकर्षित एवं प्रभावित करती है। संस्कारी परिवार में जन्म लिया तथा माता–पिता से पारिवारिक संस्कार प्राप्त किए। ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े तथा अपनी प्राचीन संस्कृति से देखा और अपने जीवन से अभाव एवं अज्ञान को मिटाने का दृढ़ संकल्प लिया।

औपचारिक रूप से तीसरी तक शिक्षा ग्रहण की, लेकिन अनुभवों की प्रतिभा की कसौटी पर तपाया, परखा और क्रियात्मक रूप दिया, जिसे किसी इंजीनियरिंग कॉलेज का बढ़िया से बढ़िया छात्र भी शायद नहीं कर सकता। एक–एक कदम बढ़ाया और सफलता हासिल की। उड़ीसा को कार्यक्षेत्र बनाया, वहां की आदिवासी संस्कृति को नजदीक से पहचाना तथा वहां अनेक इंजीनियरिंग वर्क्स एवं प्रतिष्ठानों की स्थापना की जो आपकी सफलता का जीता–जागता उदाहरण है। प्रत्येक संस्थान को एक बड़ा पारिवारिक रूप दिया।

आर्य जगत की बड़ी हस्तियों में आपका नाम है और दानवीरों की सूची में आप अग्रणी हैं। आर्यजगत से जुड़ी अनेक संस्थाएं आप द्वारा पोषित हुई जो वर्तमान में पल्वित एवं पुष्पित होकर समाज के लिए काफी अच्छा काम कर रही है।

आपाधापी एवं पारिवारिक बिखराव के इस दौर में मैंने सैकड़ों नहीं, हजारों परिवारों को काफी नजदीक से देखा है, लेकिन चौ. साहब का परिवार आदर्श परिवार एवं संयुक्त परिवार की एक बेजोड़ मिसाल है जिसका आभास परिवार से मिलने पर पूर्ण रूप से हो जाता है। अंत में, हम सभी परमपिता परमात्मा से ऐसी आशा करते हैं कि ऐसा सहगुणी, कर्मठ एवं मृदु स्वभाव का व्यक्तित्व दीर्घायु प्राप्त करें।

हजारी लाल यादव
रिवाड़ी (हरियाणा)

70. अद्भुत कर्मयोगी : चौ. मित्रसेन आर्य

ब्रह्मवादिनी आचार्या कलावती बहन समाज सेवा को समर्पित आर्य समाज की प्रसिद्ध प्रचारक हैं। आप बहुत विदुषी महिला हैं।



''योग: कर्मसु कौशलम्
गीता का यह मर्म'' मेरे मानस भाई चौ. मित्रसेन को अद्‌भुत कर्मयोगी बना गया। खाण्डाखेड़ी गांव का यह कर्मवीर अपनी सृजनात्मक बुद्धि के बल पर कर्मयोग को 'यदभ्यन्तरं तद् ब्राह्मम' का अमली जामा पहनाने के लिए अहर्निश संघर्ष का आलिंगन कर नव-निर्माण का पुरोधा बन गया।

लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन में जहां 'तप था, वहां साधना भी थी। जहां कर्मठता थी, वहां लगन भी थी। जहां संस्कार थे, वहां मर्यादा भी थी। जहां सदाचार था, वहां सादगी भी थी। जहां संयम था, वहां श्रद्धा थी। जहां परोपकार था, वहां ऊर्जा भी थी। जहां सौष्ठव था, वहां सौभ्यता भी थी, जहां दान था, वहां भावना भी थी। जहां साहस था, वहां विनम्रता भी थी, जहां ज्ञान था, वहां जिज्ञासा भी थी।'

ज्ञान, कर्म, उपासना की त्रिवेणी ने मेरे श्रद्धास्पद भाई को आन्तरिक जागृति देकर 'बहु आयामी व्यक्तित्व' में रूपान्तरित कर दिया। 'स्वनाम धन्य बन्धुवर चौ. मित्रसेन ने 'मित्रस्याहं चक्षषा समीक्षामहे' मन्त्र को निज-जीवन में आत्मसात् कर दिखाया है। मुस्कुराता हुआ वदन, करबद्ध अभिवादन एवं सहृदयता के अथाह सागर में निमग्न मैत्रीभाव अद्वितीय है। यथा नीति शतक में महात्मा भर्तृहरि ने कहा है-

पापात् निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगृहति गुणान् प्रकटिकरोति।
आपदगतं न जहाति, ददाति काले,
सन्मित्रं लक्षणमिदं प्रवदन्ति तज्ञाः॥

आर्य श्रेष्ठी का जीवन अनेक निराश आत्माओं के लिए संजीवनी का काम कर रहा है। स्वयं को अंतः-बाह्य-दोनों ही प्रकार से समृद्ध कर सकल जनमानस को अपनी अद्‌भुत क्षमताओं से उपार्जित अर्थ के सदुपयोग से विभिन्न प्रकल्पों का संचालन कर सुखद, समृद्ध और यशस्वी समाज का निर्माण कर रहे हैं

मेरे समादृत भ्राता का कर्मयोगी विभिन्न क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होता है। कहीं एक किसान रत्न के रूप में शस्य-श्यामला वसुन्धरा पर, तो दूसरी तरफ वनवासियों के मध्य, कहीं

उद्योगों के इंजीनियर के रूप में, तो कहीं गौमाताओं की गौशाला में, कहीं निरीह नि:सहाय बसेरा उजड़ों को बसाने गुजरात में, तो कभी काषाय-वस्त्रालंकृत विरक्तों के मध्य। अनेक विशेषताओं का संगम एक ही व्यक्तित्व में नजर आता है।

कर्मयोग के विविध आयामः-

1. कर्मठ, लग्नशील और दृढ़संकल्पी - शुभ संकल्पों, अपरिमित जिजीविषां एवं श्रम के बिन्दुओं में अपने को तल्लीन कर मोती समेटने का कार्य कोई नरसिंह ही करता है जिसका पर्याय मेरे आत्मीय बन्धु हैं, जिनका चिन्तन स्मरणीय है, **यथा**

ये निर्जीव लकीरें तेरा भाग्य नहीं है मोले भाई,
मेहनत के मन्दिर में पूजा कर ले मिलती पाई-पाई,
श्रम सौरभ से अपनी किस्मत की क्यारी को चमकाओ।
अंधकार से जूझ-जूझ कर अपने दीपक आप जलाओ

2 कुशल, अनुशासित और आदर्श किसान - जीवन में ज्ञान क्रियात्मक होने पर लाभप्रद होता है। अत: "ज्ञान भारं क्रयां बिना" बौद्धिक उत्कर्ष जीवन की नियामकता व्यक्तित्व का संशोधित प्रारूप प्रस्तुत कर देती है। 'किसान रत्न' से सम्मानित भ्राता श्री ने अनुकरणीय आदर्श उपस्थित कर संदेश दिया है।

3. विनय आह्लाद औदार्य के पुंज -

'वसुधैव कुटुम्बकं' की भावना रखने वाले व्यक्तित्व का चिन्तन वैयक्तिक न होकर समष्टिगत हो जाता है, **यथा:-**

भक्ति शक्ति अनुरक्ति सरलता दया कृपा ममता में।
कौन टिका है कौन टिकेगा देवोपम समता में।
प्राप्य भुजाओं से अनुपम अर्जित अपनी क्षमता में।
सबसे आगे रहा रहे वीरोचित वीरोचित विनम्रता में।

प्रसन्न वदन, प्रफुलित मन और उदारता मेरे भाई को ईश्वर प्रदत है।

4 निष्पक्ष-निर्भीक और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के स्वामी

सामाजिक उपक्रमों के संचालन एवं संरक्षण में अपनी अभिव्यक्ति को निष्पक्ष एवं निर्भीक रख पाना अति दुष्कर होता है, पर बंधुश्री में महर्षि की प्रेरणा साक्षात दृष्टिगोचर होती है। **प्रकाश** कवि के शब्दों में-

'किसी की करके खुशामदें नित।
जो खाये हलवे तो भी क्या खाये।
ऋषि दयानंद से सत्य वक्ता,
हो जहर खाओ तो हम भी जाने।
बनाई बातें बहुत वतन की
दशा बनाओ तो हम भी जानें।'

5. पुरुषार्थ परोपकार और परपीड़ा निवारण को कटिबद्ध

ईश्वर प्राणिधान के साथ पुरुषार्थ को सर्वात्मना समर्पित होकर परोपकार को आत्मसात कर कार्य करने की शैली के अभ्यस्त चौ. मित्रसेन पर दुख कातरता से विह्वहल हो उठते है। ऐसा लगता है यह उक्ति उन पर सार्थक होती है आदिवासियों की सेवा बड़ा उदाहरण है ।

"आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति सःपण्डितः।"
फूलों में यदि बदल सको तुम तलवारों की धार को
मैं समझूंगी तुमने दे दी दया विश्व बिमार को।

6. अनन्य ऋषिभक्त तथा गौभक्त

विशुद्ध आर्यत्व, निश्छल प्रेम, ऋषि कृपा से ओत-प्रोत, गौभक्ति से अनुप्राणित परिकरबद्ध आर्य श्रेष्ठी दिव्यता की मिसाल है, कितना प्रासंगिक लगता है।

यथा:-

आज जिदंगी बिना प्यार के मरणासन्न हुई है।
डरे देवता फौज राक्षसी खूब प्रसन्न हुई है।
धर्म युद्ध की जगह सब जगह कुर्सी युद्ध रचा है।
कुंठाओं के काजल से अब कौन प्रबुद्ध बचा है।
तुम्हीं पिला सकते संजीवन घायल पड़ी बहार को।
मैं समझूंगी भवन दे दिया है तुमने आधार को।

7. कर्मठ समाज सेवी एवं महादानी

कर्मशक्ति युक्त स्वस्थ चिंतन एवं सात्विक दान भगवान कृष्ण की गीता का स्मरण कराता है

कर्मव्ये वाधिकारस्ते.....। माते सगोस्त्वकर्मणि

सात्विक दान निरभिमान भाव से देकर शुष्क उद्यान को पुनर्जीवित करने काम यही महामानव करता आया है।

"वो ही दाना फलता है जो मिट्टी में मिल जाए।
सहे पथिक जो काटे वो ही मंजिल अपनी पाए।
भट्टी में पड़कर सोने का रंग निखरता है।"

(8) आदर्श पत्नी एवं सुंस्कृत संतान युक्त सद्गृहस्थी

समस्त परिवार में एक व्यक्ति अत्यंत गुणागार मिल सकता है, किंतु साथ में धर्मपत्नी का आदर्श होना और सारी संतान का सुयोग्य और सुंस्कृत होना अति कठिन होता है। घर में स्वर्गिक वातावरण ने घर को अध्यात्म, प्रेम, करुणा, निरभिमान तथा आतिथ्य सत्कार से सुवासित कर दिया है। इस घर में

"माता निर्माता भवति" यास्क ऋषि का यह निर्वचन हर चेहरे से बोलता है। मुझे निकट से सानिध्य का सौभाग्य मिला तो लगा-

"रहबर जो देखना तुझे दीदार मां का कर
दर्दे दिल की है दवा मां की ही संगति।
खुशकिस्मत है वो मकां मां की हो बंदगी,
मुदिता माता प्रेम से भरती है जिंदगी।"

प्रातःकाल सभी बच्चों का अभिवादन ऋषिकुल की याद दिलाता है। श्रद्धा, दया, करुणा, मैत्री, सेवा, समता, निरभिमान, धर्म, अध्यात्म, समर्पण, स्नेह, सौम्यता, सदाचार- इस परिवार का प्रत्येक सदस्य इन गुणों को धारण कर वंशानुगत मर्यादा कुल परपंरा एवं मानव मात्र की श्रद्धा का केंद्र बन गया है। घर की निर्जीव दीवारें भी चुप नहीं हैं। वह भी प्राचीन सतयुग से लेकर आज तक के ज्ञान-विज्ञान को मुखर करती हैं। भ्रमण करते हुए लगता है कि किसी ऐतिहासिक संस्थान का भ्रमण कर रहे हैं। यह मान मंदिर प्राणी मात्र के लिए ऊर्जा का केंद्र बन गया है। निराश व्यक्ति यहां प्रेरणा पाकर ऊर्जावान होकर जाता है मानो नवयुग का निर्माण क्रियान्वित हो रहा है। परम मित्र मानव निर्माण संस्थान इस दिशा में दिन-दूनी और रात चौगुनी उन्नति कर रहा है और आह्वान करता है -

परिवर्तन है वेग न इस को कोई भी सह पाएगा
गंगा का रस्ता रोका तो ऐरावत बह जाएगा।
परिवर्तन है प्राण सृष्टि का मुर्दा जिंदा होता है।
कोइ बांध न पाए सचमुच समय परिंदा होता है।
जीत उसी की होगी जिसके पास सत्य का बल होगा।
परिवर्तन तो होना ही है आज नहीं तो कल होगा।
माना आज शिकंजे में सच्चाई कड़ी दिखती है।
ऐसे झूठजाल में जैसे अकड़ी मकड़ी दिखती है।
असफलता के लिए स्वयं ही कर्ता दोषी होता है।
हर निर्दय कोड़े का उत्तर क्या खामोशी होता है।
मौन मुखर हो जाए तो हर निर्बल आज सबल होगा।
परिवर्तन तो होना ही है आज नहीं तो कल होगा।

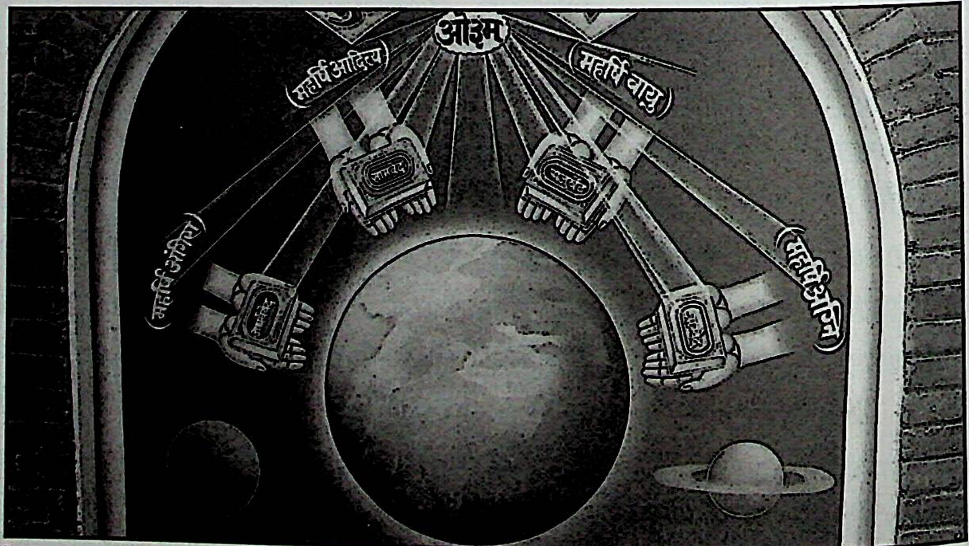
अंत में,परमपिता परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि परिवर्तन की दिशा में किया गया संकल्प इस परिवार का ईश्वर अवश्य पूरा करेंगे और परम मित्र मानव निर्माण संस्थान के संकल्पों के ध्वज वाहक,रुद्र, वीर, व्रत, अभिमन्यु, सत्य, देव, दया, बिमला, मधु, सरोज, शशी, उषा, एकता और अनिका इस ध्वज को झुकने नहीं देंगे। मेरे भाई मित्रसेन जी अभिनंदन के पात्र हैं–

यथा :-

अभिनंदन ऐसे दीपक का जलकर दीवाली दे दे।
मंत्र बीज जो स्वंय गले, गलगलकर खुशहाली दे दे।
ऐसे मानस आहुति बनकर नहर उलझन की ताली दे दे।
ऐसे सारस्वत भूखा रहकर निज थाली दे दे।
कानों में रस घोले, ऐसी मंजीरों का होता है
जो निबलों की ढाल बने उन शमशीरों का होता है।"

'इत्योम'

ब्रह्मवादिनी आचार्या कलावती बहन
ब्रह्मवादिनी आश्रम गणियार,
महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में सृष्टि के आरंभ में वेदों के निर्माण को दर्शाता एक चित्र।

71. वैदिक मूल्यों के जीवित उदाहरण मित्रसेन

श्री खजान सिंह आर्यसमाज के प्रमुख प्रचारक हैं। इन्होंने आर्यसमाज के सिद्धांतों को जीवन में अक्षरक्षः उतारा है।



वैदिक मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात कर उन्हें व्यावहारिक रूप से हर रोज के जीवन में अपनाने की कला के महारथी की यदि खोज की जाये, तो निश्चित रूप से चौ. मित्रसेन जी आर्य पर पहुँच कर ही यह खोज रूकेगी। दिखावे व बाहरी मान-सम्मान की लालसा से पूर्णतः मुक्त चौ. साहब ने वैदिक संस्कृति से जो कुछ लिया, उसे तुरन्त अपने जीवन में अपनाने के लिए दृढ़ संकल्प कर लिया। आर्यसमाज व मानव कल्याण के संदेश को देश के कोने-कोने में पहुँचाने को कृत संकल्प चौ. मित्रसेन जी अपनी कुल परम्परा में अपनी पीढ़ी के गौरवशाली प्रतिनिधि हैं।

वैसे तो मैं चौ. साहब के सामाजिक कार्यों के विषय में लंबे समय से सुनता आ रहा था, परन्तु व्यक्तिगत सम्पर्क व जुड़ाव सन् 1995 से आरम्भ हुआ। चौ. साहब का बेटा अभिमन्यु और मेरा बेटा कुलबीर दिल्ली इक्ट्ठे ही पढ़ते थे। इस कारण अभिमन्यु से मेरी सोनीपत घर पर मुलाकात हुई। मैं इस संस्कारवान युवक के पिता से मिलने का इच्छुक हुआ जिन्होंने अपने पुत्र को इतने सघन संस्कार दे रखे थे। चौ. साहब का महामानव वाला रूप मुझे तब देखने को मिला जब मैं उनके साथ उड़ीसा व छत्तीसगढ़ के जंगलों में उनके तप द्वारा स्थापित गुरुकुलों व शिक्षण संस्थानों में गया। इन दुर्गम व दूरदराज के क्षेत्रों में जहाँ लोगों के तन पर न तो वस्त्र है और न पाँव में जूते, चौ. साहब के कर्म-प्रताप से वैदिक संस्कृति के जो देवालय खड़े हुये हैं, उन्हें देखे बिना कोई यकीन ही नहीं कर सकता। दिल के साफ, हृदय के पवित्र, वाणी के मधुर, संकल्प के दृढ़ व परिश्रम करने में महामानव चौ. मित्रसेन जी आर्य सामाजिक आभूषण हैं। उनका संसर्ग हमारे लिये अविस्मरणीय तो हैं ही, उनका जीवन भी हमारे लिये जीवंत विद्यालय से कम नहीं। ईश मानव जाति के इस उत्कृष्टतम उदाहरण को दीर्घायु व स्वास्थ्य प्रदान करें, यही मेरी कामना है। ओ३म।

खजान सिंह
संरक्षक - आर्यसमाज जुंआ
सोनीपत (हरियाणा)

72. भारतीय संस्कृति के समर्थक

नैष्ठिक ब्रह्मचारी श्री ज्ञानेश्वर दर्शन योग के प्रकाण्ड विद्धान हैं। आप वेद दर्शन, उपनिषदों व आर्ष साहित्य के भी उच्चकोटि के विद्वान हैं।



देशी पगड़ी, धोती-कुर्ता और जूती पहनने वाले एक सामान्य से दिखने वाले व्यक्ति के मस्तिष्क में वैदिक धर्म के प्रति, भारतीय संस्कृति के आदर्शों के प्रति कितनी समर्पण भावना है, इसका अनुमान उनके कार्यों को देखे बिना नहीं लगाया जा सकता। चौधरी मित्रसेन जी के व्यक्तित्व और कर्तव्य को देखकर तत्काल आधे घंटे में ही मेरे मन में उनके प्रति सैकड़ों गुणा श्रद्धा बढ़ गई।

एक अकेला व्यक्ति ईश्वर से प्रेरणा प्राप्त करके अपनी तीव्र इच्छा, अदम्य साहस, अटूट उत्साह, अचल पराक्रम, पूर्ण पुरुषार्थ, घोर तपस्या करके सर्वहितकारी सामाजिक कार्यों को कितनी अधिक मात्रा में कर सकता है, इसका कोई जीता-जागता उदाहरण देखना हो तो हमारे सामने चौधरी मित्रसेन जी विद्यमान हैं।

पिछले 32-33 वर्षों से मैं गृहत्याग करके व्याकरण आदि के अध्ययन के लिए गुरुकुल कालवा में आया, तब से अब तक चौधरी मित्रसेन जी का नाम सुनता आया हूं। उनकी धार्मिकता, परोपकार की भावना, आतिथ्य और दान की प्रकृत्ति के विषय में उनकी कर्मठता के विषय में बहुत कुछ सुना था। अनेक बार पूज्य गुरुदेव स्वामी सत्यपति जी ने भी मुझे उनके आवास में जाकर उनकी गतिविधियों व प्रवृत्तियों को देखने की प्रेरणा दी। उनके सुपुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी यहां आश्रम में स्वयं एक बार पधारे और विद्यालय को सहयोग भी किया। अनेक कार्यक्रमों की व्यस्तता और पूर्व योजना न बनने के कारण मैं उनके घर पर नहीं जा सका।

पिछले जून मास में जब रोहतक जाने का अवसर मिला तो पुनः चौधरी साहब के दर्शन हुए और मैंने उनके आवास में जाने की योजना बनाई। डीपीएस के श्री मुकेश जी आर्य के साथ दिल्ली लौटते हुए आधे-पौने घंटे के लिए उनके 'सिंधु भवन' को देखने का अवसर मिला। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जो मैंने वहां पौने घंटे देखा-सुना, यज्ञशाला, अतिथिशाला, मनोहर उद्यान, सैकड़ों महापुरुषों की प्रेरणादायिनी जीवनी को चित्र सहित देखकर चित्त प्रसन्न हो गया। वैदिक धर्म के सिद्धांतों, ऋषियों, उनकी

मान्यताओं, ऐतिहासिक महापुरुषों और उनके चरित्र और घटनाओं से युक्त विशाल चित्रदीर्घा को देखकर हृदय पुलकित हो गया। कोई व्यक्ति वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार और परंपराओं को सचित्र, अनुकरणीय, प्रेरक तथा प्रभावशाली रूप में इतने अच्छे स्तर से प्रस्तुत कर सकता है, यह मेरी कल्पना से परे की चीज थी।

एक सामान्य कृषक परिवार में जन्म लेकर भी अपने दृढ़ आत्मविश्वास, कठोर परिश्रम, ईमानदारी योजनाबद्ध रूप में कार्यों के परिणामों, प्रभावों को सावधानी व सतर्कतापूर्वक विचार करके प्रारंभ करने के फलस्वरूप आपको जीवन के हर क्षेत्र में सफलता ही सफलता मिलती रही। पिता के समान ही उत्तम गुणों वाले योग्य सुपुत्रों का भरपूर सहयोग मिला है। आपने सामाजिक, राष्ट्रीय उन्नति के अनेकविध उत्तम कार्यों को सुसंपन्न करके अपने जीवन को धन्य बनाया है और जीते जी अमर हो गए हैं।

गुरुकुलों, विद्यालयों, आश्रमों, आर्यसमाजों तथा सार्वजनिक कल्याणकारी क्रियाकलापों को करने वाले अनेक संस्थानों को आपका प्रभूत सहयोग मिला है। आप महानुभाव द्वारा आश्रम और विद्यालय को भी विपुल मात्रा में छात्रवृत्ति और सहयोग मिलता आ रहा है।

यदि देश के नगरों और गाँवों में एक-एक व्यक्ति भी इस प्रकार के कार्यों को करने वाले बन जाएं तो जो आज समाज तथा राष्ट्र की दुरावस्था हो गई है, उसका सुधार होकर शीघ्र उन्नति हो सकती है। मान्य मित्रसेन जी, वर्तमान में 75 वर्ष के हो चुके हैं। हमारी ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों और आपके माध्यम से राष्ट्रोन्नति के कल्याणकारी कार्य और अधिक मात्रा में सुसंपन्न हों, साथ ही जनसामान्य को उनके अनुकरणीय,स्तुत्य, व्यक्तित्व और कर्तृत्व से प्रेरणा मिलती रहे, इस प्रकार की हम आशा करते हैं।

ज्ञानेश्वर
दर्शन योग महाविद्यालय
साबरकांडा (गुजरात)

''किसी विषय पर मन को एकाग्र करने का ही नाम ध्यान है। किसी एक विषय पर भी मन की एकाग्रता हो जाने से यह एकाग्रता जिस विषय पर चाहो उस पर लगा सकते हो।'' - विवेकानन्द

73. वैदिक धरोहर के धनी : चौ मित्रसेन

श्रीमती राज बुद्धिराजा वैदिक विचारों की प्रमुख प्रचारक हैं।



चौ.मित्रसेन जी आर्य उस महान व्यवहारिक यथार्थ पर-म्परा के मूर्तिमान संवाहक हैं जिसमें जो जैसा होता है वैसा दिखता है और जैसा दिखता है वैसा होता है, यह उपलब्धि उस धरोहर की करामात होगी जो इन्हें अपने पिता चौ. शीशराम आर्य से मिली होगी तभी तो मित्रसेन जी आर्य समाजी, संन्यस्तों, विद्वानों और साधु-संन्यासियों के सम्पर्क में आए। पिता आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर के अवैतनिक प्रचारक और पुत्र अनेक आर्य समाज से जुड़े हुए, क्या मणिकांचन योग है।

सभी पुत्र-पुत्रियों और पुत्र-वधुओं को अपने रास्ते पर चलाने वाले मित्रसेन जी मेरे भाई दर्शन कुमार अग्निहोत्री के मित्रों में से एक हैं। मुझे केवल एक बार चंद मिनटों के लिए वैदिक भक्ति-साधन-आश्रम रोहतक के यज्ञ के अवसर पर मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय इन्होंने बावन हजार रुपये आश्रम को दान में दिये थे।

जब मेरी इनसे मुलाकात रोहतक में हुई थी, तब इन्होंने पगड़ी नहीं बांधी थी। गुरु-गंभीर, सौम्य-चेहरा मितभाषी और बोलती आंखें। अब मैंने इनकी पगड़ी वाली तस्वीर देखी तो मैंने कल्पना की कि पगड़ी के रूप में इन्होंने ढेर सारी जिम्मेवारियां मोल ले लीं हैं। ईश्वर इन्हें सामर्थ्य दे कि जिस काम का बीड़ा इन्होंने उठाया है उसे ये शान-बान से पूरा करें। मेरे जैसा कलम घिस्स व्यक्ति इनके लिए यही दुआ मांग सकती है कि आप दुनियाभर के मित्र बनें। ढेर सारे सुखद, सरस, रंगमय-वसन्त देखें। इनकी वाणी से फूल झरें, जिस डगर पर चलें वहाँ भी बहार आ जाए, जहाँ जाएँ वहीं सब अपना ही अपना हो जाए।

इस अवसर पर मैं अपने लिए भी यही चाहती हूं कि इनसे मिलने का मुझे एक मौका और मिले ताकि मैं इन पर कुछ और लिख सकूं। मेरा एक-एक अखर-आबदार मोती बन जाए और मोतियों की यह माला इनके कंठ में सुशोभित होती रहें।

श्रीमती राज बुद्धिराजा
अध्यक्ष, भारत-जापान सांस्कृतिक परिषद, दिल्ली

74. आर्यश्रेष्ठ - चौ मित्रसेन आर्य

ब्रह्मचारी कृष्णदेव नैष्ठिक आर्य समाज के माध्यम से लोगों की सेवा करते हैं।



प्रभुकृपा से मुझे अनगिनत बार चौ. साहब से मिलने का सौभाग्य मिला। भेंट मुलाकात प्रायः वैदिक मंच सभा और अन्य यज्ञ समारोह स्थल ही रहा। मैं बड़े गर्व के साथ कह सकता हूं कि आप अत्यन्त पुरुषार्थी, उद्योगी, तन, मन, धन से कृषि पण्डित हैं ही- साथ ही साथ मनसावाचाकर्मणा धर्मावलम्बी हैं। हमारे समाज का सौभाग्य है कि चौ. मित्रसेन जैसा आर्य श्रेष्ठ वैदिक जगत को मिला जिसके हृदय में उदारता की प्रबल भावना है। कोई भी धर्मनिष्ठ कार्य हो, सूचना मिलते ही खुलेमन से आर्थिक सहयोग प्रदान करना आपका सहज स्वभाव है। चौ. साहब की जानकारी में अर्थ की कमी से कोई सद्कार्य बाधित नहीं हो सकता, ऐसा मेरा अटल विश्वास है। आपको कर्मवीर कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं ।

ऐसे आर्यश्रेष्ठ धनकुबेर के जीवन की मैं मंगल कामना करता हूं और प्रभु से नतमस्तक होकर प्रार्थना करता हूं कि वे अपनी छत्रछाया सदैव चौ. परिवार पर बनाए रखें जिससे अधिक से अधिक समाजोपकारी कार्य सिद्ध हों । चौ. मित्रसेन जी आर्य के अभिनंदन निमित्त मैं हार्दिक शुभकामना देता हूं।

ब्रह्मचारी कृष्णदेव नैष्ठिक
स्वामी स्वतंत्रतानंद निःशुल्क औषधालय
दयानद मंठ, रोहतक (हरियाणा)

"मैं यह समझता हूँ कि गीता अपरिग्रह का संदेश देती है।
अपरिग्रह से तात्पर्य है कि वे व्यक्ति जो पापों से मुक्ति चाहते हैं,
को चाहिए कि वे ट्रस्टी के रूप में कार्य करें।
गीता में केवल उतना ही संग्रह करने पर जोर दिया गया है
जितना किसी व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है।"
- महात्मा गांधी

75. ऋषिभक्त चौ. मित्रसेन आर्य

विदुषी डॉ. अन्नापूर्णा गुरुकुल पद्धति से लड़कियों को शिक्षा देने का पुनीत कार्य कर रही हैं।



ईश्वर के द्वारा बनाये गये इस संसार में सतत् प्राणियों के आवागमन का चक्र चलता रहता है। इन प्राणियों में मानव को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है क्योकि मनुष्य मनन कर सकता है, विचार कर सकता है । इसलिए वेद में – **''मनुर्भव''**

का उपदेश दिया गया है। मानव जीवन की सफलता के लिए वेद कहता है–

''उद्यानं ते पुरूषन्नावयानम''

अर्थात हे मनुष्य ! तुम्हारी गति उपर की ओर हो, नीचे की ओर न हो अथवा सद्ज्ञान, सत्कर्म एवं सद्भक्ति के द्वारा ऊपर उठो। चौ. मित्रसेन आर्य जी में सचमुच वेद का उपदेश सार्थक होता है। अपने जीवन को परिश्रम, स्वाध्याय एवं सत्संग के द्वारा इन्होंने महान बनाया। धनवान तो बहुत होते हैं लेकिन धर्म कोई–कोई करता है।

आपने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कड़ी मेहनत के द्वारा धन अपर्जित किया है एवं उस धन से धर्म का कार्य करते हैं। आपका व्यक्तित्व धर्मपरायणता, सात्विकता सभी को आकर्षित करते हैं। आपकी उदारता स्मरणीय है। आपके साथ प्रथम साक्षात्कार में ही मेरे मन में अच्छी भावना उत्पन्न हुई जो कि आपके जीवन की सात्विकता का प्रभाव है। आपकी रूचि तथा दृष्टिकोण मुझे बहुत अच्छा लगा। आप मुझसे बातचीत के दौरान कह रहे थे कि मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा आदि के वे जंगल मुझे बहुत प्रिय हैं, तथा वहां के वनवासी लोग बहुत प्रिय हैं, क्योंकि वे निश्छल हैं। आप वहां पर भी सेवा का कार्य करते हैं अर्थात आपकी सेवा का कार्य केवल शहर में नहीं ,नगर में नहीं, अपितु ग्रमीण तथा वनवासी क्षेत्रों में भी चलता है, जहां सहयोग एवं सेवा की अधिक आवश्यकता है। मैं आपके लिए द्रोणस्थली आर्य कन्या गुरूकुल एवं मानव कल्याण केन्द्र, देहरादून की ओर से बहुत–बहुत शुभकामना देती हूं तथा अभिनन्दन करती हूं। ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि आपको दीर्घायु से युक्त करते हुए सदा प्रसन्न रखें।

डॉ. अन्नापूर्णा
आचार्य, द्रोणस्थली आर्य कन्या गुरूकुल
देहरादून (उत्तरांचल)

76. चुम्बकीय व्यक्तित्व - चौधरी मित्रसेन

आचार्य शरदचन्द्र आर्य सिद्धांतों के प्रचारक तथा गुरुकुल पद्धति के समर्थक हैं।

मान्या वेदविधान-शास्त्रशरणाः, दिव्यप्रभा-भास्वराः,
सेवा-धर्म समुज्वलास्सुमनसः, दाक्षिण्यभावोअमलाः।
नानाक्षेत्र-विचारलग्नहृदया, कर्त्तव्यनिष्ठा सदा,
सत्कार्ये निपुणा स्सुशोभितगुणः, श्री मित्रसेनाअभिधाः ॥

चौधरी मित्रसेन यह नाम आर्यजगत् के लिए किसी परिचय का मोहताज नहीं है। क्योंकि वर्तमान काल में लगभग सभी ख्यातिप्राप्त आर्य संस्थानों के विकासात्मक गतिविधियों में प्रायः अपने पवित्र मन एवं धन से किसी न किसी प्रकार संयुक्त जान पड़ते हैं। **दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन** संस्कृत के इस सुभाषित को अपना आदर्श स्वीकारने वाले चौधरी जी का चुम्बकीय व्यक्तित्व इतना आदर्श एवं मिलसार है कि सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति बरबस आपके प्रति आकृष्ट हुए बिना नहीं रह पाता । परिस्थिति-जन्य कारण अथवा इसे दैव दुर्विपाकयों भी कह सकते हैं, के कारण बाल्यकाल में समुचित विद्यालयीन शिक्षा न हो पाने के बावजूद भी परम्परागत वैदिक संस्कार से पूर्णतया ओतप्रोत पारिवारिक पृष्ठभूमि में रचे बसे होने के कारण आपको निरंतर अध्यात्ममय वातावरण अनायास ही मिला, यही वजह है कि अच्छे साहित्यों के अध्ययन की पिपासा ने आपको पक्का स्वाध्यायी बना दिया। वैदिक सिद्धांत सम्बंधी प्रायः दर्शन एवं उपनिषदों के भाष्य सहित अनेक आर्य विद्वानों के प्रसिद्ध कृतियों का श्रद्धापूर्वक न केवल स्वाध्याय किया, वरन् गृहागत् विद्वानों के सानिध्य में शास्त्रीय प्रसंगों का बहुबार शंका समाधान प्राप्त करने में भी सर्वदा सन्नद्ध रहे। पितृचरण की सहसा अस्वस्थता ने असमय में ही परिवार का भार कंधों पर डाल दिया। यही कारण है कि अल्पकालीन कृषि कार्य में संलग्न होने के बाद स्वाभविक रुप से महत्वाकांक्षी मन ने चाहा कि कार्य को थोड़ा और विस्तार दिया जाये, इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए गृहत्याग कर भिन्न-भिन्न स्थानों में योजनाबद्ध रीति से अर्थोपार्जन की दिशा में दृढ़तापूर्वक चरण बढ़ाते हुए पर्याप्त सफलताएं हस्तगत थी। **यान्तिन्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोअपि सहायताम्** देववाणी का यह प्रसिद्ध आभाणक चौधरी जी के जीवन में पूर्णतः चरितार्थ जान पड़ता है। निश्चयपूर्वक आपके संबंध में यह बात कही जा सकती है कि आपको अपने कार्यक्षेत्र में सौभाग्य से सहयोगी स्वभाव वाले निःस्वार्थी लोगों का पर्याप्त साथ समय पर मिला। आत्मविश्वास कठोर परिश्रम एवं पूर्ण ईमानदारी आपके व्यक्तित्व की बहुमूल्य सम्पदा रही है। यह

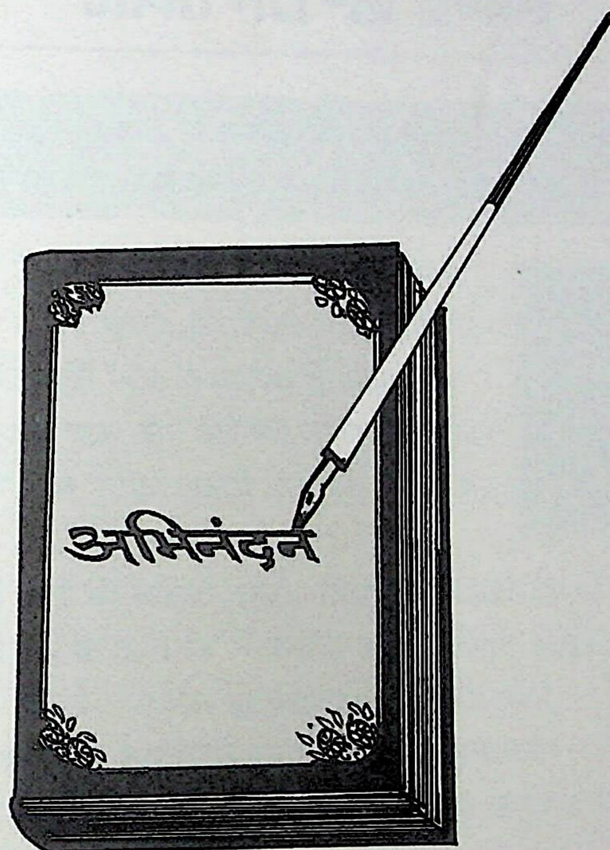
निर्विवाद है क्योंकि यही कारण है कि जिस क्षेत्र में भी आपने हाथ डाले सफलता के परचम लहराए। दलित शोषित पीड़ित शिक्षा सेवा से वंचित जनता के दुख दर्द को दूर करने के लिए सेवा के क्षेत्र में आपके अमूल्य योगदान जगजाहिर हैं, चाहे आदिवासियों के बीच शिक्षा प्रचार हो या वनवासियों के मध्य सहयोग की आवश्यकता, नारी शिक्षा के विस्तार के लिए शिक्षणालय निर्माण की बात हो अथवा पहुंचविहीन क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधा प्रकल्प चलाने की बात, वैदिक संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने की जहां तीव्र लालसा वहां बाढ़ग्रस्त, विपदाग्रस्त, भूकंप-पीड़ित जनता की सुख-सुविधा के लिए सतत् प्रयत्नशील, सर्वत्र आपने अपने झंडे गाड़े हैं। ऊंच-नीच की भेदभावना से कोसों दूर आपकी जीवनचर्या में स्वामी सेवक की तुच्छ मानसिकता का दर्शन सर्वथा दुर्लभ है। व्यवहार इतना आत्मीय भरा कि अगले को एहसास ही नहीं होने देते कि वह अलग है। सरलता मानो उनके सहृदय स्वभाव की सहचरी हो। विद्वान, साधु-संन्यासी चिन्तकों के लिए उनका हृदय अहर्निश उद्घाटित रहता है। उनके दरबार से कोई साधु अद्यावधि निराश नहीं लौटा। परमात्मा की ऐसी कृपा कि सहधर्मिणी भी **मम व्रतं ते हृदयं दधामि, ममचित्तमनुचित्तं ते अस्तु** के वैदिक उद्घोष के अनुरुप पतिदेव सो सेवासुश्रुषा में एक कदम हरदम आगे रहती है। आपके सारे पुत्र भी न केवल सुयोग्य और सुशिक्षित हैं, प्रत्युत सभी पारम्परिक शुभसंस्कारों से सम्पृक्त हैं। बहुएं भी सेवाभावी एवं व्यवहार कुशल हैं। अपने-अपने क्षेत्र में सभी सफल हैं। यह एक प्रकार से मणिकांचन संयोग है जो किसी सौभाग्यशाली को ही सुलभ हो पाता है उन्हीं सौभाग्यशालियों में चौधरी जी हैं। इन पंक्तियों के लेखक ने प्रत्यक्ष अनुभूति-जन्य विचार प्रेषित किये हैं।

चौधरी साहब चिरायु हो, भूयश्चशरदः शतायु हों, यही अभिलाषा है।

आचार्य शरदचन्द्र

गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा)

"चाहे गुरु पर हो या ईश्वर पर हो, श्रद्धा अवश्य रखनी चाहिए क्योंकि बिना श्रद्धा कि सब बातें व्यर्थ होती हैं।" - रामदास



काव्यकुंज

1. अर्पित मेरा नम्र प्रणाम

डॉ. धर्मपाल देशवाल गुरुकुल, झज्जर के वरेण्य स्नातकों में से हैं। आपकी प्रतिभा चौमुखी है। कुल परम्परा से आपको आर्य समाज के विशेष संस्कार मिले हैं।



धवल कीर्ति के हे महानायक, अर्पित मेरा नम्र प्रणाम।
कर्तव्यपरायण, पतित पावन, मधुरिम वाणी के आधार।
प्रसन्नता की भव्यमूर्ति और सद्गृहस्थ के सदाचार।
मित्र सभी के पुण्य धाम और देवों की महिमा अवतार।
निखिल सृष्टि के दिव्य पुरोधा तुमको मेरा नम्र प्रणाम ॥1॥

कृषक जनों की महिमा तुमसे, भिक्षुक के जीवन संचार।
जन-मानस के अन्तर्तम में करुणा की हो शीतल धार।
वैदिक पथ के लेखराम हो श्रद्धानन्द से श्रद्धावतार।
आर्य गुणों की मर्यादा से सत्य, धर्म के न्यायाधार।
कुशल पारखी प्रभु-भक्त को मेरा अर्पित नम्र प्रणाम ॥ 2 ॥

शीशराम के वंश सुपोषक ज्ञानी, ध्यानी और मानी।
नीति-निपुण, धन-ऐश्वर्य से इन्द्र समान महादानी।
दयानंद की पुष्प-वाटिका को तूने सींचा पानी।
वेद प्रचार, प्रसार की धुन में सदा रहे तुम रत ज्ञानी।
दिव्य लोक मनमन्दिर के श्रद्धालु जन को मेरा प्रणाम ॥ 3 ॥

विद्यानुरागी पुत्र निराले गंभीर गुणों के धारे हैं।
माता के परम दुलारे हैं, सबकी आंखों के तारे हैं।
दया बहिन, विमला, मधुबाला सबके बने सहारे हैं।
पौत्र, दौहित्र सदुद्यमी सुधीजन में सबसे न्यारे हैं।
विद्वान, तपस्वी, साधुजनों के हे उन्नायक! मेरा प्रणाम ॥ 4 ॥

अति सज्जन कितने निर्मल हैं धन के पूरे भंडार हैं वो।
आदर्श पिता हैं जनक तुल्य वेदों के कर्णाधार हैं वो।
जन-जन के नवल विधाता हैं सब जन के तारनहार हैं वो।
उच्चवृत्त, गुणवन्त, कृपालु-शरणागत को मेरा प्रणाम ॥ 5 ॥

अभिमान से कोसों दूर, नूर चेहरा कैसा लासानी है।
तप, त्याग-मूर्ति, श्रुति-अनुरागी की यह कैसी अमिट कहानी है।
देखा, परखा, जाना मैंने युग-युगान्तर में ना सानी है।
सच्चे ऋषि भक्त, गो-भक्त की यह कैसी अकथ कहानी है।
वर्चस्वी, तेजस्वी, दयालु, पुरुषार्थी को मेरा प्रणाम ॥ 6 ॥

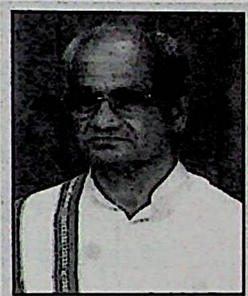
सब ओर घूमकर देख लिया सब जगह ढूंढ़कर देख लिया।
पाया ना पारावार तेरा मैंने हर जन से पूछ लिया।
पावन यज्ञ सुगन्धि से है पृथ्वी तल का भला किया।
जो मांगने आया द्वार तेरे उसको न कभी भी मना किया।
श्रेष्ठजनों की उस महिमा को मेरा बारम्बार प्रणाम ॥ 7 ॥

डॉ. धर्मपाल देशवाल
रोहतक (हरियाणा)

"अन्याय सह लेने वाला भी अपराधी है। यदि वह न सहा जाए तो फिर कोई किसी से अन्यायपूर्ण व्यवहार कर ही नहीं सकेगा।" - रविन्द्रनाथ ठाकुर

2. अभिनन्दन है अभिनन्दन

पं. शोभाराम जी मेरठ में उच्च कोटि के भजनोपदेशक हैं तथा वैदिक धर्म के प्रचारक हैं।



अभिनन्दन है अभिनन्दन सद् अभिनन्दन
त्याग तपस्या से पवित्र-परिपुष्ट हुआ है जिसका मन
भद्र भावना भरा स्नेह,सयुंक्त शुद्ध है जिसका मन
होता व्यय नितप्रति पर हित में- जिसका सात्विक संचित धन
चौधरी मित्रसेन आर्य का है सादर अभिनन्दन॥

धार्मिक पिता के पुत्र, धन्य सुपुत्रों के बाप को
जीवन में वरदान किया, अभिशाप पाप को
सृष्टि का उपभोग सार्थक मर्यादाओं का बन्धन
अभिनन्दन है अभिनन्दन सद् अभिनन्दन॥

कर्म क्षेत्र में कदम धर बढ़ते रहें
प्रगति के शिखर पर चढ़ते रहें
चरण चूमती चली गई बाधाएं अड़चन
अभिनन्दन है अभिनन्दन सद् अभिनन्दन॥

यदि साक्षात स्वर्ग कहीं है धरती पर
आनन्द की बरसात आर्य जी के घर
मर्यादित परिवार प्रेम से परिपूर्ण
आहार व्यवहार आचार क्षेम से परिपूर्ण
नित नया त्योहार मनाए सिन्धु भवन
सफल सुखद संदेश सुनाए सिन्धु भवन
अभिनन्दन है अभिनन्दन सद् अभिनन्दन॥

पं० शोभाराम प्रेमी, आर्य भजनोपदेशक,
मेरठ (उत्तर प्रदेश)

3. चौ. मित्रसेन आर्य जीवन गाथा

सुमित्रा जी भजन शैली में विशेषज्ञ हैं। ये भजनों के माध्यम से समाज में धर्म का प्रचार करती हैं।



शुभकर्म करें मानव देवता कहलाते हैं।
वो हैं, मित्रसेन उनकी गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं,
धन्य इनका परिवार नमन मेरा बार-बार॥
हजारों साल पहले सियाल कोट में, एक राजा रहते थे।
सिन्धु गोत्र के भूप, नीति से शासन करते थे।
उदार आत्मा थे राजा, अटल ईश्वर में विश्वास।
दृढ़-संकल्प सदाचार, उनके जीवन में निवास।
जैसा राजा वैसी प्रजा, कहावत है पुरानी।
उनसे प्रभावित हुए तीन भाइयों की सुनो कहानी।
एक बार ये तीनों खांडा खेड़ी के जंगल में आते हैं॥१॥
उस जंगल में एक साधु कुटिया में रहते थे।
दिन-रात तपस्या करते और ईश्वर को भजते थे।
तीनों ने आकर के साधु को प्रणाम किया।
चरणों में गिर गए फिर साधु ने ध्यान दिया।
क्या कहना है, कहां से आए, जल्दी तुम बतलाओ।
साधु की कुटिया में आने का कारण समझाओ।
महात्मा की वाणी सुन मन में हर्षाते हैं॥२॥
फिर कहा उन्होंने हे भगवन्! इस जगह की महिमा बताओ।
हम बसना चाहते हैं यहां पर, आदेश आप जो चाहो।
विवरण दो इस जंगल का, यहां कौन रहा करते थे।
कुआं, तालाब दिखाई दे जल, कौन पिया और नहाया करते थे।
फिर उस जंगल के साधु ने, सारी कहानी बतलाई।
इस तालाब में परशुराम ने, अपनी तलवार धुलवाई।
इस तरह वो साधु सब कुछ वीरों की भूमि बताते हैं॥३॥

उनमें से एक ने बसना यहां धर्म समझा अपना।
आबाद करूं इस जंगल को, बस यही मेरा सपना।
धीरे-धीरे बसाकर, नाम धरा खांडा।
जिसने रखी नींव उसका नाम था सांडा।
इसी वंश की परम्परा में, पहला था सुंडा राम।
इसका भी एक बेटा था, पांडरा था जिसका नाम।
इसी सिन्धु गोत्र में मित्रसेन उत्पन्न होते हैं॥४॥

सुंडा का पांडरा और उसका भी काला, चाहा।
चौ० काला ने खेड़ी गांव को बसाया।
चौ० चाहा का भीमा, इसकी भी तीन संतान।
देवी, कल्ली, गञ्जा, शब्बा जिनके पिता हैं सांझ।
कल्ली वंश में गिरधर के पुत्र भागमल, राजमल।
पर शादी राम और माईराम के पिता थे भागमल।
शीशराम शादीराम का बेटा, मित्रसेन के पिता कहलाते हैं॥५॥

शीशराम से अब कहानी, आगे बढ़ जाती है।
मित्रसेन आर्य परिवार की कथा सुनाते हैं।
शीशराम बड़े सज्जन, श्रेष्ठ और ईमानदार थे।
साधारण थे, मगर दिल से परम उदार थे।
खेती-बाड़ी करते थे, और करते नेक काम।
इन्हीं के घर में ठहरा करते थे, बड़े-बड़े विद्वान्।
जो उन्होंने सोचा उसी को, कर दिखलाते हैं॥६॥

एक बार पिता शादीराम ने कहा सुनो पुत्र।
कुरीतियां फैली समाज में, दूर करने का दृढ़ सूत्र।
आवाज बड़ी मीठी है, गायन-विद्या से हो भरपूर।
करो वेद प्रचार और विपरीत के बनो क्रूर।
शीशराम ने उसी समय दृढ़ता मन में ठानी।
जीवन भर प्रचार निःशुल्क, और बनूं दानी।
इस तरह सिन्धु कुल मर्यादा की शान बढ़ाते हैं॥७॥

फिर 1931 में एक बालक ने जन्म लिया।
वेदों के अनुसार इनका जन्म-संस्कार किया।
होनहार बिरवान के होत चिकने पात।
सही चरितार्थ हुई इन पर, सत्य निकली ये बात।
बालकपन में ही पिता ने इनको समझाया था।
ऋषि-अनुयायी बनना है, यह आदेश सुनाया था।
इसलिए ऋषि के मित्रसेन ऋणी बन जाते हैं ॥८॥

छः साल तक घर पढ़ा, फिर दाखिल करवाया।
पर विडंबना से तीसरी कक्षा तक ही पढ़ने पाया।
जिसका कारण पिता की आंखें गई सहारा छोड़।
आर्थिक दशा बिगड़ गई, इनके जीवन में आया मोड़।
आठ वर्ष की आयु में, बालक के कन्धों पर बोझ पड़ गया।
मानो हंसते-खेलते आंगन का बगीचा उजड़ गया।
वरदान साबित होते ऐसे दिन जिनमें आते हैं ॥९॥

पर बुद्धि ईश्वर देता उसको चोर ना चुरा सकता।
स्वाभाविक संस्कारों को कोई नहीं मिटा सकता।
घर पर किया स्वाध्याय, सारे ग्रंथ पढ़ डाले।
घर की जिम्मेदारी, पिता नेत्रहीन भी सम्भाले।
उत्साह, विश्वास, धैर्य सीख गये बचपन में।
सहनशीलता, सदाचार ना फंसे कहीं उलझन में।
वैदिक पथ के पथिक हमेशा भार उठाते हैं ॥१०॥

हो गया अनुभव बहुत कुछ, अब आगे कदम बढ़ाया।
ऊंचे थे विचार किसी व्यापार में ध्यान लगाया।
18 वर्ष की आयु में, लेथ मशीन का प्रशिक्षण जान लिया।
फिर बंगाल, बिहार के आसपास बड़बिल में ध्यान दिया।
यहां 500 मील तक इस काम को कोई नहीं करता था।
इसलिए मिला परिणाम यहां बढ़िया सफलता का।
जिनके ऊंचे इरादे झंडे उनके लहराते हैं ॥११॥

फिर इन्हीं जगहों पर, लोहे की खानों का भी ठेका लिया।
जो मिली सफलता इनमें, धन्यवाद ईश्वर का किया।
उबड़-खाबड़ टीले-कंटीले झाड़ों से बन्द रास्ता था।
जंगली जानवर भरे, हर मानव वहां डरता था।
ऐसी जगह को हरा-भरा करने की मन में ठानी।
बस करने को जुट गए, हो गई मन की भी मनमानी।
सफलता पैर चूमती जो हिम्मत बरसाते हैं ॥१२॥

जितना कर्म किया, उतने ही कदम बढ़े आगे।
साहस, हिम्मत दृढ़ संकल्प से अपनी मंजिल पागे।
किसी विद्वान् से पूछा गया, लक्ष्मी कहां होती है।
उत्तर में कहां निम्नलिखित पंक्तियों में रहती है।
वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे दक्षे नरे कर्मणि वर्तमाने।
अक्रोधेन देव परे कृतज्ञे जितेन्द्रिय नित्यमुदीर्ण सत्वे॥
इन शब्दों के अर्थ मित्रसेन को चाहते हैं ॥१३॥

करुणा भरी भावना इनकी एक और मिलता प्रमाण।
एक वृद्धा रो रही थी, जो थी बिल्कुल अनजान।
कहा पास में जाके, हे देवी क्यों रोती हो।
क्या दुःख है, क्यों तड़प रही हो, बोलो क्या चाहती हो।
कहा मेरी बच्ची बीमार है, ना पैसा कोई पास।
हे भद्र! जान खतरे में है, ना कोई बचने की आस।
सुन दुखिया की वाणी एकदम सिन्धु घबराते हैं ॥१४॥

फिर लेकर दोनों को डॉक्टर का दरवाजा खटखटाया।
प्रातःकाल का समय था, डॉक्टर अन्दर से बाहर आया।
तुरन्त बता कहानी सारी, बच्ची का इलाज करवाया।
कोई है अनजान, मैं नहीं जानता, डॉक्टर से फरमाया।
ऋषिकेश डॉक्टर इस मत पर, गद्गद हो जाते हैं।
मेरा भी कुछ फर्ज बने, इंसान के नाते हैं।
इस तरह देवता को ही देवता मिल जाते हैं ॥१५॥

गुणों से गुण जो ग्रहण करे, विद्वानों की पहचान।
सारा श्रेय मेरी पत्नी का, सिन्धु करते ऐलान।
हर क्षण और सुख-दुःख में मेरा पूरा साथ निभाया।
आदर्श पत्नी बनी प्रेरणा, वैदिक पथ अपनाया।
इस कुल की शान बढ़ाने में, जो सहयोग इन्हें दिया।
धन्य है ऐसी पत्नी यह कहकर धन्यवाद किया।
पति-पत्नी का जहां इतना प्यार वो घर स्वर्ग कहलाते हैं ॥१६॥

जो संस्कार बेटों में हैं, बेटी भी कुल की शान।
पहली बेटी जो दयावती, सच है ये बड़ी दयावान्।
वैदिक सत्संग मन को भाता, अटल ईश्वर में विश्वास।
सारे गुण बड़ी निष्ठावान, हंसमुख और तेज याद्दाश्त।
इनके पति राजवीर भी, सात्विक जिनके विचार।
हैं समझदार बड़े सज्जन श्रेष्ठ, दिल में परम उदार।
दोनों का एक जैसा स्वभाव सबके मन को भाते हैं ॥१७॥

दूसरी बेटी विमला देवी हैं शिक्षा में सबसे आगे।
एम.ए., बी.एड. परीक्षा पास, खेलों में भी मन लागे।
खेलों में इतनी रुचि थी, इन्हें प्रथम स्थान मिला।
व्यावहारिक गुण विकसित और सीखी जीने की कला।
इनके पति कुलवीर जिन्होंने, इनकी भावना का सम्मान किया।
अच्छे कुल की बेटी हैं, ये कहकर धन्यवाद किया।
विमला जो विमल मल से रहित नाम का अर्थ ठहराते हैं ॥१८॥

तीसरी बेटी जो मधु, मधु का अर्थ है बड़ा मिठास।
वाणी में रस, मन इनके वश, ना होती कभी हताश।
धार्मिक और सामाजिक कामों में, इनका मन लगता।
ईश्वरभक्ति बड़ों की सेवा, ना क्रोध कभी भी जगता।
इनके पति शमशेरसिंह, बड़े सज्जन और निष्ठावान।
तीव्र बुद्धि है बड़ा अनुभव और भरा ज्ञान-विज्ञान।
ऐसी बेटी जिनके घर, उनके भाग्य खुल जाते हैं ॥१९॥

संस्कारों से संस्कारित ईश्वर की देन है।
पिता के सारे गुण उतरे, बेटा जो रुद्रसेन है।
जितेन्द्रिय और सहनशीलता, ना क्रोध कभी आता है।
वही काम करता जो इनकी आत्मा को भाता है।
वैदिक धर्म पर अडिग श्रद्धालु, गम्भीर इनका ज्ञान।
नम्र भाव जीवन सादा, सूझ-बूझ के ये धनवान।
परंपरा के अनुयायी बनना सिखलाते हैं ॥२०॥

वीरसेन बेटा दूसरा, संघर्ष जीवन का नाम।
घोर मुसीबत से जूझना, इनका आसान काम।
स्वाभाविक और कर्मशील, दोनों गुण इनके अन्दर।
ऐसे मानव होते जो उनका, व्यवहार बड़ा ही सुन्दर।
पर साधु सन्तों के प्रति, दया भाव दिखाते हैं।
जो करके आस आते इनके दर, खाली हाथ नहीं जाते हैं।
ये तो शिक्षा के प्रसार में भी, बड़े ठाठ लगाते हैं ॥२१॥

व्रतपाल जो व्रतधारी सार्थक है जिनका नाम।
सात्विक वृत्ति यज्ञ करते, सत्संग का सुनते ज्ञान।
चिन्तन, मनन, ध्यान ईश्वर का करते हैं अभ्यास।
आशावादी हैं जीवन में, कभी होते नहीं निराश।
पर कर्म का महत्व समझ, आपने किया मेहनत से काम।
मेहनत का फल है प्रत्यक्ष, कोयले की खान।
नैतिकता और नेक कमाई को सब सहराते हैं ॥२२॥

अभिमन्यु चौथा बेटा, बड़ा तेज और बुद्धिमान्।
ओजस्वी, यशस्वी सब इतिहास का सारा ज्ञान।
पूत के पैर पालने में, संसार कहा करता है।
प्रतिभा का धनी, मानो हीरा चमकता है।
जो कारोबार सम्भाला है, सबका करते उपकार।
जो करके उम्मीद आता इनके दर, पड़ती उनकी सब पार।
वही गुरु होते ईश्वर से मेल मिलाते हैं ॥२३॥

देव सुमन, सत्यपाल दोनों दो छोटे भाई।
खानदान और आन-बान के पक्के अनुयायी।
दादा-परदादा के पदचिह्नों पर चलना आता है।
धन्य है ये परिवार, इनसे हर कोई शिक्षा पाता है।
धन्य है कौशल्या जैसी परमेश्वरी माता।
ऐसे कुल का इतिहास, हमेशा हर कोई गाता।
'सुमित्रा' ऐसे महान् ढूंढने से ना पाते हैं ॥२४॥

बहन सुमित्रा वर्मा, भजनोपदेशिका
रोहतक (हरियाणा)



सिन्धु भवन में की गई चित्रकारी में महर्षि दयानंद का चित्र।

4. मित्रों का मित्र

आप उत्साही आर्य युवक तथा आर्य वीरदल के सक्रिय प्रचारक एवं जगन्नाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छत्तीसगढ़ में सहायक अध्यापक हैं।

''इष्ट है मित्र, मित्र है इष्ट, मित्रसेन है - मित्रों का मित्र''



खांडा खेड़ी में खड़े हुए
शीशराम के आंगन,
जीवनी देवी जननी, इनके
खुशहाली इनके जीवन?

मां परमेश्वरी की गोद में खेलता
पुत्रवधुओं का परिवार
छः पुत्र प्रतिभावान हैं इनके
दया, विमला, मधु, सती-नारी समान?

शिक्षा-दीक्षा शिल्प की-
अनुयायी आर्य समाज,
धर्माचरण से परमात्मा
दिखा दिया सत्य मार्ग?

युवावस्था में सीख लिया
लेथ मशीन का कार्य,
कार्यशाला शुरू किये
मिल गया प्राइवेट कार्य?

उदयपुर पर नौकरी करते
मन में आया एक विचार
दृढ़ संकल्प करके लौटे
आरम्भ किया लेथ काम?

हिन्दी सत्याग्रह में गिरफ्त हुए-
सन् सत्तावन की आग,
चार माह तक जेल काटी-
अंतर तेरह रिहाई-जनम दिसम्बर मास?

उड़ीसा के बड़बिल पहुंचे-
नवामंडी सिंह भूमि बिहार,
सिन्धु इंजीनियरिंग वर्क्स लगाया-
क्योंझर उड़ीसा के पास?

माइनिंग ट्रांसपोर्ट आरम्भ किए-
तीनों ट्रक माला-माल,
ठेकेदारी काम शुरु किए
मित्रसेन ऐंड कंपनी नाम?

सन् उन्यासी में बड़विल पहुंचे-
वीरसेन करके बीए पास?
कालिया पानी रुद्र सम्भाले
आर्मी से आने के बाद?

उद्योग में नया आयाम आया-
कठिन चुनौती के बाद,
तालमेल, भाषायी प्रान्त में-
समस्याएं होती हजार?

चुनौतियों का सामना करते-
पहुंचे उड़ीसा, बिहार,
मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ में-
उद्योग स्थापित किए नौजवान?

शुभ संकल्प कर्म-शक्ति से-
सब भाइयों में मेल-ताल,
कन्धे से कन्धा मिला रहे-
माता-पिता के छोटे-लाल?

धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में-
इनके महान हैं कार्य,
गुरुकुल विद्यालय के प्रधान हैं,
अनेक स्कूलों में योगदान!

कृषि के क्षेत्र में नए आयाम लाए-
बंजर भूमि हरियाली आज,
'कृषि विशारद' से विभूषित
फला-फूला परिवार!

उदारता पुरुष नवयुग के -
सान्निध्य मिला, आर्य-धाम
सेवा भावना है अपार इनमें
धर्मानाथालय, कच्छ-भुज पहचान!

ब्रह्मचारी, संन्यासियों से आर्द्र करते-
सुख-दुख में सबको सहाय,
संस्कृति देशभक्ति की परम्परा
कूट-कूट से भरा परिवार!

जीवन का लक्ष्य वैदिक धर्म-
वैदिक पथ के पथिक कहाय,
मानव मूल्यों की धरोहर-
सादा जीवन उच्च विचार!

धर्मपूर्वक अर्थ अर्जन करते
पथ पर बढ़ते निरन्तर पुरस्कृत, सम्मानित हुए
तीसरी पीढ़ी के अंत पर!

''वृक्ष है मित्र, मित्र है जीवन, यही जीवन का आधार!
फूलों की तरह खिलता रहे, जगमगाता मित्रसेन परिवार॥''

छोटे लाल आजाद
श्री जगन्नाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ऋषभतीर्थ, दमाऊधारा
जांजगीर चांपा (छत्तीसगढ़)

5. श्रीमद् मित्रसेनो विजयते

आचार्य धनञ्जय जी शास्त्री आर्ष ग्रंथों के गंभीर एवं श्रद्धालु विद्वान हैं। संस्कृत भाषा के प्रचार की आपके हृदय में विशेष तड़प हैं।

1. यस्य वित्तं समाजाय तृणमिव समर्पितम्।
तस्मै श्री मित्रसेनाय, नमोराशिं समर्पये॥

भावार्थ: जिनका वैभव समाज के लिए समर्पित है,
उन मित्रसेन जी को नमस्कार है।

2. सुश्रमार्जितवित्तोयः कुबेरस्य प्रतिक्रिया।
कुबेरम च सह युड्क्ते कुबेराय तस्मै नमः॥

भावार्थ: अपने परिश्रम से धन को अर्जित करने वाले कुबेर
के समान धनी चौधरी मित्रसेन जी को नमस्कार।

3. सुपुत्र पौत्र दौहित्र, स्वस्थगात्रः सुचिंतक।
कृषिकार्यप्रवीणाय ऋषिकार्यकृते नमः॥

भावार्थ: ऋषि दयानन्द के कार्य में संलग्न कृषि कार्य में कुशल,
सुविचारक पुत्र, पौत्र और दौहित्र के सुख को अनुभव करने
वाले स्वस्थ शरीर वाले मित्रसेन जी को नमस्कार है।

4. धर्मार्थकाममोक्षेषु, यस्य नित्या मतिस्तथा।
स जयतु नरश्रेष्ठः मित्रसेनः स चौधरी॥

भावार्थ: जिनकी बुद्धि निरन्तर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में संलग्न है।
वे नर श्रेष्ठ चौधरी मित्रसेन जी सदा विजयी हों।

5. वेदधर्म प्रचाराय, सर्वलोकहिताय च
येन सङ्गृहीतं वित्तं, तस्मायार्याय नोनुमः॥

भावार्थ: जिन्होंने वेद धर्म प्रचार के लिए तथा सबके कल्याण के लिए
धन का संग्रह किया है, उन आर्य प्रवर को हम नमन करते है।

आचार्य धनञ्जयशास्त्री
जिला संस्कृत संयोजक : नुआपड़ा

खंड – 3

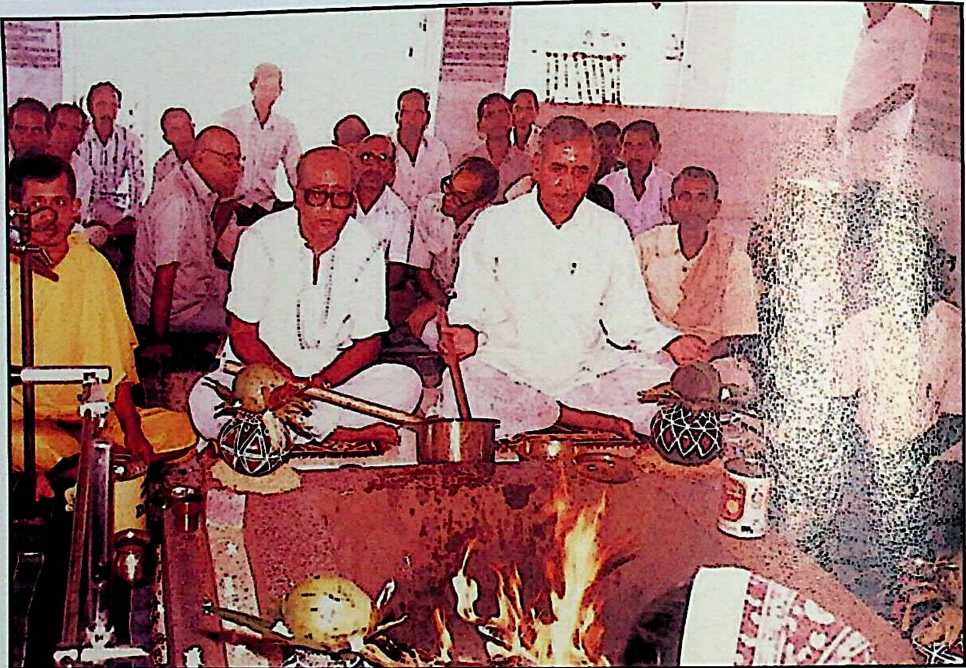
फोटो गैलरी

 समाज को समर्पित क्षण

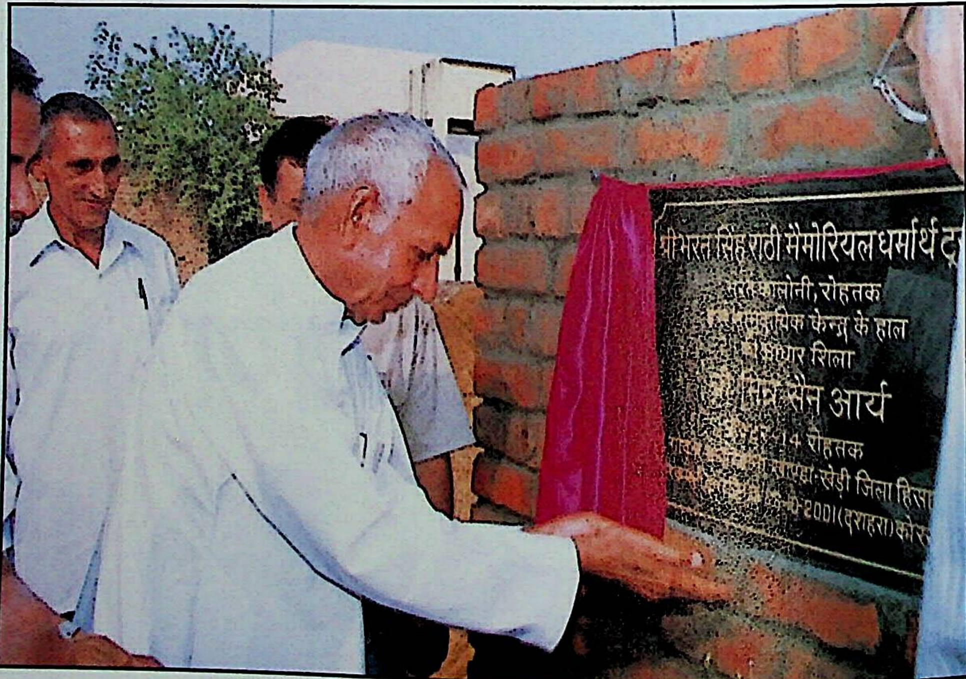
 अंतरंग क्षण

 अविस्मरणीय क्षण

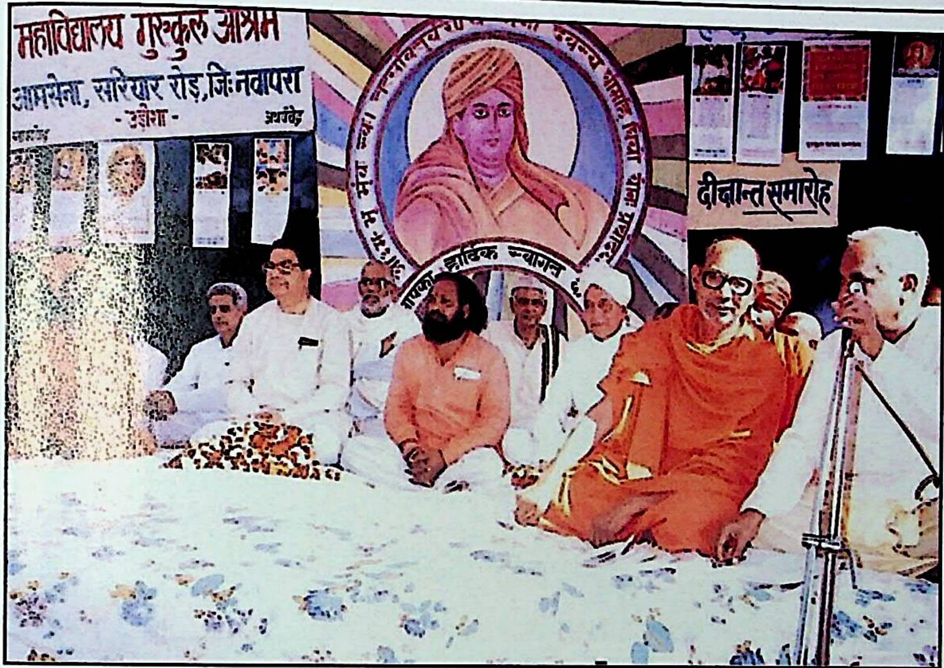
समाज को समर्पित क्षण



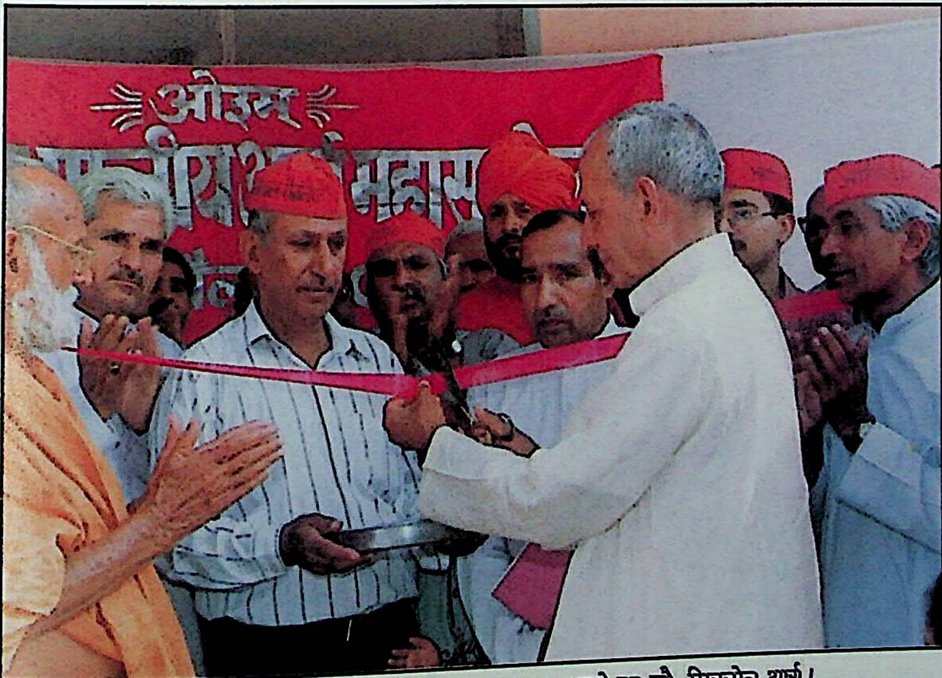
एक विशेष समारोह में यज्ञाहुति देते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



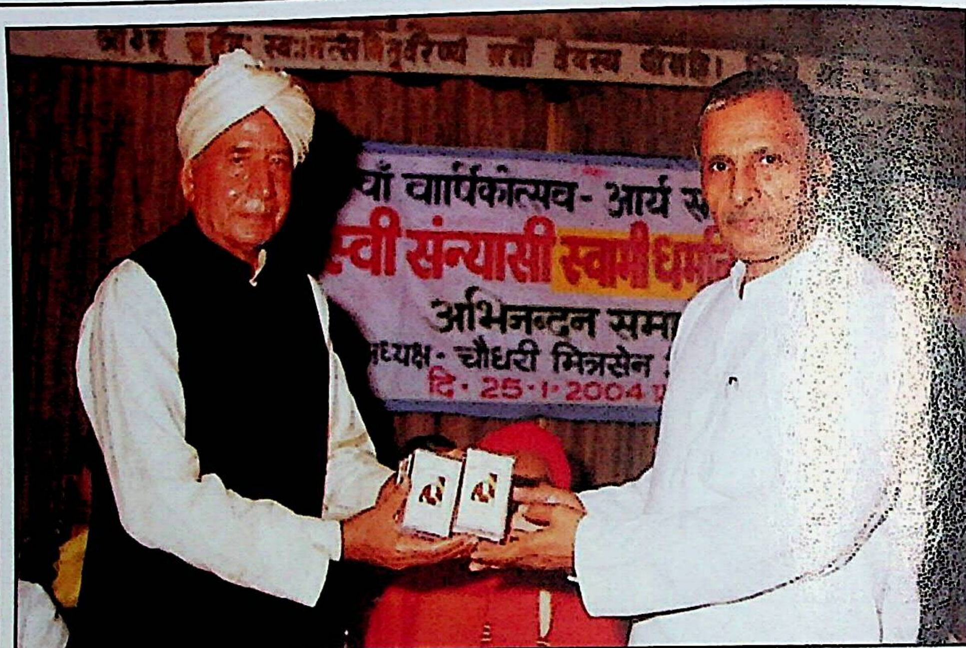
रोहतक में श्री भरत सिंह राठी मैमोरियल धर्मार्थ ट्रस्ट के सामुदायिक हाल की आधारशिला रखते चौ. मित्रसेन।



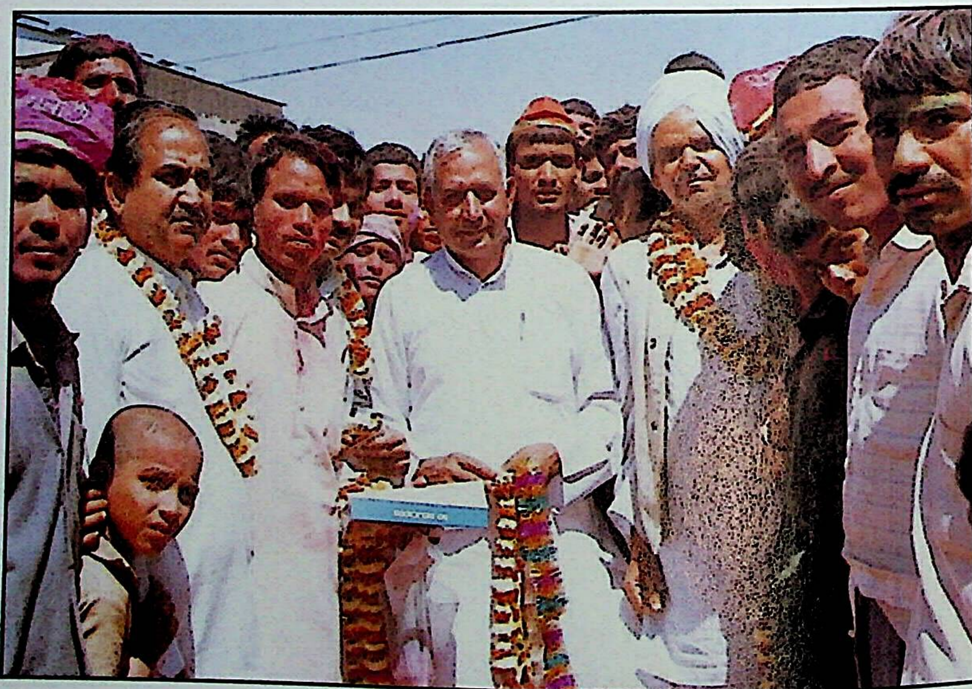
गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) के दीक्षांत समारोह में मंच पर चौ. मित्रसेन, संन्यासी एवं विद्वत्जनों के साथ।



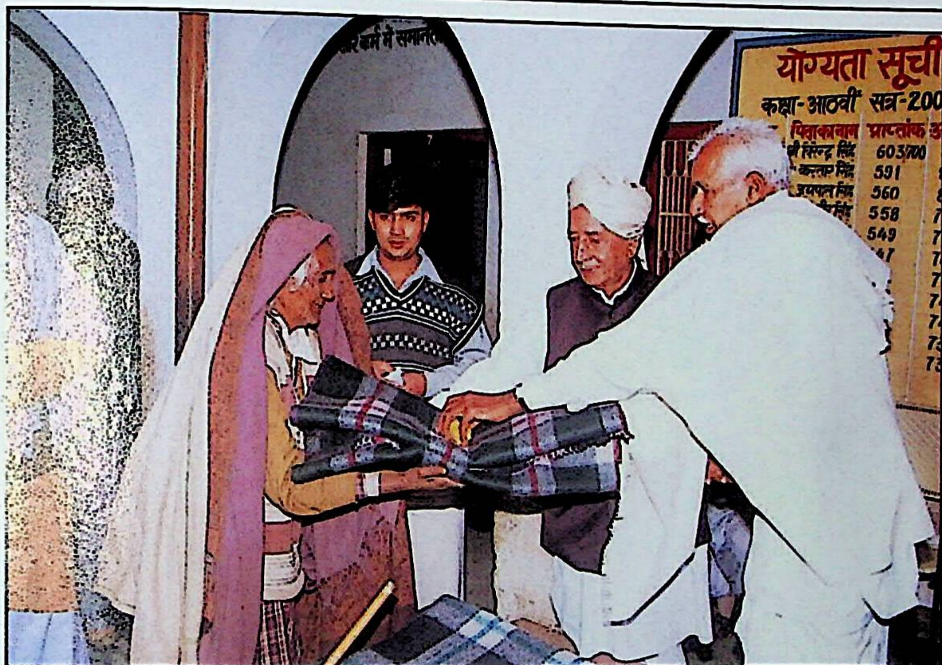
दयानंद मठ, रोहतक में आर्य प्रांतीय महासम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



आर्य समाज सांताक्रूज मुंबई में 'आर्य वंदना' कैसेट का विमोचन करते चौ. मित्रसेन आर्य। साथ में हैं श्री सोमदेव शास्त्री।



गुरुकुल आमसेना के वार्षिकोत्सव में कार्यकर्ताओं के साथ चौ. मित्रसेन आर्य।



गांव खांडा खेड़ी में जरूरतमंदों को कंबल वितरित करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



गांव खांडा खेड़ी में जरूरतमंदों को कंबल वितरित करती श्रीमती परमेश्वरी देवी।



नई दिल्ली में स्वामी दीक्षानंद स्मृति में आयोजित प्रेरणा दिवस पर चौ. मित्रसेन अन्य विद्वत्गण के साथ।



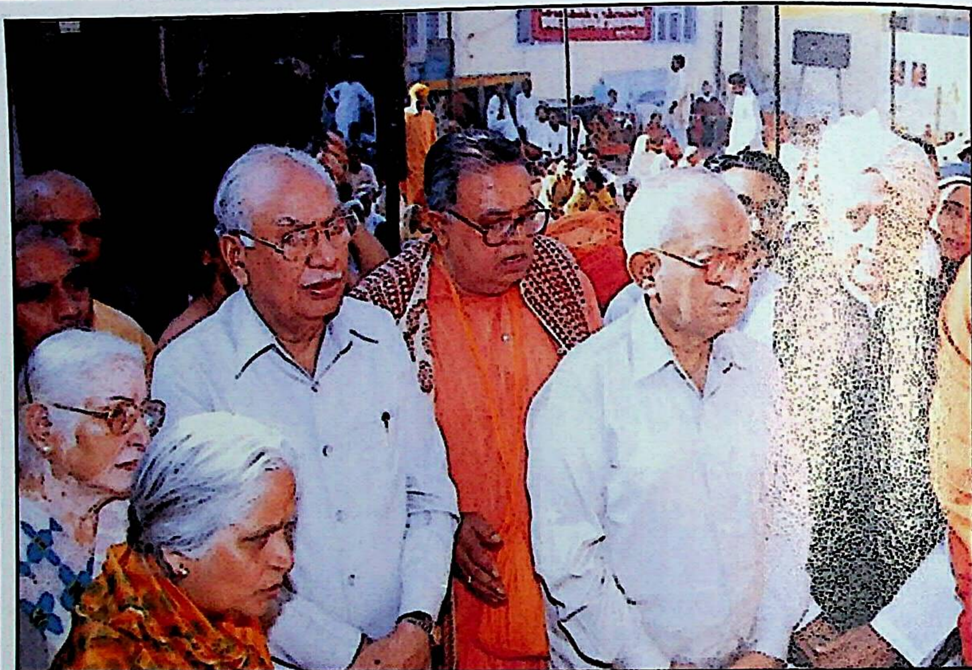
स्वामी ओमानंद सरस्वती अभिनन्दन समारोह पर चौ. मित्रसेन आर्य, स्वामी तत्वबोधानंद व कैप्टन देवरत्न के साथ।



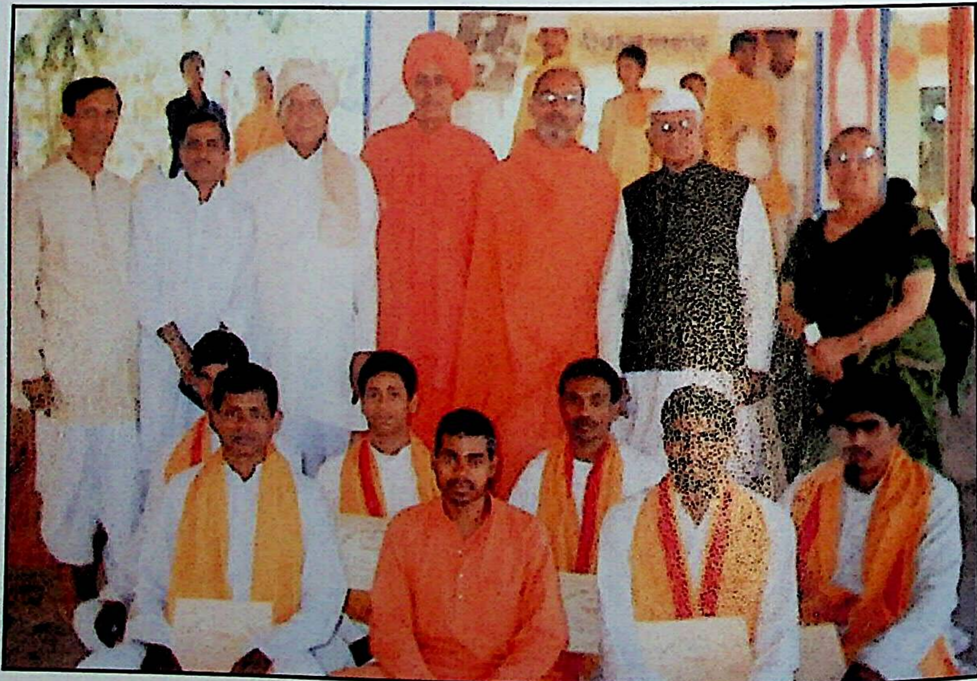
नई दिल्ली में स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में आयोजित राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता महासम्मेलन में चौ. मित्रसेन, प्रो. शेर सिंह, चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा व डा. रामप्रकाश के साथ।



उचाना मंडी (जीन्द) में गौरक्षानंद प्राकृतिक चिकित्सालय का उद्घाटन करते चौ. मित्रसेन आर्य।



रोहतक में हीरो होंडा कंपनी अध्यक्ष श्री बृजमोहन मुंजाल, श्री जगदीश लाल रहेजा तथा चौ. मित्रसेन आर्य।



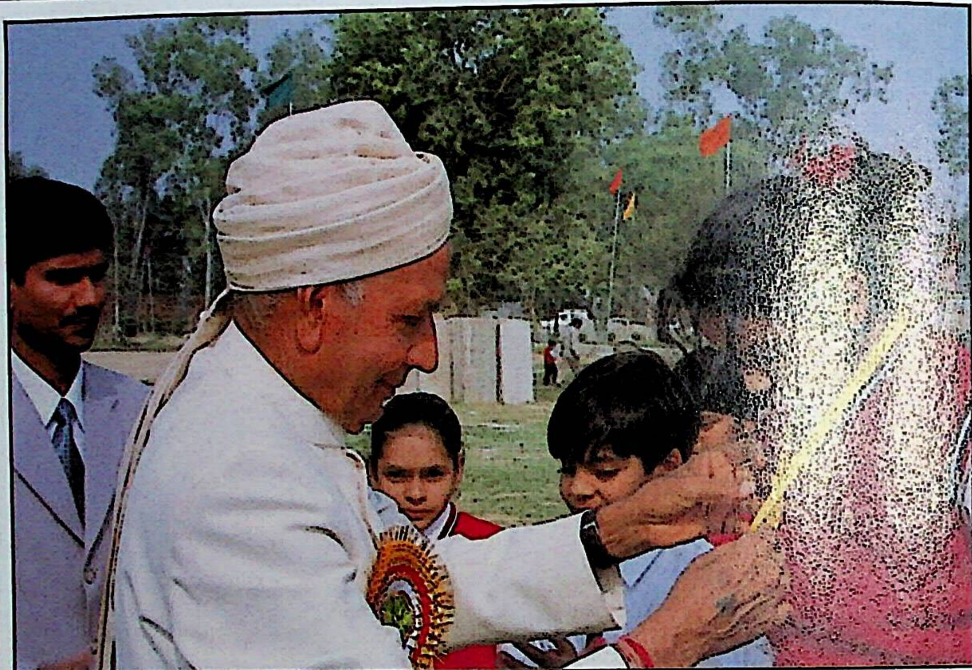
गुरुकुल आमसेना, उड़ीसा के वार्षिकोत्सव पर अध्यापकों और ब्रह्मचारियों के साथ चौ. मित्रसेन आर्य।



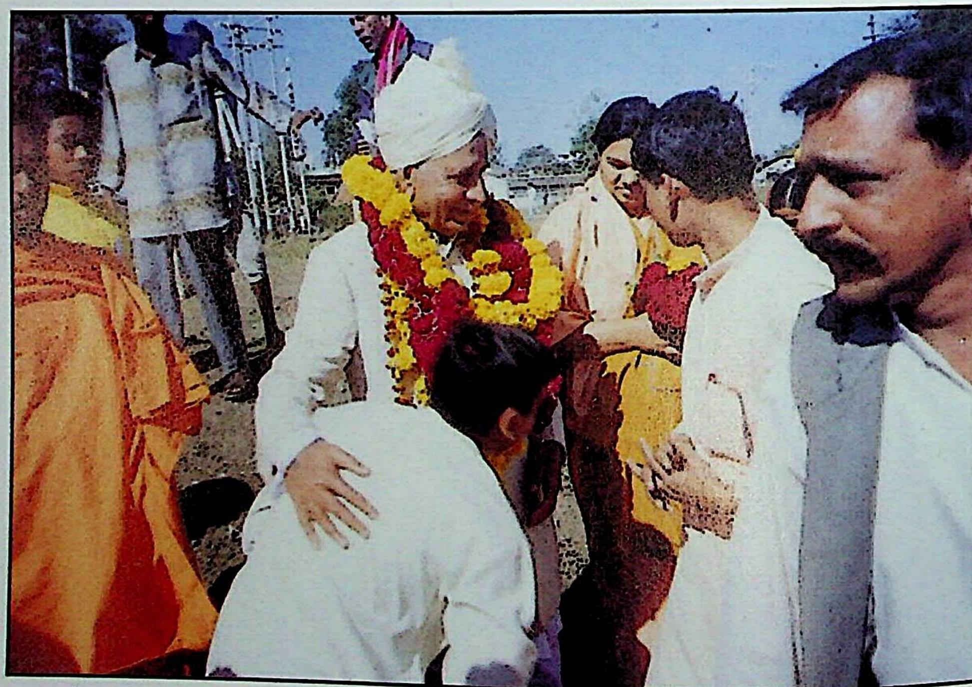
हरिभूमि के पुरस्कार वितरण समारोह पर हकृवि की जन सम्पर्क अधिकारी राजरति हुड्डा को स्मृति चिह्न देते चौ. मित्रसेन।



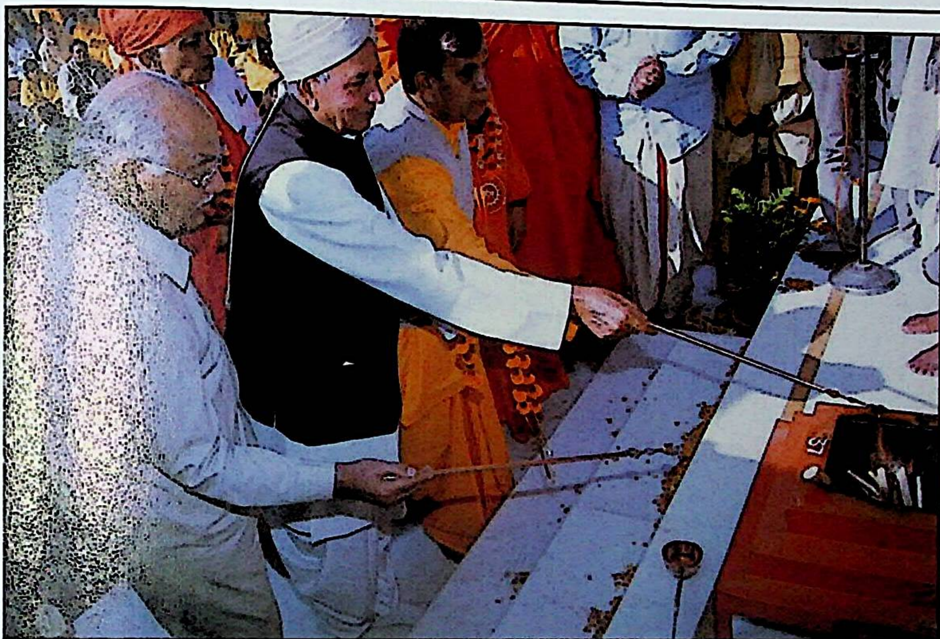
नई दिल्ली में एक आयोजन में आचार्य जैमिनी, डा.राज बुद्धिराजा और श्री दर्शन कुमार के साथ चौ. मित्रसेन।



रोहतक के इंडस पब्लिक स्कूल में विजयी छात्रा श्रेया को मेडल पहनाते चौ. मित्रसेन आर्य।



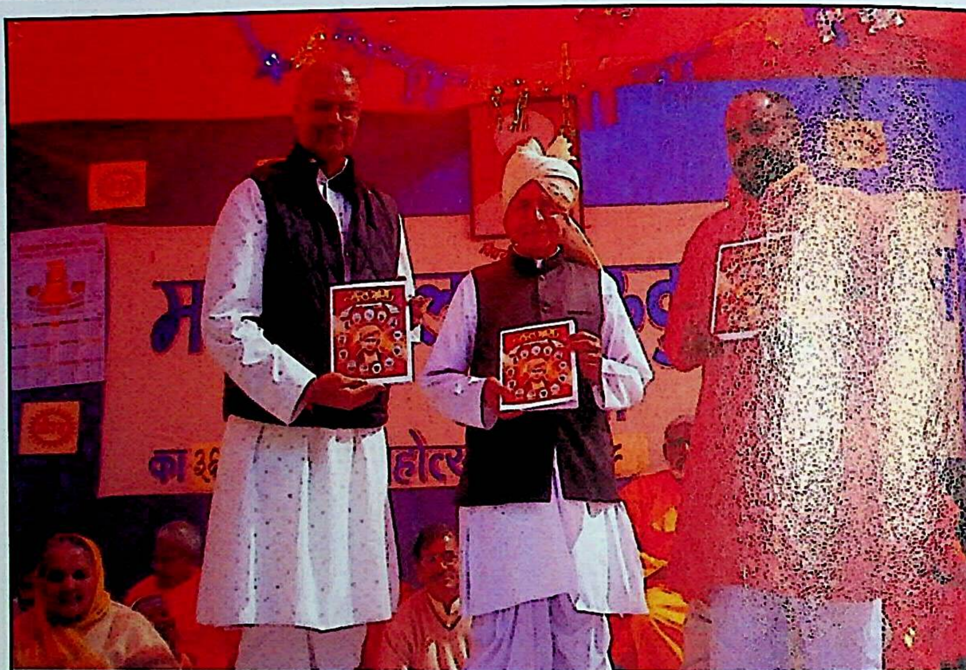
एक कार्यक्रम में आर्य युवकों को आशीर्वाद देते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



रोहतक के वैदिक भक्ति साधना आश्रम की रजत जयंती पर यज्ञ आहूति देते हुए बृजमोहन मुंजाल के साथ चौ. मित्रसेन आर्य।



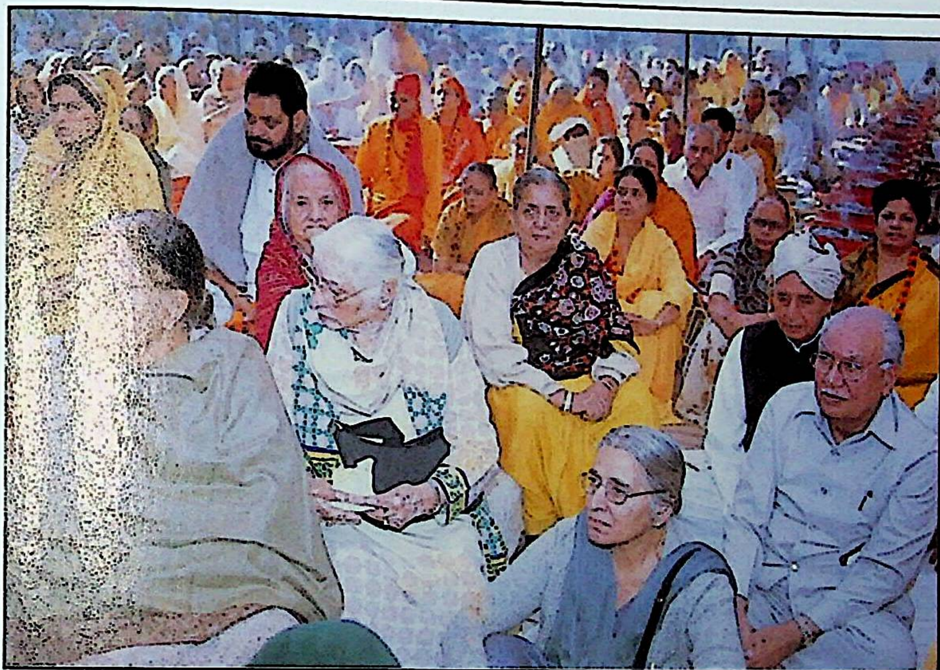
आर्य समाज मंदिर माडल टाउन, रोहतक की यज्ञशाला का उद्घाटन करते स्वामी सत्यपति के साथ चौ. मित्रसेन आर्य।



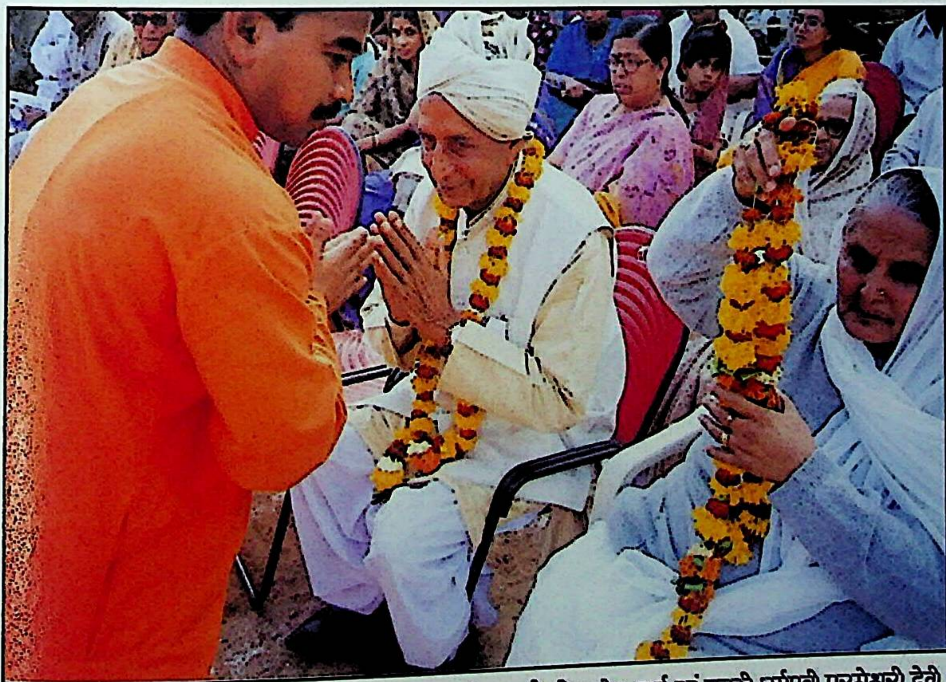
गुरुकुल आमसेना में 'कुलभूमि' पत्रिका विशेषांक का विमोचन करते चौ. मित्रसेन आर्य और अन्य।



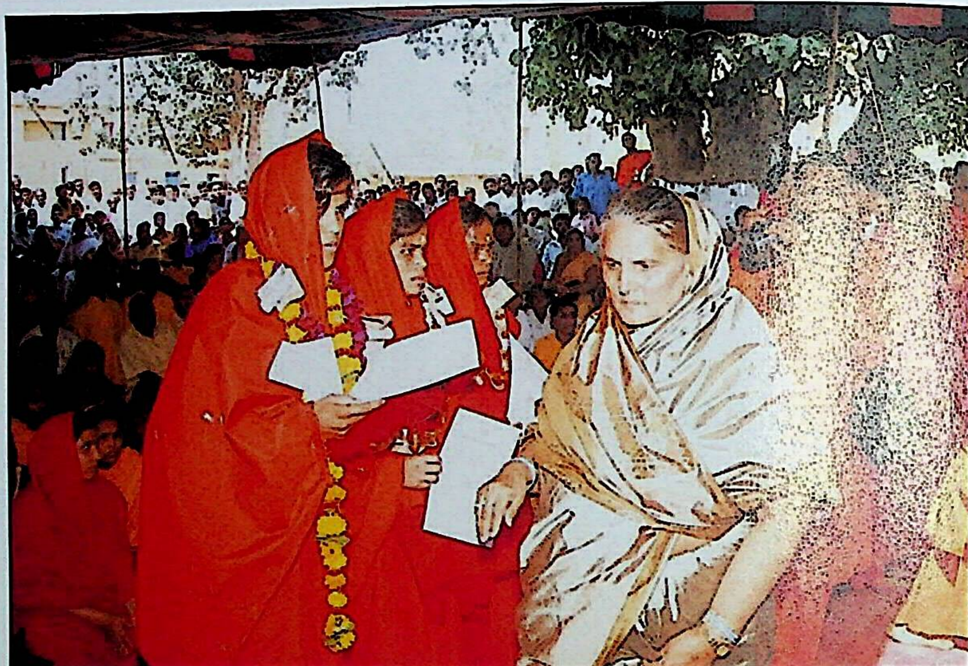
महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम के 34वें वार्षिक महोत्सव के अवसर पर मंच पर आसीन चौ. मित्रसेन और अन्य।



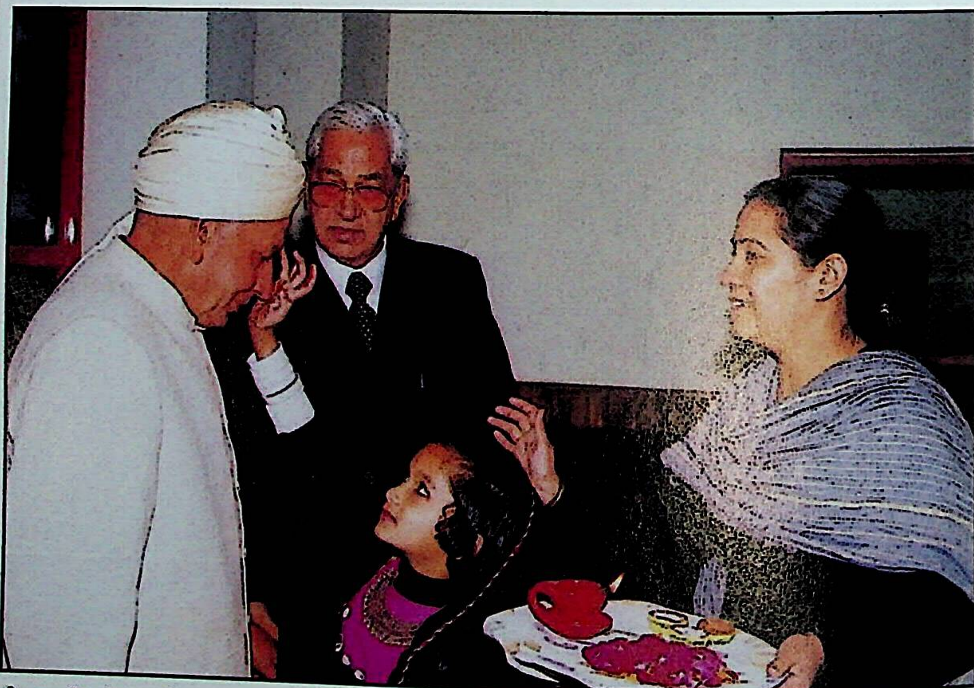
रोहतक के वैदिक भक्ति साधना आश्रम के यज्ञ महोत्सव में श्रोताओं के बीच बैठे चौ. मित्रसेन आर्य।



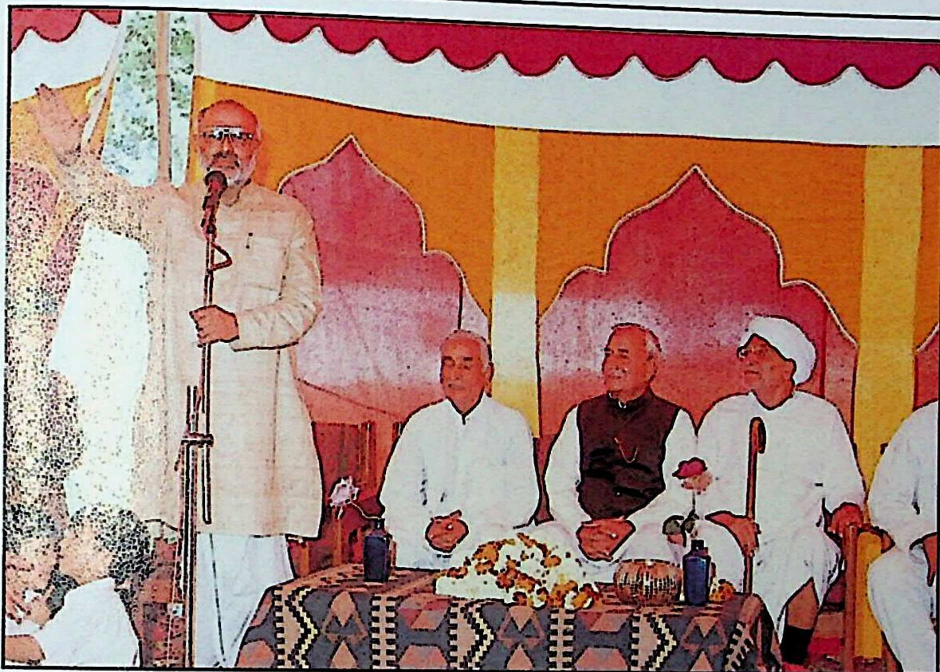
उड़ीसा के एक गुरुकुल में संन्यासी का अभिवादन करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी।



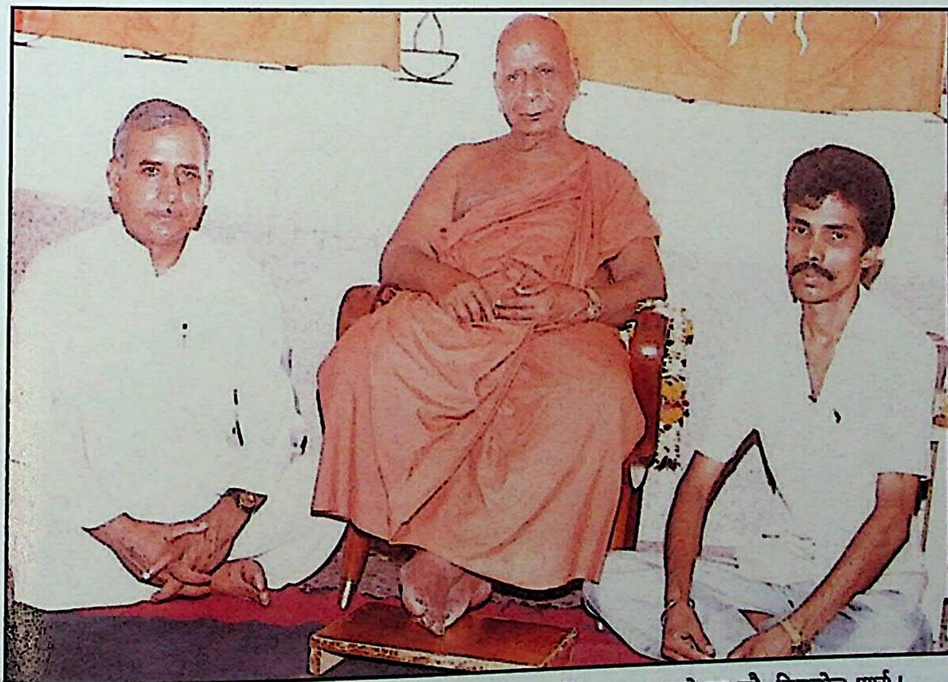
गुरुकुल ग्रामसेना के समारोह में पधारती हुई श्रीमती परमेश्वरी देवी।



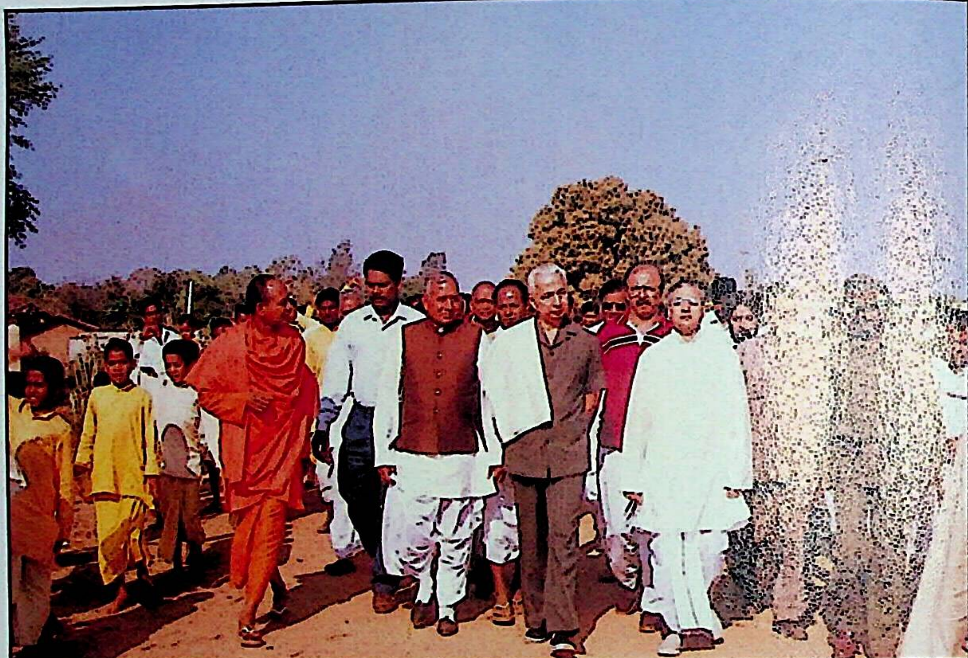
रोहतक के इंडस पब्लिक स्कूल में चौ. मित्रसेन आर्य को तिलक करती हुई एक नन्ही छात्रा।



दिल्ली के मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा के रोहतक में आयोजित अभिनन्दन समारोह में उपस्थित चौ. मित्रसेन।



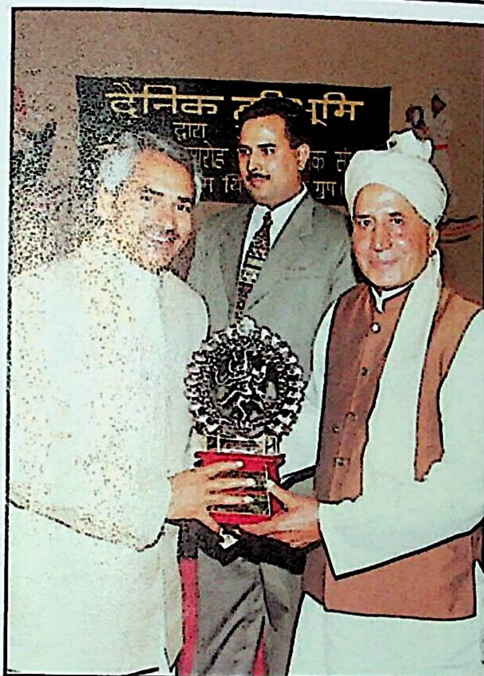
स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी से सन् 1985 में भुवनेश्वर में प्रवचन सुनते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।

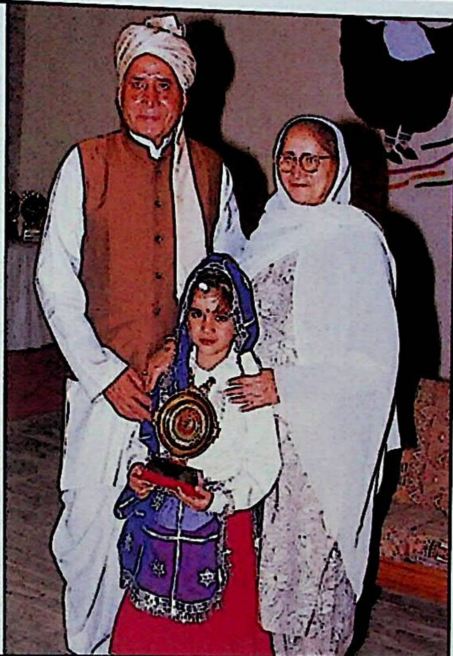


गुरुकुल ग्रामसेना रजत जयंती पर सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रंगनाथ मिश्र एवं चौ. मित्रसेन आर्य।

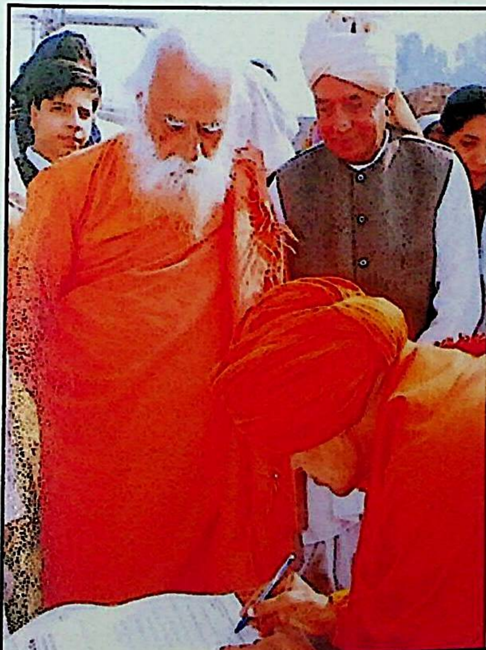


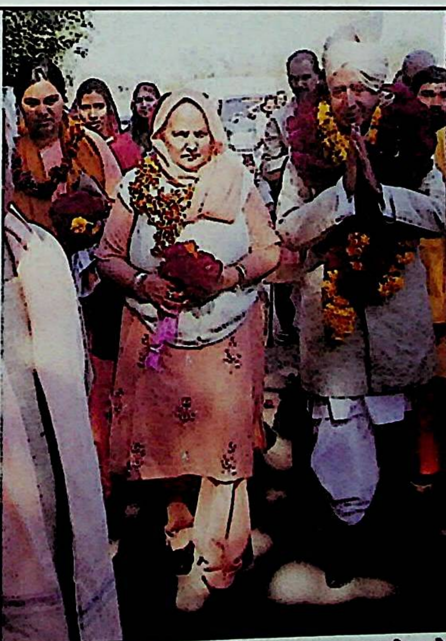
दयानंद मठ, रोहतक में आर्य महासम्मेलन के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



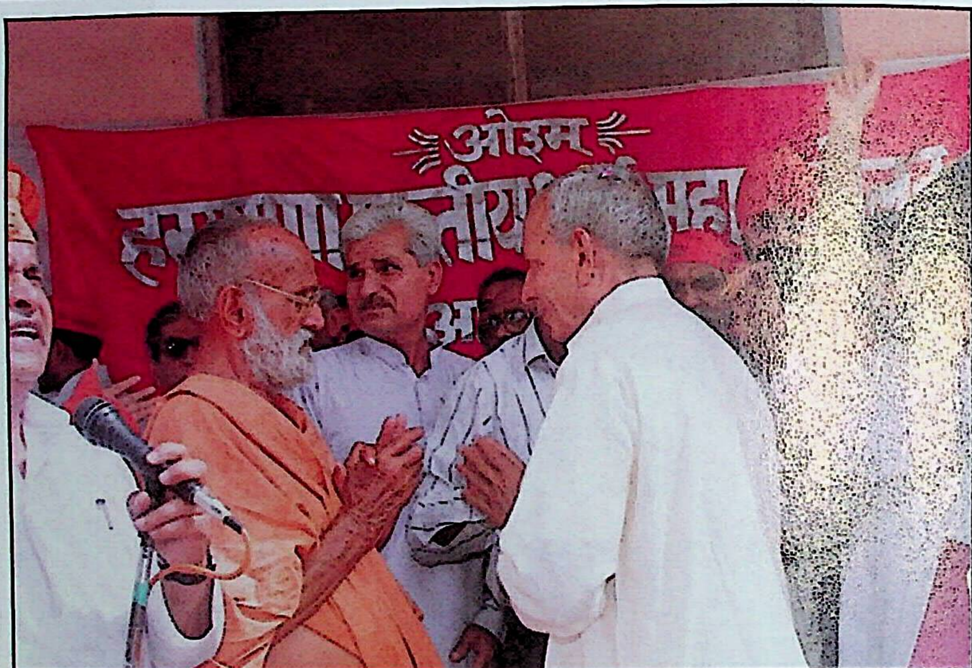


हरिभूमि के पुरस्कार वितरण समारोह में तत्कालीन विधायक डा. विरेन्द्र पाल को स्मृति चिह्न देते चौ. मित्रसेन।

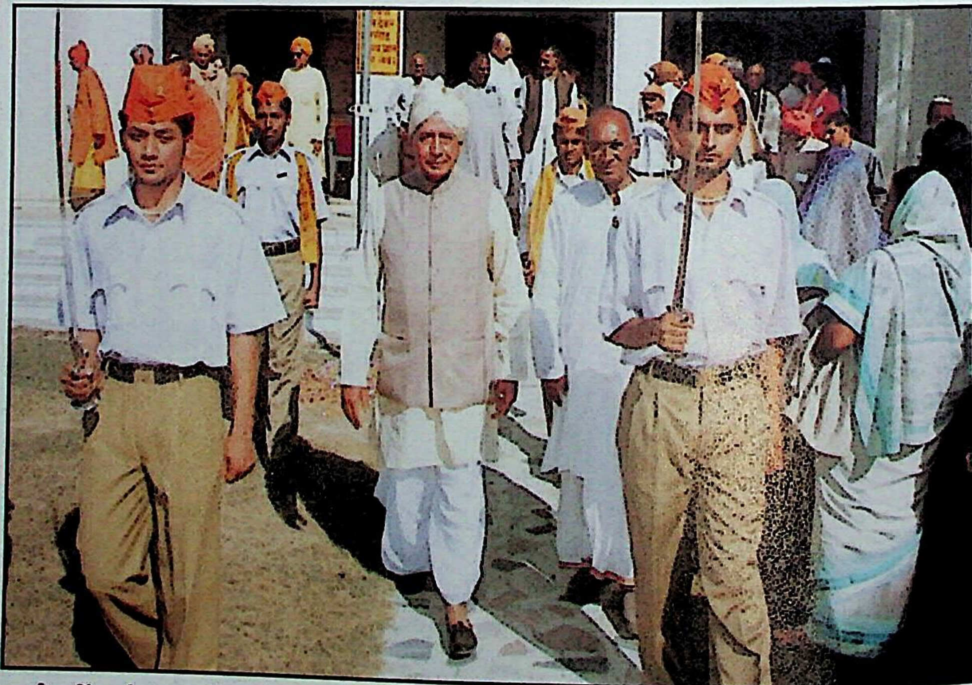




सिन्धु भवन यज्ञशाला की आधारशिला में वेद रखते हुए स्वामी जी तथा (दाएं) गुरुकुल आमसेना के वार्षिकोत्सव में पधारते हुए चौ. मित्रसेन जी आर्य और उनकी धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी।



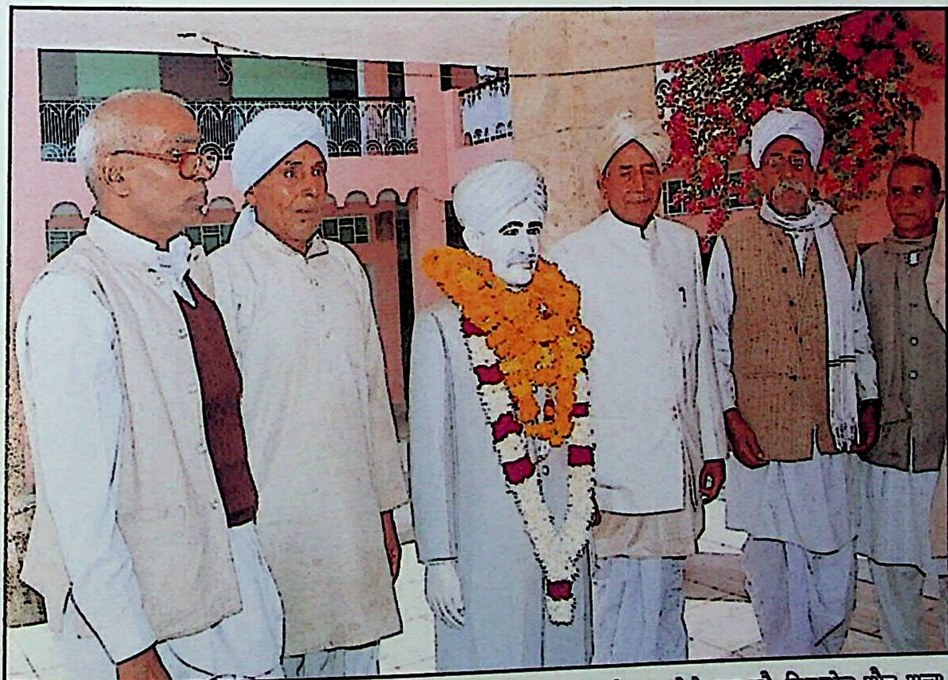
प्रांतीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी ओमानंद सरस्वती जी का अभिवादन करते हुए श्री मित्रसेन आर्य।



अजमेर में आर्य महासम्मेलन के अवसर पर चौ. मित्रसेन की अगुवाई करते हुए आर्यवीर।



कन्या गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा) में स्वामी धर्मानन्द जी के साथ माता परमेश्वरी देवी और चौ. मित्रसेन।



बहादुरगढ़ स्थित जाट धर्मशाला में सर छोटूराम की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बाद चौ. मित्रसेन और अन्य।

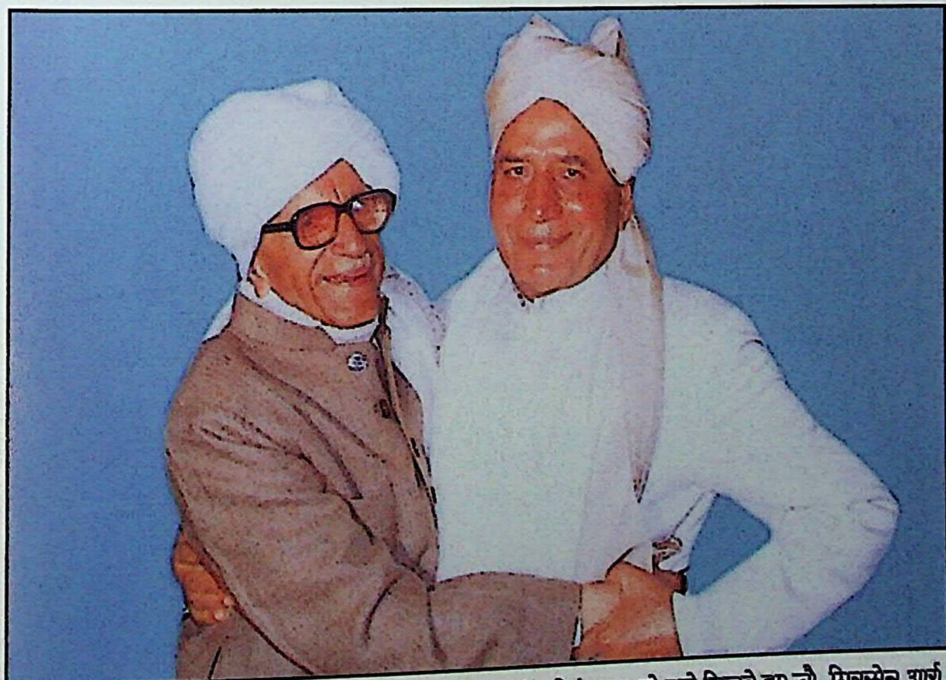
अंतरंग क्षण



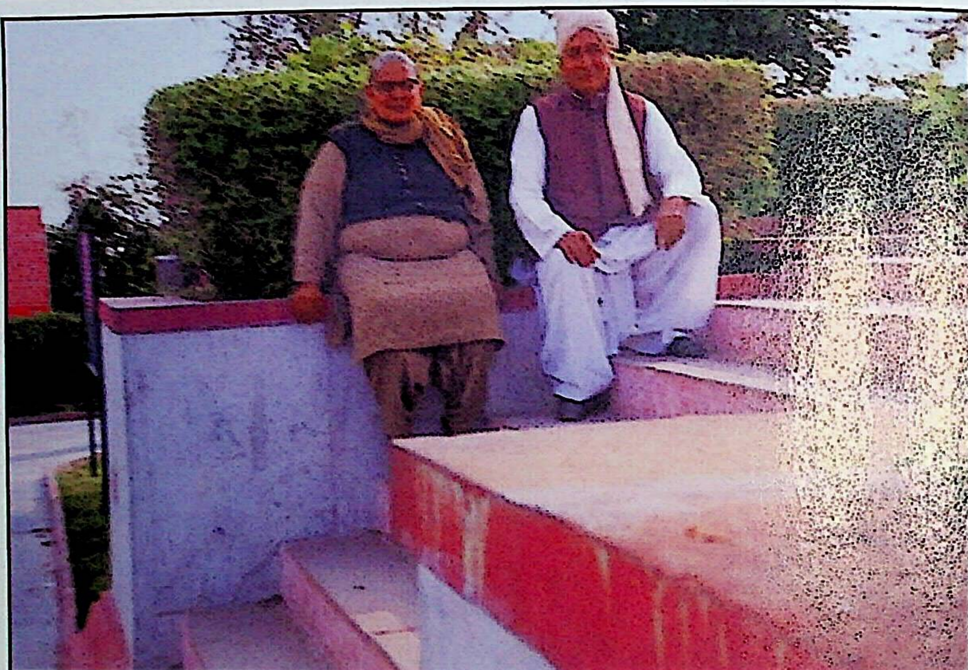
धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी के साथ चौ. मित्रसेन आर्य।



सिन्धु भवन, रोहतक में योग गुरु स्वामी रामदेव के साथ चौ. मित्रसेन एवं उनके परिवार के सदस्य।



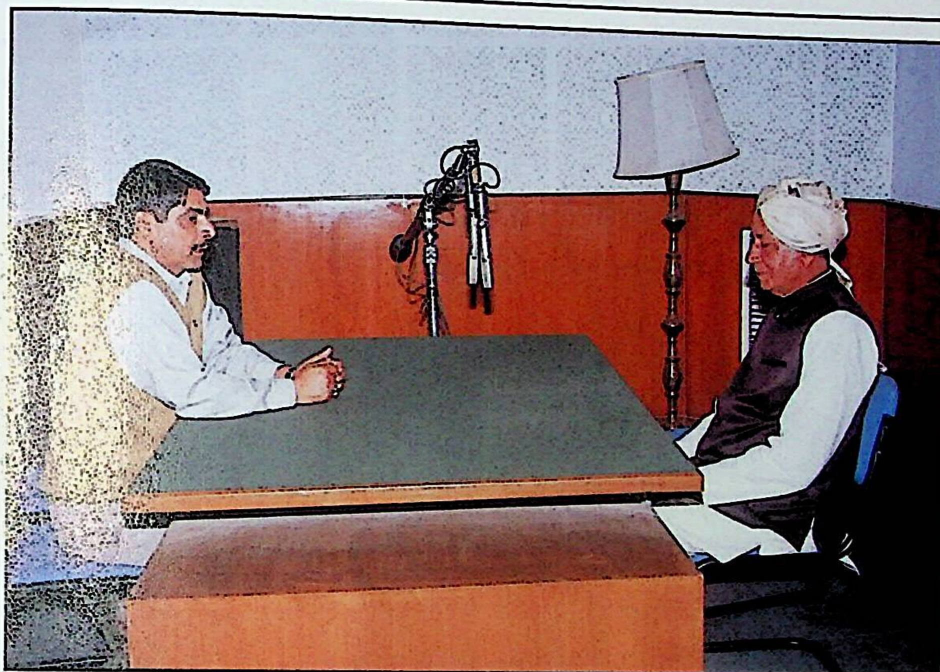
सिन्धु भवन, रोहतक में संविधान सभा के सदस्य चौ. रणबीर सिंह हुड्डा से गले मिलते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



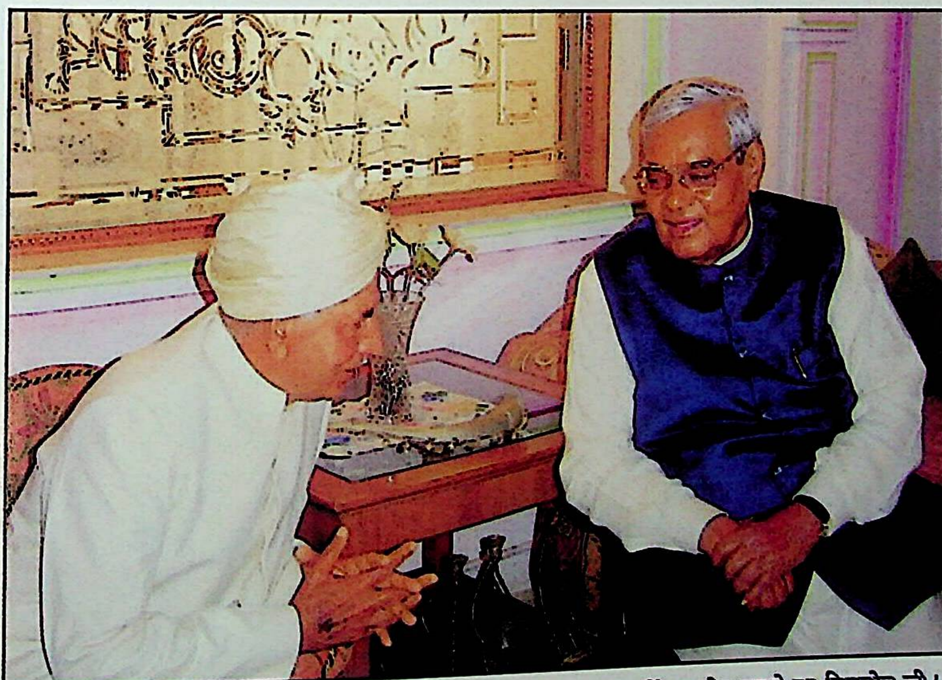
प्रात:कालीन भ्रमण के दौरान चौ. मित्रसेन अपनी धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी के साथ फुरसत के क्षणों में।



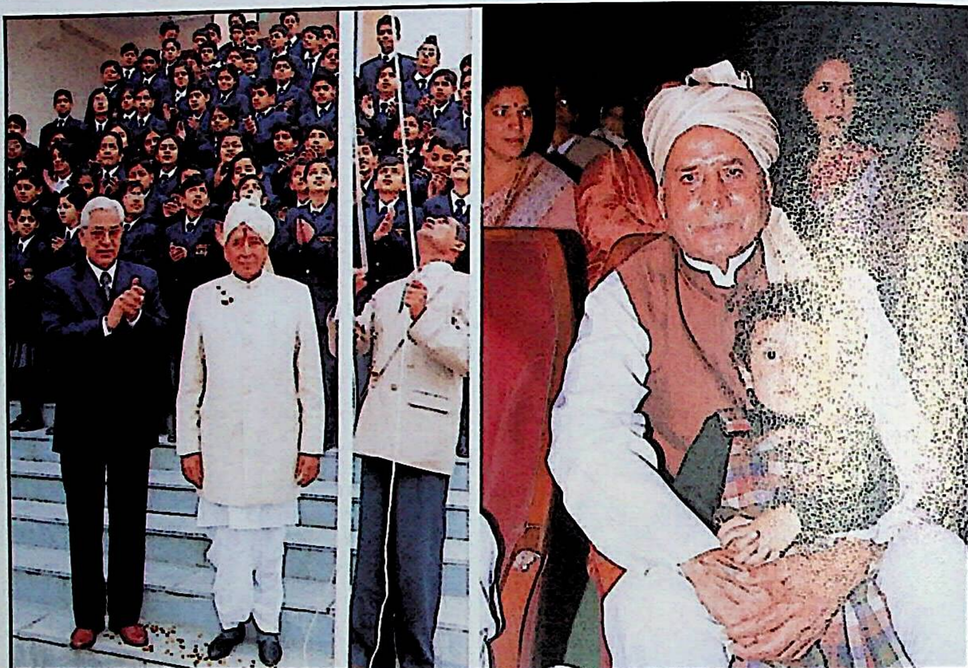
सिन्धु भवन, रोहतक के बाल स्विमिंग पुल में पोते-पोतियों के साथ स्नान का आनंद लेते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



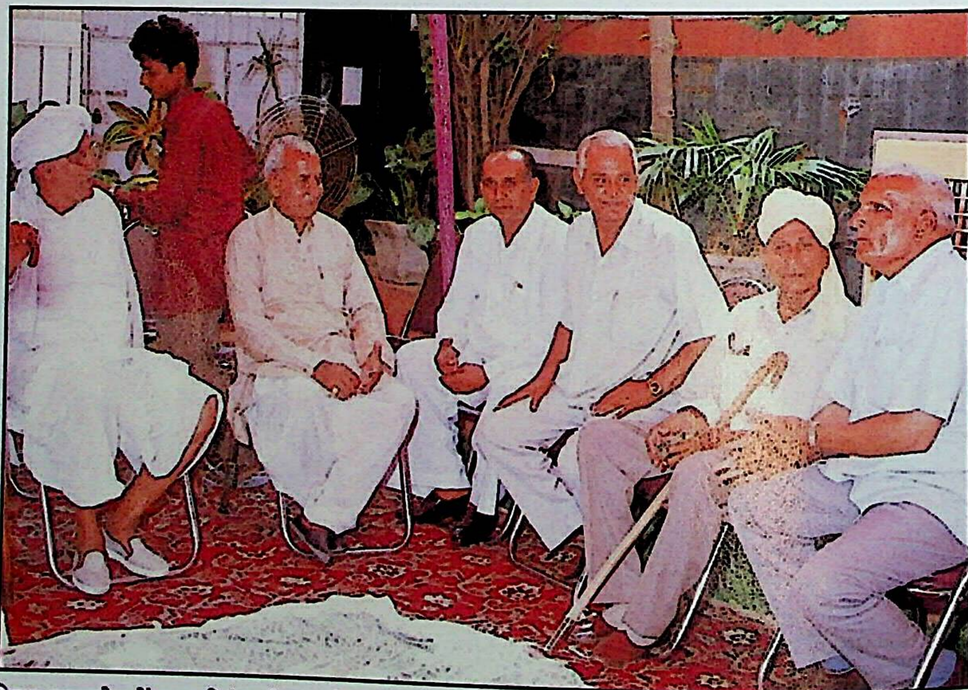
रोहतक के आकाशवाणी केंद्र में साक्षात्कार रिकार्डिंग के दौरान चौ. मित्रसेन आर्य।



पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से रोहतक स्थित सिन्धु भवन में बातचीत करते हुए मित्रसेन जी।



रोहतक के इंडस पब्लिक स्कूल में ध्वजारोहण करते हुए तथा (दाएं) पौत्री श्रेया को गोद में बिठाए चौ. मित्रसेन।



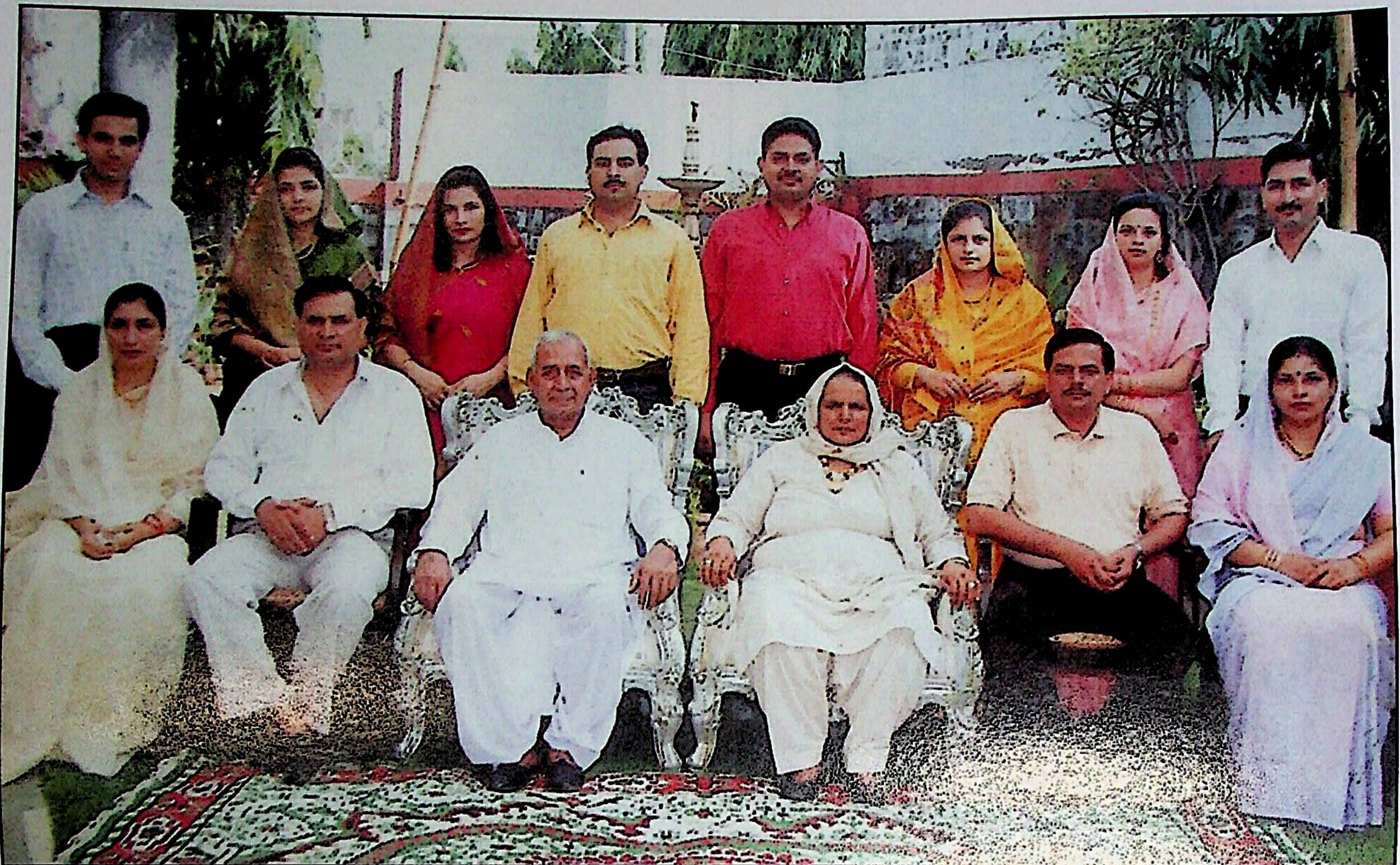
विवाह समारोह में प्रताप सिंह मलिक, चौ. मित्रसेन, वेद प्रकाश गोयल, रामकुमार साहू, रामसिंह व चन्द्र सिंह।



चौ. मित्रसेन की पुत्री दयावती के विवाह समारोह में परिवार के बुजुर्ग (बाएं से दाएं) सर्वश्री दरिया सिंह, रामदास, फूल सिंह, दीवान सिंह, सिंहराम तथा सूरत सिंह।



योग गुरु स्वामी रामदेव जी के साथ चौ. मित्रसेन आर्य और अन्य।



परिवार के साथ चौ. मित्रसेन आर्य।

अविस्मरणीय क्षण



नई दिल्ली में 'कृषि विशारद' की उपाधि मिलने के बाद चौ. मित्रसेन को बधाई देते केंद्रीय मंत्री डा. साहिब सिंह वर्मा।



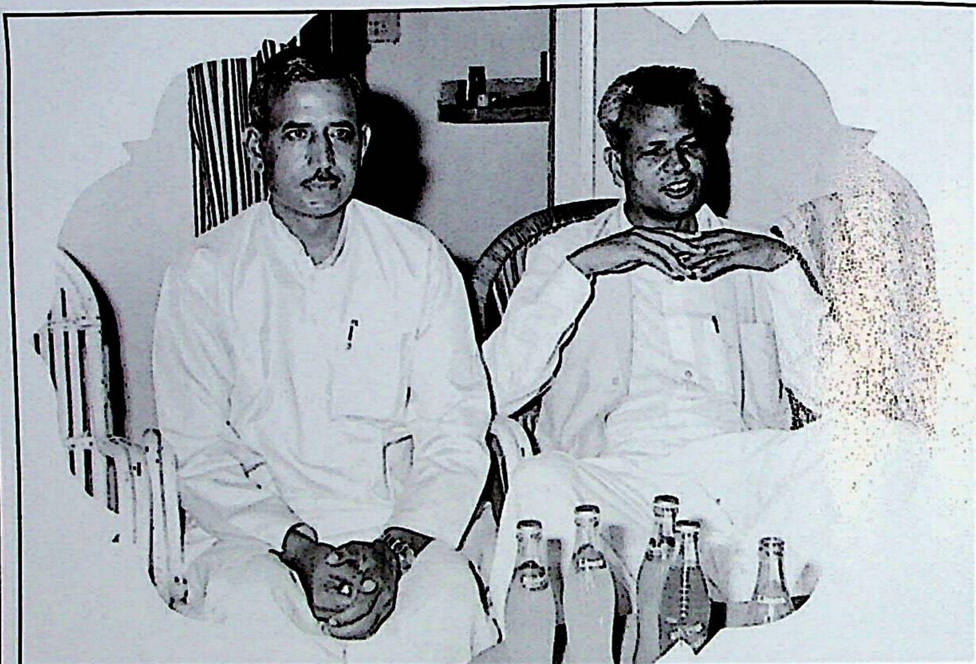
उड़ीसा में आयरन माइन के उद्घाटन पर तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह से बात करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



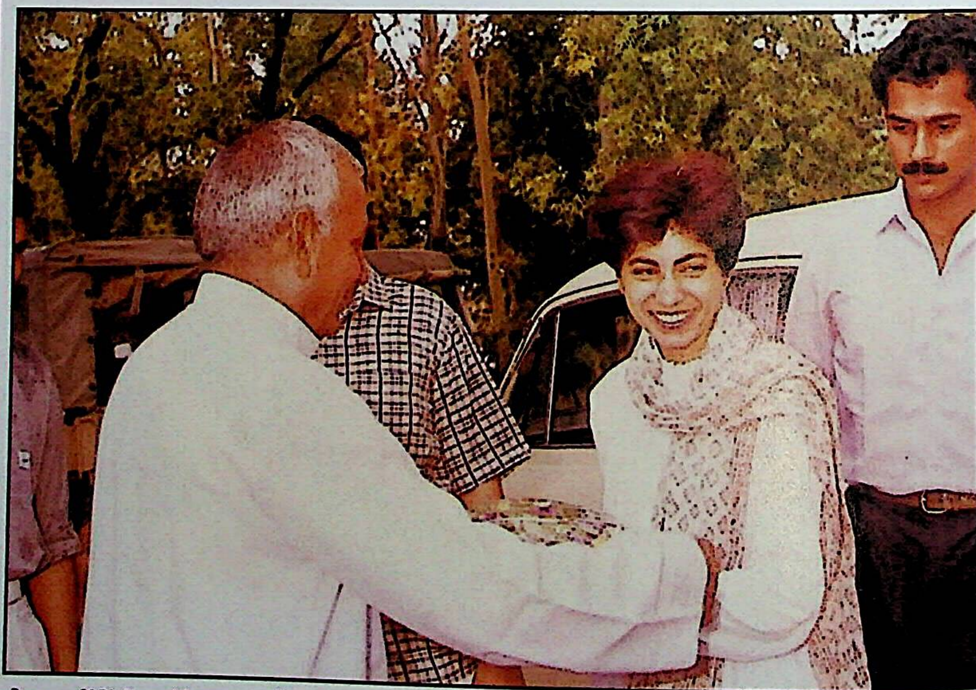
नई दिल्ली में प्रधानमंत्री निवास पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी के साथ चौ. मित्रसेन आर्य और डा. साहिब सिंह वर्मा अपने परिजनों के साथ।



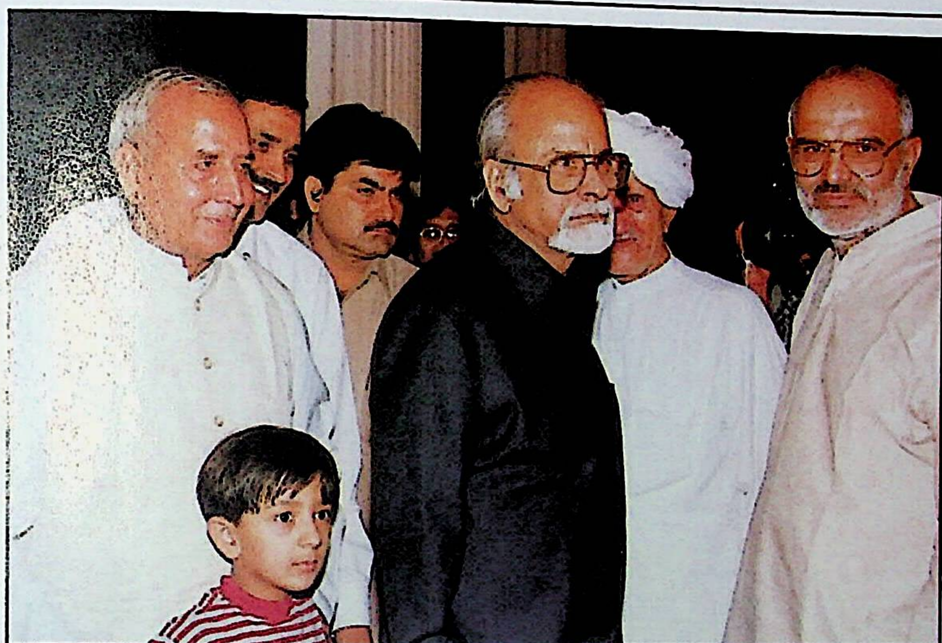
सिन्धु भवन, रोहतक में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से बात करते चौ. मित्रसेन आर्य और उनके परिजन।



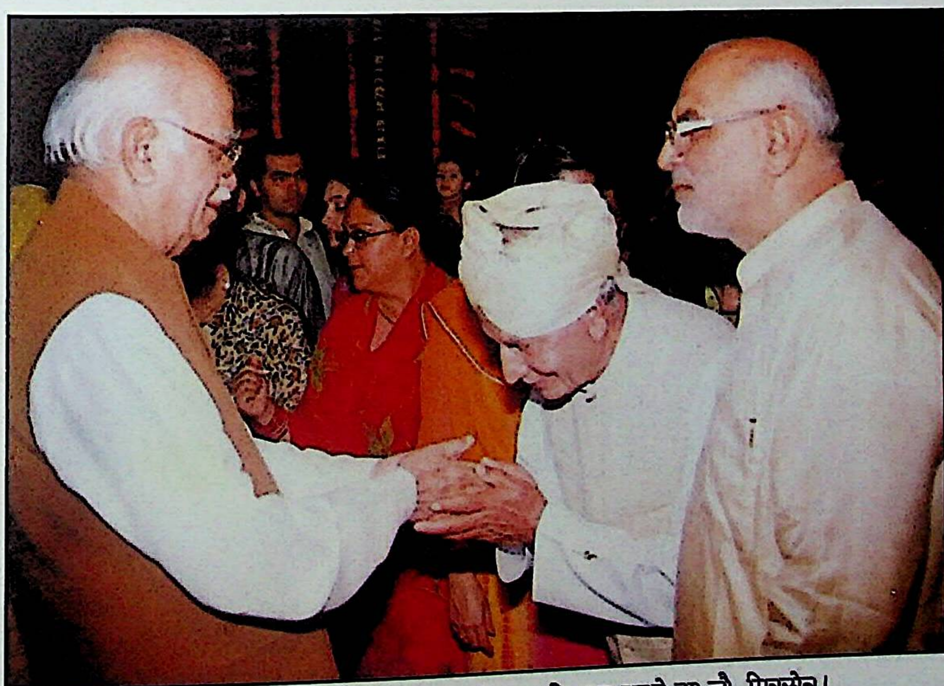
रोहतक में सुपुत्री दयावती के विवाह समारोह में तत्कालीन केंद्रीय मंत्री श्री दलबीर सिंह के साथ चौ. मित्रसेन।



रोहतक में केंद्रीय मंत्री कुमारी शैलजा का स्वागत करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



एक कार्यक्रम के अवसर पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री इंद्र कुमार गुजराल, डा. साहिब सिंह वर्मा के साथ चौ. मित्रसेन आर्य।



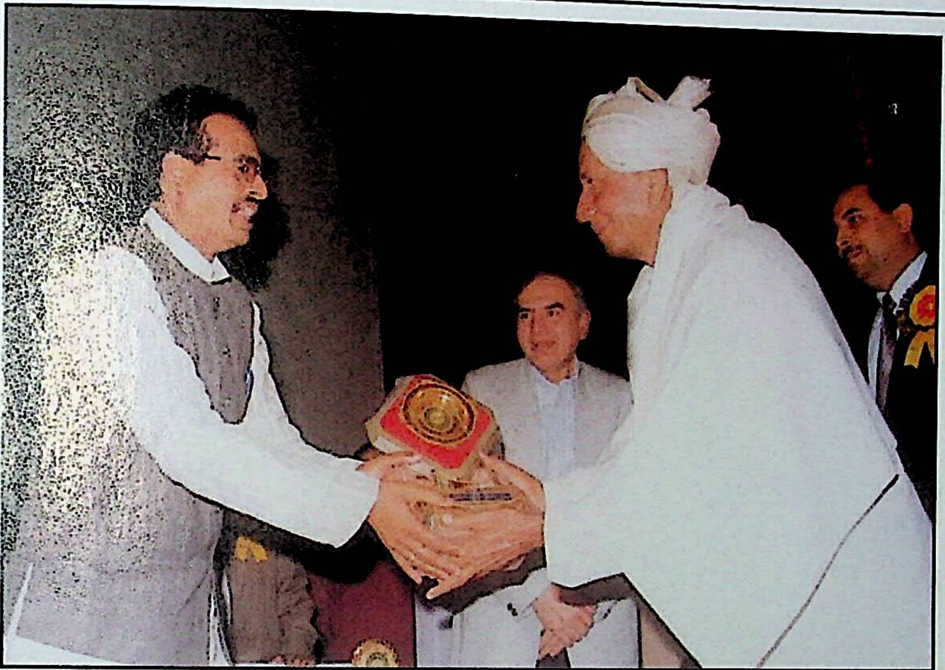
नई दिल्ली में पूर्व उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी का अभिवादन करते हुए चौ. मित्रसेन।



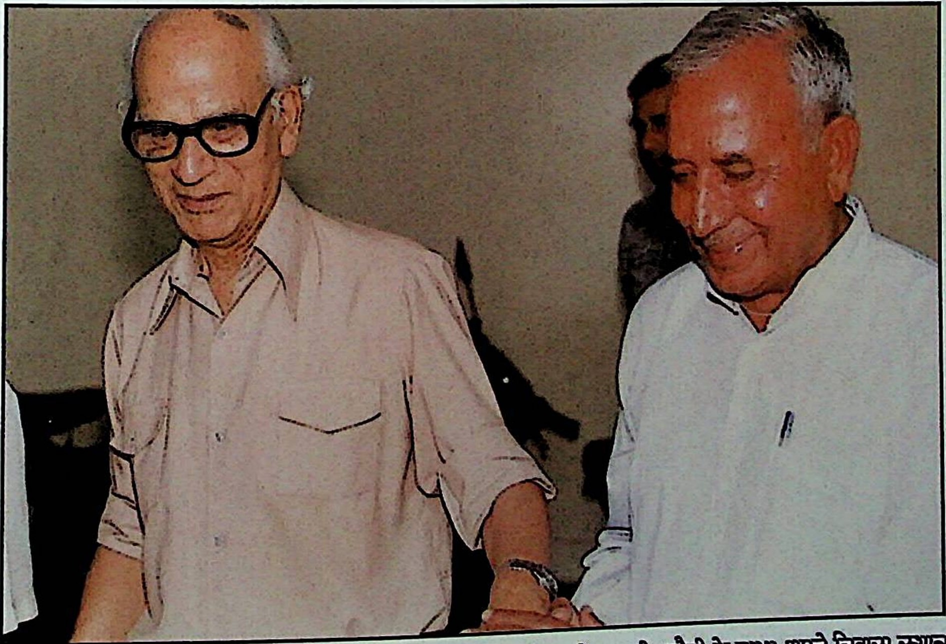
जींद में समाजसेवा के लिए चौ. मित्रसेन आर्य को सम्मानित करते हुए श्री पूनम सुरी तथा श्री ओमप्रकाश चौटाला।



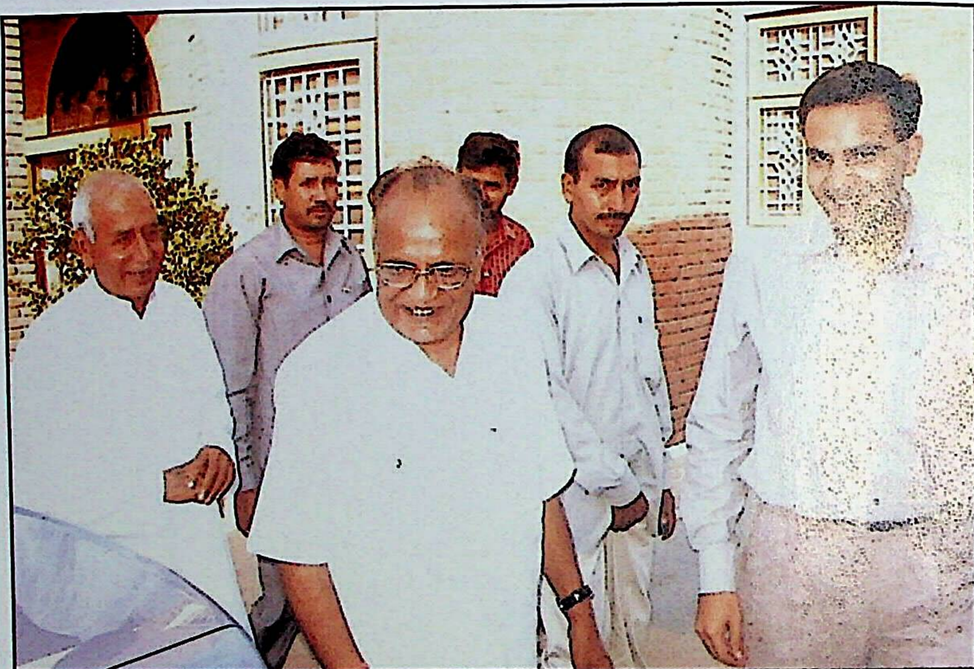
हरियाणा संस्कृत अकादमी के कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित अतिथि के तौर पर चौ. मित्रसेन आर्य का सम्मान करते सांसद अजय सिंह चौटाला।



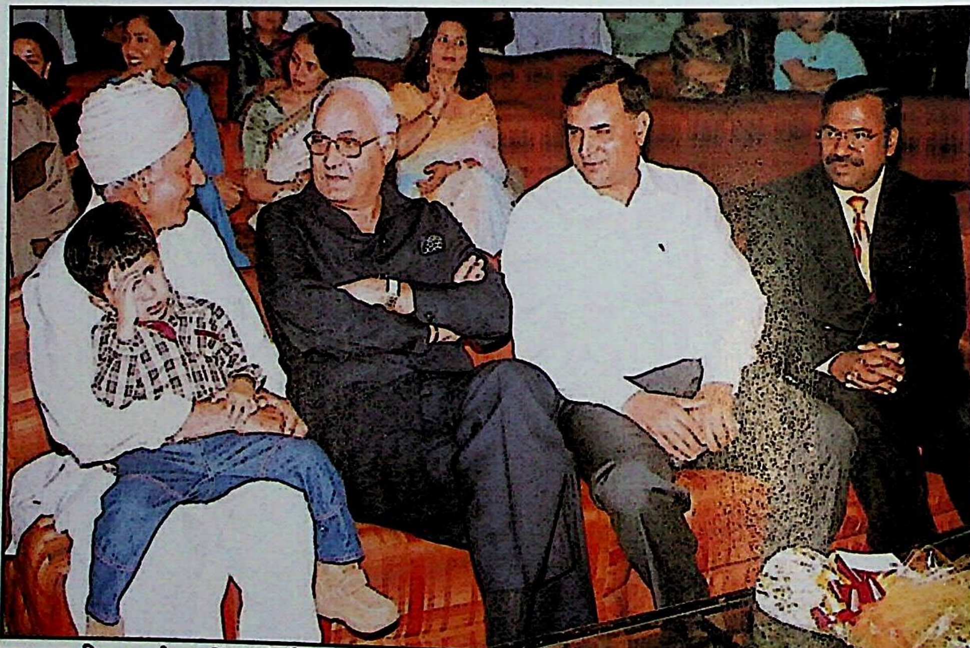
हिस्सार में 'हिस्सार भूमि' के लोकार्पण अवसर पर सांसद शिवराज सिंह चौहान को स्मृति चिह्न देते मित्रसेन जी।



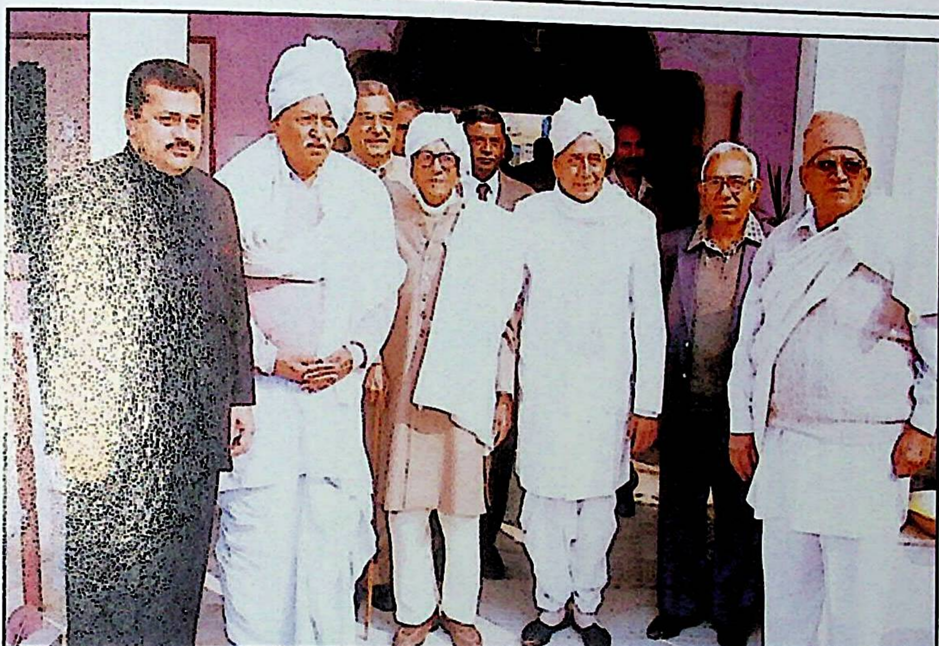
रोहतक के पूर्व उपायुक्त एवं भारत में नागरिक अधिकारों के पुरोधा श्री एच.डी. शौरी के साथ अपने निवास स्थान पर चौ. मित्रसेन आर्य।



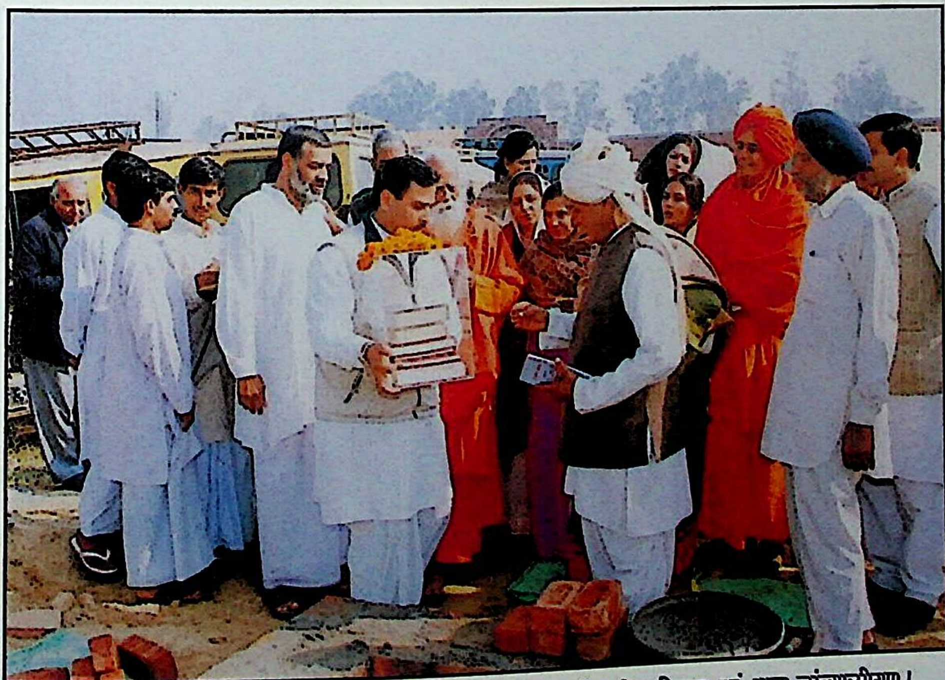
रोहतक में अपने निवास पर प्रसिद्ध उद्योगपति व विधायक श्री ओमप्रकाश जिंदल के साथ चौ. मित्रसेन आर्य एवं श्री देवसुमन सिन्धु।



एक सामाजिक कार्यक्रम में अपने पौत्र सात्विक को गोद में लिए हुए चौ. मित्रसेन आर्य एवं साथ में हैं डीएलएफ ग्रुप के चेयरमैन श्री कुशलपाल सिंह, कैप्टन रुद्रसेन एवं संतोष मेडिकल कालेज ग्रुप के चेयरमैन डा. महालिंगम।



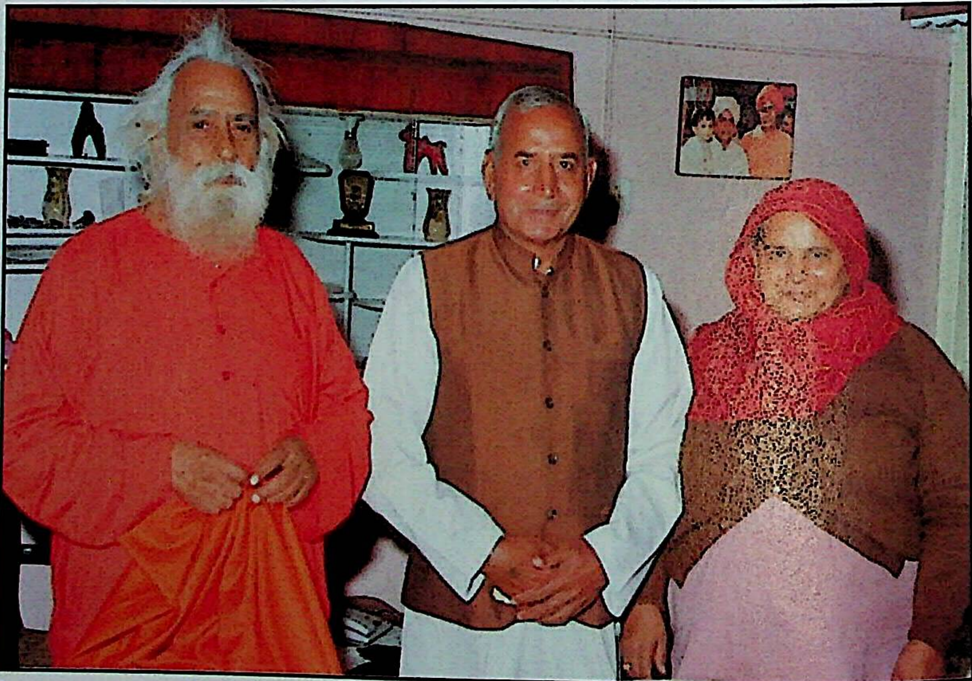
दौहित्र विवेक की सगाई के अवसर पर राजेन्द्र सिंह, पूर्व राज्यपाल चौ. सुल्तान सिंह, चौ. भूपेन्द्र हुड्डा, चौ. रणबीर सिंह, चौ. मित्रसेन आर्य, चौ. इन्द्रसिंह हुड्डा और चौ. प्रहलाद सिंह।



रोहतक के सिन्धु भवन की आधारशिला रखते चौ. मित्रसेन आर्य उनके परिजन एवं अन्य संन्यासीगण।



हरिभूमि के समारोह में तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष छतर सिंह चौहान को स्मृति चिह्न देते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



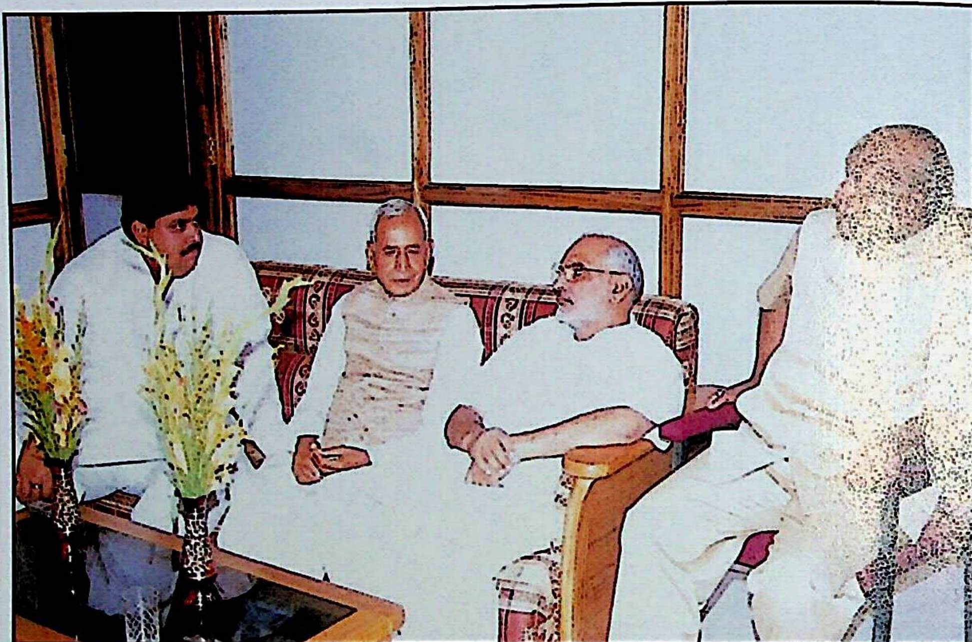
सिन्धु भवन रोहतक में स्वामी दीक्षानंद सरस्वती जी के साथ चौ. मित्रसेन और श्रीमती परमेश्वरी देवी।



छत्तीसगढ़ के रायपुर में हरिभूमि लोकार्पण कार्यक्रम में चौ. मित्रसेन आर्य के साथ अतिथिगण।



स्वामी धर्मानंद को आर्य रत्न पुरस्कार से सम्मानित करते राव हरिशचंद्र। साथ में हैं चौ. मित्रसेन आर्य।



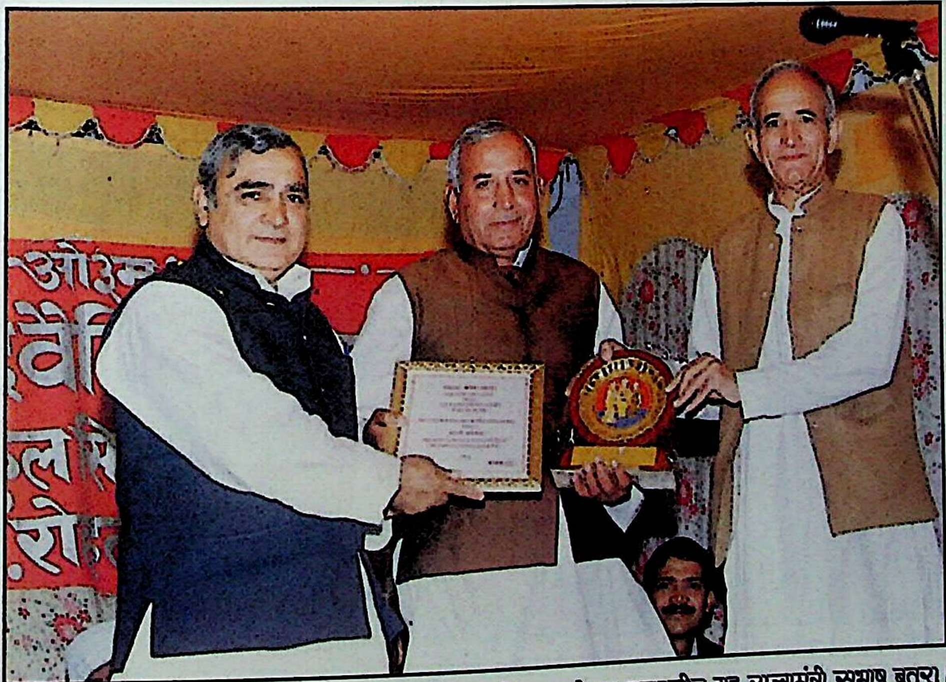
दैनिक हरिभूमि के बिलासपुर संस्करण के लोकार्पण समारोह के दौरान सांसद अजय सिंह चौटाला, चौ. मित्रसेन, डा. साहिब सिंह वर्मा एवं अन्य।



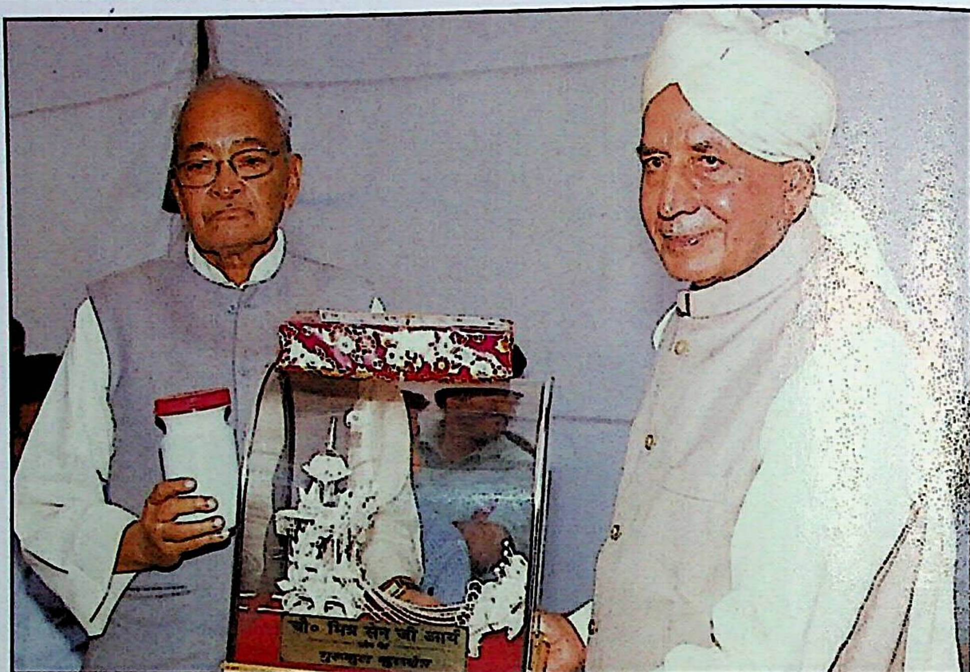
सिन्धु भवन में सिने अभिनेता धर्मेन्द्र के साथ चौ. मित्रसेन आर्य, देवसुमन सिंधु और रचना सिंधु।



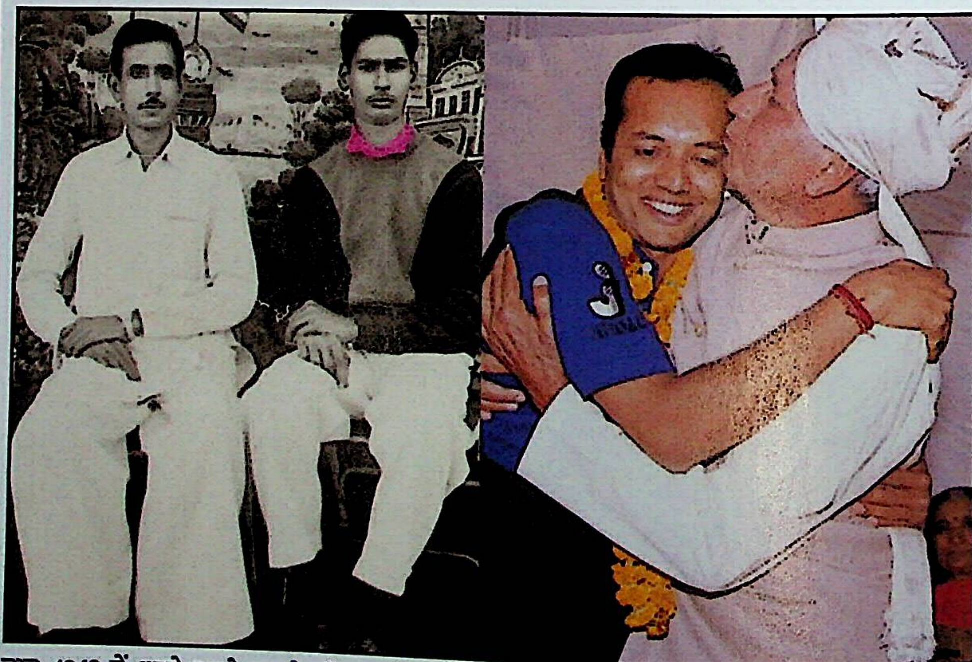
जींद के एक कार्यक्रम में चौ. मित्रसेन सिंधु, डा. साहिब सिंह वर्मा, पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा तथा ओमप्रकाश चौटाला।



रोहतक में समाज सेवा के लिए चौ. मित्रसेन को सम्मानित करते हुए तत्कालीन गृह राज्यमंत्री सुभाष बतरा।



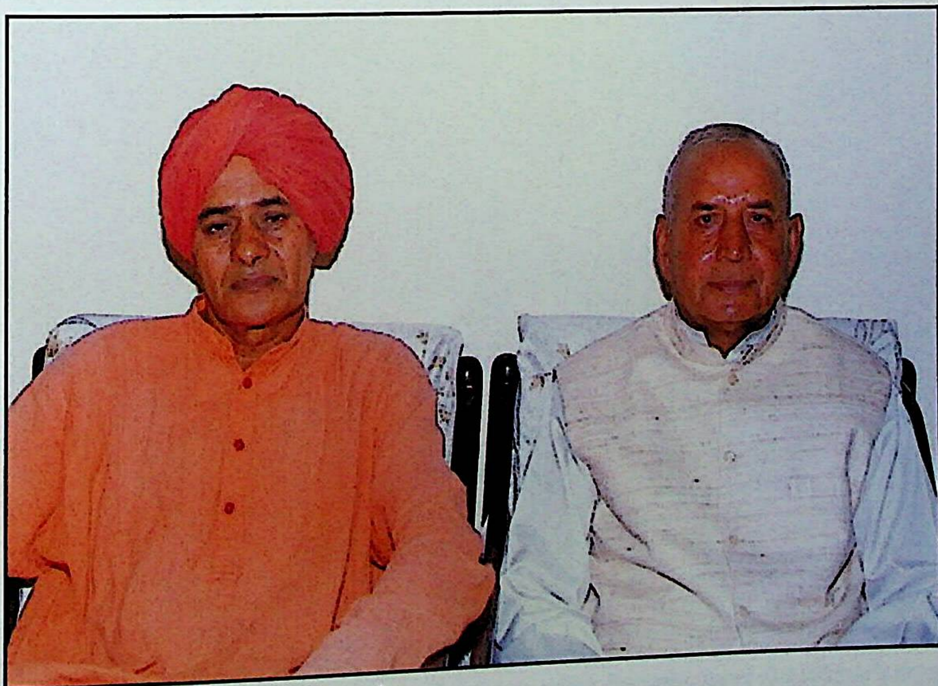
कुरुक्षेत्र गुरुकुल में चौ. मित्रसेन को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि।



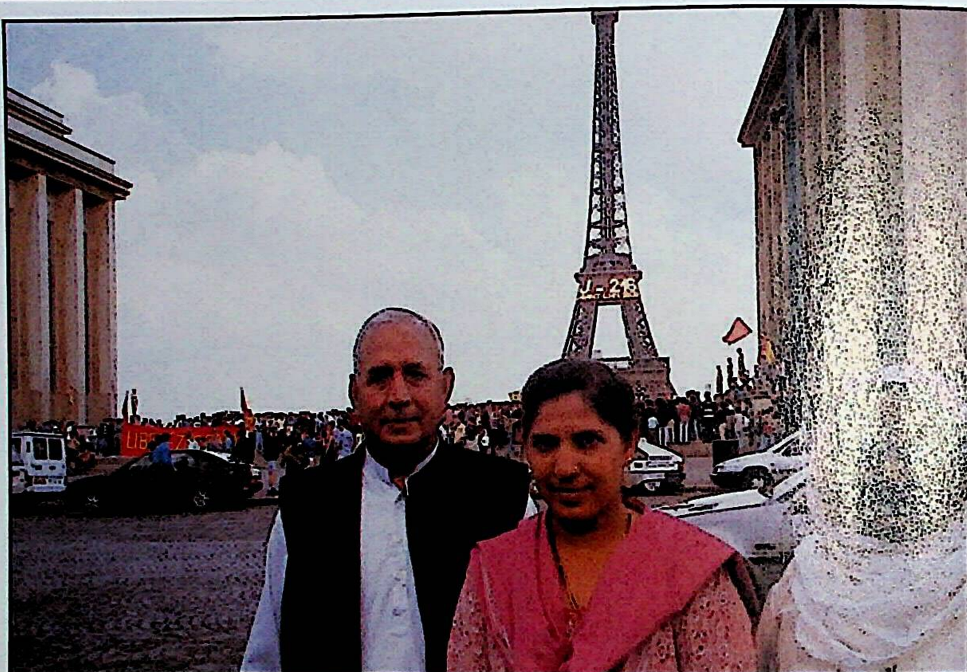
सन् 1962 में अपने साले सतबीर के साथ बड़बिल में व 2006 में नवीन जिन्दल को कुरुक्षेत्र के गुरुकुल समारोह में चूमते हुए चौ. मित्रसेन।



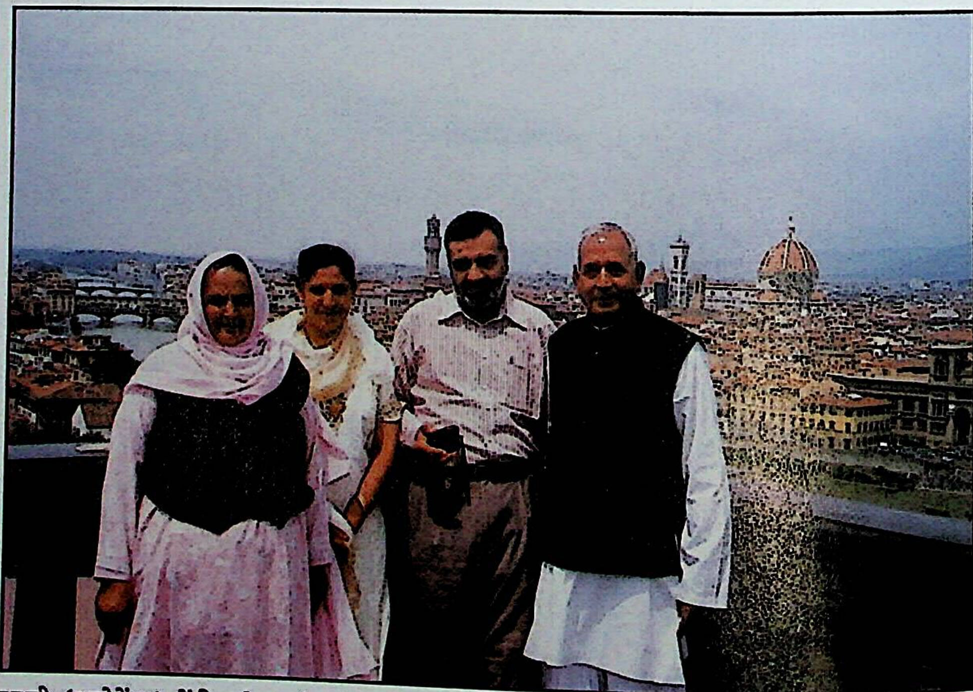
एक कार्यक्रम में स्वामी अग्निवेश से वार्तालाप करते हुए चौ. मित्रसेन आर्य।



स्वामी इन्द्रवेश के साथ चौ. मित्रसेन आर्य।



फ्रांस के ऐतिहासिक एफिल टावर के समीप चौ. मित्रसेन, पुत्री दयावती तथा उनकी धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी।

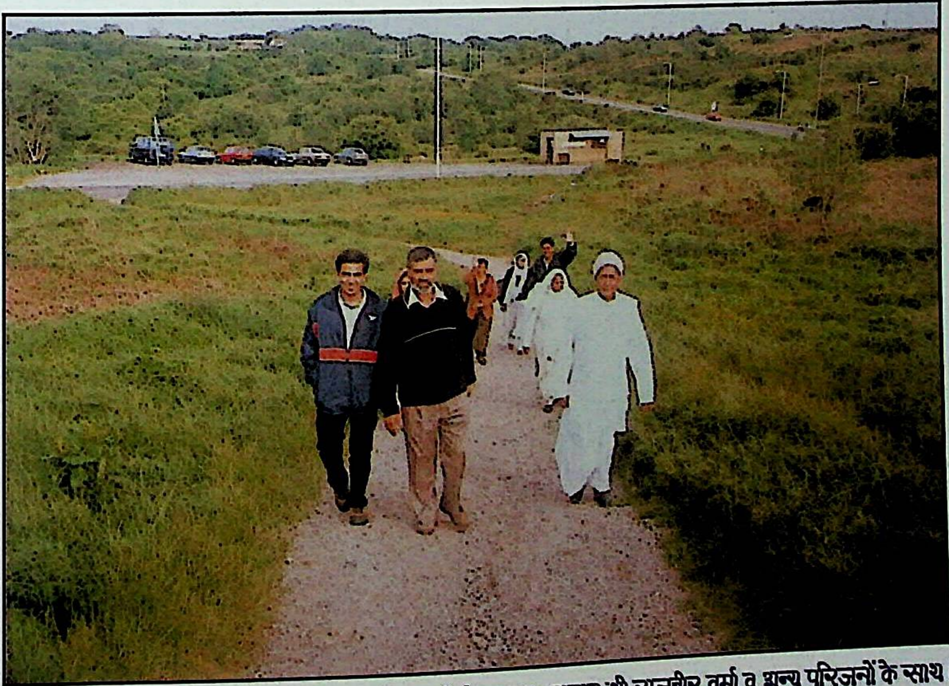


इटली (फ्लोरेंस) में मित्रसेन धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी, पुत्री दयावती तथा दामाद श्री राजबीर वर्मा के साथ।

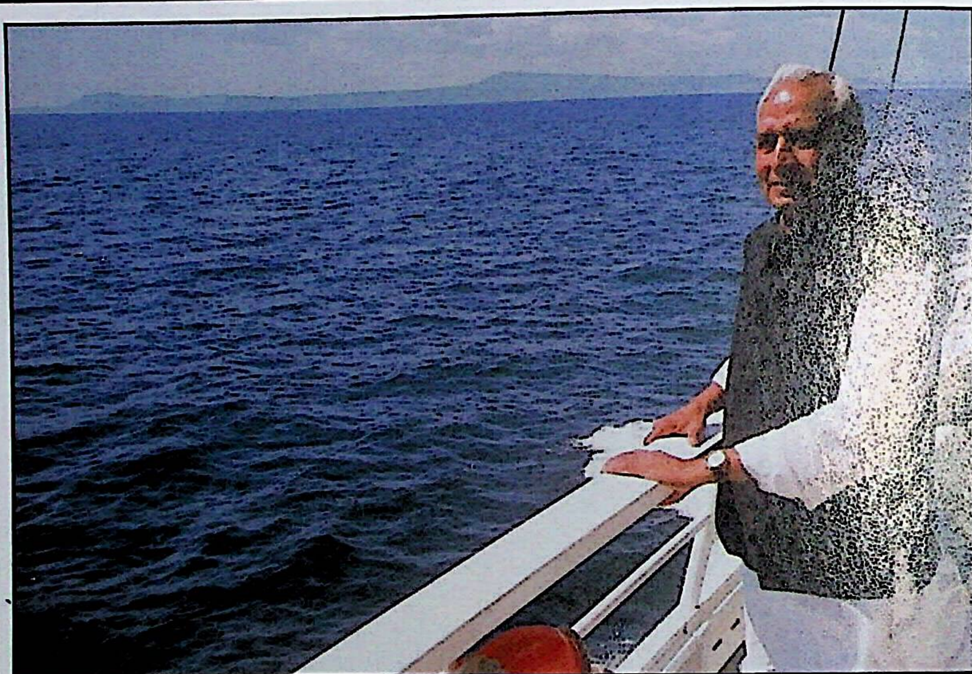




लंदन में ऐतिहासिक ब्रिज के पास चौ. मित्रसेन और उनकी पुत्री दयावती। जहाज आने पर यह पुल हट जाता है।



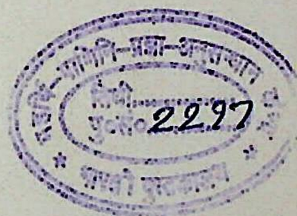
इग्लैंड के कार्डिफ नगर में चौ. मित्रसेन अपने पुत्र श्री देवसुमन, दामाद श्री राजबीर वर्मा व अन्य परिजनों के साथ।



इटली के नेपल्स शहर की बंदरगाह पर समुद्र को निहारते चौ. मित्रसेन जी।



विदेश में एक भव्य स्मारक के सामने चौ. मित्रसेन उनकी धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी और पुत्री दयावती।





प्रकाशक : परम मित्र मानव निर्माण संस्थान, सी-101, न्यू मुलतान नगर, नई दिल्ली।